संत शिरोमणि

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(12.2.1893 - 31.12.1984)

विश्व के एक अद्वितीय ब्रह्मलीन संत थे जिनके समक्ष सब देवी-देवता, हर धर्म के पैगम्बर व सिद्ध-सन्त नित्य ध्यान में तथा प्रत्यक्ष प्रकट होकर बातें करते तथा आध्यात्मिक पद लिखवाते थे। उन्होंने अपने गुरुदेव की अत्यन्त कठिन सेवा की तथा गुरुदेव की पांच आज्ञाओं (महावाक्यों) का आजीवन पालन किया : "अयोध्या में रहना, चाहें तहां पर। कोई जमीन दें तो न लेना। मरे पर पास में कफन को पैसा न निकले। कोई मारे तो हाथ न चलाना। किसी से बैर न करना।" अनेक वर्षों से सोये नहीं, वे सदा अनहद नाद को सुनते रहते थे। अतः भक्तजन स्लेट अथवा कागज पर लिखकर प्रश्न पूछते। तत्पश्चात गुरुदेव अपने श्रीमुख से उनकी शंका समाधान करते व उपदेश देते।

वे करुणा के सागर थे तथा सदा नंगे पैर चलते थे कि कहीं कोई जीव मर न जाये। उनका जीवन अत्यन्त ही सरल व सादा था। सिर्फ एक अचला धोती पहने, बारहों मास एक सादी लकड़ी के तखत पर सुबह से रात तक बैठते तथा भक्तों को कल्याण मार्ग बताते।

श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुखविलास

श्री भक्त भगवन्त चरितामृत
सुखविलास

भगवान, देवी-देवता, ऋषि, मुनि, हर धर्म के सिद्ध सन्त, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के द्वारा प्रकट होकर लिखवाये आध्यात्मिक पदों का दिव्य संग्रह

दिव्य ग्रन्थ - २

परमहंस राम मंगल दास

गोकुल भवन, अयोध्या

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान तथा संपर्क सूत्र :

1. गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड,
अयोध्या-224 123 (उ.प्र.)
फोन : 05278-32484

2. प्रो. राजीव कुमार वर्मा
c/o श्री एस.सी. वर्मा, A-436, शाहपुरा,
भोपाल-462 039 (म.प्र.)
e-mail : rkvarma@uwo.ca
फोन : 0755-426124

3. Prof. Rajiv K. Varma
Dept. of Electrical & Computer Engineering
University of Western Ontario
London, Ontario, N6A-5B9 CANADA
e-mail : rkvarma@uwo.ca
Tel : 001-(519) 661-2111 ext. 85111
Fax : 001-(519) 661-3488

कापीराइट : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : मई 2002

प्रतियाँ : 500

न्योछावर : रु. 190/-

मुखपृष्ठ चित्र : गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी का सर्वप्रथम चित्र (1946)

प्रकाशक : प्रो. राजीव कुमार वर्मा

कम्प्यूटरीकरण : श्री टी. सदागोपन

मुखपृष्ठ सज्जा : श्री काशी मिश्रा

मुद्रक : श्री प्रदीप भार्गव
शारदा ग्राफिक्स (प्राइवेट) लिमिटेड
111-A/407, अशोक नगर
कानपुर - 208 012 (उ.प्र.)
फोन : 0512-290791, 256591

गणपति वन्दना

गणपति को प्रथमै करों वन्दन। मिलत सुक्ख दुख होत निकन्दन।
रिध्दि सिध्द सोहत संग जाके। भाल विशाल सिन्दूर को चन्दन।
अब हम पर नित दाया कीजै। वाहन मूष उमा के नन्दन।३।

सुनिये विनय गजानन अब हम सुनाने वाले।
अब पार बेड़ा मेरा, तुम हौ लगाने वाले।
है मूष की सवारी औ डील डौल भारी।
देवन में आदि पूजन अपनी कराने वाले।
कवियों को कार्य्य सारो, बुद्धी मेरी सुधारो।
हिरदय में मेरे बसिये, आनँद बढ़ाने वाले।६।

शारदा वन्दना

शरन मैं निशि दिन हूँ तेरी, सुनौ शारद महरानी जी।
बसौ हिरदय में आ मेरे, सकल गुण की निधानी जी।
तुम्हारे ही बदौलत से हुये कवि लोग ज्ञानी जी।
अरज मेरी सुनौ चित दै, कहौं मैं कछु कहानी जी।४।

- परमहंस राम मंगल दास



गुरु वन्दना

श्री गुरु महिमा को कहै अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

- भगवान राम जी



दो शब्द

हम 28 की उम्र में राम घाट पर अपने गुरु जी परमहंस बाबा बेनी माधौ दास जी महाराज के पास आये। दो माह बाद सबसे पहले शुरु शुरु ध्यान में राम विवाह देखा था। महारानी जी दस हजार सखिन के बीच में जै माल लेकर धीरे धीरे चलती थीं, सब सखी मंगल गाती थीं। 20 कड़ी का था। ऐसे स्वर मिले थे मालूम होता था एक जनी गा रही है। हम सुबह लिखना चाहते थे तो महाराज जी ने मना कर दिया। कहा "पहिले पहिले न लिखौ नहीं तो फिर कुछ न होगा।" तब सब भूल गए।

फिर एक दिन नित्य दरबार गए। वहाँ बीच में राजा जनक जी बैठे थे, गल मोच्छा रखाये, गोरे गोरे पतरे पतरे, बन्ददार लम्बा अंगरखा पहिने, सफेद धोती, चौकसिया टोपी सर पर थी। हमने पूछा "आप कौन हैं," तो कहा "हम राजा जनक हैं।" हम ने कहा "आप राजा जनक हैं तो हमको राम जी का कोई पद सुनावो।" तो खड़े होकर, कुछ झुक कर दाहिना हाथ सामने करके पद सुनाने लगे, चारौं तरफ ठौर पर घूमकर पहिली कड़ी सुनाकर मस्त हो गए। तब हमै सब याद हो गया।

इसके 6 माह बाद नानक देव राम घाट पर बट बृक्ष के नीचे दिन में 11 बजे प्रगट हुए। शुकुल धोती पहिने थे जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहिराई जाती है - पीली रंगी इस रीति से बहुत पंडित अभी पहिरते हैं। सफ़ेद बाल चांदी चांदी ऐसे चमकते थे, दाढ़ी भी सफेद चमकती थी। बहुत गोरे थे, शरीर महकता था। हम दंडवति किया। फिर उनके गले के पास से पेट तक चाँदी कैसी पटरी प्रगट हो गई। उसमें 35 अक्षरी खुदी थी काली रोशनाई की। हमसे कहा "सुनावो।" हमने कहा "हम रोज़ इसका पाठ करते हैं।" सुनाया तो वह पटरी उलट गई, पेट की तरफ अक्षर हो गए। हम से कहा "यह स्तोत्र तुमको सिद्ध हो गया।" फिर हमने चर्णोदक उतारा तब अन्तर हो गए। फिर थोड़े दिन में प्रगट होकर थोड़ा बताया। फिर तीसरी बार सब बता कर अन्तर हो गए। महाराज (गुरुजी) ध्यान में बैठे थे।

जब हमारी अवस्था 42 रही होगी, महाराज का शरीर शान्त हो चुका था, तो तमाम अजर अमर सिद्ध संत आने लगे, झुंड के झुंड और कहैं हमारा पद लिख लो, हमारा पद लिख लो। तो हम कहा, "का हमैं यादि रहैगा।" तो सरस्वती जी प्रगट हो गईं और आशीर्वाद दिया कि जो कोई जो कुछ तुमको बतायेगा या सुनायेगा सब तुम्हें यादि हो जायगा। तब से हमें यह सब यादि हो जाता है। हर मजहब के सिद्ध सन्त आते, सतसंग करते और अपना कोई पद सुना जाते। तो हम भोर में उठते ही पेन्सिल से कागज पर लिखते। दिन-दिन भर लिखते-लिखते थक जाते तो गोस्वामी जी (तुलसीदास जी) ने कहा - थोड़ी देर दिवाल के भल बैठकर आराम कर लिया करो, तो वैसा करने लगे, तो थकान चली जाती थी।

हमने दो किताब (कक्षा दो तक) पढ़ा है। जो हमको बहुत से अजर-अमर सिद्ध सन्तों ने तथा देवी-देवताओं ने दर्शन देकर लिखाया था, मैं श्री सरस्वती जी की कृपा और आशीर्वाद से उसको लिखने में समर्थ हो सका। किसी किसी महापुरुष ने एक दोहा या केवल एक पद ही लिखाया है और किसी ने अधिक लिखाया है। फिर ऐसे सिद्ध सन्त अभी तक दो हज़ार के ऊपर मिले हैं जिनके पद लगभग 3500 से ज्यादा ही होंगे। कभी गिने नहीं गए हैं। वह सब हम लिख लेते थे और वह हमारे भक्त साफ साफ नकल कर देते। मास्टर हरनाथ सिंह ने खुशखत लिखा है। चार जिलदें (ग्रन्थ) हैं।

इनको जो पढ़ेगा - प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा।

जिसको जिस देवी देवता में प्रेम हो, मन लगाकर और अपने इष्ट में विश्वास करके थोड़ा जप या पाठ नित्य करे।

द: परमहंस राम मंगल दास

परमहंस राम मंगल दास
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड,
अयोध्या

प्रस्तावना

भगवान जी की असीम कृपा व परंपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी महाराज की अनन्त दया से इस द्वितीय दिव्य ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। इस आशा से कि यह अनेकानेक भक्तजनों के हाथों में पहुँचेगा व उन सबके कल्याण में पथ प्रदर्शक होगा - हृदय में अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

इस ग्रन्थ का नामकरण दिव्य रूप से "श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुखविलास" हुआ है। इस ग्रन्थ की एक विशेषता यह है कि इसमें हर धर्म के संत तो आये ही हैं बल्कि हर जाति व हर पेशे (व्यवसाय) के संत स्त्री पुरुषों ने साक्षात् प्रगट होकर आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं। उन्होने यह लिखवाया है कि किस प्रकार जीवन जीना चाहिये। तथा यह भी लिखवाया है कि विभिन्न सत्कर्म व दुष्कर्म करने के परिणाम इस लोक में तथा परलोक में क्या होते हैं। ये पद अत्यन्त ही प्रेरणास्पद हैं।

इन दिव्य ग्रन्थों की भाषा के बारे में एक बड़ी विशेष बात एक स्त्री सन्त श्री राम जनी जी ने पद 778 में लिखवाई है कि इन दिव्य ग्रन्थों के संबंध में जगत् जननी श्री राधा महारानी (लाड़िली) जी की यह आज्ञा है:

दोहाः- उलट पुलट जो शब्द हों, सो न सुधारे कोय।
कहैं लाड़िली नहीं तो, प्रेम जायगा धोय।।

यह जानने योग्य बात है कि प्रथम दिव्य ग्रन्थ "श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" के प्रथम भाग में श्री गुरु वशिष्ठ जी ने लिखवाया है कि इन दिव्य ग्रन्थों की रचना जगत् जननी श्री जानकी जी व श्री राधा जी की ही आज्ञा व कृपा से हुई है।

परं आदरणीय श्री रामसेवक दास जी का मैं आत्मिक रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने श्री गुरुदेव भगवान के इन दिव्य ग्रन्थों को छपवाने की अत्यन्त कृपापूर्ण अनुमति दी व सतत् शुभाशीर्वाद प्रदान किया है। गोकुल भवन के समस्त आश्रमवासियों तथा सभी भक्तजनों, जिनका आदरपूर्वक उल्लेख पूर्व-प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाओं में किया गया है, उन सभी का स्नेहपूर्ण सद्भाव व सहयोग इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन में निरन्तर बना हुआ है। उन सभी का मैं अत्यन्त ऋणी हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर "रेफ-बिन्दु" तथा गुरुदेव श्री परमहंस राममंगलदास जी महाराज की छबि का चित्रांकन बड़े मनोहारी रूप से श्री काशी मिश्रा जी ने किया है। उनके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

परम पूज्य गुरुदेव राम मंगल दास जी महाराज के श्री चरण कमलों में प्रार्थना है कि वे कृपा करें कि उनके सभी दिव्य ग्रन्थ जन-जन तक पहुँचे तथा सर्व जगत का कल्याण करें। उन्हीं की कृपा से ही इन ग्रन्थों का प्रकाशन अभी हो रहा है व उन्हीं के आशीर्वाद से ही इन ग्रन्थों का प्रकाशन आगे संभव हो पायेगा - यही सत्य है, यही सत्य है, यही सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक: 25 मई 2002

पूर्व-प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाएँ

दिव्य ग्रन्थ १: भाग २

भगवान की असीम दया व परंपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राममंगलदास जी की कृपा से इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य सम्पन्न होने पर अत्यन्त हर्ष हो रहा है। सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों तथा हर धर्म के सिद्ध सन्तों व महापुरुषों ने गुरुदेव के समक्ष प्रकट होकर जो आध्यात्मिक पद तथा वार्तिक (कथाएँ) लिखवाए उन्हें श्री गुरुदेव ने चार मुख्य दिव्य ग्रन्थों में संग्रहीत किया है। श्री गुरुदेव द्वारा रचित इन चार ग्रन्थों में दिव्य ग्रन्थ-१ "श्री रामकृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" का प्रथम भाग सन् 1999 में छपा तथा उसका विमोचन अयोध्या जी के श्रद्धेय संत श्री नृत्य गोपाल दास जी के कर कमलों द्वारा 31 दिसम्बर 1999 को हुआ। इस दिव्य ग्रन्थ का यह दूसरा भाग अब आपके हाथों में हैं।

यह ग्रन्थ श्री गुरुदेव भगवान की इच्छा व आशीर्वाद से तथा अनेक भक्तों के अप्रतिम सहयोग से ही छप सका है। गुरुदेव के अनन्य शिष्य परम आदरणीय श्री रामसेवक दास जी का मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जो श्री गुरुदेव के गोकुल भवन का समस्त कार्य गुरु उपदेशों के अनुसार संभाल रहे हैं। उन्होने अत्यन्त कृपा कर गुरुदेव भगवान के दिव्य साहित्य को प्रकाशित करने की अनुमति मुझे प्रदान करी तथा इस कार्य के लिये अपना अपूर्व सहयोग व आशीर्वाद दिया। गोकुल भवन आश्रम के ही श्री प्रेमानन्द जी के अपरिमेय सहयोग व विश्वास के लिये में उनका आभारी हूँ। श्री रामायणी जी व श्री परशुराम जी की सतत् शुभकामनाएँ इस कार्य के लिये मुझे प्राप्त हुई हैं जिसके लिये मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। श्री अवस्थी जी अत्यन्त श्रद्धा व निष्ठापूर्वक जो प्रयास कर रहे हैं कि श्री गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी का साहित्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके, वो अत्यन्त सराहनीय है।

स्वर्गीय श्री जगत नारायण बाबू जी को हृदय से नमन करता हूँ, जो इन सारे दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन के प्रेरणास्रोत थे तथा जिन्होने इन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये मेरा निरन्तर उत्साह वर्धन किया। वे 1944 से गुरुदेव के शिष्य थे तथा 1971 से गोकुल भवन में अन्त समय तक निरन्तर गुरुदेव की सेवा में रत रहे। वे कहते थे, "ये ग्रन्थ अलौकिक हैं। न पहले कभी ऐसे ग्रन्थ बने और न बाद में शायद कभी बनेंगे। हर परिवार में, सम्मान पूर्वक जैसे रामायण-गीता रखी जाती हैं, वैसे रखने लायक हैं। इनके नित्य पाठ से घर में रहने वालों को मार्गदर्शन मिलेगा व उनका कल्याण होगा।"

ये दिव्य ग्रन्थ श्री बलराम वर्मा जी के प्रयासों से गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित रखे हुये हैं। उन्होंने ग्रन्थों के बारे में बड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से मुझे अवगत कराया, उसके लिये उन्हें बहुत धन्यवाद देता हूँ। श्री गणेश प्रसाद माथुर जी का ऋणी हूँ जिन्होंने श्री गुरुदेव महाराज जी के अनेक हस्तलिखित पत्र व उपदेशों का संकलन तथा उनके साहित्य के अंश मुझे दिये, जिनको प्रभु इच्छा से भविष्य में छपाया जायेगा। उनकी शुभकामनायें व आशीर्वाद पाकर मैं कृतकृत्य हुआ हूँ।

मन में अतीव इच्छा थी कि परंपूज्य गुरुदेव के अधिकाधिक चित्र इन ग्रन्थों में छापे जा सकें, ताकि भक्तजन गुरुदेव के अनेक रूपों के दर्शन कर सकें। मैं डा० रमेश निगम का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने कृपा कर श्री महाराज जी के तीन फोटो एलबम मुझे दिये। इन एलबम के कई चित्र इस ग्रन्थ में समाहित हैं तथा कई अन्य चित्र श्री गुरु कृपा से भविष्य में छपने वाले ग्रन्थों में छापे जायेंगे। श्री बागेश्वरी नारायण श्रीवास्तव जी तथा डा० के० एन० मिश्रा जी ने जो हर पग पर मार्ग दर्शन किया व श्री गुरुदेव के चित्र उपलब्ध कराने में सहयोग दिया है, उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। श्री रविशंकर तिवारी को ग्रन्थों के वितरण में उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

राजा भानु प्रताप सिंह जी का अति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने परंपूज्य श्री गुरुदेव के चित्र, उनका एकमात्र वीडियो तथा आडियो कैसेट मुझे दिया है, ताकि उनके संशोधित तथा समुन्नत रूप सब पाठकों व भक्तों के लिये भविष्य में उपलब्ध कराये जा सकें। जब भी मुझे प्रूफ-रीडिंग में संशय होता वे देर रात तक जागते व कृपा कर उन संशयों का निवारण करते।

आई०आई०टी० कानपुर में प्रोफेसर टी.वी. प्रभाकर, डा. टी. अर्चना तथा श्रीमती रजनी मूना का परं आभारी हूँ जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के वेबसाइट के निर्माण में पूर्ण सहयोग दिया है। इस वेबसाईट के माध्यम से सारे विश्व में कहीं भी कम्प्यूटर द्वारा श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ पढ़े जा सकते हैं। इस समय प्रथम दिव्य ग्रन्थ का प्रथम भाग वेबसाईट पर उपलब्ध है।

इस वेबसाईट का विकास किया जा रहा है तथा शीघ्र ही श्री महाराज जी का अन्य दिव्य साहित्य, चित्र, वीडियो व आडियो को इसमें समाहित कर लिया जायेगा। इस वेबसाईट का पता है:

www.rammangaldasji.org

आई॰आई॰टी॰ कानपुर के टेलिविज़न सेन्टर तथा उसमें कार्यरत श्री अरविंद मिश्रा जी का आभारी हूँ जिनके माध्यम से श्री गुरुदेव का वीडियो तथा आडियो के एडिटिंग का कार्य हो रहा है। श्री गुरुदेव के दिव्य ग्रन्थों की वेबसाईट डिजाइनिंग के लिये श्रीमती सन्ध्या मिश्रा को धन्यवाद देता हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ के अन्त में परमहंस श्री राममंगलदास जी की गुरु परम्परा के आदिगुरु "श्री स्वामी रामानन्द जी" जो श्री विष्णु भगवान के अंशावतार थे, उनके द्वारा प्रकट होकर लिखवाये इन ग्रन्थों की महिमा का पद समाविष्ट किया गया है। तदोपरान्त डा॰ सुधाकर अदीब द्वारा विरचित श्री परमहंस राममंगल दास जी की आरती सम्मिलित की गई है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में आई॰आई॰टी॰ के प्रोफेसर सुमित गांगुली जी का जो अनुपम सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिये मैं उनका ऋणी हूँ। श्री प्रदीप भार्गव जी ने कठिन समयाभाव के बावजूद भी इस ग्रन्थ को समय से छापा है उसके लिये मैं उनका अति कृतज्ञ हूँ।

इस ग्रन्थ को अत्यन्त श्रद्धा व लगन से श्री सदागोपन जी ने कम्प्यूटर में टाइप किया है व रूप सज्जा की है। इस कार्य के लिये उनके तथा उनके परिवार की तपस्या के प्रति आभार व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं।

इस ग्रन्थ की सपूर्ण प्रूफ-रीडिंग मेरी धर्मपत्नी श्रीमती मालिनी वर्मा ने की है। इस सहभागिता के बिना यह ग्रन्थ समय पर नहीं छप पाता।

इस प्रकाशन कार्य का एक एक अंग श्री गुरुदेव ने ही जुटाया है तथा उन्होने ही कराया है। वे ही इन दिव्य ग्रन्थों के प्रगटकर्ता व प्रकाशक हैं - यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांकः 27 दिसम्बर 2001

दिव्य ग्रन्थ १: भाग १

श्री महाराज जी की महिमा

भगवान श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं प्रकट होकर श्री महाराज जी को लिखवाया हैः-

श्री गुरु महिमा को कहै, अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

श्री महाराज जी ने अपनी पुस्तक "भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत" के "दो शब्द" में लिखा है, "कुछ समय हुआ भगौती (माँ भगवती) का हुक्म हुआ कि कुछ भक्तों की कथाएँ लिख दो। अवस्था 82 की हो गई है, शरीर कमजोर है पर भगौती का हुक्म है तो धीरे धीरे अभी तक 300 से ऊपर कथाएँ लिखी हैं। पहिले इनमें से 200 छपैंगी, फिर भगवान की जैसी इच्छा होगी।"

जो बातें स्वयं श्री भगवान, देवी देवताओं व संतों ने श्री महाराज जी के बारे में इन चार दिव्य ग्रन्थों में कही हैं तथा उपरोक्त भक्तों की कथाओं में लिखी हैं, जो मैं अपनी निपट बुद्धि से जान सका, वे ही बातें उन्हीं की कृपा से मैं नीचे लिख रहा हूँ।

जगदीशपुरी धाम की यात्रा के वर्णन में महाराज जी ने लिखा है - "जब गौरांग जी के मंदिर में गये जहाँ वह छै भुजा से विराजमान हैं तो लम्बी दंडवति करने का विचार किया तो बड़ा प्रकाश हुआ। मालूम हुआ कि सारा संसार प्रकाशमान है। फिर लय दशा हो गई। ज्ञान, ध्यान, भान भूल गया। सीधा काठ ऐसा शरीर खड़ा रहा। तब भगवान ने अपना दाहिना चरण हमारी छाती पर लगाया। हम होश में आ गये। हमने चरण को माथे में लगा कर छोड़ दिया। वहाँ पर कबीर जी, मलूक साहेब, कर्मा माई, हरी दास, नित्यानन्द जी, रघुनाथ, अद्वैताचार्य और श्री बास के दर्शन हुये। सबने कहा, "महाराज, कृष्णावतार का यह सखा आप का सुखदेव है।" भगवान मुस्करा दिये। हमारे आँसुओं की धारा चलने लगी। वै प्रेम के आँसू बर्फ जैसे ठंडे होते हैं। यह प्रेम की नदी से बहते हैं। दुख की नदी के आँसू गरम होते हैं। दो नदी आँखों में हैं।"

बूढ़ी माता, हुसेन गंज, लखनऊ, की कथा में बूढ़ी माता ने श्री महाराज जी का हाल द्वापर का बताया था कि कृष्ण भगवान ने कहा है, "यह हमारा सखा सुखदेव ग्वाल है हर समय संग नाचता, गाता था और दूध लूटने में संग रहता था"।

इस दिव्य ग्रन्थ में श्री महाराज जी के बारे में इन्होने यह लिखाया है :-

श्री भद्रसेन जी

राम मंगल दास तेरा नाम कहते संत जन ।
श्री गुरु जी के चरण सेवा में रहता था मगन ।।
दुनियां की मौज उड़ा चुका करता है अब प्रभु का भजन ।
किरपा हुई सरकार की अब छूटिगा आवागमन ।।

श्री सीता जी

गुरु दयाल तुम पर भये, दीन शब्द का रंग ।
आशिरवाद हमार यह, रहो सदा हरि संग ।।

श्री कलियुग महाराज जी

धन्य धन्य तुम धन्य हो धन्य धन्य तुम धन्य।
सब देवन के दरस भे तुम पर हम परसन्न।।
तुम हमार गुरु भाय हो हम तुमार गुरु भाय।
ताते विनती करत हौं बार बार सिर नाय।।
गुरु सेवा का फल यही आँखिन देखो भ्रात।
आवागमन न होय अब छूटा जग से नात।।
चहें तहाँ अब तुम रहौ राम कृष्ण हैं संग।
अब तुम्हारि रक्षा करैं शिव समेत बजरंग।।

श्री कलियुग महाराज जी को गुरुदीक्षा स्वामी रामानन्द जी ने दी थी और श्री महाराज जी स्वयं स्वामी रामानन्द जी की परम्परा के हैं।

श्री लक्ष्मी जी

बसो प्रभू के पास, हमको सब मालुम पता।

श्री पार्वती जी

सुनो पुत्र दुख भाग, अब जग में आओ नहीं।

श्री कबीर जी

सुर मुनि सब परसन्न हैं सुनिये तुमसे तात ।
ताते हमहूँ कहत हैं, तन मन से सब बात ।।

श्री वशिष्ठ जी

सब तुम पर नित खुश रहें गुरु सेवा तुम कीन ।
राम कृष्ण का खेल यह तुमरे संग जो कीन ।।

यह ग्रन्थ श्री महाराज जी के लिखे चार दिव्य ग्रन्थों के प्रथम ग्रन्थ का पहला भाग है। दूसरे भाग में श्री महाराज जी ने अपने पद में लिखा है।

गोलोक का कछु चरित दिल में था मेरे लिखता अभी।
श्री कृष्ण जी ने कह दिया अब कछु नहीं लिखिये कभी।।
अंदर से मेरे नाम की धुनि हो रही बसु याम है।
सुनते रहो इस शब्द को जो सत हमारा नाम है।।
और थोड़े दिन रहो अबहीं यहां कछु काम है।
आवागमन नहिं होय कबहूँ बसौ मेरे धाम है।।

यह पद श्री महाराज जी ने 1945 ईस्वी के लगभग लिखा था। इसमें श्री कृष्ण भगवान ने श्री महाराज जी को आशीर्वाद दिया था कि वे भगवान के साथ गोलोक धाम में ही रहेंगे। इसके उपरान्त एक विचित्र घटना हुई। श्री महाराज जी ने भक्तों की कथाओं में लिखा है, जो छप चुकीं हैं:-

"श्री राम सिंह, गंगवल स्टेट, जिला बहराइच के राजा थे। यह बहुत बीमार पड़े, मारकेश (ग्रहों के अनुसार मृत्यु योग) लग गया। घर का काम बहुत बाकी था। इनके संबंधी और घर के लोग हमारे पास आये, बहुत रोये। हमें दया आ गई तो हमने अपना सिर मान दिया तो अच्छे हो गये। मारकेश टल गया।

श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, कचहरी रोड, लखनऊ, के रानी इटौंजा के वकील हैं। इनका भी मारकेश आ गया। रानी बहुत दुखी हुई, सारे मुकदमे झंझट के पड़े थे। राजा साहब थे नहीं। सब महाबीर प्रसाद को सुपुर्द कर दिये थे। रानी ने अपनी करुण कहानी हमसे कही। हमें दया आ गई तो हम अपना सर तो मान ही चुके थे पहले राम सिंह को, धड़ महाबीर प्रसाद को मान दिया।

अब जब से भगवती ने रोक दिया है, सर, धड़ राम सिंह, महाबीर प्रसाद को माना था, तब से, कहा, दान जप करा दिया करो, यथा शक्ति धर्म जो तन मन से करेगा

उसका भला होगा और जिसका भाव तुम में होगा उसका काम भगवान पूरा करेंगे। तुमको यही करने का अब अधिकार दिया गया है। शरीर हमारा हो गया।''

राजा राम सिंह, गंगवल, का 9-11-1973 को शरीर छूटा। श्री महाराज जी ने 21-11-1973 को एक अप्रकाशित भक्त कथा में लिखा है ''भगौती ने मुझे बताया कि राम सिंह जब पहले बीमार पड़े थे तभी से मारकेश शुरू हो गया था। तुमने उनके लिये अपना सिर और महावीर प्रसाद के लिये अपना धड़ मान दिया। हमें इतने दिन आयु बढ़ा देने की आज्ञा हुई और मैने अन्त में उन्हें बैकुण्ठ पहुँचा दिया।''

श्री महाराज जी की पुनः भगवती जी से (रामसिंह से संबंधित) वार्ता 22-11-73 को हुई जो उन्होंने अपनी अप्रकाशित कथाओं में लिखी है :-

भगौती ने कहा ''हमारे ऐसा कोई भक्त नहीं है जो अपना सर व धड़ अपने भक्त के लिए हमैं माना हो। हम तुमको भी अपने पास राखैंगी। कृष्ण भगवान ने तुम से कहा था, ''कुछ दिन और रहौ थोड़ा काम तुम से कराना है। फिर हमारे पास आवोगे। अब तुम सर व धड़ हमें दे चुके तो भगवान से हम तुम को माँग लेंगी। भगवान हमारी बात न टालेंगे। वै दीन दयाल करुणासागर हैं।'' और यह कहा ''जब अपने पास रखौंगी तो ऐसी शक्ति तुमको दे दूँगी कि सब देवी देवताओं के लोक देख आवोगे, सब से मिल आवोगे।''

भगवती ने आगे कहा कि जिसकी सुरति तुम में लग जायगी वह तुम्हारे पास आ जायगा। वह तार ऐसा है कि खींचि लेता है छूटता नहीं। जब सुरति लगाने वाला आ जाता है तभी छूटता है। इसी तरह सुरति लगाने से देवी देवता सब आ जाते हैं। इस सुरति के तार को बहुत कम भक्त जानते हैं। इसका प्रचार जानकी जी ने किया है। प्रथम शंकर जी को बताया, हनुमान जी को बताया। भरत जी, लखनलाल, शत्रुहन को बताया, माण्डवी, उर्मिला, श्रुतिकीर्ति को बताया। इसका बड़ा विस्तार है। सब काम सुरति से होते हैं। थोड़ा लिखाया है।'' हमने कहा ''जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही हमैं मंजूर है।''

भगौती ने फिर कहा ''जिसका आप में सच्चा भाव और विश्वास होगा उसका काम ठीक होगा।''

17 दिसम्बर 1984 की रात को श्री काली जी महाराज जी के सामने विशाल रूप में प्रकट हुईं। वे अपने हज़ार हाथों में विभिन्न प्रकार के अस्त्र धारण किये हुईं थीं। उन्होने श्री महाराज जी से कहा ''प्रिय पुत्र तुम्हारा इस संसार में कार्य पूरा हुआ। हम तुम्हें

लेने आई हैं। अब तुम चलो।'' अगले ही दिन 18-12-1984 से श्री महाराज जी ने पूरी तरह से अन्न जल लेना छोड़ दिया। अन्ततः तेरह दिन के पूर्ण उपवास के बाद 31-12-1984 की रात को तीन बजे उन्होंने महासमाधि ले ली।

श्री गुरुदेव के महाप्रयाण के कई दिनों बाद तक भी भक्तों के मन में अनिश्चितता थी कि क्या उन्होंने वास्तव में शरीर छोड़ दिया है। क्योंकि उस समय श्री महाराज जी के शरीर में हृदय गति नहीं थी फिर भी आँखें खुलती बन्द होती थीं। ऐसा न कभी देखा गया था न सुना गया था। तो मैने परमपूज्य संत श्री देवरहा बाबा जी से ये सब बातें बताईं और पूछा। तब उन्होने कहा ''बच्चा, यह सब सिद्ध सन्तों की लीला है। उन्होने शरीर छोड़ दिया है। वे तो भगवत् के स्वरूप थे। उनके बारे में जो कहा जाये वो थोड़ा है।''

इसके कुछ दिनों बाद पूज्य बुआजी (श्री महाराज जी की बहिन जी) जो स्वयं अत्यन्त उच्च सिद्ध अवस्था में थीं, उन्होने बताया कि श्री महाराज जी ने उनसे प्रकट होकर कहा था कि तुम हमारी दिव्य अन्तिम यात्रा देखोगी। बुआ जी ने बताया कि एक अलौकिक दिव्य विमान में श्री सीता जी, श्री राधा जी, श्री लक्ष्मी जी व श्री पार्वती जी बैठ कर आईं और श्री महाराज जी को अपने साथ ले गईं।

श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ

मैं निपट मूर्ख अज्ञानी श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थों के बारे में क्या लिख सकता हूँ! श्री भगवान की असीम कृपा व इच्छा से तथा पूज्य श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी के आशीर्वाद से ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है।

गुरुदेव ने इन ग्रन्थों को 1933 ईस्वी से आश्रम में पूज्यनीय रूप से सुरक्षित कर रखा था। गुरुदेव अक्सर इन ग्रन्थों का भक्तों से पाठ करवाते। कुछ भक्तों को इन ग्रन्थों से कुछ पद उतार कर लिख लेने की आज्ञा देते। इन ग्रन्यों के कुछ अंश श्री महाराज जी की अनुमति से छपवाये गये पर पूरे ग्रन्थ अप्रकाशित ही रहे।

मेरे हृदय में बहुत इच्छा थी कि गुरुदेव की इस अमूल्य निधि का पूर्ण रूप से प्रकाशन किसी प्रकार से हो सके। श्री महाराज जी के शरीर छोड़ने के आठ वर्ष बाद 1992 में मैंने पूज्य योगी सन्त श्री स्वामी राम जी से प्रार्थना की कि इन ग्रन्थों को छपवाने की इच्छा है। उस समय मैं दो वर्षों के लिये कनाडा जा रहा था। उन्होंने कहा ''जब भारत

लौट आओ तब करना।'' जब भारत लौट आया तब पूछा, तो कहा ''सब काम धीरे धीरे करो।''

15 दिसम्बर 1995 को आदरणीय श्री राम सेवक जी जिन्होंने श्री महाराज जी की अनन्य सेवा की है तथा अब सारे गोकुल भवन आश्रम का श्री महाराज जी के उपदेशानुसार संचालन कर रहे हैं, उन्होंने अत्यंत कृपा कर मुझे इन चारों ग्रन्थों तथा कथाओं को फोटोकापी करने तथा छपवाने की अनुमति प्रदान की। मैं उनको हृदय से नमन करता हूँ।

श्री वशिष्ठ जी ने स्वयं इस ग्रन्थ में पद 253 में लिखाया है कि जगत जननी श्री जानकी जी व श्री राधा महारानी जी की कृपा व आशीर्वाद से इस दिव्य ग्रन्थ की रचना हुई है। गुरु वशिष्ठ जी ने ही प्रकट होकर पद 25 में इस दिव्य ग्रन्थ का नामकरण ''श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली'' किया है। सब से विचित्र बात यह है कि श्री राधा जी ने प्रथम ग्रन्थ के द्वितीय अप्रकाशित भाग में कहा है कि जब श्री कृष्णदास पयहारी जी प्रकट होकर अपने पद लिखवायेंगे तब इन ग्रन्थों का समापन होगाः-

ऐहैं कृष्णदास पयहारी। कहिहैं हरि चरित्र सुखकारी ।
तब यह चरित समापति होई। भरिहैं प्रभु यश तत्वनि चोई ।।

और वास्तव में चतुर्थ ग्रन्थ जिसकी समापन तिथि 12-6-58 ईस्वी पड़ी है उसमें अन्तिम संत पयहारी जी ही हैं जिन्होंने दिव्य रामायण लिखवाई है। जब श्री महाराज जी कथाएँ लिख रहे थे 82 की अवस्था में तब एक सन्त प्रगट हुये और उनसे सत्संग करने लगे। श्री महाराज जी ने कहा ''आप हमें जानते होते तो जब हमारा शरीर ठीक था तब आते तो हमको बताते तो हम सब लिख लेते, कितने दिन लगते'', तो कहा ''मैं आपको जानता था लेकिन आ नहीं सके, सब काम भगवान की आज्ञा से होते हैं।''

इससे सिद्ध होता है कि इन सारे ग्रन्थों की रचना कैसे भगवान की इच्छा से इतने व्यवस्थित रूप से हुई है। एक ही विषय पर बोलने वाले संत एक ही साथ एक क्रम में प्रगट हो कर लिखवाते थे। फिर वे यह भी कहते थे कि अमुक विषय पर आपको वे संत लिखवा चुके है। जैसे, श्री ईसा मसीह जी ने शंकर जी, शुकदेव जी व गुरु नानक जी का उल्लेख किया है। सच है - भगवान की लीला अपरम्पार है।

एक दिन मैं प्रथम ग्रन्थ को अपने पिताजी को पढ़ कर सुना रहा था कि अचानक श्री वशिष्ठ जी के पद पर दृष्टि पड़ी। उसमें वशिष्ठ जी ने संवत् 1990 अर्थात् 1933 ईस्वी में श्री महाराज जी को प्रगट होकर आज्ञा दी थीः-

उनइससै निन्नानवे जब संवत् लगि जाय।
तब यह चरित छपाइये साँची दीन बताय।।

उसी पृष्ठ के नीचे ग्रन्थ समापन तिथि 11 जुलाई 1945 पड़ी हुई थी। मन में प्रश्न उठा कि वशिष्ठ जी ने क्या विक्रमी संवत् 1999 में छपवाने की आज्ञा दी थी या ईस्वी संवत् 1999 में छपवाने का आदेश दिया था। कानपुर के योगी श्री महेश चन्द्र द्विवेदी जी ने इसको स्पष्ट किया कि वशिष्ठ जी की आज्ञा ईस्वीं संवत् 1999 मे छपवाने की ही है। क्योंकि विक्रमी संवत् 1999 के अनुसार ईस्वी संवत् 1942 होता है। जब ग्रन्थ की समाप्ति 11 जुलाई 1945 में ही हुई तो ग्रन्थ 1942 में कैसे छप सकता था। इसके अतिरिक्त यदि 1942 में छपवाने की आज्ञा होती तो श्री महाराज जी अवश्य ही वशिष्ठ जी की आज्ञा पालन करते हुए इस ग्रन्थ को उस वर्ष छपवा देते। पर ऐसा नहीं हुआ। श्री महेश जी का हृदय से अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे सबसे पहले 1976 में श्री महाराज जी के बारे में बताया, अनेक उपकार किये तथा सदा मार्गदर्शन किया।

आदरणीय श्री जगतनारायण जी का मैं ऋणी हूँ जिनका मुझपर अत्यन्त स्नेह है तथा जिन्होने श्री महाराज जी के ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये सदा ही उत्साह वर्धन किया।

मैं अपना हार्दिक आभार अपने अभिन्न मित्र श्री सदागोपन जी के लिये व्यक्त करता हूँ जो यद्यपि दक्षिण भारतीय हैं पर उन्होंने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक और तन मन से इन ग्रन्थों को हिन्दी में कम्प्यूटर में टाइप किया तथा उनकी रूपरेखा तैयार की। श्री सदागोपन जी के परिवार से इस कार्य के लिये जो सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिये मैं उनको सादर धन्यवाद देता हूँ।

इन ग्रन्थों की फोटोकापी एक मुस्लिम भक्त के द्वारा की गई जिनको मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

गुरुदेव द्वारा समस्त दिव्य पद चार ग्रन्थों में संकलित किये गये हैं। "श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" प्रथम ग्रन्थ के दो भागों का प्रथम भाग है। बाकी ग्रन्थ

तथा गुरुदेव द्वारा लिखित भक्तों की कथाएँ बाद में प्रभु कृपा से छपाई जायेंगी। ये सारे ग्रन्थ अवधी भाषा में हैं। इन ग्रन्थों की टीका का कार्य भी हो रहा है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन भगवान की असीम कृपा, सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों, पैगम्बरों, सिद्ध सन्तों व महापुरुषों के आशीर्वाद से हो रहा है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री महाराज जी के समस्त भक्तों की भगवान से प्रार्थना के फलस्वरूप ही हो रहा है।

यह सम्पूर्ण कार्य गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी महाराज ने ही किया है तथा करवाया है - यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांकः 25 दिसम्बर 1999

[illegible] हैं।

[illegible]

[illegible] है।

[illegible]

दिनांक 28 दिसम्बर 1990



दिव्य-ग्रन्थ महिमा

हरि हरिभक्तन का चरित, है अति सुख की खानि।
रामानन्द यह कहत हैं, लेव वचन मम मानि।१।

पढ़ै सुनै जो ग्रन्थ यह, तन मन प्रेम लगाय।
हर्ष शोक की शान्ति हो, भवसागर तरि जाय।२।

- श्री स्वामी रामानन्द जी

भक्त जनन का चरित यह पढ़ै सुनै जो कोय।
निश्चय पावै भक्ति पद, आतम अनुभव होय।।

- परमहंस राम मंगल दास



विषय सूची

		पृष्ठ सं०
	गणपति वन्दना	i
	शारदा वन्दना	i
	गुरु महिमा	ii
	दो शब्द	iii
	प्रस्तावना	v
	पूर्व-प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाएँ	vii
	दिव्य-ग्रन्थ महिमा	xix
1.	श्री गिरिजा बाई जी	1
2.	श्री राम कुँवरि जी	,,
3.	श्री शेश सिंह जी	,,
4.	श्री माई कृष्ण कुँवरि जी	2
5.	श्री पण्डित राम सुरति जी	,,
6.	श्री भानु मती जी	3
7.	श्री कमानी शाह जी	,,
8.	श्री ढफाली शाह जी	,,
9.	श्री काबिल शाह जी	4
10.	श्री सूझन शाह जी	,,
11.	श्री जूझन शाह जी	5
12.	श्री बूझन शाह जी	6
13.	श्री हम्मन शाह जी	,,
14.	श्री जैन नाथ जी	7
15.	श्री मिठाना माई जी	,,
16.	श्री परागा माई जी	,,
17.	श्री ग्वाल्हा माई जी	8
18.	श्री नन्ही माई जी	,,
19.	श्री झूलनि जान जी	,,
20.	श्री उजागर सिंह जी	,,
21.	श्री हरी सिंह जी	,,
22.	श्री छेदा सिंह जी	9
23.	श्री जमूरे शाह जी	,,

		पृष्ठ सं०
24.	श्री बतावन शाह जी	10
25.	श्री वली शाह जी	,,
26.	श्री मिरज़ा जी	,,
27.	श्री इसुफ़ खाँ साहब जी	,,
28.	श्री सार्व भौम जी	11
29.	श्री रण धीर सिंह जी	,,
30.	श्री हर दत्त जी	,,
31.	श्री महेश सिंह जी	12
32.	श्री खंभीरा जी	,,
33.	श्री अग्रदास जी	,,
34.	श्री युगुल दास जी	13
35.	श्री विश्राम दास जी	,,
36.	श्री नूर खां जी	,,
37.	श्री गंजे शाह जी	,,
38.	श्री सैय्याद जी	14
39.	श्री झूलन शाह जी	,,
40.	श्री पंगुल शाह जी	,,
41.	श्री गलवली शाह जी	15
42.	श्री तीस मार खां जी	,,
43.	श्री चौरंगी नाथ जी	,,
44.	श्री जगावन शाह जी	16
45.	श्री नमक हलाल जी	,,
46.	श्री रमा दीन जी	17
47.	श्री उमा दीन जी	,,
48.	श्री राधे लाल जी	,,
49.	श्री शातिर जी	,,
50.	श्री मुनासिव शाह जी	,,
51.	श्री फाके मस्त शाह जी	18
52.	श्री झीनू भक्त जी	,,
53.	श्री हजरत जी	18

54. श्री पुंगव मुनी जी 19
55. श्री छन्नू शाह जी ,,
56. श्री विलास जी 20
57. श्री चेताना माई जी ,,
58. श्री आनन्दा माई जी ,,
59. श्री रहेम शाह जी 21
60. श्री राम विलास जी ,,
61. श्री आनन्द जी 21
62. श्री खुश मिज़ाज़ शाह जी 22
63. श्री हक्कल शाह जी ,,
64. श्री समरस्त शाह जी ,,
65. श्री वाचस पति जी 23
66. श्री रंगीले शाह जी ,,
67. श्री जलूसी शाह जी ,,
68. श्री गुलाम अली जी ,,
69. श्री दिलावर खाँ जी 24
70. श्री कुरेसी जी ,,
71. श्री अरुण जी 25
72. श्री पर वन दास जी ,,
73. श्री त्रिपुरासुर जी ,,
74. श्री चंड जी ,,
75. श्री मुण्ड जी ,,
76. श्री शुम्भ जी 26
77. श्री निशुँभ जी ,,
78. श्री नन्हे खाँ जी ,,
79. श्री माया पुरी जी ,,
80. श्री लखन पुरी जी ,,
81. श्री मधु पुरी जी 27
82. श्री कटोरी जान जी 28
83. श्री छम्मक जान जी 30
84. श्री झम्मक जान जी ,,
85. श्री चम्मक जान जी ,,
86. श्री वटोरन शाह जी 30
87. श्री बसन्ती माई जी 31
88. श्री गुनवन्त सिंह जी 33
89. श्री वद्री सिंह जी ,,
90. श्री ज्ञाना अली जी 34
91. श्री खड़ग दास जी 35
92. श्री अर्जुन सिंह जी ,,
93. श्री चेत सिंह जी ,,
94. श्री जसवंत सिंह जी ,,
95. श्री रणधीर सिंह जी 36
96. श्री बलवन्त सिंह जी ,,
97. श्री विद्याधर गन्धर्व जी 37
98. श्री गुलाब जान जी ,,
99. श्री सरीफ़ जान जी 38
100. श्री चन्द्रिका प्रसाद जी ,,
101. श्री वफ़ाती शाह जी 39
102. श्री विन्देश्वरी सिंह जी ,,
103. श्री सिद्धेश्वरी जी ,,
104. श्री मुकर्रम शाह जी 40
105. श्री राम दौर जी ,,
106. श्री पण्डित प्यारे लाल जी 41
107. श्री लाला लाल चन्द लाल जी 42
108. श्री लाला छवीले राम जी 43
109. श्री गिरिजा दयाल जी ,,
110. श्री परभू दयाल जी ,,
111. श्री झल्लर शाह जी 44
112. श्री विद्या सागर जी ,,
113. श्री दौदा साह जी 45
114. श्री लाला हरदयाल जी 48
115. श्री लाला गुरु दयाल जी 49
116. श्री लाला शिव दयाल जी ,,
117. श्री लाला राम दयाल जी ,,

118. श्री बीबी जी 50
119. श्री लाला रघुवर दयाल जी ,,
120. श्री लाला जै दयाल जी 51
121. श्री गोरी जान जी ,,
122. श्री लाला गुरशरन लाल जी 52
123. श्री लाला शिव चरन लाल जी ,,
124. श्री चन्दो माई जी ,,
125. श्री लाला विजय बहादुर लाल 53
126. श्री लाला बहादुर लाल जी ,,
127. श्री कमला नेहरू जी 54
128. श्री लाला शिवदान बहादुर जी ,,
129. श्री लाला लाल बहादुर जी ,,
130. श्री लाला राम बक्स जी ,,
131. श्री लाला हरि बक्स जी 55
132. श्री लाला गङ्गा बक्स जी ,,
133. श्री दृग पाल सिंह जी 56
134. श्री लाला संत बक्स जी ,,
135. श्री लाला हरि हर बक्स जी ,,
136. श्री जगपाल सिंह जी 57
137. श्री लाला राज बहादुर जी ,,
138. श्री लाला बम बहादुर जी ,,
139. श्री कर्मा माई का कीरतन 58
140. श्री गुट्टा माई जी ,,
141. श्री मुस्तफा अली जी 59
142. श्री लाला गनेशी लाल जी ,,
143. श्री लाला मंगली प्रसाद जी 60
144. श्री मुरतुजा हुसेन जी ,,
145. श्री लाला बिहारी लाल जी 61
146. श्री स्वामी योगानन्द जी ,,
147. श्री टन मन शाह जी 62
148. श्री मिन्रा जान जी ,,
149. श्री फ़जल खां जी 63
150. श्री वुद्धू खां तुवलक जी 63
151. श्री बुल्ले शाह जी 64
152. श्री लियाकत खां जी ,,
153. श्री लियाकत हुसेन जी ,,
154. श्री लियाकत अली जी ,,
155. श्री लाला शंकर बख्श जी 65
156. श्री लाला देवी सहाय जी ,,
157. श्री लाला हरि सहाय जी ,,
158. श्री लाला राधिका चरन जी 66
159. श्री लाला राधिका शरन जी ,,
160. श्री कञ्जूस खाँ जी ,,
161. श्री हर्राफ़ खां जी 67
162. श्री चारि यारी शाह जी 68
163. श्री लाला सुर्जन लाल जी ,,
164. श्री शान्ति प्रकाश जी 69
165. श्री सौरिया माई जी ,,
166. श्री लाला माधव प्रसाद जी ,,
167. श्री मुंडी माई जी 70
168. श्री शीरीं जान जी ,,
169. श्री नव्वाब अली जी ,,
170. श्री नवाब हुसेन जी 71
171. श्री लाला अर्जुन लाल जी ,,
172. श्री पण्डित अवधू जी ,,
173. श्री पण्डित गार्गी दत्त त्रिपाठी 72
174. श्री पण्डित गार्गी शरण जी ,,
175. श्री पण्डित गार्गी दीन जी ,,
176. श्री पण्डित गार्गी चरण जी 73
177. श्री वशीर अहमद जी ,,
178. श्री बन्दगी शाह जी ,,
179. श्री दुन्दुभी गिरि जी 74
180. श्री मुनियां माई जी ,,
181. श्री गनेशी कोरी जी 75
182. श्री प्यारी जान जी ,,

183. श्री चुनिया माई जी 80
184. श्री पुनिया माई जी ,,
185. श्री सेवरी जी 81
186. श्री कुब्जा जी 82
187. श्री जै राम दास जी ,,
188. श्री गणिका जी ,,
189. श्री कूवा जी 83
190. श्री शची माता जी ,,
191. श्री पद्मावती माता जी ,,
192. श्री विष्णु प्रिया जी ,,
193. श्री एक नाथ जी 84
194. श्री तुका राम जी ,,
195. श्री राम राय जी ,,
196. श्री नरसिंह दास जी ,,
197. श्री मीरा जी 85
198. श्री नरसी जी 86
199. श्री गुनियाँ शाह जी 88
200. श्री गोजर् शाह जी ,,
201. श्री काशी नाथ जी 89
202. श्री कँचन शाह जी ,,
203. श्री बइली माई जी ,,
204. श्री विहारा सिंह चौहान जी ,,
205. श्री चिल्ला शाह जी 90
206. श्री किल्ला शाह जी ,,
207. श्री धन्नो माई जी ,,
208. श्री डल्लो माई जी 91
209. श्री निमाई निताई कीर्तन ,,
210. श्री मौलाना मुहम्मद अली जी 96
211. श्री डुण्डी माई जी ,,
212. श्री झुण्डी माई जी ,,
213. श्री गपकू शाह जी ,,
214. श्री लपकू शाह जी 100
215. श्री सलामत शाह जी 103
216. श्री रंक शाह जी ,,
217. श्री सुमिरन शाह जी 103
218. श्री सफ़ाई शाह जी 104
219. श्री खैरियत शाह जी ,,
220. श्री हुण्डी माई जी ,,
221. श्री कोइली माई धनुकुनि जी 105
222. श्री मुण्डा बाज नट जी ,,
223. श्री कटार बाज नट जी ,,
224. श्री घण्टा बाज नट जी ,,
225. श्री ठाकुर बेनी सिंह जी 106
226. श्री छंगो धोबिन जी ,,
227. श्री शताना नाउनि जी 107
228. श्री जनाका माई तेलिन जी ,,
229. श्री धरामा माई तम्बोलिनि जी 108
230. श्री धनाका माई लोहारिन जी ,,
231. श्री फुलेसरि माई मालिनि जी ,,
232. जय कुंवारा माई चमारिनि जी ,,
233. श्री नगेसरी माई बढ़इनि जी ,,
234. रम क्वारा माई पासिन जी 109
235. सम क्वारा माई कुम्हारिन जी ,,
236. श्री सुखाना माई भुरजिन जी ,,
237. श्री मखाना माई अहिरिन जी ,,
238. श्री जुड़ाना माई मुराइनि जी 110
239. श्री सुंदारा माई भंगिन जी ,,
240. श्री इँदारा माई वारिन जी ,,
241. श्री लखाना माई कलवारिन जी ,,
242. श्री जुगधी माई कहारिन जी 111
243. श्री गुर्गी माई गोड़िनि जी ,,
244. श्री छेदुई माई कुर्मिन जी ,,
245. श्री फुलिया माई सोनारिन जी 112
246. श्री हिरिया माई ठठेरिन जी ,,
247. श्री शान्ती माई वनिनि जी ,,
248. श्री दुगाना माई विसातिन जी 113

249. श्री रोज़ाना माई मनिहारिन जी 113
250. श्री जीतनि माई दर्जिन जी 114
251. श्री रगुरी माई हलवाइन जी ,,
252. श्री यदुरी माई कोरिन जी ,,
253. श्री मेड़ाना माई ललाइन जी 115
254. श्री गनेशा माई भाटिन जी ,,
255. श्री खौरी माई भँड़िन जी 116
256. श्री अलवदी माई वेहनिन जी ,,
257. श्री नारायण दास जी ,,
258. श्री परेवा माई खटकिन जी 117
259. श्री झुकावन शाह जी ,,
260. श्री फुलवसिया माई जोशिन जी ,,
261. श्री धमाका माई जगइन जी ,,
262. श्री जगदम्बा वख्श सिंह जी 118
263. श्री चंदुली माई भँडारिन जी ,,
264. खोजनी माई तर्पतिहारिन जी 119
265. श्री श्याम जनी गंगा पुत्रिन जी ,,
266. श्री झवुई माई भुँइहारिन जी ,,
267. रुपाना माई कंकालिन जी 120
268. श्री गुजिया माई लोनिन जी ,,
269. श्री महरजिया माई लोधिन जी ,,
270. श्री रउवाँ कोल जी 121
271. श्री सउवाँ किरात जी ,,
272. श्री वलिया भील जी ,,
273. श्री जगनुवा भर्र जी ,,
274. श्री धधुवाँ वनमानुष जी ,,
275. श्री यमुना राम गूजर जी ,,
276. श्री छवीले राम पंडा जी ,,
277. राजकिशोरी माई जी ब्राह्मणी 122
278. श्री केशरा वेलदार जी 125
279. श्री मकुवा कंजड़ जी ,,
280. श्री पंचमा मंगता जी 126
281. श्री छोटू बेड़िया जी 127
282. श्री सेवका यानी खुटकड़ा जी ,,
283. श्री कसिया वेलवार जी ,,
284. श्री रूप सनातन जी ,,
285. श्री जगई व मधई जी 128
286. श्री सार्वभौम जी ,,
287. श्री औतार वर वार जी 129
288. श्री वोधा राम काँदू जी 130
289. श्री वृजवासी अम्बर जी ,,
290. श्री टिकाना माई कर्नाटकिन जी ,,
291. श्री मेंहदी हुसुन जी 131
292. श्री वेनी कलार जी ,,
293. श्री विरहिमा जी ,,
294. वाला दीन संग तराश जी 132
295. श्री अला बकस सीदी जी ,,
296. श्री परागी कुचवँधिया जी ,,
297. श्री बुक्का राय जी ,,
298. श्री भानु दास जी 134
299. श्री खोदा वख्श जी 135
300. श्री वैरम खां मोची जी 136
301. श्री शुकरू शाह जी ,,
302. श्री रसूल बख्श जी ,,
303. रहीम बख्श नाल बन्द जी 137
304. श्री हुशियारी लाल वैश्य जी ,,
305. श्री बुलाकी लाल वैश्य जी ,,
306. श्री वुलवुली शाह जी 138
307. श्री अब्दुल अली रवावी जी ,,
308. श्री हिम्मत जान जी ,,
309. श्री पहलवान दीदी जी 139
310. श्री चन्द्र कली जी ,,
311. श्री बच्ची माई जी ,,
312. श्री मुजफ्फर हुसेन भिश्ती जी 140

313. श्री हिकारत खाँ जी	140
314. श्री छटी जान जी	141
315. श्री ठनी जान जी	,,
316. श्री खनी जान जी	,,
317. श्री वनी जान जी	,,
318. श्री तनी जान जी	142
319. श्री छनी जान जी	,,
320. श्री सुथरे शाह जी	,,
321. श्री इश्क जान जी	143
322. श्री रफ़ा जान जी	144
323. श्री सफ़ा जान जी	,,
324. श्री कनी जान जी	,,
325. श्री दत्त जी	146
326. श्री अरविन्द जी	,,
327. श्री नवल विहारी जी	,,
328. श्री रूप कली माई जी	147
329. श्री पण्डित श्री धर जी	,,
330. श्री अद्वैता नन्द जी	,,
331. श्री श्याम तीर्थ जी	148
332. श्री पं. श्याम किशोर जी	149
333. श्री पं. करम चन्द जी	,,
334. श्री ठाकुर प्रताप सिंह जी	,,
335. श्री उत्तम सिंह जी शिष्य	150
336. श्री गयन नाथ जी	,,
337. श्री कनीफ़ नाथ जी	151
338. श्री जालन्धर नाथ जी	,,
339. श्री मैना जी	152
340. श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	,,
341. श्री माधौ बाबा जी	,,
342. श्री निरञ्जन बाबा जी	,,
343. श्री वोप देव जी	,,
344. श्री छत्तीस कवि जी	,,
345. श्री कोक जी	153
346. श्री सच्चिदानन्द बाबा जी	,,
347. श्री महीपति बाबा जी	154
348. श्री गुड़ गुड़ी शाह जी	,,
349. श्री मुन्नू कुम्हार जी	,,
350. श्री सद्धू तेली जी	155
351. श्री अवसान बंजारा जी	,,
352. श्री गोरे खां कसाई जी	,,
353. श्री भय्या जी	,,
354. श्री भंगी माई जी	156
355. श्री लँगड़ शाह जी	,,
356. श्री राजेश्वरी माई जी	,,
357. श्री गङ्गेश्वरी माई जी	157
358. श्री विन्ध्येश्वरी माई जी	,,
359. श्री रामेश्वरी माई जी	,,
360. श्री खड़ेश्वरी माई जी	158
361. श्री शिव पाल सिंह जी	,,
362. श्री सुख पाल सिंह जी	159
363. श्री मुन्दर शाह जी	,,
364. श्री मगन शाह जी	160
365. श्री निशाना शाह जी	161
366. श्री हुल्लर शाह जी	162
367. श्री ब्वारा शाह जी	,,
368. श्री चर्वन शाह जी	163
369. श्री ब्रह्मण्य जी	,,
370. श्री बटावन शाह जी	164
371. श्री नक्की शाह जी	,,
372. श्री अल्ला जान जी	165
373. श्री गाना शाह जी	,,
374. श्री घीसा दास जी	166
375. श्री फलक शाह जी	,,
376. श्री मौला जान जी रण्डी	167

377. श्री नवी जान जी रण्डी 167
378. श्री रबी जान जी रण्डी 168
379. श्री शान्ति सिंह जी ,,
380. श्री धर्म सिंह जी ,,
381. श्री ठाकुर दुनिया सिंह जी 169
382. श्री महाराना प्रताप सिंह जी ,,
383. श्री सीता जी ,,
384. श्री रतन दास जी ,,
385. ठाकुर यतन सिंह जी कलहंस 170
386. श्री भाग्यवती माई जी ,,
387. श्री लीलाबती माई जी ,,
388. श्री मुंडा बाज नट जी ,,
389. श्री घण्टा बाज नट जी 171
390. श्री कटार बाज नट जी ,,
391. श्री सिपाही बाज नट जी ,,
392. श्री कबूतर बाज नट जी ,,
393. श्री बन्दूक बाज नट जी 172
394. श्री तलवार बाज नट जी ,,
395. श्री घुंघरू बाज नट जी ,,
396. श्री पहलवान बाज नट जी ,,
397. श्री कमान बाज नट जी 173
398. श्री बरछी बाज नट जी ,,
399. श्री कैबर बाज नट जी ,,
400. श्री तमँचा बाज नट जी 174
401. श्री वल्लम बाज नट जी ,,
402. श्री लढ़ा बाज नट जी ,,
403. श्री पंडित गोपी नाथ जी ,,
404. श्री कम्मल शाह जी 178
405. श्री पंडित मुक्त नाथ जी ,,
406. श्री अनन्य दास जी 179
407. श्री नर हरि सोनार जी ,,
408. श्री शीलवती जी 180
409. श्री क्षिमावती जी 180
410. श्री शिव प्यारी माई जी ,,
411. श्री राम चन्द्र खां जी ,,
412. श्री हबीबा रण्डी जी ,,
413. श्री गल्ला शाह जी 181
414. श्री नजूमा जी रण्डी ,,
415. श्री हल्ला शाह जी ,,
416. श्री हलीमा जी रण्डी 182
417. श्री हलचल शाह जी ,,
418. श्री एक नाथ जी 183
419. श्री तुकाराम जी 184
420. श्री नरसी जी ,,
421. श्री मीरा जी 185
422. श्री निर्भय शाह जी ,,
423. श्री धर्म शाह जी 186
424. श्री डब डब शाह जी ,,
425. श्री निर्वैर शाह जी 187
426. श्री वाँड़े शाह जी ,,
427. श्री कम खर्च शाह जी ,,
428. श्री रंग लाल जी 191
429. श्री रंग नाथ जी 192
430. श्री मस्तानी माई जी ,,
431. श्री मनमानी जी ,,
432. श्री दशरथ लाल जी वैश्य ,,
433. श्री नाम देव जी 193
434. श्री नर हरि जी ,,
435. श्री मुरारी जी 194
436. श्री जसोवा खेचर जीं ,,
437. श्री गरोवा कुम्हार जी ,,
438. श्री चोखा मेला जी ,,
439. श्री वल्ली जान जी रण्डी 195
440. श्री हलचल शाह जी ,,

441. श्री कुँजनी माई जी 196
442. श्री हबीबा जान जी रण्डी 197
443. श्री बड़े दादा जी ,,
444. श्री बड़ी अम्मा जी ,,
445. श्री छोटी अम्मा जी ,,
446. श्री छोटी बुआ जी 198
447. श्री हिफ़ाजत शाह जी ,,
448. श्री मनावन शाह जी ,,
449. श्री पड शाह जी 199
450. श्री लाला दीना नाथ जी ,,
451. श्री लाला नाथ प्रसाद जी ,,
452. श्री कलुवा वीर जी 200
453. श्री अगिया वैताल जी ,,
454. श्री कोइलिया वैताल जी ,,
455. श्री तदबीर शाह जी ,,
456. श्री शकरार पीर जी 201
457. श्री वाले पीर जी ,,
458. श्री चापलूस शाह जी ,,
459. श्री खबीस शाह जी ,,
460. श्री मन्हूस शाह जी 202
461. श्री शैतान शाह जी ,,
462. श्री जवर शाह जी 203
463. श्री सवर सिंह जी ,,
464. श्री आस्तीक मुनि जी ,,
465. श्री कतल जान जी ,,
466. श्री जान मन जी 204
467. श्री झुलनी माई जी ,,
468. श्री जगनी माई जी ,,
469. श्री ककूलत शाह जी ,,
470. श्री तरद्दुद रसूल जी 205
471. श्री तफ़क्कुल रसूल जी ,,
472. श्री हलनी माई जी 206
473. श्री पाटा शाह जी 206
474. श्री मोटी माई जी 207
475. श्री छोटी माई जी ,,
476. श्री शारदा देवी जी ,,
477. श्री ठन ठन पाल जी 208
478. श्री घोंघा बसन्त जी ,,
479. ठाकुर राम सिंह वैश्य जी ,,
480. ठाकुर अभयसिंह जी भदवरिया ,,
481. ठाकुर लखन सिंह सेंगर जी 209
482. ठाकुर शत्रुहन सिंह जी कछवाह ,,
483. ठाकुर गंगा सिंह जी जनवार ,,
484. ठाकुर यमुना सिंह जी परिहार 210
485. ठाकुर भगौती सिंह जी अहिबन ,,
486. ठाकुर गनेश सिंह जी रघुवन्शी ,,
487. ठाकुर शंकरसिंह जी यदुवन्शी 211
488. ठाकुर कामतासिंह जी चौहान 212
489. राम रतन जी कसौधन बनिया ,,
490. ठाकुर शुभ करन सिंह जी 213
491. श्री ललिता नाऊ जी विलोरिया ,,
492. श्री ईश्वरी नाऊ जी श्रीवास्तव्य ,,
493. श्री गनी मियां जी 214
494. श्री कमबख्त शाह जी ,,
495. श्री वेदीन शाह जी 215
496. श्री बेकस शाह जी 216
497. श्री नागा शांह जी ,,
498. श्री बेवकूफ़ शाह जी ,,
499. श्री बेशहूर शाह जी ,,
500. श्री फट फट शाह जी ,,
501. श्री डग मग शाह जी 222
502. श्री चटपट शाह जी 228
503. श्री माई गँगा रौताईन जी ,,
504. श्री झट पट शाह जी 229
505. श्री चड्ंगी माई जी ,,

506. श्री लम्बू शाह जी नियारिया 230
507. श्री पं. चूड़ामणि जी पाण्डेय 231
508. श्री आगा गंद्दार शाह जी ,,
509. श्री कङ्गाल शाह अफ़रीदी 232
510. श्री हलवल शाह जी ,,
511. श्री परमानन्द जी वैश्य ,,
512. श्री भल भल शाह जी ,,
513. श्री लम्पट शाह जी 233
514. श्री बटपार शाह जी ,,
515. श्री लोलुप शाह जी ,,
516. श्री डाकू शाह जी 234
517. श्री चोर शाह जी ,,
518. श्री छिछोर शाह जी ,,
519. श्री थुक्कन शाह जी ,,
520. श्री नमक हराम जी 235
521. श्री जानकी बाई जी ,,
522. श्री पौवा माई जी ,,
523. श्री छटंकी माई जी ,,
524. श्री घट घट शाह जी 236
525. श्री सीताराम जी ,,
526. श्री खुशीराम जी ,,
527. श्री राधेश्याम जी रसिक ,,
528. श्री नारायण शरण जी रसिक 237
529. श्री मोहन शरण जी रसिक ,,
530. श्री कृपा चार्य्य जी ,,
531. श्री प्रेमा माई जी ,,
532. श्री प्रेम निधि जी 238
533. श्री मूसर चन्द जी ,,
534. श्री पंडित आशीरवादी जी ,,
535. श्री शीलवती माई जी 239
536. श्री हबीबा जी रण्डी ,,
537. श्री हल्ला शाह जी ,,
538. श्री मधु मंगल जी 240
539. श्री मंगला मुखी जी ,,
540. श्री धोका शाह जी 241
541. श्री बाली खल्ल जी 242
542. श्री रबाबी अबदुल गफ्फ़ार जी ,,
543. श्री बिधु मंगल जी 245
544. श्री कोतवाल शाह जी ,,
545. श्री प्रेमदास जी 246
546. श्री प्रेम शाह जी ,,
547. श्री उमंग शाह जी ,,
548. श्री गोलन्दाज शाह जी ,,
549. श्री हलचल शाह जी 247
550. श्री तरंग शाह जी ,,
551. श्री अनूठी माई खोंची जी 248
552. श्री शिव राम रैदास जी ,,
553. श्री हनुमान देई माई रैदासिन 249
554. श्री कुकरूँ कूँ शाह जी ,,
555. श्री ख्याल शाह जी 250
556. श्री अड़ँग शाह जी 252
557. श्री धड़ङ्ग शाह जी ,,
558. श्री लड़ङ्ग शाह जी 253
559. श्री पुकार शाह जी ,,
560. श्री शखरा शाह जी 254
561. श्री दुखिया माई जी 255
562. श्री पंडित राघव जी ,,
563. श्री दुखी श्याम जी रसिक 256
564. श्री प्रकाशानन्द जी ,,
565. श्री राजा प्रताप रुद्र सिंह जी 257
566. श्री सुखी राम जी रसिक ,,
567. श्री जल्लाद शाह जी ,,
568. श्री च्याता माई जी 258
569. श्री जहूर शाह जी ,,

570. श्री अगने शाह जी 258
571. श्री जगदानन्द जी 259
572. श्री पंडित बासुदेव रक्षक जी ,,
573. श्री आकूती जी 260
574. श्री प्रसूती जी ,,
575. श्री नौरोजी जी डाकू ,,
576. श्री डाकू त्योकर खाँ जी ,,
577. श्री बार मुखी रङ्गी जी 261
578. श्री स्वामी प्रेमानन्द जी ,,
579. श्री ठाकुर सुख सिंह जी ,,
580. श्री अलोपी जी 262
581. श्री श्याम सिंह जी ,,
582. श्री ठाकुर बड़कऊ सिंह जी ,,
583. श्री मझिलकू सिंह जी 263
584. श्री छोटकऊ सिंह जी ,,
585. श्री ठाकुर गमखोर सिंह जी ,,
586. श्री रघुनन्दन सिंह जी 264
587. श्री यदुनन्दन सिंह जी ,,
588. श्री अधीन सिंह जी 265
589. श्री जनमेजय जी ,,
590. श्री रंगीली जान जी ,,
591. श्री छबीली जान जी 266
592. श्री कटीली जान जी ,,
593. श्री रसीली जान जी ,,
594. श्री नुकीली जान जी 267
595. श्री चोखली जान जी ,,
596. श्री गुरु दत्त दास जी 268
597. श्री हरी दास जी ,,
598. श्री सदा सोहागिन जी ,,
599. श्री पंडित सत्य देव जी 269
600. श्री लैमर जी ,,
601. श्री लय छुट जी 270
602. श्री दिलदार खां जी 270
603. ठाकुर रघुबर सिंह जी चंदेल ,,
604. ठाकुर हरनाम सिंह जी गौर 271
605. श्री झरोखे दास जी ,,
606. श्री पंगुली माई जी ,,
607. श्री ठाकुर पशकरन सिंह जी 272
608. श्री ठाकुर करन सिंह जी ,,
609. श्री छैल बिहारी जी खत्री ,,
610. श्री विपिन बिहारी जी खत्री 273
611. श्री मल्हना रानी जी ,,
612. श्री इब्राहीम जी ,,
613. श्री शिव दीन कुम्हार जी ,,
614. श्री नरिन्द चमार जी ,,
615. श्री गनेश सोनार जी ,,
616. श्री पराग कलवार जी 274
617. श्री औतार कहार जी ,,
618. श्री गान्धारी जी ,,
619. श्री हरि सिंह जी ,,
620. श्री जय सिंह जी 275
621. श्री बहादुर सिंह जी ,,
622. श्री भोला सिंह जी ,,
623. श्री गहनी नाथ जी 276
624. ठाकुर वघेल जानकी सिंह जी 277
625. ठाकुर चन्द्र शेखर सिंह जी ,,
626. श्री बिश्वनाथ सिंह जी ,,
627. श्री राजेन्द्र सिंह जी राठौर 278
628. श्री वैधी माई जी 279
629. श्री कलुई माई जी ,,
630. श्री झवुली माई जी ,,
631. ठाकुर शिव दयाल सिंह जी ,,
632. श्री देवी सिंह जी 280
633. श्री लोने सिंह जी ,,

634. श्री देवानी सिंह जी 280
635. श्री ठाकुर मथुरा सिंह जी 281
636. श्री भारत सिंह जी ,,
637. श्री हसीन जान जी ,,
638. श्री पंडित सोहन लाल जी 282
639. श्री खबरदार शाह जी 283
640. हाजी साहब वारिस अली जी ,,
641. श्री फ़िदा रसूल जी 284
642. श्री लचपच शाह जी ,,
643. श्री निर्बल शाह जी ,,
644. श्री निर्मल शाह जी 285
645. श्री शँखुली शाह जी ,,
646. ठाकुर बिजय बहादुर सिंह जी ,,
647. ठाकुर फतेह बहादुर सिंह जी 286
648. श्री रंगी माई जी ,,
649. श्री ढङ्गी माई जी 287
650. श्री ठाकुर गम्भीर सिंह जी ,,
651. श्री खबूचड़ शाह जी ,,
652. श्री शिव लाल जी ,,
653. श्री बना दास जी 288
654. श्री पं. अविनाश चन्द्र जी ,,
655. श्री काने शाह जी 289
656. श्री ख्वथरे शाह जी 290
657. श्री गन्दे शाह जी ,,
658. श्री खोटे शाह जी 291
659. श्री कुबरे शाह जी 292
660. श्री खुल्ले शाह जी ,,
661. श्री हकूमत शाह जी ,,
662. श्री हठी राम जी 293
663. श्री जगदँबिका कुँवरि जी ,,
664. श्री जगदम्बा दीन जी 294
665. श्री मोहाना माई जी 295
666. श्री लुक्कन शाह जी 295
667. श्री फुसलावन शाह जी 296
668. श्री लंठ शाह जी ,,
669. श्री संठ शाह जी ,,
670. श्री अल्हर शाह जी 297
671. श्री करामत शाह जी ,,
672. श्री खुदा बख्श जी 298
673. श्री अला हुसेन जी 300
674. श्री अला हुसेन जी 301
675. श्री सहिंदा जान जी रंडी ,,
676. श्री राम लाल भाट जी ,,
677. श्री बैयाँ शाह जी 302
678. श्री बाबा मौजी राम जी ,,
679. श्री रंक जी ,,
680. श्री महात्मा फर्रुख शाह जी 303
681. श्री अच्छन मियां तेली जी ,,
682. श्री फुरसत शाह जी 304
683. श्री मेहनत शाह जी 305
684. श्री रुखसत शाह जी ,,
685. श्री रागी दास बाबा जी 306
686. श्री बाबा अनुरागी दास जी 307
687. श्री बाबा अपढ़ दास जी ,,
688. श्री गनी मियां जी 308
689. श्री फेरी शाह जी 309
690. श्री नैमिसारन्य जी ,,
691. श्री मंजारी माई जी 310
692. श्री हनुमान जी की बन्दना ,,
693. श्री मंजारी माई जी 311
694. श्री खाकी बाबा जी 315
695. श्री अनारी शाह जी 316
696. श्री टेरी शाह जी 317
697. एक मुसलमान भक्त 318

698. श्री बूढ़ी माई जी 318
699. श्री सरदार खां जी 319
700. श्री बूढ़ी माता जी 320
701. श्री मतमंद शाह जी 321
702. श्री गीदड़ शाह जी ,,
703. श्री बनबीर शाह जी ,,
704. श्री गुरचरन दास जी 322
705. श्री फिरंगी शाह जी ,,
706. श्री कागा शाह जी ,,
707. श्री फुरती शाह जी 323
708. श्री जुरती शाह जी ,,
709. श्री सुरती शाह जी ,,
710. श्री फ़कीर शाह जी ,,
711. श्री छलबल शाह जी 324
712. श्री काहिल शाह जी 325
713. श्री कुरबान शाह जी 326
714. श्री जगन भरभूजा जी ,,
715. श्री कुद्दन शाह जी ,,
716. श्री हलबल शाह जी 328
717. श्री निन्दक शाह जी ,,
718. श्री कसीदा शाह जी ,,
719. श्री नालायक शाह जी 329
720. श्री आलस्य शाह जी ,,
721. श्री ईमान शाह जी 331
722. श्री रंगीले शाह जी ,,
723. श्री रसीले शाह जी ,,
724. श्री समाधी शाह जी ,,
725. श्री स्वांसा शाह जी 332
726. श्री दुआ शाह जी ,,
727. श्री फिरकी शाह जी ,,
728. श्री चटनी शाह जी ,,
729. श्री सलूक दास जी ,,
730. श्री स्वामी गोपालदास जी 333
731. श्री कुरबान शाह जी 336
732. श्री मुहब्बत शाह जी 339
733. श्री न्यामत शाह जी ,,
734. श्री लताफत हुसेन जी 340
735. श्री हशमत खाँ जी ,,
736. श्री गुलाम हुसेन जी 341
737. श्री फकीरे शाह जी ,,
738. श्री छदामी शाह जी ,,
739. श्री शमशेर खां जी 342
740. श्री हुल्ला शाह जी ,,
741. श्री रोशन शाह जी ,,
742. श्री मोती माल खां जी 343
743. श्री जलालुद्दीन जी ,,
744. श्री ईदू साईं जी ,,
745. श्री नेवाजी शाह जी 344
746. श्री रसूला जी 345
747. श्री नसीबा जी ,,
748. श्री मुरव्वत शाह जी 346
749. श्री शुभराती जी 347
750. श्री बकरीदी जी 348
751. श्री गौहर खां जी ,,
752. श्री बृन्दा दीन जी 349
753. श्री ललन प्रिया जी ,,
754. श्री मुन्शी नवल किशोर जी ,,
755. श्री शफालू जी 350
756. श्री संकटा दीन जी ,,
757. श्री हजारी दास जी ,,
758. श्री गिरिवर दास जी 351
759. श्री गुलज़ारी दास जी ,,
760. श्री मुनव्वर शाह जी ,,
761. श्री इनायत शाह जी 352

762. श्री चैन शाह जी 353
763. श्री चीलर शाह जी 354
764. श्री सल्हर शाह जी 355
765. श्री गनीमत शाह जी ,,
766. श्री फक्कड़ शाह जी ,,
767. श्री मिट्ठू मियां जी ,,
768. श्री मकसूमा जी 357
769. श्री महफ़िल शाह जी 360
770. श्री दरबार शाह जी 361
771. श्री खट पट शाह जी ,,
772. श्री शिकारी शाह जी ,,
773. श्री दुर दुरे शाह जी 362
774. श्री बन्दे अली जी ,,
775. श्री काज़िम अली जी 363
776. श्री सहूला जी 365
777. श्री भकोसे दास जी 367
778. श्री राम जनी जी 369
779. श्री पीरू शाह जी 370
780. श्री बक्स जी ,,
781. श्री फ़कीरा जी 371
782. श्री ललिता जी ,,
783. श्री धम धूसर दास जी 372
784. श्री खुशाली शाह जी 373
785. श्री नादिर खां जी ,,
786. श्री रम्भा जी ,,
787. श्री लक्ष्मी बाई जी 374
788. श्री फ़िदा हुसेन जी ,,
789. श्री मुस्तरी जी ,,
790. श्री महमूदा जी 375
791. श्री दिल जान जी ,,
792. श्री जहूरा जी 376
793. श्री शिताबा जी ,,
794. श्री कृष्णा बाई जी 377
795. श्री अब्बास हुसेन जी ,,
796. श्री मूषे शाह जी 378
797. श्री पेमन शाह जी ,,
798. श्री खोजी जी ,,
799. श्री चुरई शाह जी ,,
800. श्री झींगुर शाह जी ,,
801. श्री बुन्नी शाह जी 379
802. श्री चुन्नी शाह जी ,,
803. श्री पुरई शाह जी ,,
804. श्री खुन खुन शाह जी 380
805. श्री जौहर खाँ जी ,,
806. श्री मधई जी ,,
807. श्री सुभान शाह जी ,,
808. श्री बलदेव प्रसाद जी 381
809. श्री जगई जी ,,
810. श्री राम रघुबीर जी ,,
811. श्री बीरबल जी 382
812. श्री भोज जी ,,
813. श्री धुंधकारी जी ,,
814. श्री गोकरण जी ,,
815. श्री परिक्षित जी ,,
816. श्री अशोक जी ,,
817. श्री शिवाजी (मरहटा) 383
818. श्री खेलावन दास जी ,,
819. श्री जियावन दास जी ,,
820. श्री मूला बाई जी 384
821. श्री खलीला जी ,,
822. श्री गफूरा जी 385
823. श्री करीमा जी ,,
824. श्री रहीमा जी ,,
825. श्री दीन जी ,,

826. श्री बुद्ध प्रकाश जी 386
827. श्री हीरा दास जी ,,
828. श्री असगरी जान जी ,,
829. श्री नीरू जी 387
830. श्री नीमा जी ,,
831. श्री बेगा जी ,,
832. श्री झाऊ जी 388
833. श्री झीटा जी ,,
834. श्री चमेली जान जी ,,
835. श्री इमामन जी 389
836. श्री सकूना जी ,,
837. श्री सहूरन जी ,,
838. श्री हरि वंश जी 390
839. श्री बाले मियां जी ,,
840. श्री पुन्नू जी ,,
841. श्री सती जी 391
842. श्री शायर जी ,,
843. श्री पीरी जी ,,
844. श्री निकम्मा जी 392
845. श्री सुरजू दास जी ,,
846. श्री भवानी दीन जी ,,
847. श्री भूषन शाह जी 393
848. श्री रामा बाई जी ,,
849. श्री उजीरा जी 394
850. श्री कारी जी ,,
851. श्री काजी जी ,,
852. श्री कुतुब जी ,,
853. श्री पीर जी 395
854. श्री बुद्धनि जी ,,
855. श्री घाघ जी ,,
856. श्री कामिल शाह जी 396
857. श्री अवधेश जी ,,
858. श्री लाल बिहारी जी 397
859. श्री बांके लाल जी ,,
860. श्री औलिया जी ,,
861. श्री हाफ़िज जी 398
862. श्री मुल्ला जी ,,
863. श्री मौलवी जी ,,
864. श्री बिटाना माई जी 399
865. श्री भगाना बाई जी ,,
866. श्री मैनका जी ,,
867. श्री उर्वशी जी 400
868. श्री ललिया बाई जी ,,
869. श्री भागू जी 401
870. श्री बादशाह हुसेन जी ,,
871. श्री रमेश जी ,,
872. श्री नियाज़ अली जी ,,
873. श्री काज़िम हुसेन जी 402
874. श्री नियाज़ हुसेन जी ,,
875. श्री शिव रानी जी ,,
876. श्री सुरेश जी 403
877. श्री दिनेश जी ,,
878. श्री भूरे शाह जी 404
879. श्री बीरयार सिंह जी ,,
880. श्री मारते खां जी ,,
881. श्री समुझावन खां जी 405
882. श्री पच्चा शाह जी 406
883. श्री लल्ला शाह जी ,,
884. श्री लूले शाह जी 407
885. श्री भड्डरी जी ,,
886. श्री पगली माई जी 408
887. श्री गूँगी बाई जी ,,
888. श्री चम्पा शाह जी ,,
889. श्री पापर शाह जी 409

890. श्री लौवा शाह जी 409
891. श्री बच्चा शाह जी ,,
892. श्री गणेश दत्त जी ,,
893. श्री गौहर जान जी 410
894. श्री चिम्मन शाह जी ,,
895. श्री हस्सू शाह जी 411
896. श्री पितम्बर जी ,,
897. श्री सलारी जी ,,
898. श्री धौंकल दास जी ,,
899. श्री बौषल दास जी 412
900. श्री जदु नाथ जी ,,
901. श्री हरि नाथ जी ,,
902. श्री चीथर शाह जी 412
903. श्री जानू शाह जी 413
904. श्री हुलासी शाह जी ,,
905. श्री दुर्गा दीन जी 414
906. श्री बृज नाथ जी 415
907. श्री छबि नाथ जी ,,
908. श्री बृज राज जी 416
909. श्री छबि राज जी ,,
910. श्री खेलाड़ी शाह जी ,,
911. श्री बचोली माई चमारिन जी 417
912. श्री दाता दीन जी 418
विनती 419

॥ गुरु-आरती ॥

ओ३म् जय-जय गुरूदेवा।
जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी, स्वामी दीनन हितकारी।
जय-जय मोह विनाशन, जय-जय मोह विनाशन, भव बंधन हारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरति धारी, स्वामी गुरु मूरति धारी।
वेद पुरान बखानत, वेद पुरान बखानत, गुरु महिमा भारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

जप तप तीरथ संयम, दान विविध दीन्हें, स्वामी दान विविध दीन्हें।
गुरु बिन ज्ञान न होवे, गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि जतन कीन्हें।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे, स्वामी जीव बहे सारे।
नाम जहाज बिठा कर, नाम जहाज बिठा कर, गुरु पल में तारे।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारी, स्वामी चोर बड़े भारी।
ज्ञान खड्ग दे कर में, ज्ञान खड्ग दे कर में, गुरु सब संघारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें, स्वामी निज-निज गुण गावें।
सबका सार बताकर, सबका सार बताकर, गुरु मारग लावें।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी, स्वामी सब पातक हारी।
बचन सुनत तम नाशै, बचन सुनत तम नाशै, सब संशय टारी।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।

तन मन धन सब अर्पण, गुरु चरनन कीजे, स्वामी गुरु चरनन कीजे
ब्रह्मानंद परमपद, ब्रह्मानंद परमपद, मोक्ष गती लीजे।
ओ३म् जय-जय गुरुदेवा।।



॥ वन्दना ॥

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये।।

खा रहा गोते हूँ मैं भव सिन्धु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में।।

मुझ में है जप तप न कुछ साधन नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है।।

पाप बोझे से लदी नैया भँवर में आ रही।
नाथ दौड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही।।

आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं।।

सब जगह मैंने भटक कर अब शरण ली आपकी।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी।।

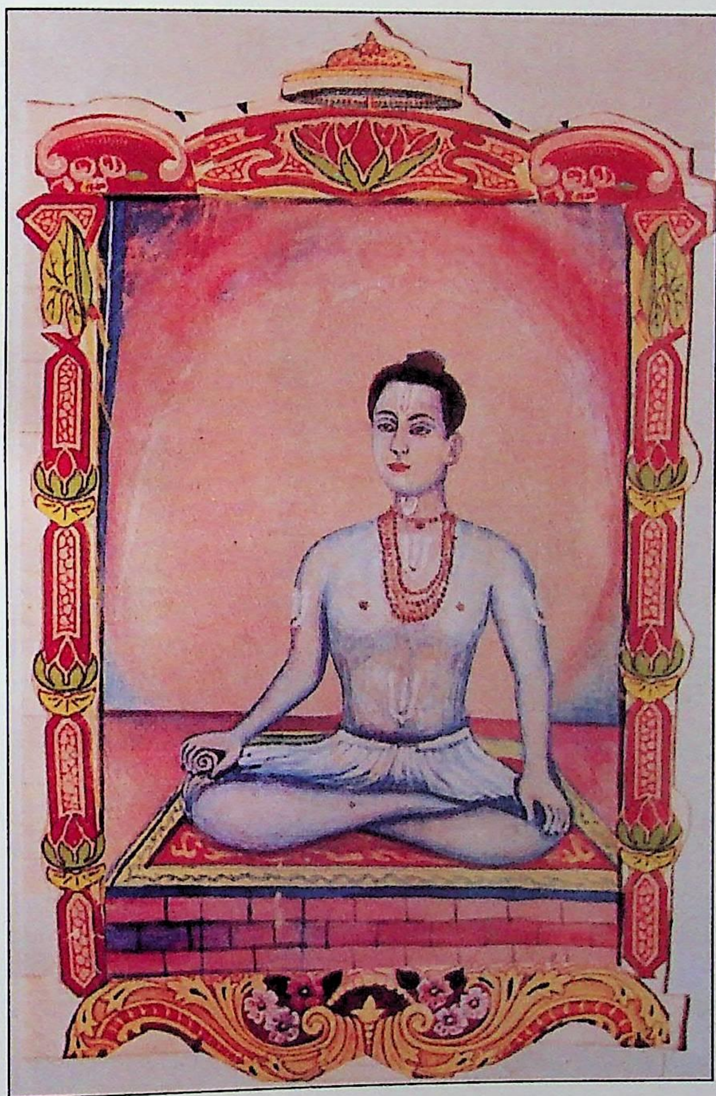
गुरु मूरति मुख चन्द्रमा सेवक नयन चकोर।
अष्ट पहर निरखत रहों गुरु मूरति की ओर॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥



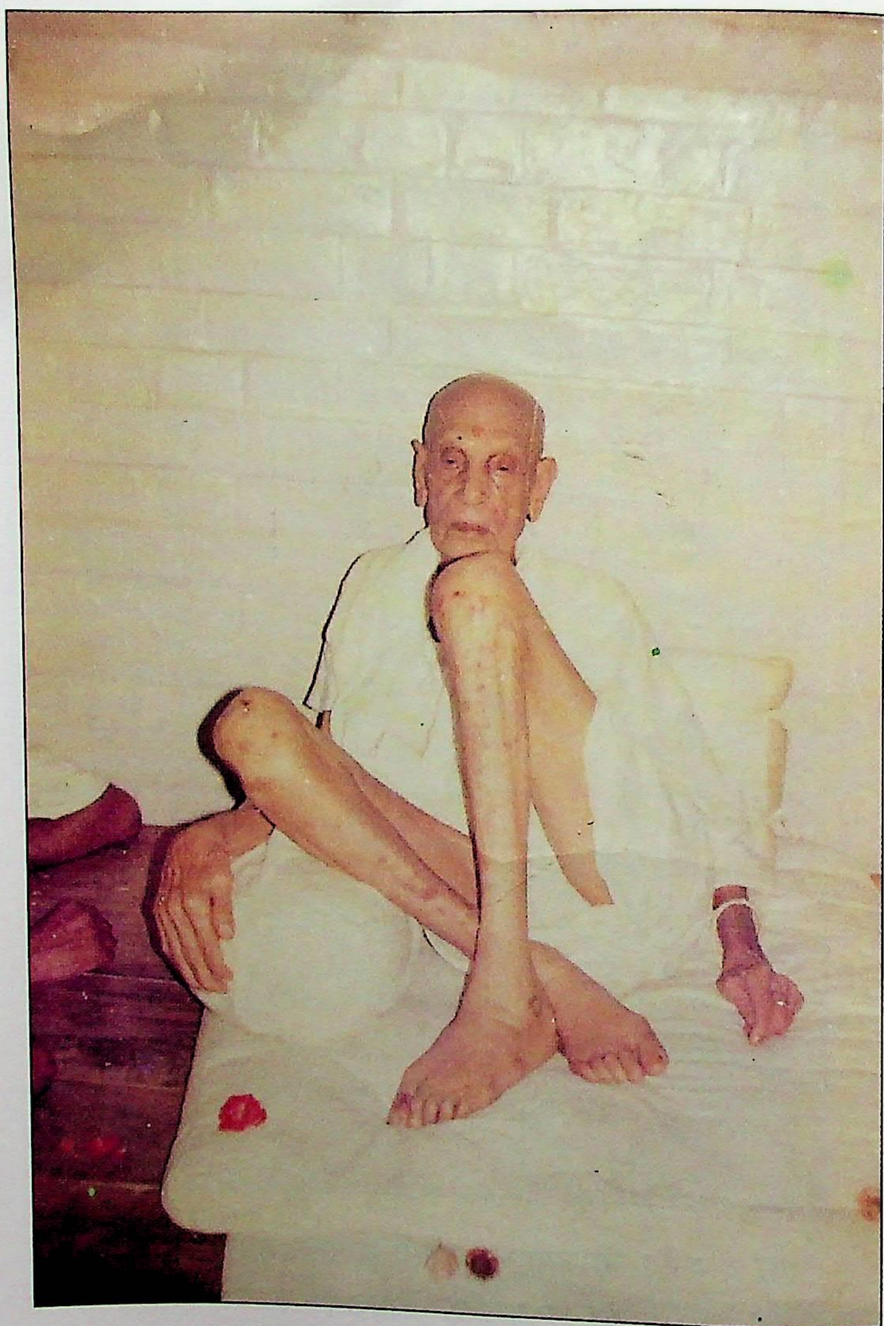
क्षमा याचना

इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन में पूरा प्रयास किया गया है कि जैसा मूल ग्रन्थ में है वैसा ही प्रकाशित किया जाये। यदि इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो प्रकाशक अपनी इस भूल के लिये हृदय से क्षमाप्रार्थी है।

सीतानाथ समारम्भां, रामानन्दार्य मध्यमाम्
अस्मदाचार्य पर्यन्ताम् वन्दे गुरु परम्पराम्



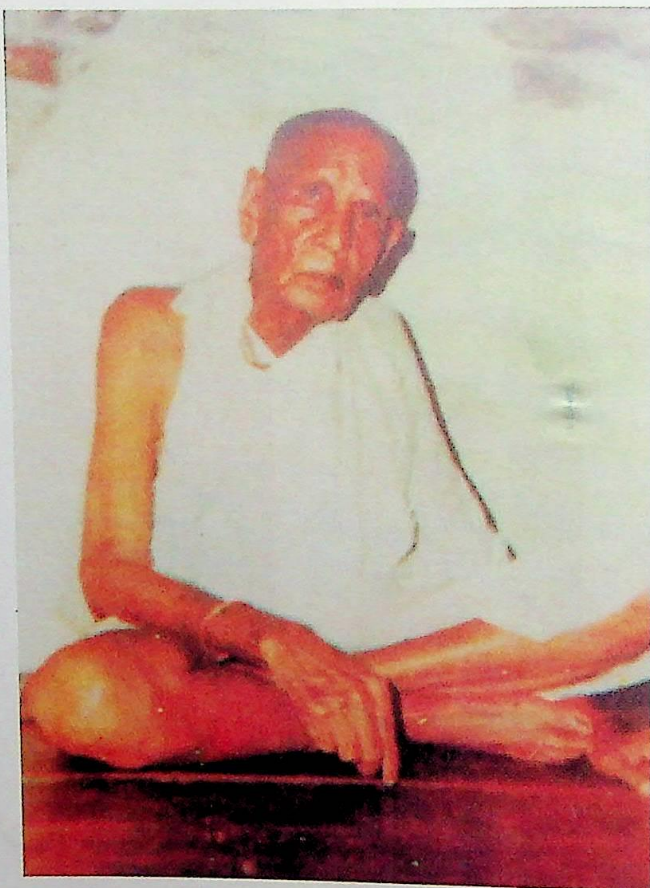
परं वन्दनीय श्री जगत्‌गुरु स्वामी रामानन्दजी महाराज
विष्णु भगवान के अंशावतार ।
परमपूज्य श्री परमहंस राममंगलदास जी की
गुरु परम्परा के आदि गुरु



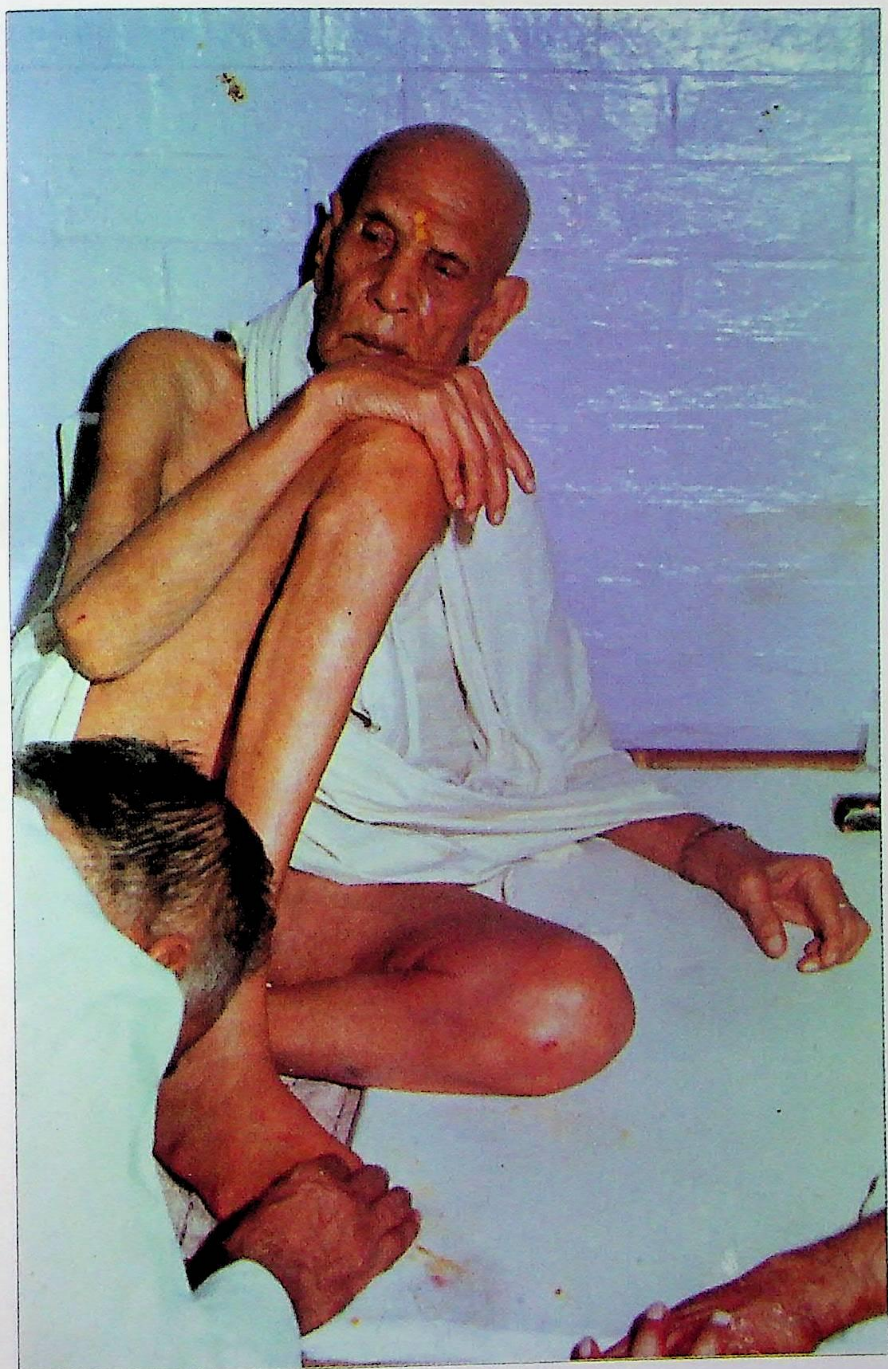
श्री परमहंस राममंगलदास जी
गोकुल भवन आश्रम में ।



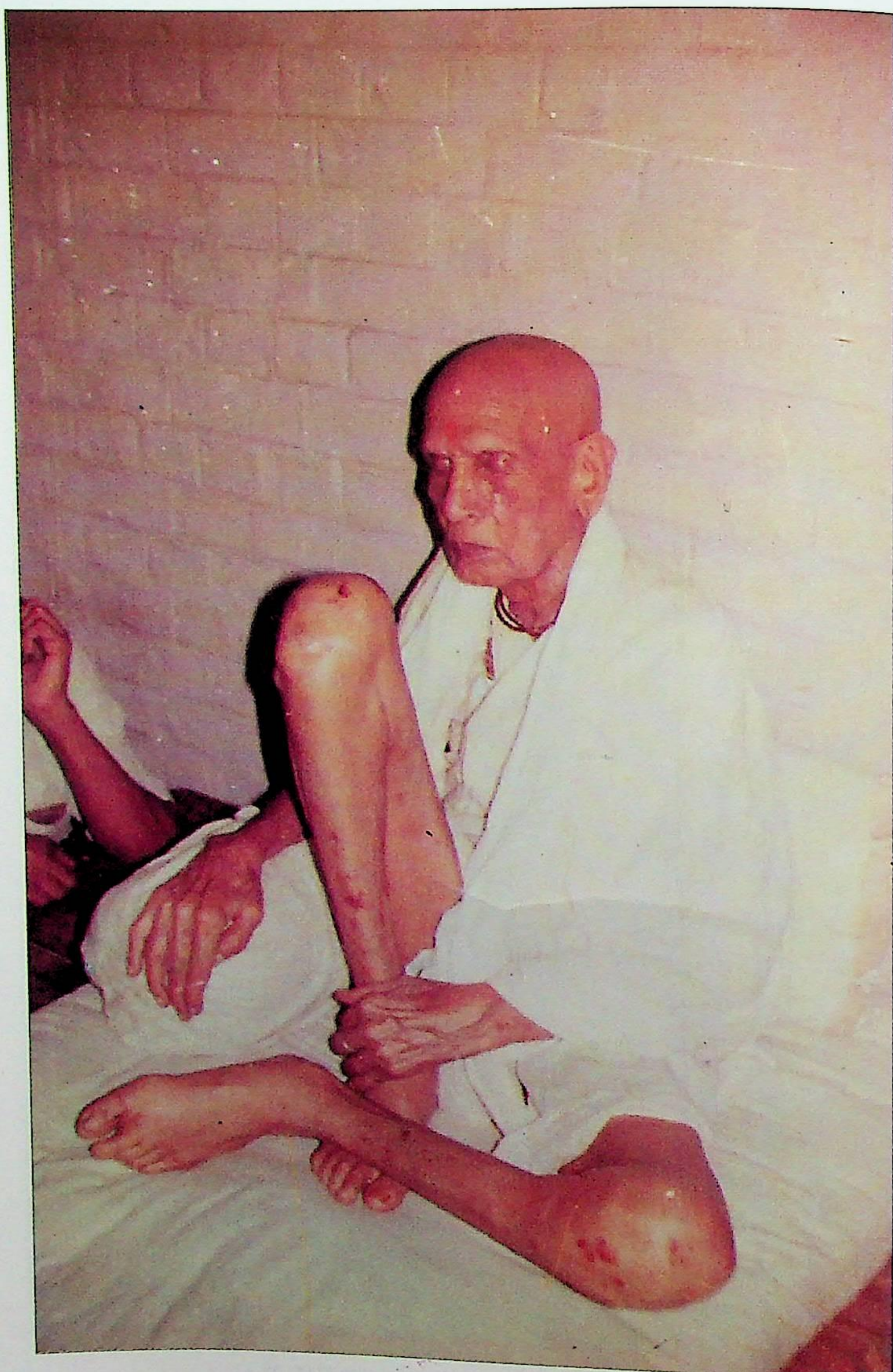
श्री परमहंस राममंगलदास जी।



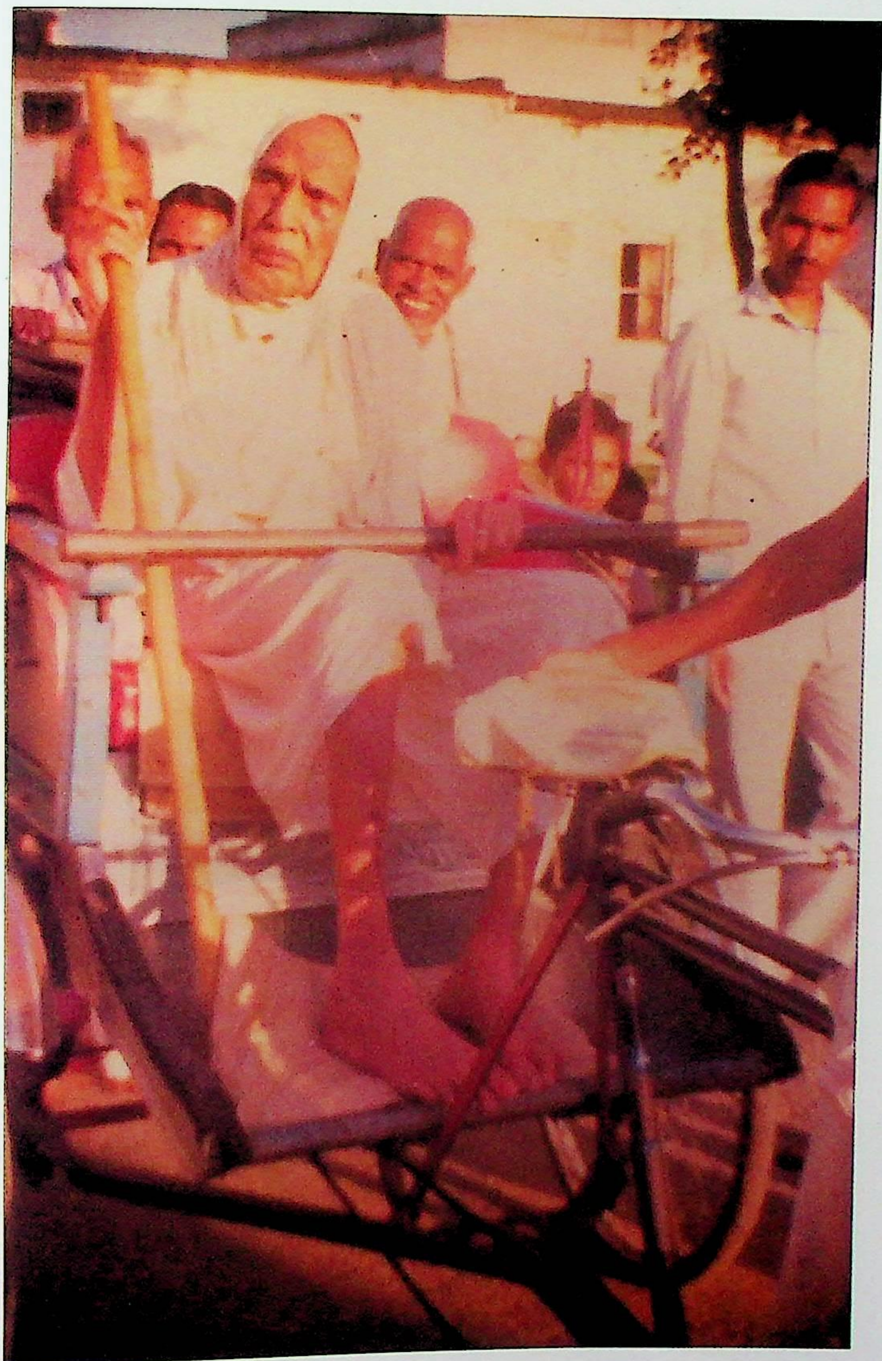
श्री गुरुदेव इसी सादी लकड़ी के तखत पर बैठकर
सारे दिन गोकुल भवन आश्रम में भक्तों को
कल्याण उपदेश देते थे।



श्री गुरुदेव गोकुल भवन आश्रम में।



श्री परमहंस राममंगलदास जी
गोकुल भवन आश्रम में।



महाप्रयाण के पूर्व श्री गुरुदेव गोकुल भवन से
वशिष्ठ कुंड दर्शन के लिये जाते हुये।



श्री गुरुदेव गोकुल भवन आश्रम से रिक्शे पर जाते हुये ।

१ ।। श्री गिरिजा बाई जी ।।

पदः- हाँ हाँ रे मोहिं भावै सँवलिया हाँ।
माथे केशर तिलक कुण्डल क्रीट चमक हँसि मारै नजरिया हाँ।
बादल की कड़क चपला की लपक निज सुरति सँभरिया हाँ।
परती न पलक जाकी मलक फलक चाहै सब नर गोरिया हाँ।४।

कैसी काली अलक रही गालों लटक सब के घट बसिया हाँ।
प्यारे की लचकि नूपुर की छमक अधर धारे मुरलिया हाँ।
चढ़ी नाम कि झक भागी तन मन कि शक छूटी भव की डगरिया हाँ।
गिरिजा ह्वै गई गरक नहिं सकती टरक पड़ी प्रेम फँसरिया हाँ।८।

दोहाः- शब्द में सूरति जब पगै, मूरति सन्मुख होय।
ध्यान प्रकाश समाधि हो, द्वैत जाय सब खोय।
सुर मुनि शक्तिन दरश हों, नित प्रति आवैं जांय।
गिरिजा कह जो चरित हों, बरनत नहीं सेराँय।४।

२ ।। श्री राम कुँवरि जी ।।

पदः- आये क्या करने सो भूले जग जाल में कैसे लटकि गये।
पकड़े अपनै नहिं छोड़ि सके संघ चोरन का करि भटकि गये।
सतगुरु करि कितने गहि मारग भव सागर चट पट सटकि गये।
तन मन औ प्रेम से हरि न भजौ गहि काल कौर करि गटकि गये।४।

दोहाः- करैं वृथा बकवाद जे, तिनको समुझौ भृष्ट।
अन्त समै जमपुर बसैं, पावैं नाना कष्ट।१।
बिन सुमिरन मिटिहै नहीं, चौरासी की चाल।
सतगुरु करि बिधि जान लो, ह्वै जाव माला माल।२।

३ ।। श्री शेश सिंह जी ।।

पदः- मन जी तुम्हारे मैं चरन गहौं बार बार
शान्ति ह्वै बैठो मोह संसय भगाऊँ मैं।
ह्वै कर वजीर मेरे रहत बे पीर काहे
दया करि संघ चलो सतगुरु पाऊँ मैं।

जप बिधि जानि लेंय संघ मिलि चित्त देंय
ध्यान धुनि नूर पाय शून्य में समाऊँ मैं।
सुर मुनि देंय दर्श तन करैं स्पर्श
सिया राम छटा छवि सन्मुख छाऊँ मैं।४।

जब तक जग रहौं हरि ही को जस कहौं
आवै जौन पास जन प्रेम में पगाऊँ मैं।
ग्राम ग्राम धाय धाय नर नारिन पास जाय
नाम विधि बतलाय जियति लखाऊँ मैं।
कलि माहि सुःख होय द्वैत सब जाय खोय
अन्त तन छोड़ि सीधे हरि पुर जाऊँ मैं।
शेश सिंह बैन कहैं यही हम कीन चहैं
हठ योग त्यागि अब राज पर आऊँ मैं।८।

४ ।। श्री माई कृष्ण कुँवरि जी ।।

पदः- भजु मन नाम आठौ पहर।
जाप बिधि सतगुरु से जानो सकै मन तब ठहर।
ध्यान धुनि परकाश लै हो मिटै भव की कहर।
छटा छवि श्रृंगार सीता राम सन्मुख छहर।४।

देव मुनि नित संघ खेलै उठै आनन्द लहर।
अन्त तन तजि चलो हरि पुर रहै जस जगफहर।
बचन सुनि नहिं ख्याल करते लगत जैसे जहर।
फेरि तो रोये न चुकिहै होत दिन दिन गहर।८।

५ ।। श्री पण्डित राम सुरति जी ।।

पदः- नेम टेम से आरती हरि की करौ तन मन लगा।
दीनता औ प्रेम आवै द्वैत को दीजै भगा।
सतगुरु से जानो भेद जब तब होय हरि तेरा सगा।
सुर मुनि करैं बातैं विहँसि बस जाय मिटि भव का दगा।४।

ध्यान धुनि लै नूर हो तब नागिनी देवै जगा।
सामने हर दम लखै सूरति शबद पथ जो पगा।

सुमिरन बिना जम दूत नर्क में देंयगे उलटा टंगा।
कहैं राम सूरति दुक्ख भोगौ मूत्र मल से तन रंगा।८।

६ ।। श्री भानु मती जी ।।

पदः- सबला को कहैं अबला बिरथा जिन से बिरलै कोइ सूर बचैं।
करि धारन गर्भ सहैं दुख को पैदा करि सेय सयान रचैं।
पति की सेवकाई करैं हित से तन छूटै तो संग सती ह्वै पचैं।
तन मन धन धर्म को लेव यहाँ हँसि बोलि औ गाय रिझाय नचैं।४।

जम लोक में फेरि मिलैं तुमको संग लोह के लाले खम्भ तचैं।
या से अबला कोई न कहै यह बैन मेरे उर नाहिं जचैं।
तन मानुष का अनमोल मिला हरि नाम में जे जन जाय मचैं।
कह भानु मती जियतै सुख हो मिटि जाय जौन विधि भाल खचैं।८।

दोहाः- सतगुरु से उपदेश लै, तन मन प्रेम लगाय।
शब्द पै सूरति को धरै, नाम कि धुनि खुलि जाय।१।
बाजा अमित प्रकार के, बजै सुनै सुख होय।
ध्यान प्रकाश समाधि हो, द्वैत जाय सब खोय।२।
राम सिया की छटा छवि, हर दम परै दिखाय।
सुर मुनि आवैं मिलन को, हित करि लें उर लाय।३।
तन छूटै साकेत चलि, बैठ जाव मुख मौन।
भानु मती कह फेरि जग, होय न कबहूँ गौन।४।

७ ।। श्री कमानी शाह जी ।।

दोहा :- वेद शास्त्र गुरु बाक्य है, जो कोइ लेवै मानि।
ध्यान धुनी परकाश लै, रूप लेय पहिचानि।१।
चौरासी का दुख मिटै, जियति लेय सब जानि।
कहैं कमानी शिष्य सो, होय न कबहूँ हानि।२।

८ ।। श्री ढफाली शाह जी ।।

पदः- यहाँ तुम्हारा वतन नहीं है ये पाही यारों है चन्द दिन की।
समय न ज़ाया करो यहाँ पर तन मन से कर लेव याद रव की।

नहीं तो आखिर में जम पकड़ कर चवैंगे जैसे चावल कि किनकी।
उठो कमर कस मुरशिद को ढूंढ़ो रहे हो काहे वृथा में भिनकी।४।

बता दें मारग चलो उसी पै न देर लागैगि एक छिन की।
धुनि ध्यान लै नूर रूप पाकर मिटा दो जियतै में जग कि पिनकी।
नहीं ठेकाना इस दम का कोई फिकिर नहीं तुमको गरभ के रिन की।
कहैं ढफाली मेहनत के आगे न कुछ है मुशकिल ये बात मन की।८।

९ ।। श्री काबिल शाह जी ।।

पदः- मुझे नहिं भिस्ति से मतलब न है अब दोज़खै जाना।
भजन करने कि विधि मुरशिद ने बतलाया सो जप ठाना।
समाधी का मिलै सुख क्या नाम धुनि नूर औ ध्याना।
सदा घनश्याम राधे का लखौ सन्मुख में मुसक्याना।४।

देव मुनि आय दें दरशन होय हँसि हँसि के बतलाना।
बजै अनहद मधुर घट में सुनै धुनि हर समय काना।
लगा तन मन करै सुमिरन प्रेम में चूर सो दाना।
कहैं काबिल छुटै तन जब चलै हरि पुर न फिर आना।८।

१० ।। श्री सूझन शाह जी ।।

पदः- नाम गर सिध्दि करना है तजो सब पाठ पूजन जी।
करो मुरशिद मिलै मारग छुटै दुनियाँ कि सूजन जी।
जियति कर लेव जब करतल कर्म दोनो कि भूँजन जी।
ध्यान परकाश लै पावो सुनो धुनि नाम गूंजन जी।४।

खुले नैनन लखौ सिय राम को हँसि हँसि न हो फिर नेक मूंदनि जी।
देव मुनि आय दें दरशन करै तन मन से पूजन जी।
बजै अनहद मधुर घट में होय कबहूँ न फूटन जी।
प्रेम करिके छकौ अमृत कहत यह बैन सूझन जी।८।

दोहाः- फूलै फलै सो झरि गिरै, बरै सो जाय बुताय।
सूझन कह हरि भजन बिन, ऐसै मिलत सजाय।।

पदः- फकत मुरशिद के कदमों का जिसे हर दम भरोसा है।
उसी के पास में जानो नाम का ठीक तोसा है।

ध्यान धुनि नूर लै पाकर कभी नेकौं न रोसा है।
लखै सिय राम को हरदम किसी को वह न कोसा है।
कहैं सूझन जे नहिं चेतें उन्हें जम नर्क खोसा है।
जे तन मन प्रेम से लागै उन्हें पितु मातु पोशा है।६।

पदः- सिर्फ मुरशिद के कदमों का जिसे हर दम सहारा है।
उसे तुम जान लो यारों राम सीता क प्यारा है।
ध्यान धुनि नूर लै करतल रूप हर दम निहारा है।
सुरति औ शब्द का मारग वो तन मन से सँभारा है।
प्रेम में मस्त क्या कहना देव मुनि संघ खेलारा है।
अन्त तन छोड़ि कह सूझन चलै जग से वो न्यारा है।६।

११ ।। श्री जूझन शाह जी ।।

पदः- सुखी गर तुमको है बनना करो मम बैन पर ख्याला।
कथा औ कीर्तन पूजन पाठ में दो लगा ताला।
ध्यान मुरशिद क करि बैठो गहो मति हाथ से माला।
जाप अजपा जपौ यारौं मिटै भव का कहर साला।
सुरति जब शब्द में पागै होय तब विहँग की चाला।५।
ध्यान धुनि नूर लै करतल मिटै विधि का लिखा भाला।
सामने राम सीता की छटा छवि हर समै आला।
समाये जौन सब में हैं करैं सब का वो प्रतिपाला।
ऐस आराम झूंठी में पड़े भूले हो क्यों लाला।
अन्त जम दूत गहि तुमको मारि कर देंगे बेहाला।१०।
जाय फिर नर्क में छोड़ैं वदन का खींच कर छाला।
पड़े कल्पों वहां भोगो बजाते हौ यहाँ गाला।
पाय नर तन न हरि सुमिरै उसी की दालि में काला।
देव मुनि आय दें दरशन फिरै मन का जहां माला।
प्रेम में चूर हो जावो करावो मुख को मति काला।
पास ही है कहैं जूझन जानि मुरशिद से लो हाला।१६।

पदः- जिसे मुरशिद के कदमों की सदा रहती लगी लव है।
उसे आनन्द दिन पर दिन जियति ही तर गया भव है।

ध्यान धुनि नूर लै पावै नहीं शंका उसे जब है।
सामने राम सीता की छटा उसके बनी तब है।
कहैं जूझन जे नहिं मानै वही फिर जात रव रव है।
एक दिन जानते सब जन यह तन मेरा नहीं शव है।६।

पदः- जिन्हें मुरशिद के चरणों में प्रीति रहती एक रस है।
उन्हीं के राम सीता हर समै जानो रहत बस हैं।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर रहे वे हर समै हँस हैं।
द्वैत परदा हटा उनका नहीं मालुम कौन कस हैं।
देव मुनि खेलते संघ में गये सब प्रेम में फंस हैं।
कहैं जूझन छोड़ि तन फिर कभी सकते नहीं खस हैं।६।

दोहाः- जियत में जावै जूझि जो, सो मुरशिद का जान।
जूझन कह तब शिष्य का, यहाँ वहाँ सन्मान।१।
मुरशिद को अर्पन करै, तन मन प्रेम से जान।
जूझन कह तब शिष्य के, खुलि जाँय आँखी कान।२।

१२ ।। श्री बूझन शाह जी ।।

पदः- साधकों के लिये चुप शान्त रहना ही ज़रूरी है।
नहीं तो हो नहीं सकती कभी उनको सबूरी है।
मानि मुरशिद वचन तन मन से लो नहिं बे सहूरी है।
पास ही है लगा परदा अभी तुम में गरूरी है।४।

बिना पाये नहीं सुख हो धरी जिमि खाँड़ पूरी है।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर हटा दो भव यह छूरी है।
राम सीता रहैं सन्मुख सवी जीवन जो मूरी है।
कहैं बूझन समझ तब हो वही मंसूर सूरी है।८।

दोहाः- मुरशिद की सेवा करो, बूझन कहैं सुनाय।
धुनी ध्यान परकाश लै, रूप सामने छाय।।

१३ ।। श्री हम्मन शाह जी ।।

पदः- मेरे तन मन में नाम रंग छाय रह्यो जी।
राधेश्याम सामने हरदम मुरली अधर स्वहाय रह्यो जी।

ध्यान धुनी परकाश दशालय अनहद नाद सुनाय रह्यो जी।
सुर मुनि आयके दर्शन देते जियतै यह फल पाय रह्यो जी।
बलिहारी मुरशिद की भाई तुम से सच बतलाय रह्यो जी।
हम्मन कहै नाम नहिं जान्यो सो जग में चकराय रह्यो जी।६।

१४ ।। श्री जैन नाथ जी ।।

दोहाः- चरणोदक को प्रथम लै, तब लीजै परसाद।
तन मन प्रेम से पान करु, तब हो आशिर बाद।१।
पांच परिकरमा करौ, फेरि दण्डवत तीन।
पाप होय सब नासि तब, कहते परम प्रवीन।२।
लेहु आरती आर्ति ह्वै, हरि में होवै प्रीति।
प्रभु सतगुरुहिं मिलाइ दें, नाम कि पावौ रीति।३।
जैन नाथ कह भजन की, जियतै जानो मूल।
तन छूटै हरि पुर चलो, मेटो जग का तूल।४।

१५ ।। श्री मिठाना माई जी ।।

पदः- श्याम की छवि देखिये अलबेली लचक है।
सुर मुनि नित जिनको हैं ध्यावत सब में सब से न्यारे सजक हैं।
श्यामा बांह गले में डाले तिरछे नैन फिराये हंसत हैं।
मुरली अधर धरे जब कूकैं धुनि सुनि सगरे प्रेम फंसत हैं।४।

सखा सखिन संग रास करत जब व्रज मंडल में धूम मचत है।
नभ ते जय जय कार उठत तब फूलन की बहु माल खसत है।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो ते सब जियतै निरखि सकत हैं।
ध्यान धुनी परकाश दशा लै सन्मुख श्यामा श्याम वसत हैं।८।

१६ ।। श्री परागा माई जी ।।

पदः- श्याम की छवि औ छटा श्रृंगार अजब बा।
देखत बनै बनै नहिं बरनत तन मन को करि दीन गजब बा।
भूषन वसन न भोजन भावत गृह आँगन सब भूलि गयन बा।
एक दफै नैनन भरि देखा जो न मिलौ तो तलफि मरब बा।४।

१७ ।। श्री ग्वाल्हा माई जी ।।

पदः- जो हरि पर तन मन वारी ग्वइयाँ। सो सन्मुख रूप निहारी ग्वइयाँ।।
लै ध्यान धुनी उजियारी ग्वइयाँ। जियतै में हो भव पारी ग्वइयाँ।।
बिन सुमिरन हो दुख भारी ग्वइयाँ। बोलो सतगुरु की बलिहारी ग्वइयाँ।।
जिन दीन्हों भेद करारी ग्वइयाँ। कहैं ग्वाल्हा पे दैकर तारी ग्वइयाँ।८।

१८ ।। श्री नन्ही जान जी ।।

पदः- श्याम की हँसनि पर लागी लगन बाटी।
मुरली मधुर धुनि मन को हरन वाटी।
नूपुर पगन सुनि मुरछि गिरन बाटी।
सतगुरु बिन नहिं होत मिलन बाटी।४।

१९ ।। श्री झूलनि जान जी ।।

पदः- सतगुरु करि लखौ हर दम श्याम बाटिउ।
सोभा कौन बरनै बायें दिशि प्रिय बाम बाटिउ।
ध्यान धुनि नूर और लै मिलै काम बाटिउ।
कर्म जरि जाँय दोनो होहु निष्काम बाटिउ।
देव मुनि दर्श देंय लेव पग थाम बाटिउ।
जियतै मुक्ति भक्ति करो आराम बाटिउ।६।

२० ।। श्री उजागर सिंह जी ।।

पदः- सतगुरु करि भजो काहे पछितात बाटे।
दिन दिन आयू छीजै वृथा तन जात बाटे।
ध्यान धुनि नूर पाय लै में समात बाटे।
तौन फिरि जक्त माहिं नहिं चकरात बाटे।
सिया राम देखै सन्मुख मन में सिहात बाटे।
प्रेम एकतार रहै नहीं बिलगात बाटे।६।

२१ ।। श्री हरी सिंह जी ।।

पदः- सतगुर वचन जे मानत नहिं खे। ते हरि नाम को जानत नहिं खे।।
तन मन प्रेम में सानत नहिं खे। ते हरि धाम को तानत नहिं खे।४।

२२ ।। श्री छेदा सिंह जी ।।

पदः- चुर मुरु चुर मुरु पगन पनहियां बोलैं चारिउ भैयन की जू।
कामदार अनमोल है पनही चम चम चम चम कैयन की जू।
राम भरथ औ लखन शत्रुहन संग बहु सखा खेलैयन की जू।
छोटे छोटे बाण छोटे छोटे तरकस छोटी छोटी धनुहियन की जू।
कदली खम्भ गड़ाय निशाना मारत बेधि जवैयन की जू।
कूदत हंसत दौरि तहं जावत निज निज बाण बुझयन की जू।६।

माथे मुकुट श्रवण दोउ कुंडल कठुला गले स्वहैयन की जू।
पगन पौटिया कटि कर धनियां झींगुलि तन फहरैयन की जू।
नैनन काजर भाल में अनखा नाशा मणि लटकैयन की जू।
दरशन हित नित सुर मुनि आवत तन मन प्रेम पगैयन की जू।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै नित देखै छवि छैयन की जू।
छेदासिंह कहै को वरनै शारद शेष थकैयन की जू।१२।

२३ ।। श्री जमूरे शाह जी ।।

पदः- कथा औ कीर्तन पूजन पाठ करि सार क्या जाना।
हुआ मन है नहीं काबू करे जो उसके मन माना।
सजा इसकी मिलै यारों अन्त जब नर्क हो जाना।
भजन में इस कि नहिं गिनती जब तलक मन न ठहराना।
जगत में मान होने हित ठान झूठा ये क्यों ठाना।५।

बिना महरम न हो हासिल मान लो सत्य कुछ ज्ञाना।
चलो जड़ से नाम को लै मिलै धुनि नूर लै ध्याना।
सामने राधिका मोहन लखौ हर वक्त मुसक्याना।
देव मुनि आय के बैठें सुनावै क्या मधुर गाना।
बजै अनहद सुघर घट में बतावो क्या अजब ताना।१०।

पाठ पूजन कीर्तन औ कथा का शब्द है बाना।
कहने सुनने औ करने का सामने तत्व लखि पाना।
मुनासिब बात कहने पर बुरा कोई न मन लाना।
तुम्हारे पार होने हित पड़ा हमको यह बतलाना।

मान लो गर सखुन मेरा तो हो जग फिर नहीं आना।
जमूरे कह मौन बैठो न कुछ पीना न कुछ खाना।१६।

२४ ।। श्री वतावन शाह जी ।।

पदः- किया था कौल सुमिरन का गरभ में सो नहीं करता।
वृथा बातों को कहि सुनि के रात दिन क्यों बका करता।
मन के मोदक भला खाकर किसी का पेट है भरता।
अन्त जब नर्क हो जाना वहां रोवत नहीं सरता।४।

ढूढ़ि सतगुरु लगा तन मन कर्म दोनों को नहिं जरता।
ध्यान धुनि नूर लै में जाय के जियतै नहिं मरता।
सामने राम सीता की छटा हर दम नहीं लखता।
सुरति निज शब्द पर धर के वतावन कह नही ठरता।८।

२५ ।। श्री वली शाह जी ।।

पदः- वली कहता सखुन मेरा जौन मानै सो सुख पावै।
ढूंढ़ि मुरशिद कदम चूमै कपट की जाल जरि जावै।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर देव मुनि संग बतलावै।
सामने श्याम श्यामा की छटा हर वक्त लहरावै।
उसे हर जां में हरिपुर है दीनता प्रेम उर छावै।
एक रस हर समय तन मन छोड़ि तन फिर न जग आवै।६।

२६ ।। श्री मिरज़ा जी ।।

शेर :- तन मन से जो होवै फ़िदा। सो क़ौल से होवै अदा।।
बातों से नहिं मिलता ख्वदा। है सब में औ सब से जुदा।।
मिरजा कहैं सुमिरै सदा। तेहि जानिये पूरा गदा।३।

२७ ।। श्री इसुफ़ खाँ साहब जी ।।

पदः- राधिका श्याम मम सन्मुख हर समय हो रही झांकी।
ध्यान लै नूर हो चम चम नाम धुनि की चलै चाकी।
देव मुनि आय दें दर्शन कहैं हरि जस मधुर छाकी।
प्रेम तन मन से करि सूरत सवद पर जौन कोइ टांकी।

मिलै आनन्द दिन पर दिन रहै फिर कछु नहीं बाकी।
करो मुरशिद पता पावो अरज मानो युसुफ़ खां की।६।

२८ ।। श्री सार्व भौम जी ।।

पदः- श्याम राधे की छटा हम हर समय लखते रहैं।
ध्यान धुनि परकाश लै अनुपम अमी चखते रहैं।
देव मुनि सब दर्स दें अनहद मधुर सुनते रहैं।
भोग हरि का नित्य पाकर कीरतन करते रहैं।
दीनता औ शान्ति लै कटु वचन सुनि हँसते रहैं।
कहैं सार्वभौम सुनाय नित सतगुरु के पग परते रहैं।६।

२९ ।। श्री रण धीर सिंह जी ।।

पदः- कुँवर चारिउ सरजू करैं असनान।
भरथ लखन शत्रुहन मलैं तनु ठाढ़े राम सुजान।
श्याम पीत झांकी सुर मुनि लखि नभ में जै जै ठान।
सरजू जी पैकरमा करि फिरि सन्मुख करतीं गान।४।

अवध पुरी आरती उतारैं तन मन प्रेम समान।
शेष प्रगट ह्वै चरनोदक लै नाचत पौन समान।
सतगुरु करौ लखौ यह लीला क्या करि सकौ बखान।
कहैं रणधीर सिंह बिन सुमिरे खुलै न आँखी कान।८।

३० ।। श्री हर दत्त जी ।।

पदः- मन अब सुनो ब्रह्म की बानी।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि जहां भुलानी।
यह बानी सुर मुनि सब जानै जो सब माहिं समानी।
या ही ने सब जग उपजायो या बिन हो हैरानी।४।

या खुलि जाय अखण्डित होवै सन्मुख प्रभु महरानी।
कहैं हर दत्त मिलै सतगुरु जब तब जानै कोई प्रानी।
जियतै मुक्ति भक्ति को पावै हम यह सांच बखानी।
सूरति शब्द के संग लगै जब बन जाव पूरे ज्ञानी।८।

३१ ।। श्री महेश सिंह जी ।।

पदः- सखिन के नैनन ते आँसुन कि धार बहै
जानि परै कूप और वापी भरि जाँयगे।
जल परिपूरन ह्वै बाहर चलैगो जब
सारे ताल सरिता और नाले उमड़ायंगे।
फेरि नीर वेग से चलैगो सब सिन्धु भरैं
लौटि सब जक्त वारि भौंर गुमरांयगे।
कहत महेश सिंह सखी कहैं ऊधो सुनो
हम और तुम सब कृष्ण में समायेंगे।४।

३२ ।। श्री खंभीरा जी ।।

पदः- मेरे सन्मुख में हरि आय। मुरलिया दीजे नाथ सुनाय।।
कर में हरी हरी दिखलाय। मुरलिया दीजै नाथ सुनाय।।
मो को ग्रह आंगन न स्वहाय। मुरलिया दीजै नाथ सुनाय।।
या मुरली सुर मुनि सब मोह्यौ सब लोकन जश छाय।
मुरलिया दीजै नाथ सुनाय।४।

अधर पै धरिकै मधुर मधुर धुनि नैन की सैन चलाय।
मुरलिया दीजै नाथ सुनाय।।
लचकि छमकि झुकि झूमि प्राण पति मन्द मन्द मुसक्याय।
मुरलिया दीजै नाथ सुनाय।।
कहत खंभीरा दौरि चपटि अब उर में लेहु लगाय।
मुरलिया दीजै नाथ सुनाय।।
सतगुरु करि सब लीला निरखौ तन मन प्रेम लगाय।
मुरलिया दीजै नाथ सुनाय।८।

३३ ।। श्री अग्रदास जी ।।

चौपाईः- जीव मात्र से द्वैस न राखै। सो सिय राम नाम रस चाखै।।
दीन भाव निज उर में लावै। सिया राम सन्मुख छवि छावै।।
तौन उपासक ठीक है भाई। वाकी समुझौ बनी बनाई।।
सियाराम निशि वासर ध्यावै। अन्त त्यागि तन गर्भ न आवै।४।

दोहाः- अग्रदास कह धन्य सो, जाहि दियो गुरु ज्ञान।
सो तन लीन्हो सुफल कै, छूटा दुःख महान।।

३४ ।। श्री युगुल दास जी ।।

चौपाईः- चोरी चुगली पर तिय निनदा। त्यागौ मिलैं सच्चिदानन्दा।।
या से जीव भयो अति गन्दा। बझिगो कठिन दुःख के फन्दा।।
सतगुरु करि लै नाम क रन्दा। ध्यान धुनि लै नूर अनन्दा।।
कहैं जुगुल बनि जा हरि बन्दा। हर दम सन्मुख आनन्दकन्दा।४।

३५ ।। श्री विश्राम दास जी ।।

पदः- देह का अभिमान त्यागो हो फते तब काम जी।
सतगुरु करो लै ध्यान लो परकाश औ धुनि नाम जी।
अनहद बजै घट में सुनो सुर मुनि मिलैं वसु जाम जी।
षट चक्र बेधन होंय सोतों कमल फूलैं आम जी।४।

नागिनी जगि होय सीधि जोग कीजो थाम जी।
सब लोक दिखलावैं तुम्हैं कर दें सुफल नर चाम जी।
हर दम लखौ सन्मुख जुगुल सरकार सीता राम जी।
अन्त तन छूटै अचल पुर लो कहैं विश्राम जी।८।

३६ ।। श्री नूर खां जी ।।

चौपाईः- क्षुदा तृषा जब आनि सतावै। तब बल बुध्दि सान लटि जावै।
निद्रा घेरि लेय जव आई। दे सोवाइ मानै नहिं भाई।
मन में बिसै वासना जागै। लोक लाज तन मन ते भागै।
सतगुरु करिकै इनको त्यागै। तब हरि नाम में मन मति लागै।४।

दोहाः- कहै नूर खां भजन बिन, मानुष तन भा झूठ।
अन्त नर्क मे बास हो, लीन ठगन निज मूठ।।

३७ ।। श्री गंजे शाह जी ।।

पदः- लखौ छवि कैसी ठाढ़े राजकुमार।
राम भरथ औ लखन शत्रुहन श्याम पीत उजियार।
कानन कुण्डल मुकुट शीश पर केशरि तिलक लिलार।

बाँये काँधेन धनुष पड़े हैं चम चमात हर वार।
सर तूणीर भरे पीठिन पर बाँधे खूब संभार।
निज निज नाम सरन धनुसन में अंकृत हैं सब वार।६।
भूषन बसन कहाँ तक वरनौं मैं मति मन्द गंवार।
देखत बनै कहै को मुख से अनुपम अजब सिंगार।
सतगुरु करै जपै अजपा जप सो पावै सुखसार।
ध्यान धुनी परकाश दशालय सन्मुख सब सरकार।
सुर मुनि सब नित पास में आवैं तन मन ते करैं प्यार।
अन्त में हरि पुर चलि कै बैठो गंजे कह सरदार।१२।

३८ ।। श्री सैय्याद जी ।।

पदः- जन्मते मरते हुये कितने हि दिन नहि याद है।
सुमिरन बिना क्यों कर रहा निज जिन्दगी बरबाद है।
मुरशिद तलाशो कमर कसि जो नाम का उस्ताद है।
मानौ सखुन लूटौ मजा करता अरज सैय्याद है।४।

३९ ।। श्री झूलन शाह जी ।।

पदः- हरि पुर अचल आबाद जानो जो तुम्हारा धाम है।
सतगुरु करो पावो पता नर तन मिला जेहि काम है।
सूरति शबद का रास्ता पकड़ो बड़ा आराम है।
ध्यान सतगुरु का करो जो बज्र के सम थाम है।४।
मेहनत करो जियतै लखौ जहं पर नहीं वसु जाम है।
सूर्य्य अगणित के बरावर एक रस जहँ घाम है।
गाहक बनो सौदा लहौ जो मिल रहा बेदाम है।
कहते हैं झूलन शाह सुमिरन बिन वृथा नर चाम है।८।

४० ।। श्री पंगुल शाह जी ।।

पदः- गर गर्ज हो अर्जी को दो मर्जी में देरी है नहीं।
किस भूल में सोते यहाँ दुनियाँ यह तेरी है नहीं।
मुरशिद करो हरि नाम लो पार फेरी है नहीं।
पंगुल कहैं पगि जाव जी अब हीं अबेरी है नहीं।४।

शेरः- प्रेम में तन मन को सानो हर समै आनन्द लो।
कहते हैं पंगुल शाह आंखै खोल के चहै बन्द लो।।

४१ ।। श्री गलवली शाह जी ।।

पदः- नागिनी मातु जगदम्बा शिवा का अंश है जाना।
किया सतगुरु लहा सुख क्या नाम धुनि नूर लै ध्याना।
चक्र षट बेधि गे सुन्दर कमल सातौं खिले जाना।
देव मुनि देत नित दर्शन लोक सब घूमि फिरि आना।४।

छटा सिय राम की सन्मुख हर समै रहती मन माना।
किया सुमिरन लगा तन मन मिला पद तब यह निरवाना।
जाप अजपा जापा यारों सुरति से शब्द गहि छाना।
गलवली शाह कह ठानो चेत कर नाम का ताना।८।

४२ ।। श्री तीस मार खां जी ।।

पदः- भूख भवानी भोजन पावै। तब सुमिरन में विघ्न न लावै।।
नहिं तो मन मति शांति न होवै। दोनो ओर ते मानो खोवै।।
नर तन का फल जो जन चाहैं। सतगुरु करैं तो पावैं राहैं।।
तीस मार खां कह समुझाई। चारों फल सो जियतै पाई।४।

दोहाः- तीस मार खां कहै, जब तीस से होवै न्यार।
तब हरदम सिय राम का, सन्मुख हो दीदार।१।
तीस तीर नहिं जान दे, लिहे फ़ौज विकराल।
धमकी देकर पकरि ले, करै एक ही फाल।२।

४३ ।। श्री चौरंगी नाथ जी ।।

दोहाः- पांच प्राण एक ठौर करि पंच गव्य करि देव।
पञ्चामृत हर दम चखौ, सन्मुख दर्शन लेव।१।
ध्यान धुनी परकाश हो, लै में जाव समाय।
चौरंगी कह छोड़ि तन, हरि ढिग बैठो जाय।२।

पदः- त्रगुण की जब भगाई हो। तो हरि के ढिग समाई हो।।
ध्यान धुनि नूर पाई हो। तो फिर लै में समाई हो।।
नागिनी की जगाई हो। घूमि सब लोक आई हो।।

चक्र षट बेधि जाई हो। कमल सातौं फुलाई हो।।
बजै अनहद बधाई हो। सुनै तन मन जुड़ाई हो।५।

देव मुनि संग खेलाई हो। हर्षि उर में लगाई हो।।
विहंग मारग से धाई हो। उसे जग से रिहाई हो।।
दीनता प्रेम आई हो। रूप सन्मुख में छाई हो।।
मार्ग मुरशिद सिखाई हो। सो इस ढर्रे पै जाई हो।
बड़ी भारी कमाई हो। सो निज को चीन्ह पाई हो।१०।

नहीं तो नर्क जाई हो। परै हर दम पिटाई हो।
हाय की धुनि मचाई हो। कहां जाकर लुकाई हो।
जो हमने पद सुनाई हो। मान लो बहिनो भाई हो।
नही नेकों सुनाई हो। खाल तन की उड़ाई हो।
जो चेला कर बकाई हो। न कल पल एक पाई हो।
छोड़ि करके ठगाई हो। भजो आनन्द दाई हो।१६।

४४ ।। श्री जगावन शाह जी ।।

शेरः- जिसे है इश्क सुमिरन की उसे मिल जायंगे सतगुरु।
ध्यान धुनि नूर लै पावै सामने रूप हर दम फुरु ।१।
जगावन शाह कह जागो जगत यह चार दिन का है।
कपट अभिमान को त्यागो ये तन गुनि लेव तिनका है।२।

४५ ।। श्री नमक हलाल जी ।।

पदः- अपना अपना खजाना बचाना।
तप धन सम दूसर धन नाहीं जुगुति से इसको छिपाना। अपना०।।
इस तन में बहु चोर बसत हैं लेवैं बांधि बहाना। अपना०।।
हर दम इसी ताक में रहते तानत जाल को ताना। अपना०।।
सतगुरु चरनों में रति रहै फेरो नाम क बाना। अपना०।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय रूप लखो मस्ताना। अपना०।६।

निर्भय सो नित मंगल गावै तन मन प्रेम में साना। अपना०।।
सुर मुनि दर्शन देंय आयकर सब से शीश झुकाना। अपना०।।
अनहद सुनो जाव दरबारे जावै छूटि लुकाना। अपना०।।

षट चक्कर वेधन ह्वै जावैं सातौं कमल खिलाना। अपना०।।
जागै मातु नागिनी संग में सब लोकन फिरि आना। अपना०।।
नमक हलाल कहै जो मानै मिलि जाय ठीक ठिकाना। अपना० ।१२।

४६ ।। श्री रमा दीन जी ।।

दोहाः- रमा मातु का दास मैं, रमा दीन है नाम।
हर दम दर्शन देत मोहिं, माता सब गुन ग्राम।।

४७ ।। श्री उमा दीन जी ।।

दोहाः- उमा मातु का दास हूँ, उमा दीन है नाम।
दरशन मो को देत नित, माता शोभा धाम।।

४८ ।। श्री राधे लाल जी ।।

दोहाः- राधे मातु का दास हूँ, राधे लाल है नाम।
हर दम सन्मुख दरश हों, पूरण भा सब काम।।

४९ ।। श्री शातिर जी ।।

पदः- न आना है न जाना है, जिसे मिलिगा ठिकाना है।
लिया जिन नाम बाना है, वही मानो सयाना है।
नूर लय धुनि व ध्याना है, रूप सन्मुख सुहाना है।
प्रेम तन मन में साना है, बना हरदम मस्ताना है।
देव मुनि को हंसाना है, लिपट उर में लगाना है।
चक्र षट भेद जाना है, कमल सातों खिलाना है।६।
नागिनी को जगाना है, घूम सब लोक आना है।
विहंग मारग से धाना है, लिखा विधि का मिटाना है।
सबी में वह समाना है, न कोइ अपना विराना है।
मिला सतगुरु महाना है, नेम औ टेम ठाना है।
चारों हूँ तन को छाना है, तत्व पांचों को जाना है।
नहीं अब कछु लिखाना है, कहैं शातिर चुपाना है।१२।

५० ।। श्री मुनासिव शाह जी ।।

पदः- पवर्गी जीव किमि पावेंगे निज अपवर्ग का रस्ता।
बिना मुरशिद के चकरावें बँधा उनका पड़ा बस्ता।

चारि दिन की जिन्दगी है खायगा काल जिमि खस्ता।
स्वांस बेकार जो खोता फिरे मनके कहे हंसता।४।

वही घर घर में जा रोता ठगों के संग में फंसता।
प्रेम तन मन से करि यारों जो हरि के नाम में लसता।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर कहे क्या रास्ता सस्ता।
सामने राम सीता की छटा श्रृंगार छवि लखता।८।

दोहाः- अजा पकड़ि के शेर को गटकि गई मुसिक्याय।
समुझे बिन छूटे नहीं तन मन ते अकुलाय।१।
मुरशिद करके गहे जब राम नाम सुखदाय।
तब निर्भय निर्बैर हो कहै मुनासिव गाय।२।

५१ ।। श्री फाके मस्त शाह जी ।।

शेरः- ऐसा पहलू न कोई आज तलक मुझको मिला।
जान मुरशिद से लिया तौन फिर तन मन से खिला।१।
करिके परतीति सखुन मान के नेकौ न हिला।
आने जाने क छुटि ही तो गया उसका गिला।२।
ध्यान धुनि नूर पाय लय में जाय करके पिला।
रूप सन्मुख में हुआ तन मन प्रेम एक सिला।३।

५२ ।। श्री झीनू भक्त जी ।।

दोहाः- विद्या मद औ रूप मद बल मद धन मद चारि।
भव सागर की धार में पकड़ि देत हैं डारि।१।
राम नाम मद पिये बिन जीव न होवै पार।
झीनू कह सतगुरु वचन मानो हो जयकार।२।

५३ ।। श्री हजरत जी ।।

पदः- मुरशिद जिसे बताई तन मन औ प्रेम लाई।
सूरति शबद लगाई उसकी हुई समाई।
धुनि ध्यान नूर पाई लय में पहुँचगा भाई।
सुर मुनि के संग खेलाई करि हैं औ मुसकराई।
षट चक्र भेद जाई सातों कमल फुलाई।५।

कुण्डलनी को जगाई सब लोक घूम आई।
घट में बजै बधाई सुनि हैं बरन न पाई।
सिय राम आनन्द दाई सन्मुख रहैं सदाई।
पट्टा गरभ में आई उसने था जो लिखाई।
उसकी किया अदाई छूटी गर्भ झुलाई।१०।

अगिनित जनम कमाई सो निज को चीन्ह पाई।
जिसने किया चलाई सब दुख हरा भगाई।
जिसने किया दुराई वह काटे चक्कर जाई।
जिसने न पग हटाई उसको जियति लखाई।
बनि जाव दीन भाई ले लो बड़ी बड़ाई।
हजरत कहैं सुनाई मानो तो हो रिहाई।१६।

५४ ।। श्री पुंगव मुनी जी ।।

वार्तिकः- बैखरी बानी से राम नाम तन मन प्रेम लगाय जपा जावै तो प्रथम बैकुण्ठ में बास हो। यदि मध्यमा बानी से जपा जावै तो दूसरे बैकुण्ठ में बास हो। यदि पैशन्ती बानी से जपा जावै तो तीसरे बैकुण्ठ में बास हो। यदि परा बानी से जपा जावै तो चौथे बैकुण्ठ में बास हो। और यदि चारों बानी एक बानी में जो अजपा ब्रह्म बानी है उसमें मिला दें तो त्रिगुणातीत हो जाय।

इसी ब्रह्म बानी से यह चारों बानी प्रकट हुई हैं। यह बानी सब में व्यापक है यानी जो देखने में आता है उसमें और जो नहीं आता उसमें। इस से दोनों सरूपों का ज्ञान हो जाता है फिर कोई इच्छा बाकी नहीं रहती। यह भेद मुझे श्री स्वामी रामानन्द जी ने बताया था सो मैंने तुम्हे बतलाया। इस बानी को जानकर जीव जरा मरण से छूटि जाता है।

५५ ।। श्री छन्नू शाह जी ।।

पदः- करुणा क्रंदन विषयों का करि बल वीर्य लुटाय दिहे मनुवां।
पांचों ठग जग में हैं जाहिर तिन संग में भंग किहे तनुवां।
सब दिशि तो सर्प फिरै टेढ़ा ग्रह आय समेटि रहे फनुवां।

अधरम से सुक्ख नहीं मिलता चलि नर्क में दुःख सहै बनुवां।
या से ले मानि कहा मेरा संग लागु लहै अपना धनुवां।
मुरशिद से सुमिरन की विधि लै अब नाम गहै कहता छनुवां।६।

५६ ।। श्री विलास जी ।।

पदः- शिव बजरंग उबारि हमै दो।
मन दिवान चोरन संग लागो ता को पकड़ि सुधारि हमै दो।
राम नाम के बांटन हारे एक निगाह निहारि हमै दो।
कहत विलास सुनो दोउ स्वामी सतगुरु हेरि पुकारि हमै दो।४।

५७ ।। श्री चेताना माई जी ।।

पदः- कोई सतगुरु से मिलो ह्वै दीन सदा तन ना रहि है।
यह संसार ओस का मोती पौन चलै तस गिरि जैहै।
बिन हरि भजै नर्क जम डारै नाना विधि के दुःख पैहैं।
या से चेतो शब्द गहौ अब देखो कैसा सुख ह्वै हैं।४।

धुनि परकाश ध्यान लै करतल रूप सामने छवि छै हैं।
अनहद सुनो अमी रस चाखौ तिरवेनी सब मल ध्वै हैं।
चक्र कमल सुर मुनि सब दरसैं नागिनि बहु सुख उमड़ै हैं।
कहत चेताना छोड़ि अन्त तन वहुरि जगत में नहिं ऐहैं।८।

५८ ।। श्री आनन्दा माई जी ।।

पदः- हमै सतगुरु सबद दै दीन हमार कोइ का करिहै।
पांचो चोर अजा चुप ह्वै गई शान्ति भये गुण तीन। हमार कोइ०।।
कर्म शुभाशुभ जरे अगिनि में तन मन प्रेम में लीन। हमार कोइ०।।
धुनि औ ध्यान प्रकाश दशा लय जियतै करतल कीन। हमार कोइ०।४।

सुर मुनि आय के दरशन दें नित हरि जस कहत नवीन। हमार कोइ०।।
राधे माधौ हर दम सन्मुख जिनके सब आधीन। हमार कोइ०।।
कहै अनन्दा भजन बिना दुख जैसे जल बिन मीन। हमार कोइ०।।
सातौं कमल चक्र षट जाना कुण्डलिनी परवीन। हमार कोइ०।८।

५९ ।। श्री रहेम शाह जी ।।

पदः- हति जीवन के तन देत बसर नहिं लागत दाया हाय हाय।
वै फटकि फटकि के प्रान तजैं कोइ चिघर रहे मुख वाय वाय।
निज पेट हेत यह पाप करैं ऐड़ात फिरैं मल खाय खाय।
है तिल्फ नहीं हुशियार नहीं हैवान कहैं हम गाय गाय।४।
जम अन्त समै धुनिहैं उनको करि लाल नैन रिसि लाय लाय।
लै जाय के नर्क में गेरि देंय कहैं वास करो दुख पाय पाय।
सतगुरु करि हरि जे नहि सुमिरैं ते आवैं जावैं धाय धाय।
जियतै में करतल जिन कीन्हा छूटी भव जाल की ठांय ठांय।८।

दोहाः- जोर जवानी का कठिन पूरा है सैतान।
विरलै कोई जन बचैं जिन पायो गुरु ज्ञान।।

६० ।। श्री राम विलास जी ।।

पदः- सीता रमण राधे रमण लक्ष्मी रमण प्रभु दाया करो।
मन ठगन के संग रमि गयो निज कर कमल छाया करो।
अब की उबारो नाथ मोहि लखि दीन दुख माया हरो।
आप के चरनों में रति हो सुफल मम काया करो।
ध्यान धुनि परकाश पाऊँ दरश दिखलाया करो।
सतगुरु मिला दो कृपानिधि यह वचन मन भाया करो।६।

६१ ।। श्री आनन्द जी ।।

पदः- दया निधि श्याम औ राधे प्रेम औतार जग जाना।
करै तन मन लगा सुमिरन देंय फल ताहि मन माना।
मुनासिब है यही सबको किया जो कौल लो बाना।
ध्यान धुनि नूर लय होवै जियति भव पार हो जाना।
युगुल जोड़ी रहै सन्मुख लखौ हर वक्त मुसक्याना।
देव मुनि आय दें दरशन सुनावैं क्या मधुर गाना।६।
तान अनहद कि मन मोहै अमी चखि होहु मस्ताना।
नागिनी मातु जगि जावै लोक सब घूमि लखि आना।
चक्र षट होंयगे सोधन पदुम सातों खिले पाना।

फौज असुरन कि सब हारी भूलिगा उनका टर्राना।
छोड़ि तन निज वतन जावै सिखा जिन नाम तर्राना।
कहैं आनन्द मैं हूँ कायथ जाति मेरी है अस्थाना।१२।

६२ ।। श्री खुश मिज़ाज़ शाह जी ।।

पदः- अरे मन बने घूमते तुम तो बानर।
हमै भी बका कर बनाया है कादर।
करूँ मुरशिद ओढूँ मै सुमिरन की चादर।
तुम्हैं भी ओढ़ाऊँ बना कर बिरादर।४।

लखै सुक्ख अनुपम करै तब तो आदर।
ए तन जान लो जैसे पानी क बादर।
करो ऊपरी प्रेम सब से तो सादर।
मगर भीतरी हरि से राखो तरा तर।८।

६३ ।। श्री हक्कल शाह जी ।।

पदः- नन्द का लाला कन्हैया सब की जान क जान है।
सब में रमा सब से विलग फिर सब से खान औ पान है।
मुरशिद करो देखो छटा भक्तन के हाथ बिकान है।
नाम धुनि लै नूर पावो अजब होता ध्यान है।
अनहद सुनो सुर मुनि मिलैं जो करत हरि जस गान है।
हक्कल कहैं हर दम लखैं जे हो गये कुर्बान हैं।६।

६४ ।। श्री समरस्त शाह जी ।।

पदः- प्रेम तन मन से करके लगैं जे नहीं
ऐसे सुमिरन से उनको कहाँ फायदा।१।
ध्यान परकाश लै धुनि सुनैं जे नहीं
रूप सन्मुख में हो किमि कहाँ कायदा।२।
दीन बन के जहाँ में रहे जे नहीं
चोर लूटैंगे उनको कहाँ फायदा।३।
बिना मुरशिद के कोई तरैंगे नहीं
देव मुनि सब कहैं यह कहाँ कायदा।४।

६५ ।। श्री वाचस पति जी ।।

पदः- कृष्ण संग खेलत बहुत साथी।
सखा सखी सुर मुनि औ खग मृग भांति भांति हाथी।
दिव्य अवाँरी राजैं ऊपर मानो तन पाथी।
छवि लखि तन मन की सुधि भूली प्रेम लिपटि साथी।४।

६६ ।। श्री रंगीले शाह जी ।।

शेरः- विचार पक्का हम उसको मानैं रियाज करके जियति में देखो।
बगैर मुरशिद न भेद पावो पढ़ो सुनो क्या यहीं क लेखो।।

६७ ।। श्री जलूसी शाह जी ।।

पदः- अभिमान नेको गर रहैगा तो न आवै दस्त वह।
हर जगह सब में रमा औ कर रहा है गस्त वह।
मुरशिद करै पावै पता बन जायगा तब मस्त वह।
सुमिरन बिना पछितायगा फिर अन्त होगा पस्त वह।
शैतान मारत लै चलै दोज़ख में झेलै कष्ट वह।
कहते जलूसी शाह फिर कल्पों रहेगा अस्त वह।६।

चौपाईः- निद्रा मैथुन भजन औ भोजन। एकान्त हो सुनिये सब जन।
नाहीं तो होवै दुख भारी। जानी सब वह बात हमारी।
मुरशिद से जो करिहैं प्रीती। तब पैहैं वह नाम कि रीती।
कहैं जलूसी शाह सुनाई। समुझै सो भव से तरि जाई।४।

गज़लः- जलूसी कह जलूसी सो जो जलसा हरि का लखि लेवै।
करै मुरशिद गहै मारग मगन सो अमी चखि लेवै।१।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर रूप सन्मुख में करि लेवै।
देव मुनि रोज दें दरशन कहैं हरि जस सो सुनि लेवै।२।
जगा कर ब्रह्म की अग्नी कर्म दोनो को धरि देवै।
अन्त तन छोड़ि कर हरि पुर चलै निर्वाण पद लेवै।३।

६८ ।। श्री गुलाम अली जी ।।

शेरः- दीनता औ प्रेम बिन यह तन वसर बेकार हो।
अभिमान नाहक में करो यह एक दिन जरि छार हो।१।

हिम्मत को जो हारै नहीं भव जाल से सो पार हो।
मुरशिद वचन टारै नहीं जियतै उसे सुख सार हो।२।

६९ ।। श्री दिलावर खाँ जी ।।

पदः- बांधिये मर्द बाना जब। तानिये नाम ताना तब।
मिलै धुनि नूर ध्याना जब। होय लै में समाना तब।
रूप सन्मुख दिखाना जब। मिटा अपना बिराना तब।
जियति बनि जाव दाना जब। मिलै सच्चा ठिकाना तब।
खलक से हो रवाना जब। फलक पर होय गाना तब।५।

प्रेम तन मन में साना जब। मिलै मुरशिद मन माना तब।
कान औ चश्म पाना जब। देव मुनि संघ बतलाना तब।
होय समता में आना जब। समुझि कै मुसिकिराना तब।
शब्द गहि जिसने छाना जब। मिला रस अति महाना तब।
दिलावर कह बताना तब। आप मस्ती में आना जब।१०।

७० ।। श्री कुरेसी जी ।।

पदः- वचन से कर्म से मन से प्रेम तन में हो मुरशिद का।
फते यावी वही पावै रहै कोई नहीं चसका।
ध्यान धुनि नूर लै जानै जहां सुधि बुधि नहीं हिसका।
सामने राम सीता हों कटै भव जाल सब विष का।४।

देव मुनि संघ में खेलैं पता पावै नही रिसि का।
छोड़ि तन हो रवाना जब फेरि नीचे नहीं खिसका।
जहां दोनों में फहरैगा पताका चारों जुग उसका।
कुरेसी कह करो सुमिरन सुरति धरि शब्द पर हरि का।८।

पदः- मुरशिद से हिकमत सीख लो किसमत क लिक्खा दूर हो।
परदा उलटि पहिचान लो खुद आप हरि जां पूर हो।
नाम का हर वक्त बजता एक रस क्या तूर हो।
ध्यान लै हो रूप दर्शै चमचमाता नूर हो।
अनहद सुनो सुर मुनि मिलैं तन मन से प्रेम में चूर हो।
कहते कुरेसी क्यों बने बैठे हो काहिल कूर हो।६।

७१ ।। श्री अरुण जी ।।

पदः- अबला भूषण सब सजै बसन न पहिरै अंग।
वाकी सोभा नेक नहि सबै बात बेढंग।
ऐसे हरि सुमिरन बिना चढ़ै न तन मन रंग।
अहंकार गांसे रहै जो है कठिन भुजंग।४।

सतगुरु करि मारग गहौ दीन बनो हरि संग।
ध्यान धुनी परकाश लै मिलै फते हो जंग।
हरि से जीवन बिलग करि मोह ने कीन अपंग।
अरुण कहैं जाने बिना हर दम रहते तंग।८।

७२ ।। श्री पर वन दास जी ।।

चौपाईः- दानी वीर संत औ दुरजन। जग में जन्मत हैं चारों जन।।
कुलटा पतिव्रता औ दानी। अबला साधु रूप सुखखानी।२।

दोहाः- दानी वीर औ पतिव्रता जावैं हरि के धाम।
सन्त होहि साकेत चलि अचल करैं विश्राम।१।
दुर्जन कुलटा नर्क में भोगैं नर्क महान।
पर वन कह सत्यार्थ हम दीन बताय प्रमान।२।

७३ ।। श्री त्रिपुरासुर जी ।।

दोहाः- हर ने मोको मारि कै हरि पुर दीन पठाय।
त्रिपुरासुर मम नाम है बड़ो सुक्ख मोहि भाय।।

७४ ।। श्री चंड जी ।।

चौपाईः- पारवती माता मोहिं मारा। दीन धाम श्री हरि का प्यारा।।
सोभा बरनत बनै न भाई। कहैं चण्ड देखत बनि आई।२।

७५ ।। श्री मुण्ड जी ।।

चौपाईः- माता पारवती मोहिं मारा। चढ़ि विमान बैकुण्ठ सिधारा।।
क्या बरनों मैं वहं की शोभा। कहैं मुण्ड देखत मन लोभा।२।

७६ ।। श्री शुम्भ जी ।।

चौपाईः- माता पारवती के हाथन। तन हत भयो मिटो जम जातन।।
चढ़ि विमान वैकुण्ठ सिधायों। कहैं शुंभ मैं सत्य सुनायों।२।

७७ ।। श्री निशुँभ जी ।।

चौपाईः- मोको मारि उमा सुखदाई। श्री हरि धाम दीन बैठाई।।
कहैं निशुंभ वहां सुख भारी। बरनत बनै न काह उचारी।२।

७८ ।। श्री नन्हे खाँ जी ।।

पदः- मुरशिद से जिसका प्रेम हो उसका ठिकाना ठीक है।
धुनि ध्यान लय परकाश हो यह वचन पत्थर लीक है।
रूप सन्मुख राम सीता का रहै क्या नीक है।
कहता है नन्हे खां भजन बिन तन बसर का फीक है।४।

शेरः- सैर मन करता जहां में बैठ है तसवी लिये।
कहता है नन्हे खां न हो कछु कपट के पल्ला दिये।१।
मुरशिद बिना सूझै नहीं है आइना गंदा हिये।
कहता है नन्हे खां सबी जां वास हरि हरदम किये।२।

७९ ।। श्री माया पुरी जी ।।

पदः- शब्द पै सूरति अपनी तागो।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानो तन मन प्रेम से लागो।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय जियति जग जागो।
हर दम राम सिया छवि निरखो सत मारग यह पागो।४।
काम क्रोध मद लोभ मोह को पकड़ि के उलटा टांगो।
द्वैत भाव आपै मिटि जावै आप को जब तुम त्यागो।
आय दीनता गोद खेलावै सांति क पहिनो बागो।
माया पुरी कहैं तन छूटै चट साकेत को भागो।८।

८० ।। श्री लखन पुरी जी ।।

पदः- सतगुरु करि नर तन फल पावो।
अजपा जाप जपौ निशि वासर नेक न जीह हिलावो।

घट में माल रहत यह जारी ख्याल करो बनि जावो।
ध्यान धुनी परकाश होय लै सुख मन चलि हरखावो।
राम सिया की झांकी सन्मुख हर दम लखि मुसक्यावो।५।

सुर मुनि नित सत संग में आवैं हरि जस सुनो सुनावो।
नागिनि जाग जाय जंह सुन्दरि सब लोकन लखि आवो।
षट चक्कर वेधन ह्वै जावैं सातौं कमल खिलावौ।
अनहद नाद सुनति बनि आवै मुख से काह बतावो।
जियतै इच्छा सब गत होवै शुभ औ अशुभ जरावो।१०।

भीतर बाहर सम ह्वै जावै नाम निसान घुमावो।
शान्ति दीनता प्रेम मिलै जब तब हरि दास कहावो।
बाँटो राम नाम दीनन को जाति भेद मति लावो।
सुधरै जीव दुक्ख भव छूटै पास में वास यतावो।
तन तजि कै साकेत विराजौ जग से नात हतावो।
लक्ष्मिन पुरी कहैं सुमिरन बिन चौरासी चकरावो।१६।

दोहाः- सूरति शब्द में जाय लगि कार्य्य होय सब सिध्दि।
लखन पुरी कहै नाम में अकथ अलेख है वृध्दि।।

८१ ।। श्री मधु पुरी जी ।।

पदः- सतगुरु से लै नाम को ध्यावो। तन मन प्रेम से नेह लगावो।
ध्यान धुनी परकाश पाय लै जियतै भव तरि जावो।
हर दम राधा माधौ सन्मुख निरखि निरखि हरखावो।
अनहद नाद सुनो घट में बाजै सुर मुनि संघ बतलावो।४।

कुण्डलिनी जाग्रत ह्वै जावै सब लोकन में फिरि आवो।
षट चक्कर सोधन ह्वै जावैं सातो कमल फुलावो।
द्वैत क ताग तड़ाक से टूटै शुभ औ अशुभ जरावो।
कहैं मधुपुरी तन जब छूटै सीधे निज पुर जावो।८।

पदः- क्या श्याम गौर गुल वदन श्याम औ श्यामा।
सतगुरु करि निरखौ हर दम शोभा धामा।
निज काया को मथि लेव जियति आरामा।

तब होय प्रकाश समाधि ध्यान धुनि नामा।
सुर मुनि सब दर्शन देंय आय वसुयामा।५।
फिर रच्छा तुम्हरी करत रहैं हर ठामा।
बाजै क्या अनहद साज घटै में आमा।
सुनि सुनि के हो मन मस्त पुलकिहै जामा।
जगि जाय नागिनी मातु लखौ सब धामा।
षट चक्कर सोधन होंय जौन सुख थामा।१०।
खिलि जावैं सातौं कमल सुनो नर वामा।
सुखमन ह्वै जावै स्वांस सरै सब कामा।
असुरन की सारी फौज होय तब खामा।
करि जतन लेहु जब जानि संग सब सामा।
तन मन जब प्रेम में शनै होय निशकामा।
मधुपुरी कहैं तब पावै अचल मुकामा।१६।

८२ ।। श्री कटोरी जान जी ।।

पदः- पढ़ि सुनि कै उमड़न लगैं छोड़ै नहि निज बानि।
सार शब्द पायो नहीं जिमि उषर को पानि।
पढ़ि सुनि कै कंठाग्र करि सभा में बोलत बात।
सार शब्द पायो नहीं जिमि कुंजर के दांत।
पढ़ि सुनि कै ज्ञानी बनै तन मन भरा अजाव।५।
सार शब्द पायो नहीं जिमि बेनी रतलाव।
पढ़ि सुनि कथनी खुब कथत ठगन से जोड़े नात।
सार शब्द पायो नहीं जिमि पीपर के पात।
पढ़ि सुनि कै चेला करत बने गुरु महाराज।
सार शब्द पायो नहीं जैसे सड़ा अनाज।१०।
पढ़ि सुनि मीठे वचन कहि नैन फेरि चहुँ ओर।
सार शब्द पायो नहीं उन्हैं जानिये चोर।
पढ़ि सुनि तन चमकावहीं आदर करते लोग।
सार शब्द पायो नहीं जिमि वेश्या का भोग।
पढ़ि सुनि आयु बिताय दी तन मन कियो न खेद।१५।

सार शब्द पायो नहीं जैसे घट में छेद।

पढ़ि सुनि कै हँसने लगै ऐसे नखरे बाज।

सार शब्द पायो नहीं बना चहै सिरताज।

पढ़ि सुनि कै अस बोलते जैसे मारत बान।

सार शब्द पायो नहीं घर घर खान औ पान।२०।

पढ़ि सुनि कै मौनी बने पाले सान औ मान।

सार शब्द पायो नहीं पूरे हैं शैतान।

पढ़ि सुनि बोझा लादि कै रहे दूर के दूर।

सार शब्द पायो नहीं जैसे पेड़ खजूर।

पढ़ि सुनि कै निन्दा करत ऊपर लादत पाप।२५।

सार शब्द पायो नहीं गांसे पर सन्ताप।

पढ़ि सुनि कै समुझावते आप चलत बेढंग।

सार शब्द पायो नहीं जानो उन्है भुजङ्ग।

पढ़ि सुनि आपस में लड़ैं मानहु लूटैं वित्त।

सार शब्द पायो नहीं उन्हैं समुझिये पित्त।३०।

दोहाः- पढ़ि सुनि भरी प्रमाण उर बोलत बचन संभार।

सार शब्द पायो नहीं जैसे सड़ा अचार।।

पढ़ि सुन उर में लीन भरि परमानन का कूप।

सार शब्द पायो नही जैसे टूटा सूप।२।

पढ़ि सुनि उपदेशन लगै, बांधि लीन क्या टोल।

सार शब्द पायो नहीं जैसे ढोल मे पोल।।

पढ़ि सुनि के नंगे रहत, मीठे बोलत बोल।

सार शब्द पायो नहीं कीचड़ रहे टटोल।४।

सोरठाः- पढ़ि सुनि करत ठगाय, पण्डित जी बहु जन कहैं।

सार शब्द नहिं पाय हैं वे जोंक रुधिर चहैं।१।

कहैं कटोरी जान, सतगुरु करि हरि को भजो।

तन मन करि कुरबान, तब तो जियतै में सजो।२।

पदः- कटोरी जान कह कट्टर भक्त अबला पुरुष जे हैं।

ते सतगुरु के वचन गहि कर दीन बनि शांति बैठे हैं।

कसै कोई उन्हें आकर कभी नेकौं न ऐठे हैं।
वही परकाश धुनि औ ध्यान लै में जाय पैठे हैं।
राम सीता सदा सन्मुख अन्त साकेत बैठे हैं।
जियति जिन कर लिया हासिल कटे भव जाल ठैठे हैं।६।

८३ ।। श्री छम्मक जान जी ।।

पदः- सारी उमिरिया गुजारी भजन बिन अन्त चलै जम धामै राम।
सतगुरु किह्यो न तन मन मारयो ऐसे अधम निकामै राम।
ध्यान प्रकाश समाधि न जान्यो रूप कि छवि धुनि नामै राम।
छम्मक जान कहैं हर दम भजि लीजै अचल मुकामै राम।४।

८४ ।। श्री झम्मक जान जी ।।

पदः- सारी उमिरिया बिताई भजन बिन अन्त पकड़ि जम मारैं राम।
सतगुरु किह्यो न तन फल पायो किहि बिधि कौन उबारै राम।
तड़फै नर्क में कल नहिं पल भरि हर दम हाय पुकारै राम।
झम्मक जान कहैं निसि वासर सुमिरै ते भव पारै राम।४।

८५ ।। श्री चम्मक जान जी ।।

पदः- सारी उमिरिया गंवाई भजन बिन अन्त पकड़ि जम कूटैं राम।
सतगुरु किह्यो न तन को तायो पारस धन किमि लूटै राम।
मन के कहे पड़े चलि नर्क में निज घर ते भई फूटै राम।
चम्मक जान कहैं लव लागै ते भव जाल ते छूटै राम।४।

८६ ।। श्री वटोरन शाह जी ।।

पदः- रहनी गहनी सहनी होय। सो जग साधू पक्का होय।।
सतगुरु से लै राम को नाम। सुमिरै एक तार वसु जाम।।
धुनी ध्यान लै औ परकाशा। हर दम रूप सामने खासा।।
सुर मुनि दर्शन ठौरे देवैं। जै जै करैं बलैय्या लेवैं।।
अनहद सुनि सुनि तन मन हर्षै। अमी चखै क्या गगन ते वरषै।५।
जागे जहँ कुण्डलिनी माता। षट चक्कर सोधन हों ताता।।
सातौं कमल खिलैं तब प्यारे। तर दिमाग खुशबू के मारे।।

इड़ा पिंगला सुखमन होवै। तब योगी सुख नींद में सोवै।।
कहैं वटोरन जियति वटोरी। सो निज धाम से नाता जोड़ी।९।

सोरठाः- शान्ति दीनता प्रेम तन मन में भरि लीजिये।
शब्दै नेम औ टेम सूरति ता पर दीजिये।।

८७ ।। श्री बसन्ती माई जी ।।

पदः- घनश्याम राधिका सजा सिंगार बसन्ती।
मुरली भि रंग लई है क्या सरकार बसन्ती।
सखियां सखा भि सज गये एकतार बसन्ती।
घर घर के सज गये फिर नर नारि बसन्ती।
सब ने लिया है लेप तन में धार बसन्ती।५।

चलने लगी समीर त्रिविध ढार बसन्ती।
घर घर में भोजन छप्पन परकार बसन्ती।
हरि प्रेम से उसी दिन तय्यार बसन्ती।
साजों के सब ने रंग लिये ओहार बसन्ती।
गाने लगे क्या राग तन मन मार बसन्ती।१०।

बजने लगे संघ साज क्या गुमकार बसन्ती।
नूपुर बजै पगों में क्या झुनकार बसंती।
मृग मद कपूर केशर बेशुमार बसंती।
केंवरा गुलाब चन्दन संघ डार बसंती।
खुशबू तरह तरह की दै धार बसंती।१५।

रख दी जगह जगह पर बलिहार बसंती।
झोरी भरी अवीर गले डार बसंती।
कुम कुम मिला है जिसमे चमकदार बसंती।
मुठ्ठी भरैं औ सब तन सब मार बसंती।
दिन कर क हो गया तहां उजियार बसंती।२०।

पिचकारियों कि ठन गई क्या मार बसंती।
सब ओर छा गई है क्या बौछार बसन्ती।
ब्रज भूमि तरु भवन सब भे यार बसन्ती।

पशु पच्छी और जमुना जल धार बसन्ती।
जल जीवों पर गया चढ़ि झलकार बसन्ती।२५।
चौरासी कोस में मचा यह कार बसन्ती।
सुर मुनि को हरि ने रंग दिया करि प्यार बसन्ती।
सब हो गये मगन करैं जै कार बसन्ती।
हर जगह श्याम श्यामा हर बार बसंती।
नाचैं औ गावैं मारैं क्या पिचकार बसंती।३०।

क्या कर रहैं हैं सब संघ खेलवार बसंती।
व्यंजन घरों में खा रहे पट टार बसंती।
नर नारि छवि लखैं बने उर हार बसंती।
सब की तरफ़ हंसैं करैं दीदार बसंती।
मुरली बजाय बांह गले डार बसंती।३५।

राधे के चूमते हैं क्या रुखसार बसंती।
मन सिजरती कि गति मती दीगार बसंती।
एक टक खड़े लखैं बहे मुख लार बसंती।
सब में रमे औ सब से फिर न्यार बसंती।
उत्पति औ पालन करतल संघार बसंती।४०।

बरने को शेष शारद गे हार बसंती।
लीला है जिनकी अद्भुद अपरम्पार बसंती।
सतगुरु करो लखो नित सुखसार बसंती।
क्यों खो रहे हो तन को बेकार बसंती।
परकाश ध्यान लै धुनि रंकार बसंती।४५।

जियतै में जानि काटिये भव जार बसंती।
सुर मुनि के सब सही हो परिवार बसंती।
खुद भूल से हुये हो गुनहगार बसंती।
सब जन वचन ये उर में लो धार बसंती।
सुमिरन करो हरि नाम को निसिवार बसंती।५०।
मन को करो तो काबू चुपकार बसंती।
घट ही में सब तुम्हारे कारोबार बसंती।

बनि दीन शांति उर में लो धार बसंती।
फिर क्या बहार जावो दरबार बसंती।
रंगि जाय जो इस रंग में हुसियार बसंती।
उपदेश दे के जीवों को दे तार बसंती।५६।

८८ ।। श्री गुनवन्त सिंह जी ।।

पदः- व्याख्यान से नाना धर्म बढ़ैं या से प्रानी बहु चेते हैं।
कोई सज्जन जन इस मारग पर जब आकर के पग देते हैं।
तब उठा उठा कर खड़े करैं जैसे बच्चे को सेते हैं।
साधारण भोजन को करते नहिं द्रव्य किसी से लेते हैं।४।

चट शाला अन्न क्षेत्र खुलवा कोइ धनिक जीव से देते हैं।
कोई औषधि कपड़े बँटवा कर दिन रात यही जस लेते हैं।
कोई चलि चलि परचार करैं क्या धर्म कि किस्ती खेते हैं।
गुनवंत कहैं गुरु नाम दियो ते निर्भय मोछैं टेंते हैं।८।

८९ ।। श्री वद्री सिंह जी ।।

पदः- तन मन औ प्रेम लगाय भजो हरि जी को।
तब होवैगा अति सुक्ख तुम्हारे जी को।
सुर मुनि जिनको रहे ध्याय सबन सिर टीको।
गावैं जस वेद पुरान नाम जस ठीको।
पावैं क्या ध्यान प्रकाश धुनी लै नीको।
सन्मुख हों सीता राम जक्त हो फीको।६।

सतगुरु करि जियतै लखो बने तो सीको।
तब पावो हर दम स्वाद दूध औ घी को।
बिन भजन किहे यह अमृत कैसे पी को।
तन छूटै आवै जाय जगत के लीको।
अब हीं तो करि करि पाप हंसत औ छींको।
जम पुर में कलपौं सड़ौ हर समय डी को।१२।

९० ।। श्री ज्ञाना अली जी ।।

दोहाः- कमसिल औ गुन को गहै, असिल सील गहि लेय।
कमसिल तो दुख देत है, असिल सदा सुख देय।१।
कमसिल नर्क को जात है, असिल जाय हरि धाम।
जियतै में अनुभव किया दोनों को परिणाम।२।
ज्ञान अली के वचन को मानो सब नर वाम।
राम सिया को लेहु भजि, यही अन्त दे काम।३।

९१ ।। श्री खड़ग दास जी ।।

पदः- बहुत जन पढ़ि सुनि ह्वै गे निकाम।
पर निन्दा पर धन पर दारा चाहत अधम हराम।
सान मान झूँठी दिखलावत पास में है नहिं दाम।
पांचो चोर संग मन मिलिकर लीन बनाय गुलाम।
सो तो ख्याल नेक नहिं करते चिकनावत हैं चाम।
ढोल के भीतर पोल रहत जिमि फूटे हो बेकाम।६।

मात पिता में फर्क है उनके जैसे वसु औ जाम।
अपजस भार शीश पर लादत अन्त पड़े जम धाम।
सतगुरु करै फरक मिटि जावै जियति मिलै विश्राम।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख सीता राम।
कमल चक्र नागिन हो सीधी सुर मुनि दर्शें आम।
कहैं खड़ग दास तन छूटै जावैं अचल मुक़ाम।१२।

९२ ।। श्री अर्जुन सिंह जी ।।

पदः- अरे मन दीन बन लच लच। बुरे कर्मों से तब बच बच।।
संग हरि नाम में मच मच। रूप सन्मुख में हो सच सच।।
मिटै भव जाल का कच कच। हर समै जो रहा तच तच।।
ध्यान धुनि नूर लै टंच टंच। बड़ी पक्की है यह गच गच।।
करैं चोरों के संग नच नच। तो तन भाले चलैं खच खच।।
रुधिर निकलै उठै भच भच। कपैं तन दुःख से तंह हच हच।६।

९३ ।। श्री चेत सिंह जी ।।

पदः- पचै मन क्यों बुराई में। महा दुख हरि दुराई में।
धर्म धन पर लुगाई में। नास करता सुताई में।
ये तन जाता भुकाई में। बना कूकुर मुताई में।
गरभ पट्टा लिखाई में। किया वादा भुलाई में।
करै देरी अदाई में। पड़ा अहमक थुकाई में।
बैठ अब निज टुकाई में। संभल जा तू सफाई में।६।

दीन बनि ले गदाई में। न हो देरी मिलाई में।
सुक्ख मिलता समाई में। अन्त जाता भलाई में।
सदा रहता रिहाई में। जहां से है विदाई में।
नर्क होता ठगाई में। व्रथा स्वांसा गंवाई में।
पड़ैगा जो बड़ाई में। पकड़ि जावै चुकाई में।
पड़ैगा तन लुटाई में। न दें पल कल पिटाई में।१२।

९४ ।। श्री जसवंत सिंह जी ।।

पदः- मन तो नाटक पास किये है करता छिन छिन अजब तमाशे।
विषय वासना के लै कापे कपट लपेटे लाशे।
जीव भाजि कै कहां को जावै चोर चहुँ दिशि गांशे।
माया वट पारन की माता द्वैत डोरि लै फांशे।
या विधि पकड़ि पकड़ि लै जावै जाय नर्क में ठांसे।
पल भरि कल मिलती नहिं वहं पर कीड़ा सब तन चांसे।६।

सतगुरु करि सुमिरन विधि लीजै तन है वारि बतासे।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिलै सिय राम सामने भासे।
सुर मुनि ते नित होय बतकही जैसे पितु औ मां से।
अनहद नाद सुनो घट बाजै घटै न तोले माशे।
कुण्डलिनी षट चक्कर जानो सातों कमल विकाशे।
कह जसवन्त सिंह मन मिलिगो कौन तुम्हैं अब सांसे।१२।

दोहाः- सांसति छूटी मन मिलो खांसि सकै नहिं चोर।
सतगुरु ने किरपा करी, जियति जीत भइ मोर।।

सोरठाः- जसवन्त सिंह कह गाय, राम नाम को जानिये।
सुनिये बहिनो भाय, सत्य वस्तु सुख खानिये।।

९५ ।। श्री रणधीर सिंह जी ।।

पदः- मन बिसयों का ऐ मे जिनका बल वीर्य को फिरते गारे हैं।
तन अंदर कारिष कीन जमा ऊपर ते खूब संवारे हैं।
यहि कारन अन्धे बहिरे भे लंगड़े लूले मिलि मारे हैं।
काबू मन जौन नहीं करते वै हर दम रहत दुखारे हैं।
जब दीन बनै गुरु ज्ञान मिलै तब तो सब चोर किनारे हैं।
जब द्वैत मिटी तब फौत कहां सन्मुख प्रिय वंशी वारे हैं।६।

धुनि ध्यान प्रकाश समाधि को लो सुर मुनि संग खेल प्रचारे हैं।
अनहद घट में बाजै सुनिये क्या संख सितार नगारे हैं।
कुण्डलिनी सीधी ह्वै चलती सुखमन में अजब बहारे हैं।
षट चक्कर सोधन ह्वै जावैं सातौं क्या कमल सुखारे हैं।
जिन सूरति शब्द पै दीन लगा जियतै भव लात से टारे हैं।
रणधीर कहैं हैं कूर वही जो बैठे हिम्मत हारे हैं।१२।

९६ ।। श्री बलवन्त सिंह जी ।।

पदः- व्याख्यान से भजन से फर्क बड़ा यह बात समुझने वाली जी।
पढ़ि सुनि कंठ किया कहेते क्या ज़वान तूती पाली जी।
बड़ी भाग्य से सत पद हो हासिल सतगुरु के हाथ में ताली जी।
उन्हीं के पास में है यह धन जिन वीनी तन मन डाली जी।
जोती कसि प्रेम कि दीन लगा नहि इधर उधर फिर हाली जी।५।

परि पूरन नित्य भरी रहती बाटे पर होत न खाली जी।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिली जियतै छूटी भव जाली जी।
छवि लखि लखि के छकिये अमृत सन्मुख में प्रिय वनमाली जी।
सुर मुनि सब आय के दें दर्शन अनहद की तान निराली जी।
खिलि जांय कमल सातौं सुंदर षट चक्कर वेधि संभाली जी।१०।

कुंडलिनी जागि के हो सीधी जो उमा मातु की आली जी।
स्वांसा सुखमन मंगल दायक जो विहंग मार्ग लै ढाली जी।

सूरति से शब्द को ख्याल करो जो कर्मन की गति टाली जी।
नहिं मानो अगर यारों कहना जम आय अन्त तन चाली जी।
क्या रूप भयानक अस्त्र लिये जिन में अति पैनी वाली जी।
वलवंत सिंह कहैं सार वचन मन मूसर दुनियां गाली जी।१६।

९७ ।। श्री विद्याधर गन्धर्व जी ।।

चौपाईः- परा चली पैसंती पासा। दोनों मिलि कर भई हुलासा।।
फिरि मद्धिमा के ग्रह दोउ आई। तीनो मिली लिपटि उर लाई।।
तीनो चलीं वैखरी के घर। पहुँच गईं मिलि लीन परस पर।।
चारो मिलीं एक में ऐसे। तेल कि धार बंधत है जैसे।४।

चलि सुषमन में जाय समानी। मिली तहाँ पर ब्रह्म की बानी।
लीन मिलाय एक में प्यारी। ध्यान प्रकाश समाधि को धारी।।
या विधि सबै एक ह्वै जावैं। सतगुरु बिन कोइ भेद न पावैं।।
राम सिया सन्मुख में राजैं। सुर मुनि दर्शन दें अरु गाजैं।८।

दोहाः- मन एकाग्र कीन्हें बिना सुखमन होय न श्वांस।
या से साधन तो करो, सबै पदारथ पास।।

सोरठाः- विद्याधर मम नाम, सतगुरु रामानन्द जी।
रोम रोम हो नाम सन्मुख आनन्द कन्द जी।।

चौपाईः- प्रथम धुनी पर सूरति दीजै। चारों खींचि एक में कीजै।
चारों हैं या के आधीना। सब में बड़ी एही परवीना।
रं रं एक तार रहै जारी। सब में व्यापक सब सुखकारी।
या को जानि लेय जो कोई। आवागमन से छूटै सोई।४।

९८ ।। श्री गुलाब जान जी ।।

पदः- होती धुनी है रोम रोम ते रकार की।
सन्मुख में राम सीता छवि क्या सिंगार की।
अद्भुत उदार जोड़ी दानी उदार की।
तारे अनन्त पापी जग जस पसार की।४।

क्या ध्यान नूर लै हो कर्मो कि छार की।
सुर मुनि भि देत दर्शन वाणी है प्यार की।

सतगुरु करो भजो तो सब ने पुकार की।
जै जै गुलाब जान कह जिन भव से पार की।८।

शेरः- सतगुरु वचन पै चलना बरछी की नोक है।
गर हो गया संभलना तो सत्य लोक है।१।
कहती गुलाब जान मन तो ठीक जो कहै।
आपस में कर के बैठा बेकार फोंक है।२।

९९ ।। श्री सरीफ़ जान जी ।।

पदः- होती धुनी है रोम रोम ते रकार की।
सन्मुख में झांकी राधे औ नन्द कुमार की।१।
बरनन करूं मैं कैसे दोनों सिंगार की।
वाणी तो हार बैठी अहिफन हजार की।२।
क्या ध्यान नूर लै हो कर्मों कि छार की।
सुर मुनि हैं देत दर्शन भव जियति पार की।३।
अनहद मधुर बजै घट क्या तान प्यार की।
सतगुरु की बोलो जै जै जिन सब संभार की।४।

शेरः- सतगुरु वचन पै चलना छूरे कि धार है।
गर हो गया ठहेरना भव से किनार है।।

१०० ।। श्री चन्द्रिका प्रसाद जी ।।

पदः- त्यागि संसार से मोहा। करो सतगुरु मिलै टोहा।।
लगा जिसने लिया जोहा। प्रेम तन मन में है पोहा।।
ध्यान धुनि नूर लै खोहा। चखै अमृत भरा कोहा।।
रूप सन्मुख सदा सोहा। मिटै असुरन क सब रोहा।।
जिसकी सत्ता में सब पोहा। उसे कलि मानता लोहा।।
सुनो रँकार है दोहा। छुटै आवागमन द्रोहा।६।

चौपाईः- रासि क नाम यही है भाई। शिव लोमश फण पति बतलाई।।
त्रगुणातीत महा सुख कारी। हर दम रहत है घट में जारी।।
तन मन प्रेम से सुरति संभारी। ख्याल करो तब खुलै किंवारी।।
कहैं चन्द्रिका सुनो निरन्तर। ऐसा और न कोई मन्तर।४।

दोहाः- नर तन मिला अमोल है, समय मिला अनमोल।
कहैं चन्द्रिका लेव भजि, राम नाम अनमोल।।

१०१ ।। श्री वफ़ाती शाह जी ।।

पदः- ब्यान पढ़ सुनि के छोड़ो यारों मुरशिद के जाकर कदमो पै पर लो।
सिफ़त तुम्हारी यहाँ वहाँ हो रियाज़ कर खुद वचस्म कर लो।
लखौ कन्हैया अदा धरे क्या फिदा रहौ गर जियत में मर लो।
परकाश लै ध्यान धुनि हो हासिल सूरति शबद पर संभारि धर लो।
न होगि आमद कभी जहां में सखुन हमारा यह मानि सर लो।
असर मोहब्बत तन मन जुरादे वफ़ाती कहता अतौल ज़र लो।६।

१०२ ।। श्री विन्देश्वरी सिंह जी ।।

पदः- झूठी बातों में क्या है धरा भाइयों
याद कर लो यहाँ राम औ जानकी।
चार दिन का तमाशा यह सब जानते
अपने जीने में तुम सब बड़ी हानि की।
किया सतगुरु न नर तन का पाया मज़ा
नूर लै क्या अजब बात धुनि ध्यान की।
कहता विन्देश्वरी अन्त जमदूत आ
सब कसर काढ़ लेंगे बुरे ज्ञान की।४।

१०३ ।। श्री सिद्धेश्वरी जी ।।

पदः- झूठी बातों में क्या है धरा भाइयों,
याद कर लो यहाँ राधिका श्याम की।
पाय नर तन बने हाय हैवान क्यों,
अपने हाथों से अपनी ज़वां खाम की।
कर के सतगुरु न पारस लिया पास था,
दौरते ही रह्यो दौर वसु याम की।
कहते सिद्धेश्वरी दूत मज़बूत आ
अन्त पूछैंगे थैली दिहेव दाम की।४।

१०४ ।। श्री मुकर्रम शाह जी ।।

पदः- दम बदम पढ़ने सुनने से क्या फ़ायदा
कर लो मुरशिद इशारा करैं यार हम।
ध्यान धुनि नूर लै पाय होवै खता
जीते भव से किनारा करैं यार हम।
राम सीता कि हर दम लखौ क्या छटा
जैसे सन्मुख दिदारा करैं यार हम।
आब दाना से बेफ़िक्र तन मन मगन
जैसे हरि के सहारा फिरैं यार हम।
मादर फादर के सच्चे पिसर जाव बन
तब तो तुमको गवारा करैं यार हम।
मान लो गर सखुन तो रिहाई मिलै
वरना फिर क्या संभारा करैं यार हम।६।

१०५ ।। श्री राम दौर जी ।।

पदः- काहे करत वर जोरी तुम नंद के लालन।
चकर मकर तकि लपटि झपटि चट लेत मटुकिया छोरी
तुम नन्द के लालन।
ग्वाल बाल संघ मिलि दधि खावत हँसि हँसि के सब फिरि बतलावत
देत मटुकिया फोरी तुम नन्द के लालन।
हाट बाट औ घाट न मानत जो मन भावत सोई ठानत
लाज धरेव सब छोरी तुम नन्द के लालन।
आधी निशि में गृह गृह जाते एक से रूप अनेक बनाते
सोवत लखि झिझकोरी तुम नन्द के लालन।
हम सब भागि कहाँ को जावैं दिन औ रैनि चैन नहिं पावैं
छोड़त काहे न चोरी तुम नन्द के लालन।६।
तुम्हरे घर उरहन लै जावैं जसुमति माई डाट सुनावैं
लागु न मानैं तोरी तुम नन्द के लालन।
एकौ करम रहे नहिं बाकी कौन भांति को तुमको ताकी
ऐसे ढीठ भयोरी तुम नन्द के लालन।

जब तक जियें सहैं का करिहैं या विधि रहैं न ब्रज से टरिहैं
हर दम तुम्हरी होरी तुम नन्द्र के लालन।
उपर से हम सब यह भाखैं प्रीत तुम्हारी भीतर राखैं
सब की मति किह्यो भोरी तुम नन्द के लालन।
को तुम सम मन मोहन प्यारे सब के उतपति पालन हारे
सब को लेत बटोरी तुम नन्द के लालन।
राम दौर कहैं सखि सब हरि से बोलैं वचन अमी जिमि बरसे
ऐसी प्रेम में बोरी तुम नन्द के लालन।१२।

१०६ ।। श्री पण्डित प्यारे लाल जी ।।

पदः- मुरली विपिन में श्याम जिस समय बजाते थे।
खग मृग भुजङ्ग जीव सुनि के बहुत आते थे।
चारों तरफ़ से घेर करके बैठ जाते थे।
सुन सुन के तान प्यारी कितने सर हिलाते थे।
सब मस्त होके धरनि पै फिर लेटि जाते थे।५।

सुधि बुधि रहे न नेकौं ऐसे लुभाते थे।
उठि श्याम सुंदर निज कर सब पर फिराते थे।
निज निज वतन को तब सब उठ कर के जाते थे।
इस विधि दया के सागर सब को खेलाते थे।
कहिं कोई दिन उन्हीं से सब तन चटाते थे।१०।

तन चाटने के वक्त आप मुसकिराते थे।
बैठें कभी खड़े हों कभी लेट जाते थे।
दहिनी औ बाईं करवट कभी पट हो जाते थे।
कबहूँ उतान रहके पग व कर उठाते थे।
सब में समान प्रेम आप कर दिखाते थे।
कहते हैं प्यारे लाल क्या आनन्द मचाते थे।१६।

शेरः- सरकार जब हमारे सब जीवों को माना।
तब हम अगर न मानैं तो नर्क हो जाना।१।
वह सब हमारे भाई बंधु संग ही आये।

निज निज करम अनुसार सबी देंह हैं पाये।२।
सब योनियों में उत्तम यह नर शरीर है।
सतगुरु से जान चेतो सब वस्तु तीर है।३।
कहते हैं प्यारे लाल अगर चूकि जावगे।
तो परि के चौरासी में फिर चक्कर लगावोगे।४।

शेरः- जाते थे घाट छोड़ि नहाने को कभी श्याम।
जमुना के जल में ठाढ़े हो कटि भरि जहां हो आम।।
जल जीवों को आवाज़ दें लेकर मुरली में नाम।
मेढक मगर कमठ और मच्छलियां तमाम।।
चारों तरफ़ से घेर लें तब बोलैं उनसे श्याम।
सब मिल के एक श्वर से बोलो तो राम राम।।
सब सुनते ही कहने लगैं जै जै श्री राधेश्याम।
घनश्याम एक एक को दोनों करों से थाम।४।

उर में लगा के बोलैं बस हो गया अब काम।
सुनकर के जीव डुबकि लगा कर करैं प्रनाम।।
पैरों पै लोटते हैं शान्ति से खड़े हैं श्याम।
जब सबकि बारी हो गई बाहर भे शोभाधाम।।
तन मन लगा के सुमिरन करि लेव आठौं याम।
सतगुरु से जान लो विधी लागै न कुछ भि दाम।।
कहते हैं प्यारे लाल सुफ़ल हो यह नर क चाम।
धुनि ध्यान नूर लै हो सन्मुख में राधेश्याम।८।

१०७ ।। श्री लाला लाल चन्द लाल जी ।।

पदः- छबीलो छैल छल बलिया मनोहर श्याम नन्द लाला।
करौ मुरशिद लखौ सन्मुख कटै जियतै में भव जाला।
नाम धुनि ध्यान लै रोशन मिलै हो विहंग कि चाला।
चक्र षट जाँय वेधन ह्वै खिलैं सातौं कमल आला।४।

नागिनी जागि सीधी ह्वै चलै करि देय मतवाला।
लोक सब जाय दिखलावै मरै मन चाहे तब लाला।

कर्म शुभ अशुभ जरि जावैं डरैं जम मृत्यु औ काला।
त्यागि तन चढ़ि सिंहासन पर चलो निज धाम सुख साला।८।

१०८ ।। श्री लाला छबीले राम जी ।।

पदः- चटक क्या मटकि झुकि झूमै मुरलिया कर में लहरावै।
करै मुरशिद लखै हर दम सामने श्याम मुसक्यावै।
खेल नाना करै संघ में बरनने में जो नहिं आवै।
खान औ पान संघ में हो एक रस जौन पगि जावै।४।

नाम धुनि ध्यान लै रोशन कमल औ चक्र लखि पावै।
नागिनी जागि सीधी हो देव मुनि संघ बतलावैं।
जियति जो लेय करतल करि लौटि सो गर्भ नहिं आवै।
नहीं तो है बड़ा दुस्तर पड़ा जग जाल चकरावै।८।

१०९ ।। श्री गिरिजा दयाल जी ।।

पदः- रसीली श्याम की चितवन किया तन मन मेरा बस है।
करो मुरशिद चखो अमृत उन्हीं के पास यह रस है।
नहीं तो जन्म जग लेना तुम्हारा मानो वे कस है।
प्रेम में मस्त हो देखो सामने ही रहे हँस हैं।४।

नाम की धुनि रगन रोवन निकलती हर समै कस है।
ध्यान परकाश लै होवै जहाँ रंग रूप नहिं अस है।
जियति अभ्यास करि जीतो कठिन भव ताप की गस है।
अन्त तन छोड़ि हरि पुर लो जहां दोनों में तव जस है।८।

११० ।। श्री परभू दयाल जी ।।

पदः- नशीली श्याम की आंखै देखि तन मन मेरा माता।
बिना मुरशिद किये हर दम कोइ दीदार नहिं पाता।
अधर पर धरि हरी मुरली मंद ही मंद मुसक्याता।
सदा भक्तों के बस में है प्रेम ही पीता औ खाता।४।

नाम पर ख्याल तन मन प्रेम से जब तक नहीं लाता।
इसी से तो जुदा हरि से कपट उनको नहीं भाता।

ध्यान धुनि नूर लै पावै सुफ़ल तब हो गरभ बाता।
अन्त तन तजि चलै हरि पुर जगत में मारि कै लाता।८।

१११ ।। श्री झल्लर शाह जी ।।

पदः- जवानी जान की दुशमन भरा जादू निगाहों में।
नारि नर पाप करि दोजख चल पड़ैं नाले अथाहों में।
बचै मुरशिद क कोइ चेला वही समझे सिपाहों में।
छोड़ि तन जब चलै हरि पुर मिलै संघी सलाहों में।४।

११२ ।। श्री विद्या सागर जी ।।

पदः- अपने ठेंठर नहि लखैं, और कि ताकत छींट।
ते जन तन को त्यागि कै, फेरि होहिं जग कीट।
अपना पाप छिपावते, और को कहते गाय।
आधा वाको लेत हैं, भोगैं कलपन जाय।४।

बेकसूर जीवन हनैं, निज को मानैं वीर।
उनके तन पर नर्क में, जमन के चलिहैं तीर।
जीवन को मरवावते, बैठे बने अमीर।
अन्त नर्क में चलि पड़ैं, भूलैं सब तदवीर।८।

पदः- अनर गल बातों में पड़कर समै अपना गंवाया हा।
बुरे कर्मों को सुख माना दया उर में न लाया हा।
मिला क्या नर्क का तकमा जियति में यह कमाया हा।
दुक्ख की खानि को बरनै कर्म अनुसार पाया हा।४।

पदः- जग में आइकै काह कमायो।
काम क्रोध मद लोभ मोह के नाते दार कहायो।
मन को जीति किह्यो नहिं सुमिरन विरथा वैस गंवायो।
सत संगति का नाम न जान्यो तजि अमृत बिख खायो।४।

अब ही चेत अचेत दशा में अन्त समै बतलायो।
लै जमदूत नर्क में डारैं रोइ रोइ पछितायो।
भोजन भांति भांति यहं पावत वहां मूत्र मल पायो।
हरि सुमिरन बिन पार न ह्वै हो चौरासी चकरायो।८।

पदः- हरि से जीव करत बेइमानी।

गर्भ में कीन करार भजैं हम अब बनि बैठा मानी।

चोरी चुगली पर दारा रत या में मति लपटानी।

कोरा ज्ञान कथन में आतुर चातुरता नहिं जानी।

बारू पेरे तेल चुवत कहुँ डारत नाहक घानी।५।

असुरन की संगति दुखदाई सो है तोहि स्वहानी।

अगणित जन्म से चक्कर काटत समुझत लाभ न हानी।

कथा कीर्तन सुनि दुख व्यापत मानहु मर गइ नानी।

हर दम विषै भोग में माता पाप कि छायो छानी।

तन के भीतर हम हम बोलत मानत निज रजधानी।१०।

यह तन कच्चे घट सम फूटी मिलै न कौड़ी कानी।

या से कहा मानु हे भाई करु सतगुरु छूटै हैरानी।

ध्यान समाधि नूर धुनि सुनु तू तन मन प्रेम में सानी।

राजा राम होय तब सन्मुख संघ में सीता रानी।

सुर मुनि आय करैं पैकरमा बोलैं जै जै बानी।

नाम गहै सो जियति लहै सब हम यह सत्य बखानी।१६।

११३ ।। श्री दौदा साह जी ।।

पदः- जग में आय किह्यौ का सौदा।

मन मतंग काबू नहिं किन्हेव घूमत जो वे हौदा।।

पाय वे सार यहां खुब बोयो लगिहैं बड़े बड़े घौदा।

पर उपकार कि बात न जानेव तुम से नीक हैं भौंदा।

अन्त समै जम दण्डन मारैं सब तन परि है लौदा।

हरि सुमिरन बिन कल पल भरि नहिं चेत करौ कहैं दौदा।६।

पदः- मनका बनिगो जीव गुलाम। या से भई बात बेकाम।।

ऐसा को है नमक हराम। नौकर को सब सौंपै दाम।।

यहि कारन ते भा बदनाम। हरि की ओर से ह्वै गो खाम।।

दौदा कहैं वृथा भा चाम। जावै अन्त पकड़ि जम धाम।८।

मन तन असुरन की नहिं लागु। सब है यारों जीव की लागु।।

सतगुरु से लै नाम को जागु। तब सब होवै अपनै सागु।।

गर्भ कि कौल में क्यों नहि पागु। काहे बना बैठ है नागु।।
जब तेरे लगि जैहै दागु। दौदा कहैं कौन विधि भागु।१६।

शेरः- गाहे बगाहे क्या करै हर वक्त हरि की याद कर।
तुझको अगर कुछ सुख न हो तो मुझ से फिर फरियाद कर।१।
मैं तुझ में हूँ तू मुझ में है यह बात प्यारे ख्याल कर।
दौदा कहैं खुब ले कमा निज को तु माला माल कर।२।

पदः- नर तन पाय नाम नहिं चीन्हे।
माया तिरगुन में तोहिं राखै ताहि लगावत सीने।
वाको पूत दूत एक मनुवाँ पाँच भूत संग लीन्हे।
पाँचौ पाँच जाति के डाकू निज निज कार्य प्रवीने।४।

तिनके संग फ़ौज रहै भारी एक ते एक नवीने।
चारों ओर ते घेरि फांसि तोहि निज कबजे में कीन्हें।
तन छूटत में जमन को सौंपैं बोर नर्क में दीन्हे।
दौदा कहैं बिना सतगुरु के यह फल जग में लीन्हे।८।

पदः- राम नाम को जानि ले तोते।
यह तन जौन हेतु तू पाये तौन त्यागि क्यों सोते।
गर्भ कि कौल मखौल मानि कै खेत कबहुँ नहिं जोते।
मांगै पोत कहाँ से दे है नर्क में खेहै गोते।४।

नैनन हरि के दर्शन पाये द्वैत क माड़ा पोते।
श्रवनन ते हरि नाम सुने नहिं समुझे बिरथा खोते।
टें टें करत फिरे चोरन संग पाप बीज को बोते।
दौदा कह सतगुरु बिन आयू बीती कूड़ा ढोते।८।

पदः- सतगुरु वचन पर ध्यान दे मन का कहा मति मानना।
तन को हलुक जल पान दे कोइ और नेम न ठानना।
बेकार वक्त न जान दे बातैं बहुत मति छानना।
दौदा तुझे यह ज्ञान दे एक नाम ताना तानना।४।

पदः- तन मन जिसने कुरबान किया वह सब कुछ कर सकता बाबा।
धुनि ध्यान समाधि प्रकाश मिली हरि को सन्मुख लखता बाबा।

सब सुर मुनि संग खेलवार करैं वह नेक नहीं थकता बाबा।
दौदा कह हर दम मस्त रहै आपै श्रोता बकता बाबा।४।

पदः- चेत करो सुनि कै नर नारी।
तुम से भूल भई बड़ि भारी।
जिनके पिता राम सर्वेश्वर औ सीता महतारी।
तिनको पकरि असुर लै जावैं डारैं नर्क मझारी।४।

गर्भ में कौल किहेव करि विनती सो जग आय बिसारी।
यह तन देवन को है दुर्लभ सो प्रभु साजि सँवारी।
सतगुरु करि घट के पट खोलौ तब हो जय जय कारी।
दौदा कहैं वचन मम मानो मिलै न ऐसी वारी।८।

पदः- जग में नर तन बरबाद किहे हरि नाम बिना सुख शान्ति कहां।
सब सुर मुनि जिनको ध्याय रहे जस वेद पुरानन गाय कहा।
सब में हैं रमे सब से न्यारे निर्मान किया जिनका है जहां।
कहते हैं दौदा शाह सुनो सोई है तरे जिन शरन गहा।४।

पदः- जीवन को खुब ढंग से पकड़त दम्भ क पौत्र विकट कलि राजा।
मोह कि नारि नींद को भेजत जा के संग में बहुत समाजा।
माया सरगम गाय रिझावत काम भगावत तन से लाजा।
रती लपटि कै कुगति देत करि केहि विधि करै जीव शुभ काजा।४।

चारों तरफ़ से घेरे संगी नाना भांति बजावत बाजा।
निकसन की कहुँ गैल मिलत नहिं पहरा लागु दसौं दरवाजा।
अन्त समय यम दूत आइकै पकरि उठांय खांय जिमि खाजा।
दौदा कहैं किह्यौ नहिं सतगुरु को तुम्हरी अब सुनै अवाजा।८।

शेरः- नित्य दरबार में होती बड़ी भक्तों कि है खातिर।
पहुँच सकते वही दौदा कहैं जो नाम में शातिर।१।

पदः- सतगुरु बिना अंधे व बहिरे नारि नर जग भटकते।
असुरन कि संगति में पड़े तजि अमी विष को गटकते।
धन ठगन हित गाना बजाना सभा में करि चटकते।
सिखि नाचना दोउ कर हिला कटि को झुका कोइ मटकते।

नूपुर बजा मुसक्या झिकोरा दै फ़रश पर छटकते।
पय रस औ पानी जहाँ पर मिलि जाय फ़ौरन घटकते।६।

जा सकैं नहिं शुभ जगह में लखि दूर ही ते सटकते।
कोइ नेम टेम कि बात सुन करि क्रोध कर महि पटकते।
तन त्याग यम पुर में परैं करि हाय हरदम फ़टकते।
जब भोग पूरा जाय ह्वै फिरि आय गर्भ में लटकते।
सुख मानि दुख को लीन है यम काल को वै खटकते।
दौदा कहैं सतगुरु करो हरि को भजो हम हटकते।१२।

पदः- आचार विचार से भ्रष्ट भये दोनों दिशि ते वे भे उल्लू।
चसका विषयों का क्या हर दम जिमि परकी गाय खात गुल्लू।
घट ही में अमृत कूप भरा पर पाय नहीं सकते चुल्लू।
दौदा कह सतगुरु करि चेतैं मिटि जावै गर्भ केर झुल्लू।४।

दोहाः- राम नाम जान्यौ नहीं, रहे छूंछ के छूंछ।
उनको ऐसे जानिये ज्यों कूकुर की पूंछ।।

शेरः- जीव मन के कहे में पड़ि हुआ अन्धा और बहिरा।
दुःख से हर समय व्याकुल पाप का छा गया कुहिरा।१।
राम का नाम सतगुरु से बिना जाने न कोइ ठहरा।
कहैं दौदा नर्क कल्पों भोगिये चल के अति गहरा।२।

११४ ।। श्री लाला हरदयाल जी ।।

पदः- चलैं छम छम बजैं नूपुर मुरलिया कर में चमकावैं।
करै मुरशिद लखै हर दम सामने हरि छटा छावैं।
अजब सिंगार आनन्द निधि देव मुनि नहिं बरनि पावैं।
ध्यान धुनि नूर लै आपै और दूजा न कोइ आवै।४।

अलख भी है प्रगट भी है सब में भी सब से बिलगावै।
सुरति को शब्द पर धरि कै प्रेम में तन व मन तावै।
सोइ अमृत चखै यारों रंग एक तार चढ़ि जावै।
अंत तन तजि चलै हरि पुर फेरि जग में न चकरावै।८।

११५ ।। श्री लाला गुरु दयाल जी ।।

पदः- छरकि झुकि झूमि के नाचै बजावै बाँसुरी थम थम।
पगों के नूपुरों की धुन मधुर कैसी उठै छम छम।
बैठि ऊपर उछरि दौड़े मही से धुनि उठै धम धम।
साज सब संघ में बाजै नाच गति ताल स्वर सम सम।४।

करौ मुरशिद लखौ सन्मुख मिटै तन मन से सब गम गम।
द्वैत कीचड़ में फंस करके अभी तो हौ बने हम हम।
सुरति को शब्द पर धरि के प्रेम करि शान्ति लो नम नम।
ध्यान धुनि नूर लै पावो अंत हरि पुर में हो चम चम।८।

११६ ।। श्री लाला शिव दयाल जी ।।

पदः- छरिक कै घूमि ठाढ़ा ह्वै भौंह दोनों को मटकावै।
कमर को दे झुका मोहन दोउ कर भाव बतलावै।
अधर पर बाँसुरी धर के तान मधुरी से क्या गावै।
छमा छम दे बजा नूपुर चश्म करि बंद मुसक्यावै।
दौरि राधे क करि गहि ले रहस मंडप में टहलावै।
सखा औ सखी हैं जितने रूप उतने ही बनि जावै।६।

प्रेम में सब पगै नाचैं बोल मुख से न कोइ पावै।
साज बहु विधि बजैं सँग में ताल स्वर तान धुनि छावै।
करै मुरशिद लखै हर दम जियति भव पार ह्वै जावै।
ध्यान धुनि नूर लै जानै रूप सन्मुख छटा छावै।
देव मुनि आय दें दरशन विहँसि नित उनसे बतलावैं।
अंत तन तजि सिंहासन चढ़ि जाय हरि पुर न फिरि आवै।१२।

शेरः- हरि इश्क के मरीज का तवीव क्या करै।
गुलशन में जैसे गुल खिले स्वगँध क्या करै।।

११७ ।। श्री लाला राम दयाल जी ।।

पदः- छटा शिंगार छवि देखो राधिका श्याम आवत हैं।
अधर पर धरि सुघर मुरली में स्वर भरि राग गावत हैं।

नाम में नेह तन मन जोरि कै जे जन लगावत हैं।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर सामने रूप छावत हैं।
देव मुनि आय दें दर्शन हरषि गोदी उठावत हैं।
रहे जब तक जगत में तन सदा सुख से बितावत हैं।६।
अंत तन तजि के हरि पुर ले फेरि जग में न धावत हैं।
करो मुरशिद लखौ जियतै वही करतल करावत हैं।
नहीं तो अंत हो दोजख बदन सब कीड़े खावत हैं।
सड़ौ कल्पों सहौ दुःख को इसी विधि वहँ भोगावत हैं।
भोग जब जाय पूरा ह्वै फेरि यहँ पर पठावत हैं।
विनय नर नारि गर मानो भजो हरि हम चेतावत हैं।१२।

११८ ।। श्री बीबी जी ।।

पदः- श्याम श्यामा की क्या जोड़ी मनोहर देख पड़ती है।
करै मुरशिद लखै हर दम नेकहूँ फिर न टरती है।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर कर्म शुभ अशुभ जरती है।
बलैयाँ देव मुनि लेवैं जियत में जौन मरती है।४।
दीनता शान्ति से तब फिर भिखारिन को सुधरती है।
आर्ति होवै लहै भिक्षा इसी हित जग विचरती है।
सुरति को शब्द पर धरि कै संग में मन को ठरती है।
कहैं बीबी वही तन तजि अचल पुर वास करती है।८।

११९ ।। श्री लाला रघुवर दयाल जी ।।

पदः- श्याम के संघ श्यामा हैं गले में बाँह को लाये।
करै मुरशिद लखै झाँकी हर समय सामने छाये।
छटा सिंगार छवि वरनन करन में शेष सकुचाये।
देव मुनि हर समय जिनका स्मरन ध्यान जस गावैं।
मगन जिनकी कृपा से सब प्रेम तन मन में उमड़ाये।
सुफल नर तन करो यारों भजो तजि कपट दुःख जाये।६।
ध्यान परकाश लै जानो जहाँ सुधि बुधि न कछु आये।
नाम धुनि सब रगन रोवन खुलै एक तार भन्नाये।

रमे सब में प्रिया प्रीतम जगत खुद आप उपजाये।
निराले भी रहें सब से ख्याल फिर भी न बिसरायें।
समै ऐसा न फिर मिलिहै यही कहि हम तो समुझाये।
यहां पर जो कमा लेगा वहाँ वह बैठि कर खाये।१२।

१२० ।। श्री लाला जै दयाल जी ।।

पदः- हरि मोहि ठगवा बहुत सतावत।
कपट दंभ पाखण्ड मसखरी कूट औ झूँठ सिखावत।
पर धन पर दारा रत आमिष पर मन को दौरावत।
राति दिवस का पाठ यही है और न उन्हें स्वहावत।
पल भरि चैन मिलत नहिं इन से ऐसी ररि मचावत।
जैसे बाजीगर लै मरकट साज बजाय नचावत।६।

खेल में भंग होय जस नेकों तन पर चपत लगावत।
वैसे हाल जानिये स्वामी मैं यह सत्य सुनावत।
बिन सतगुरु के जीव तरै किमि बार बार चकरावत।
भेद जानि कै निबुकि जाय चट फेरि न जग में आवत।
ध्यान धुनी परकाश दशा लै पाय हिये हर्षावत।
सन्मुख आय देव मुनि दर्शें विजय की ढोल बजावत।१२।

१२१ ।। श्री गोरी जान जी ।।

पदः- हरि मोहिं चोर सिखावत चोरी।
हैं उस्ताद काम में अपने शिष्य करत बरजोरी।
बहुत मंत्र सब मिलि बतलावैं तन मन रंग में बोरी।
छिन ही में कंठस्थ होय सब ऐसी लागै डोरी।
या से जीव पड़ा चकरावै पाप से भरि गइ झोरी।
सतगुरु देहु मिलाय दयानिधि देवैं बंदी छोरी।६।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख मूरति तोरी।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शें तब मुद मंगल होरी।
जियतै में सब करतल होवै भर्म क भाँड़ा फोरी।
अंत समय तव धाम लेहुँ चलि बैठो फिरि एक ठोरी।

यह मम विनय दीन दुःख भंजन मैं गँवार बुधि थोरी।
अब की बेर नाथ अपनावो बलि बलि जावै गोरी।१२।

१२२ ।। श्री लाला गुरशरन लाल जी ।।

पदः- फिदा हम उस पै हैं भाई जो नंद का सुत कहाता है।
अधर पर धरि हरी मुरली मधुर स्वर से सुनाता है।
बजा नूपुर झुकै झूमै नज़ाकत क्या दिखाता है।
सखा सखियों को हँसि हँसि के झपटि उर में लगाता है।४।

लाड़िली के दस्त से दस्त गहि सँघ में नचाता है।
निरखते बन पड़ै यारों कहा मुख से न जाता है।
करै मुरशिद वही जानै सामने रूप छाता है।
ध्यान धुनि नूर लै जानै अंत हरि धाम पाता है।८।

१२३ ।। श्री लाला शिवचरन लाल जी ।।

पदः- रमा सब में विलग सब से बड़ा आनंद दाता है।
प्रेम तन मन से जो करता उसी के दस्त आता है।
खेलता हर समय संघ में अजब कौतुक दिखाता है।
खान औ पान साथै में करै सोता जगाता है।
करै असनान जब मोहन मलै तन औ मलाता है।
लड़ै कुस्ती गिरै पहिले फेरि उठि के गिराता है।६।

दौड़ में काटता चक्कर कभी हँसि बैठि जाता है।
कभी संग मार मुक्कों की करै भगता भगाता है।
कभी कपड़े उठा पहिने कभी चुपके पिन्हाता है।
कभी नूपुर बजा नाचै कभी मुरली सुनाता है।
कभी संघै नचा करके फेरि गाना सिखाता है।
करो मुरशिद लखौ जियतै समै अनमोल जाता है।१२।

१२४ ।। श्री चन्दो माई जी ।।

पदः- श्याम घट ही में बसा था हमै यह होश न था।
मुरशिद करि जाना नहीं था हमै यह होश न था।

द्वैत का पल्ला पड़ा था हमै यह होश न था।
ध्यान धुनि नूर लै में था हमै यह होश न था।४।

सब में सब आप बना था हमैं यह होश न था।
नाम सुनकर न गुना था हमें यह होश न था।
तन मन हमने न भुना था हमै यह होश न था।
प्रेम बिन हमसे जुदा था हमै यह होश न था।८।

१२५ ।। श्री लाला विजय बहादुर लाल जी ।।

पदः- जे मुरशिद को बसर समुझैं उन्हैं जानो हुये बागी।
यहाँ पापों का ले तोशा वहाँ तन पर चलै साँगी।
आने जाने के चक्कर से न छूटै क्योंकि है दागी।
जल रही हर समै यारों कठिन भव सिन्धु में आगी।
बचै सच्चा जो हो चेला न रक्खा द्वैत की टाँगी।
उसी के पास तप धन है बढ़ैगा नहिं कभी खाँगी।६।

रहै मुरशिद की सेवा में प्रेम तन मन छिमा माँगी।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर रूप सन्मुख लियो तागी।
देव मुनि आय दें दर्शन मिलै सब के चरन लागी।
सदा निर्वैर औ निर्भय वही योगी वही त्यागी।
वही दरवेस कामिल है वही ज्ञानी औ अनुरागी।
दीनता शांति की मूरति अंत हरि पुर चलै भागी।१२।

१२६ ।। श्री लाला बहादुर लाल जी ।।

पदः- हरि प्रेम के भूखे व प्यासे प्रेम तुम करते नहीं।
प्रेम खेतों में उगै नहिं हाट बाट बिकै नहीं।
प्रेम अपने पास है वह मार्ग तुम जानत नहीं।
मुरशिद करो पावो पता घट ही में चट उलटै वही।४।

ध्यान धुनि परकाश लै औ रूप सन्मुख हो सही।
देव मुनि सब दर्श दें फिर देर लागै क्या कहीं।
विचर कर सब देख लो यह तन जगत औ है मही।
अंत हरि का धाम हो जो नर शरीर क फल चही।८।

१२७ ।। श्री कमला नेहरू जी ।।

पदः- मन में असमरन रहे हरि का तन से परस्वारथ करै।
समै पर सब कार्य होते पग पछारी मत धरौ।
कमला कहैं तन त्यागि हम हरि धाम में दाखिल भईं।
बरनन करौं किसि विधि वहाँ हर दम रहै मंगल मई।४।

१२८ ।। श्री लाला शिवदान बहादुर जी ।।

पदः- हरि मोहिं चोर राति दिन पीटत।
धर्म की पूँजी जमा करो जहँ लखि कै फौरन झीटत।
सुमिरन पाठ कीर्तन पूजन सुनि कै सब मिलि खीझत।
उनके कहे में अगर चलैं हम तौ फिर खुश हो रीझत।
सतगुरु देहु मिलाय दया निधि दिन दिन आयू छीजत।
ध्यान धुनी परकाश दशा लै देवै तन मन सींचत।६।

१२९ ।। श्री लाला लाल बहादुर जी ।।

पदः- हरि मोहिं चोर बहुत दुख देते।
चारों तरफ से घेरे पापी जबरन संग में लेते।
कैसे इनसे उबरैं स्वामी हर दम रहत ये चेते।
अधरम ही का पाठ पढ़ावत जम पुर की दिशि खेते।
निद्रा आलस इन्हें न आवत कौन जड़ी वे सेते।
सतगुरु देहु मिलाय कृपा निधि इनको तब हम रेतें।६।

१३० ।। श्री लाला राम बक्स जी ।।

पदः- राम नाम को जानि ले मैना।
यह पिंजड़ा है चन्द रोज का छोड़ कपट के घैना।
सतगुरु करि सुमिरन अब कर तू तब तन मन हो चैना।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होवै वसु औ रैना।
सन्मुख राधेश्याम की झांकी दरशै नेक टरै ना।
तन तजि अचल धाम में राजो मानो गर मम बैना।६।

१३१ ।। श्री लाला हरि बक्स जी ।।

पदः- चतुर सुघर क्या छैला मोहन अलबेला।
अजब सिंगार बनाये तन में जादू का सुरमा अँखियन में
मारत सैन अकेला मोहन अलबेला।
सन्मुख जौन परै सो मोहै ताको और नहीं कछु सोहै
सब के तन मन पेला मोहन अलबेला।
हाट बाट पनिघट पर घूमै मंद मंद हँसि हंसि झुकि झूमै
चट घट पर दे ढेला मोहन अलबेला।४।
दूध दही माखन नित लूटै ग्वाल बाल संघ लैकर जूटै
ऊपर ते करै रेला मोहन अलबेला।
मुरली जिधर बजावै प्यारी उधरै जाय मिलैं बृज नारी
नाना विधि करै खेला मोहन अलबेला।
रहस भवन में नाचैं गावैं सखा सखिन लै धूम मचावैं
सब जग जाको मेला मोहन अलबेला।
सतगुरु करै लखै नित झांकी जेहि वरणत अहि शारद थाकी
मुक्त भक्त सो चेला मोहन अलबेला।८।

दोहाः- ध्यान प्रकाश समाधि हो, धुनी सुनै एक तार।
सन्मुख शोभा धाम हों भयो जियति भव पार।।

१३२ ।। श्री लाला गङ्गा बक्स जी ।।

दोहाः- मल से मल छूटै नहीं, वारि से घृत नहिं होय।
ऐसे हरि सुमिरन बिना, जीव मुक्त किमि होय।।

पदः- बिना सुमिरन के सुख नहीं कोई पायँगे।
आने जाने के फन्द में चकरायँगे।
जम मारत घसीटतहि लै जायेंगे।
वहाँ काँटो के वृक्षों में लटकाँयगे।
फिर बेतों से चूतर पिटाये जाँयेगे।५।
तहाँ कलपौं बहुत दुःख भोगाये जायेंगे।
फेरि वहँ से यहाँ को पठाये जायेंगे।
स्वान सूकर औ गदहे बनाये जायँगे।

अभी सोचत न आखिर रुलाये जायँगे।
करै सतगुरु मजा ते उड़ाये जायँगे।१०।

ध्यान परकाश धुनि लै समाये जायँगे।
सारे पापौं को अपने जलाये जायँगे।
राम सीता को लखि लखि मुशक्याये जायँगे।
तन छूटै तो हरि पुर बिठाये जायँगे।
तब जग में कभी नहिं पठाये जायँगे।
कोइ मानै न मानै हम गाये जायँगे।१६।

शेरः- बातैं करैं कि आसमा पृथ्वी निचोड़ लें।
हरि नाम लेने को कहो तो मुख को मोड़ लें।१।
ऐसे जहाँ में वसर हमने देखे बहुत हैं।
जे मुफ़्त ज़िन्दगी गँवाय लेत नरक हैं।२।

१३३ ।। श्री दृग पाल सिंह जी ।।

पदः- पर ललना को तन मन देना महा पाप का बोना है।
कल्पौं दुःख मिलै नाना विधि हर दम वहँ पर रोना है।
यह अनमोल शरीर बसर का मुरशिद करि सुख सोना है।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख रूप सलोना है।४।

१३४ ।। श्री लाला संत बक्स जी ।।

पदः- जिसने जपा तन मन लगा कर नाम सीता राम का।
मुरशिद क सच्चा शिष्य वह फल पा गया नर चाम का।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप शोभा धाम का।
तन छोड़ि प्रभु के पुर गया फिर रहा जग से काम क्या।४।

१३५ ।। श्री लाला हरि हर बक्स जी ।।

पदः- जिसने भजा तन मन लगा कर नाम राधेश्याम का।
मुरशिद क सच्चा शिष्य वह फल पा गया नर चाम का।
परकाश लय धुनि ध्यान सन्मुख रूप सब गुण ग्राम का।
तन त्यागि पहुँचा अचल पुर जग से रहा फिर काम क्या।४।

१३६ ।। श्री जगपाल सिंह जी ।।

पदः- सतगुरु करि नाम में सट सट सट।
उघरैं तब हिय के पट पट पट। चलु ध्यान समाधि में चट चट चट।।
ले नूर तिमिर जाय फट फट फट। धुनि हर दम होवै खट खट खट।।
सन्मुख निरखौ छवि नट नट नट। परिपूरन जो सब घट घट घट।।
जग जाल से जियतै हट हट हट।५।

दोहाः- दीन बनै सो अटि सकै, मिटै लिखा जो भाल।
नाहीं तो अति कठिन है, अजा क चक्कर चाल।।

१३७ ।। श्री लाला राज बहादुर जी ।।

पदः- छूटै कैसे त्रिगुण की गाँठी।
मन घोड़ा काबू जब होवै दौरत जो बिन काठी। त्रिगुण की०।।
जाने बिना भेद को पावै जिमि कोथा में साठी। त्रिगुण की०।।
विधि हरि शम्भु के अंश हैं तीनों रहै जक्त को माठी। त्रिगुण की०।।
आगे बढ़न देत नहि जीवहिं पहनत निज निज भाठी। त्रिगुण की०।।
सतगुरु करि तब इनहिं भगावो पकड़ि शब्द की लाठी। त्रिगुण की०।६।

१३८ ।। श्री लाला बम बहादुर जी ।।

पदः- तीरथ वर्त करैं बनि साधू मन विषयों में जावैं।
अन्त में पकड़ि नर्क यम डारैं महा कष्ट तहँ पावैं।
जैसे गीध अकाश में घूमत दृष्टि ढोर पर लावै।
का वह उड़े से सिध्द जात ह्वै सड़ा मास नित खावै।
जैसे शूकर श्वान औ क़ागा विष्टा लखि चट धावै।५।
खीर त्यागि दे ताहि न छोड़ै हर्षित मन से पावै।
सतगुरु के बिन मन न होय वश जीव पड़ा चकरावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि जब हत्थे में आवै।
तब वह मुद मंगल भा जानो रूप सामने छावै।
अनहद सुनै देव मुनि आवैं सब संग खेल मचावैं।१०।
नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलावै।
चन्द्र सूर्य दोउ एक में होवैं सुखमन घाट नहावैं।

विहँग मार्ग से जाय वही जो सूरति शब्द लगावै।
पच्छिम दिशि की खुलै केवाड़ी आपु में आपु समावैं।
हेरत आप हेराय गये जब कौन कहौ बिलगावै।
यह पद लीन चहै जो कोई तन मन प्रेम में तावै।१६।

१३९ ।। श्री कर्मा माई का कीरतन ।।

दोहाः- कर्मा कह हरि को भजो, तब पावो विश्राम।
नाही तो जन्मो मरौ, विरथा है नर चाम।।

पदः- हे हरि अगम हे हरि अकथ हे हरि अकह हे हरि अलख।
हे हरि चटक हे हरि मटक हे हरि लटक हे हरि खटक।
हे हरि झटक हे हरि भटक हे हरि घटक हे हरि सटक।
हे हरि अटक हे हरि कटक हे हरि पटक हे हरि छिटक।
हे हरि लपक हे हरि झपक हे हरि गपक हे हरि सपक।
हे हरि थपक हे हरि छपक हे हरि चमक हे हरि छमक।६।
हे हरि गमक हे हरि धमक हे हरि रमक हे हरि जमक।
हे हरि सजक हे हरि सिसुक हे हरि मसक हे हरि हंसक।
हे हरि ठसक हे हरि भसक हे हरि खसक हे हरि चसक।
हे हरि अगुन हे हरि सगुन हे हरि सुगम हे हरि मगन।
हे हरि भनत हे हरि सुनत हे हरि भगत हे हरि जगत।
हे हरि अजर हे हरि अमर हे हरि अटल हे हरि अघट।१२।

दोहाः- कर्मा कह सब कछु हरी, सतगुरु करि लो जान।
हर दम सन्मुख में लखौ, सुनो नाम की तान।।

१४० ।। श्री गुट्टा माई जी ।।

पदः- कारन अलवल मक्कर नखरा, ठन गन किरला करत मसखरा।
अधरम झूठ के बनि गे चखरा, बार बार जग में रहे चकरा।
तन तजि नर्क में लेते बखरा, बहुत जीव जहँ पर रहे टकरा।
भोजन करत समय करै टसरा, नमक हरामी क पहिने गजरा।
बे शरमी का सिर पर सेहरा, लाज क धोय बहाइन नजरा।
कटि में विषय क बाँधे रसरा, तन भा छीन करै मन रगरा।६।

चिन्ता चाह खड़ी दिन झगरा, चारौं तरफ़ से जाला पसरा।
तामें फँसे फटकते मगरा, सतगुरु बिन खोलै को डगरा।
द्वैत क लाग वहाँ है पटरा, या से खुलत न ज्ञान क कठरा।
चोरन मिलि सब कीन्हेव सखरा, यहि विधि दीन्हेव जीवहिं पकरा।
जब यह धैना छूटै बछरा, तब सब मिटै जगत का दुखरा।
हरि सुमिरन में जो कोइ पिछरा, गुट्टा कहैं खाय सो खतरा।१२।

दोहा:- मोटा पतरा तू नहीं, सदा एक रस जान।
गुट्टा कह सतगुरु बिना, तन निज लीन्हें मान।१।
हम तुम की रसरी कठिन, ता में बांधा जक्त।
गुट्टा कह निबुकै वही, जो हो सांचा भक्त।२।

१४१ ।। श्री मुस्तफा अली जी ।।

पद:- हे राम हे कृष्ण हे विष्णु हे गोपाल।
हे वराह हे नृसिंह हे वामन हे दयाल।
हे कमठ हे मीन हे सच्चिदानन्द हे विशाल।
हे धनुषधर हे चक्रधर हे वंशीधर हे अकाल।४।

हे दीनबन्धु हे करुणा सिन्धु हे आनन्द कन्द सुर मुनि मानस मराल।
हे निर्गुण हे निराकार हे निर्विकार हे त्रिभुवन भुवाल।
हे सब की खानि हे सब की जान हे सब से न्यार हे सब से आल।
हे गोविन्द हे मदन मोहन हे मुरारी हे प्रणत पाल।८।

१४२ ।। श्री लाला गनेशी लाल जी ।।

पद:- हरि इन चोरन को समुझावो।
हर दम हमको दुःख यह देते किस विधि शरन में आवो।
सुमिरन पाठ कीरतन पूजन आप चहौ करवावो।
करुणा सागर सब गुण आगर चाकर मोहिं बनावो।४।

पतित पुनीत करत प्रभु आपै सुर मुनि सब गुण गावो।
वेद शास्त्र नित स्तुति करते त्रिभुवन में यश छावो।
सतगुरु देहु मिलाय प्राण पति अब मति देर लगावो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छावो।८।

१४३ ।। श्री लाला मंगली प्रसाद जी ।।

पदः- भक्तन के भाल में चन्दन घिसि करते सरकार झगरि कै हो।
धरि बाल रूप दुलरावैं, कर से कर पकरि बिठावैं,
दौरैं संग खूब उछरते हैं। सरकार०।।
दोनों कर गले में लाई पीछे से देत गिराई
सीने पर आसन करते हैं। सरकार०।।
कबहूँ सयान बनि जावै हाथन पै लै हलरावै
तन मन में आनन्द भरते हैं। सरकार०।४।
बूढ़े बनि कबहूँ आवैं मुख चूमै हिये लगावैं
तन फूँक डारि कै झरते हैं। सरकार०।।
भक्तन की रुचि पहिचानै वैसै चट कारज ठानै
हर दम सँग से नहिं टरते हैं। सरकार०।।
सतगुरु करि खेलौ संग में चाहे घर द्वारे वन मग में
भव जाल से वही उबरते हैं। सरकार०।।
मंगली प्रसाद सुनावै नाना विधि खेल दिखावैं
ऐसे नित आप सुधरते हैं। सरकार०।८।

१४४ ।। श्री मुरतुजा हुसेन जी ।।

दोहाः- चेला होय तो ठीक हो, नाहीं तो बेकार।
वासे तो चैला भला, जा से हो भण्डार।१।
जीव मात्र में हरि रमें, नाम जपै ले जान।
तब काहे जन्मै मरै, चौरासी की खानि।२।

पदः- सतगुरु से मार्ग जानि भजन हरि का करो हो।
भव ताप जाय छूटि, काहे जन्मौ मरौ हो।
सूरति के संग मन को लै शब्द धरौ हो।
धुनि ध्यान नूर लै मिलै, तब जियत तरौ हो।
सन्मुख में सीता राम हों, मुद मंगल भरौ हो।
उपदेश दे के जीवन का सब दुःख हरौ हो।६।

१४५ ।। श्री लाला बिहारी लाल जी ।।

पदः- हरि मोहिं ठगन बनायो पीना।
मन तो उनके कहे में लाग्यो तन बल ह्वै गयो हीना।
काह अकेल करैं हम स्वामी सब धन पकरि के छीना।
दुष्टन मारि देहु मोहिं मन को सब प्रभु तव आधीना।४।

सूरति के सँग ताहि लगाय के सुनौ नाम धुनि झीना।
ध्यान प्रकाश समाधि मिलै जहं होय करम गति खीना।
हर दम आप को निरखौं सन्मुख सदा रहौं लवलीना।
सतगुरु देहु मिलाय दया निधि सुफ़ल होय जग जीना।८।

दोहाः- मै मति मन्द मलीन हूँ, अधम उधारन आप।
अब विलम्ब मति कीजिये, आपै माई बाप।१।
सतगुरु आपु को जानि के सब कहुँ पूजे जात।
जिनकी कृपा से भव अगम, गोखुर सम ह्वै जात।२।
अग्नी शीतल होत है, अस्त्र जात गोठिलाय।
सदा अभेद अखेद हैं, कहैं बिहारी गाय।३।

१४६ ।। श्री स्वामी योगानन्द जी ।।

चौपाईः- त्यारह त्याग औ ग्यारह भक्ती। सतगुरु बिन को जानै युक्ती।
आठ प्रकार परा की जापा। अजपा चारि प्रकार क थापा।
सप्त ज्ञान विज्ञान हैं चारे। समय पै यह सब जाँय प्रचारे।
अबहीं हुकुम नहीं सरकारी। जानी बूझी बात हमारी।
योगानन्द कहैं मम बानी। पढ़ि सुनि धैर्य्य धरैं सब प्राणी।५।

वार्तिकः- जड़ समाधि से जीव मोक्ष नहीं पाता है। हमने इस क्रिया को जानकर त्याग किया। यह संकल्प समाधि है। जब प्राण वायु उतरती है तब मन इधर उधर दौड़ने लगता है। इस से आयू बढ़ती है और बहुत सिध्दियां प्राप्त होती हैं। इस समाधि को एक वर्ष लगाने से दश वर्ष की आयू बढ़ जाती है। इस में परमानन्द का अभाव है। जैसे मेढक जमीन में पांच या सात या दस हाथ नीचे जा बैठता है। जब अषाढ़ बरसता है तब निकल कर बाहर आता है। और क्वार तक जीव जन्तु खाकर

फिर नीचे चला जाता है और चुपके बैठ जाता है। फिर आठ महीना बैठा रहता है परन्तु मन की मति नहीं सरती। मोक्ष और बन्धन का कारन मन ही है।

१४७ ।। श्री टन मन शाह जी ।।

पदः- बूढ़ी ह्वै गईं ठसक नहिं छूटी।
करैं सिंगार रुखाई तन पर मन की नेकौं चसक नहिं छूटी।
घर बैठे नहि होय रहाइसि घर घर घूमैं सनक नहि छूटी।
पर पति लखि मुसक्याय डगर में तन की उनके मटक नहिं छूटी।
निज पति को चाकर सम समझैं हिये कपार कि चारौं फूटी।५।

युवा अवस्था में पाप कि गठरी शिर पर बाँधिन लूटी।
दुख को सुख तन मन से मानि के रहीं उसी में जूटी।
ऐसा रंग चढ़ा अधरम का परी न एक दिन टूटी।
हर दम नशा चलै मदमाती चाखे विषय कि बूटी।
नहीं सोहाय और कोइ कारज कहौं वचन ले घूँटी।१०।

अन्त समय यम मारत लै जाँय नैनन ठोकैं खूँटी।
नर्क में फेरि मरम्मत होवै सब तन डारै कूटी।
हरि सुमिरन बिन ठीक ठौर नहिं कैसे भव की तपनि यह छूटी।
सतगुरु करै भजन विधि जानै राम नाम ले लूटी।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सन्मुख प्रभु छवि जूटी।
टन मन शाह कहैं तब उनके भर्म क भांड़ा फूटी।१६।

१४८ ।। श्री मित्रा जान जी ।।

पदः- बूढ़े ह्वै गये ठसक नहिं छूटी।
तन में चमक रही नहिं नेकौं मन की तेहि पर लपक नहिं छूटी।
पर नारिन को लखि लखि पापी लार रहे हैं घूटी।
सधै न सपरै कारज कोई चाह रहत ले बूटी।
विषय कि आदत शरम भगाइसि नैनन ढोकिसि खूँटी।५।

सारी उमिरि इसी में गुजरी अन्त लिहिन यम लूटी।
मैथुन निद्रा दाना पानी सब योनिन में जूटी।

इन्द्री सब निज निज कारज हित मिली तिन्हैं रहे कूटी।
सतगुरु करि सुमिरै निशि वासर परै न पावै तूटी।
मिन्ना कहैं जियत सब तै हो भरम क भांड़ा फूटी।१०।

१४९ ।। श्री फ़जल खां जी ।।

पदः- भजु मन नाम आठौ याम।
जाप विधि सतगुरु से जानौ सकौ मन तब थाम।
ध्यान धुनि परकाश लय हो लखौ नित प्रिय श्याम।
देव मुनि सब दर्श देवैं मिलैं कहि कहि नाम।
सुनौ अनहद बजै घट में होय नहिं फिर खाम।
जागि नागिनि होय सीधी सरै तब सब काम।६।

चक्र षट सुधि जायँ सातौं कमल उलटैं आम।
मुक्ति भक्ती मिलै जियतै अन्त लो निज धाम।
मार्ग सूरति शब्द का गहि सुफल कर निज चाम।
ख्याल करते रहौ हरदम जाव बनि गुन ग्राम।
रेफ बिन्दु में रमण करिये जो रमा हर ठाम।
फ़ज़ल खां कह मम विनय सुनि चेतो सब नर बाम।१२।

१५० ।। श्री वुद्धू खां तुवलक जी ।।

पदः- सब को खोदा ने ढारा करना हलाल छोड़ो।
सब में रमा वो प्यारा करना मलाल छोड़ो।
सब को है देत चारा बकना बवाल छोड़ो।
दुख सुख सहो बराबर कहना हवाल छोड़ो।
हर दम भरोसा उसका करना सवाल छोड़ो।
मुरशिद से जान सुमिरन करना अमाल छोड़ो।६।

पर नाजिनी न ताको मुख पर रुमाल छोड़ो।
ईमान ठीक राखो घर की न चाल छोड़ो।
देखो बहार सन्मुख दुनियां कि जाल छोड़ो।
है चन्द रोज जीना दागी न खाल छोड़ो।
कप नाम का ही पीना बागी न लाल छोड़ो।
आवे जहां सफीना चल दो न ख्याल छोड़ो।१२।

१५१ ।। श्री बुल्ले शाह जी ।।

शेरः- ज़िवा करते हैं जीव तन से निकल जाते हैं।
मुर्दा खा खा के हाय पाप क्या कमाते हैं।१।
अन्त दोज़ख में जाय दुःख नित उठाते हैं।
बुल्ले कहते हैं आह आह धुनि मचाते हैं।२।

शेरः- लिक्खा मुकद्दर का मिटै मानो कहा रव नाम लो।
मुरशिद से चाभी जानकर सूरति शबद पथ थाम लो।१।
तगमा मिलै जब नाम का परकाश लय धुनि ध्यान लो।
बुल्लै कहैं सन्मुख लखौ रव जान सब को जान लो।२।

१५२ ।। श्री लियाकत खां जी ।।

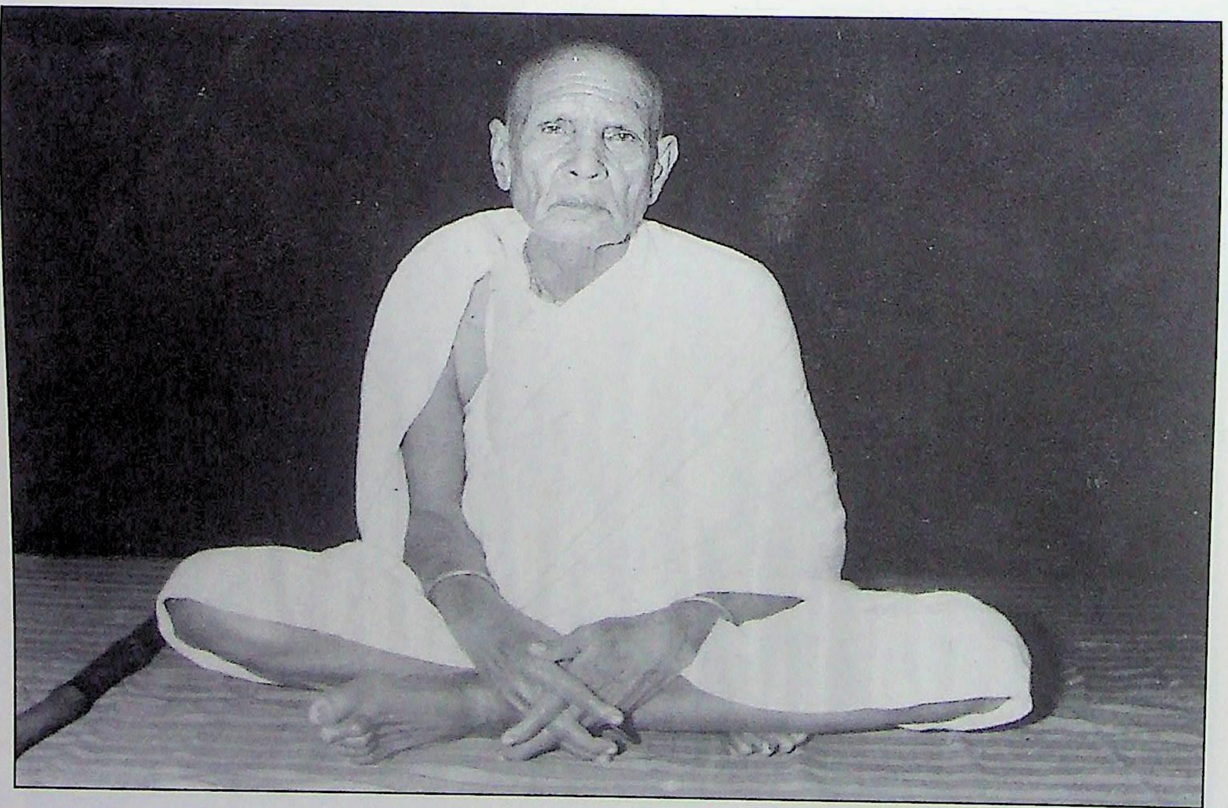
शेरः- सदा घनश्याम राधे की अदा पै मैं फिदा रहता।
करै मुरशिद लखै वह जन हर समय सामने रहता।१।
मधुर मुसक्यान खुम चितवन अजब सिंगार सो लहता।
अधर पर बाँसुरी प्यारी धरे सुर मुनि जिसे चहता।२।
मिलै धुनि ध्यान लय रोशन जियत नर तन क फल गहता।
देव मुनि स्तुती करते मान अपमान सम सहता।३।
सदा निर्वैर औ निर्भय एक रस वह नहीं बहता।
लियाकत खां कहैं सुमिरन करौ देखौ मैं सच कहता।४।

१५३ ।। श्री लियाकत हुसेन जी ।।

शेरः- बिना सुमिरन के तन विरथा, एक दिन चलि बसै चिटका।
समझ लो इस से ज्यादा दिन, रहैं हंड़ियो के जग सिटका।।

१५४ ।। श्री लियाकत अली जी ।।

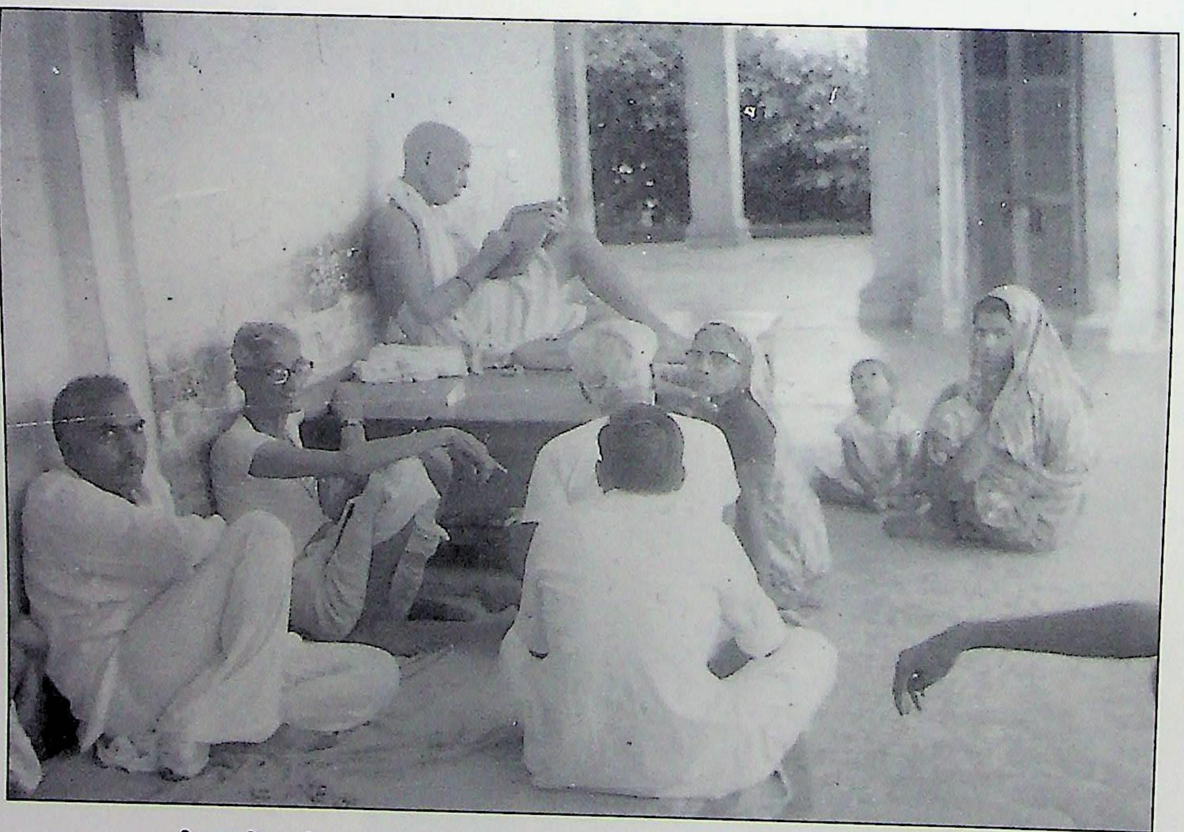
पदः- भजन हरि का नहीं करते छुटै किमि पाप का गट्ठा।
करै मुरशिद मिलै तब तो छाटने हित कड़ा कट्ठा।
मसाला सब तेरे पासै ध्यान परकाश लय भट्ठा।
चुराले जितना जी चाहै न खाना नेक अब हट्ठा।४।
मिटै गीदड़ पना सारा फेरि हो शेर का पट्ठा।
नहीं तो अन्त पछितैहै अमी तजि चाखता मट्ठा।



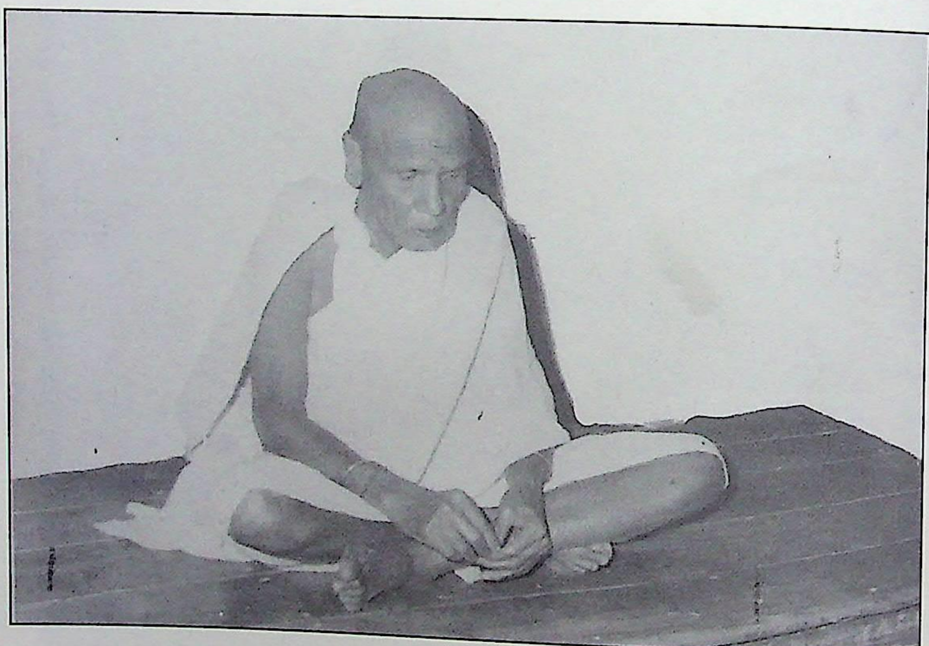
श्री गुरुदेव दयामय।



श्री गुरुदेव परमहंस राममंगलदास जी।



श्री गुरुदेव गोकुल भवन आश्रम में स्लेट पर उपदेश लिखते हुये (1978)।



श्री गुरुदेव परमहंस राममंगलदास जी
गोकुल भवन आश्रम में तखत पर।

आय जम दूत जब घेरैं देंय मुख पर तेरे चट्ठा।
लियाकत अली कह दोज़ख में दाबैं घेंच धरि लट्ठा।८।

१५५ ।। श्री लाला शंकर बख्श जी ।।

शेरः- बातों कि जमा खर्च से कुछ काम नहीं हो।
तन मन व प्रेम तीनों मिलैं भजन सही हो।१।
यम पुर है मृत्यु लोक से छियासी सहस्त्र योजन।
अति दुख की खानि जीवों को मल मूत्र मिलै भोजन।२।
कलि मल के लड्डू जेवने ते पकड़ि सब जाते वहाँ।
लोटैं उठैं उछरैं गिरैं पल भर न कल पाते वहाँ।३।

पदः- जल भौंरा जल पर फिरैं, ठीक ठौर कोइ नाहिं।
वैसै हरि के भजन बिन, नारि पुरुष चकराहिं।१।
जे जग कीचड़ में फंसे, उन्हैं जानिये रुण्ड।
हानि लाभ समुझै नहीं, झूठै धड़ पर मुण्ड।२।

१५६ ।। श्री लाला देवी सहाय जी ।।

पदः- हरि हम चोरन से किमि छूटैं।
हैं अति कठिन रहत सँग ही में घात लगाय के लूटैं।
ऐसा मेल किहे आपस में नेक होत नहिं फूटैं।
मन भी इनके सँग मिला है या से बांधिन जूटैं।
अधरम इनका जल औ भोजन हर दम लारी घूटैं।
सतगुरु देहु मिलाय दयानिधि इन्हैं पकरि हम कूटैं।६।

१५७ ।। श्री लाला हरि सहाय जी ।।

पदः- हरि मोहिं अबकी बेर उबारो।
माया जाल में हम हैं भूले आप न मोहिं बिसारो।
अधम उधारन नाम आप का सुर मुनि वेद उचारो।
करुणा सिन्धु आपु सम को है सबै युगन निस्तारो।४।
ऐसे महाराज को छोड़ि को जांचो काको द्वारो।
सतगुरु देहु मिलाय नाथ अब कटै पाप को भारो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख तोहिं निहारो।
अन्त समय तव धाम को आय के बैठों जग से न्यारो।८।

१५८ ।। श्री लाला राधिका चरन जी ।।

पदः- हरी हरी कहा करो हरी हरी सुना करो
हरी हरी पढ़ा करो हरी हरी गुना करो।
हरी सुमिरि चखा करो हरी हरी लखा करो
हरी के संग भखा करो हरी हरी लिखा करो।
हरी को कहि परा करो हरी को कहि उठा करो
हरी को कहि चला करो हरी को कहि हँसा करो।
हरी ही को सगा करो हरी के बहु सखा करो
हरी से मति दगा करो हरी के उर लसा करो।५।

दोहाः- हरी में तन मन जो रंगै, प्रेमी तौन कहाय।
कहैं राधिका चरन सो, बहुरि जक्त नहिं आय।।

१५९ ।। श्री लाला राधिका शरन जी ।।

पदः- आपु को आप गिरावत नीचे।
मन बहु रंगी किहेव न काबू जो निज ओर को खींचे।
हर दम तुम्हैं नचावत जग में मुख पर मारत पीचे।
सतगुरु करि हरि को नहिं सुमिरे पाप बेलि खुब सींचे।४।

दया धर्म को अधरम मानै कबहूँ न गयो नगीचे।
नर्क में ठौर ठेकान बनाये चलु जस आँखै मीचे।
हाय हाय की धुनि जँह जारी परे जीव बहु हीचे।
अति गहिरे जहँ हौज भरे हैं पीव मूत्र मल कीचे।८।

दोहाः- सुमिरन दरशन हर समय, सो है पूरा भक्त।
कहैं राधिका शरन सो, लौटि न आवै जक्त।।

१६० ।। श्री कन्जूस खाँ जी ।।

पदः- सेवा मुरशिद की करने से मेवा मिलै।
नूर धुनि ध्यान लय रूप सन्मुख डटै।।
पहिले निज को मिटाना पड़ै भाइयों।

पीछे लो यह ख़जाना न बाटै घटै।।
त्यागि तन चढ़ि सिंहासन जहां से चलै।
जाय करके अमरपुर मगन ह्वै अटै।।
कहते कञ्जूस ख़ाँ धन्य हैं शिष्य वह।
जो करैं काम शुभ पर न पीछे हटै।४।

प्रेम परतीति तन मन लगाकर वशर
मूर्ति पूजन करैं रोज दीदार हो।
मूर्ति जिस देव की हो वही आ मिलै।
मीठे वचनों से बोलै करै प्यार हो।।
दस्त से दस्त गहि लेय उर में लगा।
पुत्र निज जान कर चूमै रुख्सार हो।।
कहते कञ्जूस खां चेति मुरशिद करो।
जियत सब जान लो क्यों गुनहगार हो।८।

१६१ ।। श्री हर्राफ़ खां जी ।।

पदः- मूर्ति पूजन क खण्डन करैं जे वशर,
उनको जानो हैं अधरम के सरदार जी।
ईश सब में रमा मूर्ति बाहेर कहीं,
देव मुनि वेद कहते हैं निशिवार जी।
आस्तिक नास्तिक दुइ के संयोग से,
तो रचा ही गया है यह संसार जी।
कहते हर्राफ़ खां सुखमन सूखत रहै,
काक बानर न पावैंगे कछु सार जी।४।

पदः- मूर्तियाँ तोड़ने की सज़ा जो मिली,
सो वही भोगते जिन तोड़ाया यहां।
मार कोड़ों कि शैतान दें हर समय,
बाँधि काटों के तरु में झुलाया वहाँ।
सोई जाते हैं वहं पर सहैं दुःख यह,
जिन धरम को है तन से भुलाया यहाँ।३।

आह नारे से दोज़ख रहा गूँज है,

जात कर्मों का लेखा चुकाया वहाँ।

धर्म अपना बिराना बचाने क फल,

कहते हर्राफ़ खां हम ने पाया यहाँ।

द्वैत परदा हटा देव मुनि दें दरश,

जाऊँ दरबार में नित बुलाया वहाँ।६।

१६२ ।। श्री चारि यारी शाह जी ।।

पदः- प्रेम सरिता में परि ज्ञान बहि जात गिरि रोकि कौन पावै

धार बहै अति वेग की।

ध्यान परकाश धुनि लय व रूप हाथ लेव मुरशिद करि

सिर्फ़ गहो नाम तेग को।

दीन बनि धीर धरि तन मन एक करि पास हैं उघारि

चखौ कौसर की डेग को।

चारि यारी कहैं भाय सुर मुनि मिलैं आय देंय तुम्हैं हर्षाय

जय जय कार नेग को।४।

दोहाः- प्रेम नदी अति अगम है, ज्ञान करारा जान।

उमड़ै तहँ कटि जाय बहि, सत्य वचन लो मान।१।

कहैं चारि यारी बनौ, सेवक स्वामी केर,

निर्भय औ निर्बैर हो, छूटि जाय जग फेर।२।

१६३ ।। श्री लाला सुर्जन लाल जी ।।

पदः- प्रेम सरिता में परि ज्ञान बहि जात मानो सतगुरु करि

हम जानि नाम लीन है।

श्यामा श्याम झांकी बांकी समुहे रहत टांकी ध्यान धुनि लय प्रकाश

तूरयौ गुण तीनि है।

महा सुख कौन गावै भक्त कोई जानि पावै जियत में

जिन निज ठीक ठौर कीन है।

कहत हैं सुर्जन लाल बैन सुनि करै ख्याल सोई बनि जाय लाल

भयो जौन दीन है।४।

१६४ ।। श्री शान्ति प्रकाश जी ।।

पदः- प्रेम सरिता की बाढ़ि ज्ञान के करारे काटि जात लै बहाय
कोई भक्त जन जानते।
सन्मुख रूप छाय नैन नीर झरि लाय
गदगद् कण्ठ भाय बोलैं किमि आनते।
रोम रोम पुलकाय सुधि बुधि भूलि जाय
द्वैत भगि जाय चट तन मन प्रान ते।
नाम धुनि खुलि जाय ध्यान परकाश पाय
सतगुरु करि नेम टेम जौन ठानते।४।

१६५ ।। श्री सौरिया माई जी ।।

पदः- बधाई अनहद घट में बाजै।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै तन मन प्रेम में माँजै।
राग रागिनी हरि दरवाजे नाचैं गावैं गाजैं।
तन धरि साज आवरन लीन्हे निज निज ठौर पै राजैं।
ताल तान धुनि स्वर सम होते मुद मंगल तहँ छाजै।
सुर मुनि बैठै आनन्द लूटैं नेक पलक नहिं भाँजै।६।

नर तन पाय जानि नहिं पायो ताको भयो अकाजै।
मैथुन निद्रा वसन औ भूषन शीरीं पय पकवान अनाजै।
और विषय कहँ तक बतलावैं पाप सिंगार को साजै।
अन्त समय जम नर्क में डारैं सीस औटि दृग आँजै।
करि उतान फिरि तन पर चढ़ि कै लातन ते खुब गांजै।
कहैं सौरिया कलपन रोवै जिन छोड़ा कुल काजै।१२।

दोहाः- राम गरीब निवाज को, भजै जौन सो लाल।
कहैं सौरिया जियत जग, जीतै ठोंकि के ताल।।

१६६ ।। श्री लाला माधव प्रसाद जी ।।

शेरः- पिता माता क रज वीर्य्य विरथा किया औ जवानी गई
लड़िके कूकुर हुये।

नाम हरि का न जाना करै पाप नित कहते हम तो
जगत पूज्य भूसुर हुये।
देखने में सुघर पै भरा है जहर खांड घृत पय
औ आँटे के जैसे पुये।
पहिले ही से बिके यम के हाथों में वै कहते माधौ
तजै तन तो दोज़ख चुये।४।

१६७ ।। श्री मुंडी माई जी ।।

पदः- भक्त पढ़ि सुनि के बनिगे रचैं ढोंग क्या
लोग पूजैंगे सर भार हो पाप का।
त्यागि तन जाय दोज़ख में कल्पों सड़ै
फेरि आवैंगे जग तन मिलै साँप का।
हों बुरे काम नेकी क तन है नहीं
काट लें दौड़ कर नहिं पता चाप का।
दूसरों के बिलों में दखल कर रहे
मन पै परदा पड़ा क्रोध के झाँप का।
मूस मेढक मछलियाँ औ चिड़ियां गटक लें
सितावी से उनको उदर में पका।
करके सतगुरु कहैं मुण्डी सुमिरन करै
तब ठेकाना मिलै निज माई बाप का।६।

१६८ ।। श्री शीरीं जान जी ।।

पदः- मुरशिद से जानो भेद जब जियतै कटै भव जाल जी।
क्या ध्यान लय परकाश हो खुलि जाय नाम क तार जी।
महबूब दरशै सामने साजे अजब सिंगार जी।
शीरीं कहैं मानो सखुन वरना यह तन बेकार जी।४।

१६९ ।। श्री नव्वाब अली जी ।।

पदः- सिया राघो की झाँकी बड़ी बाँकी।
सतगुरु करि सुमिरन विधि लीजै सन्मुख तब जावैं टांकी।
छवि श्रृंगार छटा को वरनै फणपति शारद लखि थाकी।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सुनिये सदा चलत चाकी।
तन मन प्रेम लगाय भजन करि गर्भ कि रिन चुकवो बाकी।
कहैं नवाब अली चित चेतो नाहीं तो यम ले हैं फांकी।६।

१७० ।। श्री नवाब हुसेन जी ।।

पदः- प्रिय माधो कि झाँकी बड़ी बाँकी।
मुरशिद करि जप की विधि जानो तब सन्मुख जावैं टांकी।
देखत बनै करै को वरनन सुर मुनि शरन रहत जाकी।
मुरली अधर मनोहर राजै शोभा लखि गति मति थाकी।
लय धुनि ध्यान प्रकाश होय जब समुझो बड़ी भाग्य वाकी।
नवाब हुसेन कहैं नर तन लहि के गर्भ कि अदा करौ बाकी।६।

१७१ ।। श्री लाला अर्जुन लाल जी ।।

पदः- अपन बल छोड़ो सब जन भाई।
सतगुरु बल उर धरि हरि सुमिरो तन मन प्रेम लगाई।
नाम क रंग चढ़ै तब सुख हो रग रोवन धुनि छाई।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सन्मुख सिय रघुराई।
जियतै नर तन का फल पावो सुर मुनि लें उर लाई।
अर्जुन लाल कहैं मम बानी मानै सो बनि जाई।६।

१७२ ।। श्री पण्डित अवधू जी ।।

पदः- उदर में कवर बनायो यारों।
जीवन मारि पाप शिर ओढ़त हृदय दया नहिं धारो।
पिता के वीर्य्य मातु के रज से यह तन जानत ढारो।
ऐसी घृणा कि वस्तु जानि फिर पावत मनहिं विचारो।
अन्त समय यम नर्क में डारैं कल्पन हाय पुकारो।
कौन सहायक होय तुम्हारा चलत न कछु तहँ चारो।६।

अब हीं मानो कहा चेति करि निज फिरि सुरति सम्हारो।
सतगुरु करो ढूँढ़ि दुख जावै मिटि जाय घट अँधियारो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हरदम रूप निहारो।
या विधि जानि मानि सुख लूटौ आपु तरौ औ तारो।

शान्ति दीनता सत्य प्रेम ते तन मन प्रभु पर वारो।
अवधू कहैं ठीक यह मारग तब होवै निस्तारो।१२।

१७३ ।। श्री पण्डित गार्गीदत्त जी त्रिपाठी ।।

पदः- काबू करिये चपल मन घोड़ा।
सतगुरु करो पकरि तब पावो बे लगाम क्यों छोड़ा।
सुरति कि डोर लगाम ज्ञान की शब्द क पकड़ौ कोड़ा।
हो असवार भागि कहँ जावै बांधि लेव निज जोड़ा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि लादौ निशि दिन तोड़ा।
माला माल बनो तब प्यारे रूप सामने ओड़ा।६।

यम औ काल मृत्यु लखि भागैं जिमि मारै कोइ रोड़ा।
विजय के साज बजावैं सुर मुनि कहैं फूट भ्रम फोड़ा।
शान्ति दीनता प्रेम होय जेहि सो जग से मुख मोड़ा।
रज तम भोजन त्यागन करि दे सात्विक पावै थोड़ा।
सोई सूर समर में जीतै तन मन को जिन गोड़ा।
तीरथ वर्त दिव्य तन धरि धरि पग परसैं ज्यों मोड़ा।१२।

१७४ ।। श्री पण्डित गार्गी शरण जी ।।

पदः- हरि तुम बिन को और सहायक।
कृपा सिन्धु दीनन दुख भंजन तुम समान को लायक।
सुर मुनि नित तुम्हरो यश बरनैं किन्नर यक्ष औ गायक।
माया मृत्यु काल यम गण सब आपै के हैं नायक।
बिन अज्ञा कछु कार्य्य करैं नहिं जे बाजत दुख दायक।
गदा चक्र धनु बाण अस्त्र हैं गरुड़ आप के पायक।६।

१७५ ।। श्री पण्डित गार्गी दीन जी ।।

पदः- हरि मोहिं करि किरपा अपनाओ।
मैं मति मन्द गँवार अधम अति केहि विधि तव गुण गावो।
मन दिवान भूतन संग जोड़े कौन भांति समुझावो।
कबहूँ निकट न आवत मेरे निशि दिन मैं अकुलावो।

आखिर का परिणाम बुरा है नर्क में दुख बहु पावो।
या से विनय सुनो जग स्वामी बार बार बलि जावो।६।

१७६ ।। श्री पण्डित गार्गी चरण जी ।।

पदः- हरि तुम सब देवन के देवा।
सुर मुनि सब तुम्हरो गुण गावत पावत पूरन भेवा।
नेक कृपा में मगन रहत हैं चाखत अनुपम मेवा।
उत्पति पालन हाथ आपके आपै भव निधि खेवा।
भक्तन के वश रहत सदा प्रभु करत करावत सेवा।
काटत कठिन कुअंक दया निधि जो विधि भाल में छेवा।६।

१७७ ।। श्री वशीर अहमद जी ।।

पदः- भजु मन नाम करि विश्वास।
पारखी से जाप विधि लै त्यागि जग की आस।
राम नाम कि रमन क्रीड़ा जानि कर दुख नास।
ध्यान धुनि परकाश लय हो कटै भव की त्रास।
राम सीता कृष्ण राधे निरखु सन्मुख खास।
देव मुनि सब प्रेम लखि कर आय बैठे पास।६।

जगै नागिनि चक्र बेधै कमल होय विकाश।
साज अनहद भजै सुनि सुनि होय चित्त हुलास।
गगन ते अनुपम अमी झरि लागि बारह मास।
चखौ बरनन करि सकौ क्या उड़त अजब सुवास।
जियत तै करि सुक्ख लूटौ अन्त लेहु सुपास।
वशीर अहमद कहैं प्रभु के बनौ सच्चे दास।१२।

१७८ ।। श्री बन्दगी शाह जी ।।

पदः- चारि दिन की जगत में यह है जिन्दगी
वन्दगी से डरोगे अगर यार तुम।
हाथ लागै न कुछ जाव दोज़ख पकड़
आह नारे भरौगे वहाँ यार तुम।
काम गर मान रव के करोगे यहाँ
भिश्त देवैंगे मौजें करौ यार तुम।

बनते खादिम हो लाजिम नहीं यह तुम्हैं

कैसे तारो तरौगे गुनो यार तुम।

करके मुरशिद लगा लौ भजौ लो जियत

फिर न नीचे गिरौगे सुनो यार तुम।

गम व शादी को सम मान करके रहौ

तब तो सार्टिफिकट को लहौ यार तुम।६।

१७९ ।। श्री दुन्दुभी गिरि जी ।।

पदः- चतुरानन कहैं सुनो शिवा जी आप के पति से हम हैं हारे।

जन्म दरिद्र लिखैं हम जिनको तिनको वै सब साज सँवारे।

महा पातकी लिखैं जिन्हैं हम तिनको वै ज्ञानी करि डारें।

नर्क वास जिनको हम लिखते तिनको वै बैकुण्ठ बिठारें।

पुत्रहीन जिनको हम लिखते तिनको दें वै बालक प्यारे।५।

लिखत लिखत हम लिखैं कहाँ तक कठिन कुअंक मिटावत सारे।

जे जन भजन करैं नित उनका ते हमरे हैं लोक से न्यारे।

आदि वैष्णव कहैं देव मुनि राम नाम के जानन हारे।

राम सिया कि भक्ति देत हैं तन मन प्रेम जो उन पर वारे।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय सन्मुख जोड़ी जुगुल निहारे।१०।

अनहद बाजा घट में बाजै सुनि सुनि मस्त रहे मन मारे।

चारिउ मुक्ति खड़ी कर जोरे सेवा हेत दिव्य तन धारे।

हम सब सुर मुनि संग में खेलैं बोलैं भक्त की जय जय कारे।

शान्ति शील सन्तोष दीनता सरधा दाया कहत दुलारे।

छिमा सत्य जप तप शुभ सुख औ ज्ञान सदा रहते रखवारे।

युग औ लोक वेद शारद अहि वरणत यश नहिं पावत पारे।१६।

१८० ।। श्री मुनियां माई जी ।।

पदः- मन तुम बड़े चलाक भगैया।

सरिता सागर वन गिरि ऊपर पल में पहुँचि जवैया।

बल अतौल तुम्हरे तन में है क़बहूँ नहीं थकैया।

अगणित जन्म मरत औ जन्मत बीते सुनिये भैया।

तुम चाहौ तो बन्धन छूटैं बैठो छोड़ि कुदैया।
सतगुरु करि हम तुम मिलि सुमिरैं राम नाम सुख दैया।६।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय अनहद सुनै बधैया।
शक्ति नागिनी चक्र कमल औ सुर मुनि लखि सुख पैया।
सीता राम राधिका मोहन सन्मुख रहैं सदैया।
उत्पति पालन परलय करतल सब के पितु औ मैय्या।
शान्ति दीनता प्रेम सत्यता ते सब ठीक लगैया।
अन्त समय साकेत में बैठे सिंहासन छवि छैया।१२।

१८१ ।। श्री गनेशी कोरी जी ।।

पदः- मन क्यों खेलत पाप कि होरी।
धर्म की पत्नी त्यागन करि के परकी ताकत मोरी।
नर्क लेवारा में नित लोटत निज मति कीन्हे सोरी।
ठीक ठेकान मिलत नहिं कबहूँ तहूँ न छूटत चोरी।
सतगुरु करि हम राम मन्त्र लै बाँधव तोहिं बरजोरी।
शब्द क चाबुक मारव हरदम सुधरै अक्किल तोरी।६।

सूरति के संघ फेरि लगाय के देहु तुझे रँग बोरी।
ध्यान धुनी परकाश दशालय पाय जियत भव छोरी।
सन्मुख राम श्याम की झाँकी संग सिया प्रिय गोरी।
सुर मुनि आशिर्वाद देंय सब जय जय कार भयोरी।
जो या विधि को जानि जाय सो भर्म का भांड़ा फोरी।
अन्त समय साकेत विराजै कहैं गनेशी कोरी।१२।

१८२ ।। श्री प्यारी जान जी ।।

पदः- जानकी जान के जान की शक्ति है।
नाम औ नाम के नाम की शक्ति है।
रूप औ रूप के रूप की शक्ति है।
लीला औ लीला के लीला की शक्ति है।
धाम औ धाम के धाम की शक्ति है।
ध्यान औ ध्यान के ध्यान की शक्ति है।

नूर औ नूर के नूर की शक्ति है।
शून्य औ शून्य के शून्य की शक्ति है।
सत्य औ सत्य के सत्य की शक्ति है।
धर्म औ धर्म के धर्म की शक्ति है।१०।

शान्ति औ शान्ति के शान्ति की शक्ति है।
शील औ शील के शील की शक्ति है।
सन्तोष औ सन्तोष के सन्तोष की शक्ति है।
श्रध्दा औ श्रध्दा के श्रध्दा की शक्ति है।
छिमा औ छिमा के छिमा की शक्ति है।
दया औ दया के दया की शक्ति है।
धैर्य्य औ धैर्य्य के धैर्य्य की शक्ति है।
प्रेम औ प्रेम के प्रेम की शक्ति है।
युक्ति औ युक्ति के युक्ति की शक्ति है।
भुक्ति औ भुक्ति के भुक्ति की शक्ति है।२०।

मुक्ति औ मुक्ति के मुक्ति की शक्ति है।
भक्ति औ भक्ति के भक्ति की शक्ति है।
जाप औ जाप के जाप की शक्ति है।
ख्याल औ ख्याल के ख्याल की शक्ति है।
राग औ राग के राग की शक्ति है।
साज औ साज के साज की शक्ति है।
ताल औ ताल के ताल की शक्ति है।
ग्राम औ ग्राम के ग्राम की शक्ति है।
तान औ तान के तान की शक्ति है।
स्वरन औ स्वरन के स्वरन की शक्ति है।३०।

ध्वनी औ ध्वनी के ध्वनी की शक्ति है।
सम औ सम के सम की शक्ति है।
स्वांस, औ स्वांस के स्वांस की शक्ति है।
विद्या, औ विद्या के विद्या की शक्ति है।
काल, औ काल के काल की शक्ति है।

मृत्यु औ मृत्यु के मृत्यु की शक्ति है।
कला औ कला के कला की शक्ति है।
सुक्ख औ सुक्ख के सुक्ख की शक्ति है।
दुःख औ दुःख के दुःख की शक्ति है।
क्रोध औ क्रोध के क्रोध की शक्ति है।४०।

मोह औ मोह के मोह की शक्ति है।
लोभ औ लोभ के लोभ की शक्ति है।
मान औ मान के मान की शक्ति है।
अहं औ अहं के अहं की शक्ति है।
द्रोह औ द्रोह के द्रोह की शक्ति है।
क्षोभ औ क्षोभ के क्षोभ की शक्ति है।
योग औ योग के योग की शक्ति है।
भोग औ भोग के भोग की शक्ति है।
खेल औ खेल के खेल की शक्ति है।
मेल औ मेल के मेल की शक्ति है।५०।

नींद औ नींद के नींद की शक्ति है।
त्याग औ त्याग के त्याग की शक्ति है।
कपट औ कपट के कपट की शक्ति है।
झूठ औ झूठ के झूठ की शक्ति है।
प्रकृति औ प्रकृति के प्रकृति की शक्ति है।
स्वाद औ स्वाद के स्वाद की शक्ति है।
गन्ध औ गन्ध के गन्ध की शक्ति है।
रस औ रस के रस की शक्ति है।
भूख औ भूख के भूख की शक्ति है।
प्यास औ प्यास के प्यास की शक्ति है।६०।

माया औ माया के माया की शक्ति है।
छाया औ छाया के छाया की शक्ति है।
उष्ण औ उष्ण के उष्ण की शक्ति है।
शीत औ शीत के शीत की शक्ति है।
उत्पति औ उत्पति के उत्पति की शक्ति है।

पालन औ पालन के पालन की शक्ति है।
संहार औ संहार के संहार की शक्ति है।
अमी औ अमी के अमी की शक्ति है।
ज़हर औ ज़हर के ज़हर की शक्ति है।
लहर औ लहर के लहर की शक्ति है।७०।

राशि औ राशि के राशि की शक्ति है।
ग्रह औ ग्रह के ग्रह की शक्ति है।
कर्म औ कर्म के कर्म की शक्ति है।
मर्म औ मर्म के मर्म की शक्ति है।
भर्म औ भर्म के भर्म की शक्ति है।
वर्म औ वर्म के वर्म की शक्ति है।
काम औ काम के काम की शक्ति है।
रती औ रती के रती की शक्ति है।
कार्य्य औ कार्य्य के कार्य्य की शक्ति है।
कारन औ कारन के कारन की शक्ति है।८०।

कर्त्ता औ कर्त्ता के कर्त्ता की शक्ति है।
भर्त्ता औ भर्त्ता के भर्त्ता की शक्ति है।
शौक औ शौक के शौक की शक्ति है।
शर्म औ शर्म के शर्म की शक्ति है।
गुप्त औ गुप्त के गुप्त की शक्ति है।
प्रगट औ प्रगट के प्रगट की शक्ति है।
मन औ मन के मन की शक्ति है।
आत्म औ आत्म के आत्म की शक्ति है।
अस्त्र औ अस्त्र के अस्त्र की शक्ति है।
वस्त्र औ वस्त्र के वस्त्र की शक्ति है।९०।

भूषण औ भूषण के भूषण की शक्ति है।
छवि औ छवि के छवि की शक्ति है।
छटा औ छटा के छटा की शक्ति है।
श्रृंगार औ श्रृंगार के श्रृंगार की शक्ति है।

अग्नि औ अग्नि के अग्नि की शक्ति है।
वायु औ वायु के वायु की शक्ति है।
वारि औ वारि के वारि की शक्ति है।
मही औ मही के मही की शक्ति है।
गगन औ गगन के गगन की शक्ति है।
तुख्म औ तुख्म के तुख्म की शक्ति है।१००।

मन्त्र औ मन्त्र के मन्त्र की शक्ति है।
यन्त्र औ यन्त्र के यन्त्र की शक्ति है।
तन्त्र औ तन्त्र के तन्त्र की शक्ति है।
आदि औ आदि के आदि की शक्ति है।
मध्य औ मध्य के मध्य की शक्ति है।
अन्त औ अन्त के अन्त की शक्ति है।
वेद औ वेद के वेद की शक्ति है।
शास्त्र औ शास्त्र के शास्त्र की शक्ति है।
सुख औ सुख के सुख की शक्ति है।
मुनिन औ मुनिन के मुनिन की शक्ति है।११०।

मास औ मास के मास की शक्ति है।
वर्ष औ वर्ष के वर्ष की शक्ति है।
दिवस औ दिवस के दिवस की शक्ति है।
रैन औ रैन के रैन की शक्ति है।
नेम औ नेम के नेम की शक्ति है।
टेम औ टेम के टेम की शक्ति है।
मौन औ मौन के मौन की शक्ति है।
पुष्ट औ पुष्ट के पुष्ट की शक्ति है।
खुश्क औ खुश्क के खुश्क की शक्ति है।
तरी औ तरी के तरी की शक्ति है।१२०।

महूर्त औ महूर्त के महूर्त की शक्ति है।
घड़ी औ घड़ी के घड़ी की शक्ति है।
तिथी औ तिथी के तिथी की शक्ति है।

पला औ पला के पला की शक्ति है।
दण्ड औ दण्ड के दण्ड की शक्ति है।
अणू औ अणू के अणू की शक्ति है।
श्राप औ श्राप के श्राप की शक्ति है।
आशिष औ आशिष के आशिष की शक्ति है।
खौफ औ खौफ के खौफ की शक्ति है।
निडर औ निडर के निडर की शक्ति है।१३०।

सृष्टि औ सृष्टि के सृष्टि की शक्ति है।
शक्ति औ शक्ति के शक्ति की शक्ति है।
द्वीप औ द्वीप के द्वीप की शक्ति है।
खण्ड औ खण्ड के खण्ड की शक्ति है।
भुवन औ भुवन के भुवन की शक्ति है।
लोक औ लोक के लोक की शक्ति है।।१३६।

१८३ ।। श्री चुनिया माई जी ।।

पदः- गुरु से पढ़ौ गुरु से पढ़ौ गुरु से पढ़ौ गुरु से पढ़ौ।
जर से चढ़ौ जर से चढ़ौ जर से चढ़ौ जर से चढ़ौ।
तन मन गढ़ौ तन मन गढ़ौ तन मन गढ़ौ तन मन गढ़ौ।
सब सुख लढ़ौ सब सुख लढ़ौ सब सुख लढ़ौ सब सुख लढ़ौ।
आगे बढ़ौ आगे बढ़ौ आगे बढ़ौ आगे बढ़ौ।
जग से कढ़ौ जग से कढ़ौ जग से कढ़ौ जग से कढ़ौ।६।

१८४ ।। श्री पुनिया माई जी ।।

पदः- बहुत दूर जाना नही पास धन है।
मिलै किमि ठेकाना विलग तन से मन है।
असुरों क दल बड़ा है कोइ शूर ही अड़ा है।
जिसके शब्द गड़ा है हरि धाम सों जड़ा है।
तन मन जियत गढ़ा है सो सिखर पर चढ़ा है।
मुरशिद से जो पढ़ा है सो जीति कै बढ़ा है।६।

१८५ ।। श्री सेवरी जी का कीर्तन ।।

दोहाः- श्री गुरू महाराज के वचन मानि जो लेय।
ताको राम औ लखन चलि, ठौरै दर्शन देंय।१।
मुक्ति भक्ति जियतै मिलै, सेवरी कहैं सुनाय।
अन्त समय हरि धाम को, सिंहासन चढ़ि जाय।२।

पदः- नमो राम लछिमन नमो राम लछिमन नमो राम लछिमन
नमो राम लछिमन।
श्री राम लछिमन श्री राम लछिमन श्री राम लछिमन
श्री राम लछिमन।
जय जय राम लछिमन जै जै राम लछिमन जै जै राम लछिमन
जय जय राम लछिमन।
हरे राम लछिमन हरे राम लछिमन हरे राम लछिमन
हरे राम लछिमन।
प्यारे राम लछिमन प्यारे राम लछिमन प्यारे राम लछिमन
प्यारे राम लछिमन।५।

मेरे राम लछिमन मेरे राम लछिमन मेरे राम लछिमन
मेरे राम लछिमन।
भजो राम लछिमन भजो राम लछिमन भजो राम लछिमन
भजो राम लछिमन।
लखो राम लछिमन लखो राम लछिमन लखो राम लछिमन
लखो राम लछिमन।
कहो राम लछिमन सुक्ख मिले तन मन सुनो बैन सब जन
काहे फिरो अन मन।
जाव बनि टन मन भागै दूरि यम गन सेवरी कहैं पास धन
प्रेम करि जाव सन।१०।

दोहाः- प्रेम सर्व सुख खानि है, श्री गुरु वाक्य न त्याग।
शान्ति दीनता को गहौ, समय पै जावै जाग।१।
जैसे पावक राख में, छिपी न देवै आँच।
जब वाको परदा हटै, तब सब मानै साँच।२।

अटल वाक्य श्री गुरू के, लीजै उर में धारि।
सेवरी कह निर्भय रहौ, मानो वचन हमारि।३।

१८६ ।। श्री कुब्जा जी का कीर्तन ।।

पदः- हे मुरारि हे मोहन श्याम हे माधव गोविन्द गुण ग्राम।
हे गोपाल हे शोभा धाम हे मुकुन्द जगदीश प्रणाम।
हे सुख सागर हे ज्ञानागर हे उत्पति कर पालन हार।
हे सब मँत्र यँत्र के सार हे हरि सब के प्राण अधार।
हे माखन दधि दूध लुटैया हे वृज में नित रहस रचैया।
हे ग्वालन के मित्र कन्हैया हे वन वन गौवन के चरैया।६।

हे यशुदा सुत नन्द के लाल हे वृज जीवन करत निहाल।
हे देवकी सुत वसुदेव लाल हे मुरली धर रूप विशाल।
हे गिरधारी श्री वृजराज हे बन वारी सब सिरताज।
हे राधेवर राखौ लाज हे तनुधारी भक्तन काज।
हे अधमन के पाप नशावन हे महि भार भंजि सुख छावन।
हे सन्मुख नित दर्श देखावन हे प्रेमिन के तन मन भावन।१२।

१८७ ।। श्री जै राम दास जी का कीर्तन ।।

पदः- श्री हरि नारायण गोविन्दे जै गोविन्दे श्री गोविन्दे।
श्री सीता राघव गोविन्दे जै गोविन्दे श्री गोविन्दे।
श्री राधा माधव गोविन्दे जै गोविन्दे श्री गोविन्दे।
श्री कमला विष्णू गोविन्दे जै गोविन्दे श्री गोविन्दे।
श्री सिया राम जय गोविन्दे जै गोविन्दे श्री गोविन्दे।
श्री प्रिया श्याम जय गोविन्दे जै गोविन्दे श्री गोविन्दे।६।

१८८ ।। श्री गणिका जी का कीर्तन ।।

पदः- कमला विष्णू सीताराम, गिरिजा शंकर राधेश्याम।
राम राम जै जै सिय राम, श्याम श्याम जय श्यामा श्याम।
जनक किशोरी जय श्री राम, श्री लाडिली जय घनश्याम।
जय दशरथ सुत राघव राम, जय वसुदेव सुत यादव श्याम।४।

१८९ ।। श्री कूवा जी का कीर्तन ।।

पदः- सिय राम कहौ दुख सुक्ख सहौ नित दर्श लहौ गुरु बानि गहौ।
रमा विष्णु कहौ श्यामा श्याम कहौ उमा शम्भु कहौ गुरु बानि गहौ।
गोविन्द कहौ गोपाल कहौ जगदीश कहौ गुरु बानि गहौ।
रघुनाथ कहौ यदुनाथ कहौ दीनानाथ कहौ गुरु बानि गहौ।
करुणा सिन्धु कहौ दया सिन्धु कहौ प्रणत पाल कहौ गुरु बानि गहौ।
सर्वाधार कहौ सब से न्यार कहौ सुख सार कहौ गुरु बानि गहौ।६।

१९० ।। श्री शची माता जी का कीर्तन ।।

पदः- राम कृष्ण विष्णु भजौ गल्पौं गल्पौं छोड़ो रे।
काम क्रोध लोभ मोह अहंकार गोड़ो रे।
दिव्य रूप जियत लखौ भर्म भांड़ा फोड़ौ रे।
लय प्रकाश ध्यान धुनी मिलै नाता जोड़ौ रे।
सुर मुनि सब दर्श दें जक्त ख्याल तोड़ौ रे।
परतीति करि सतगुरु वचन गहि नेक मुखमति मोड़ौ रे।६।

दोहाः- निशि वासर बिरथा गयो, हरि सों किहेव न हेत।
अन्त समय पछितावोगे, नर्क में चलिहैं बेंत।।

१९१ ।। श्री नित्यानन्द जी की माता पद्मावती जी ।।

कीर्तनः- राम कृष्ण विष्णु जपौ मोह नींद त्यागौ रे।
जक्त मांहि आय गुनौ यही साज साजौ रे।
सतगुरु से नाम सुनौ तन मन को भांजौ रे।
ध्यान लय प्रकाश होय रूप लखौ गाजौ रे।
प्रेम जानि देव मुनी आवैं संग राजौ रे।
अंत समय छोड़ि देह अचल पुर को भागौ रे।६।

दोहाः- जो स्वभाव भगवन्त का, सोई भक्त क होय।
ता को जानो पार भा, छूटी तन मन दोय।।

१९२ ।। श्री विष्णु प्रिया जी का कीर्तन ।।

पदः- हे वसुदेव सुत हे जग पाला। हे देवकि सुत हे नंद लाला।
हे वंशी धर हे गोपाला। हे मन मोहन हे किरपाला।

हे राधे वर हे वृज चन्द। हे यशुदा सुत हे गोविन्द।
हे करुणा निधि हे सुखकन्द। हे गिरधारी हे निर्द्वन्द।४।

जय मुरारि जय माखन चोर। जय मधुसूदन जय वर जोर।
जय सुर मुनि के प्राण अधार। जय माधव केशव करतार।
जय सब से न्यारे सरकार। जय सब में व्यापक हर वार।
जय मुद मंगल देने हार। जय श्री हरि प्रेमा अवतार।८।

१९३ ।। श्री एक नाथ जी का कीर्तन ।।

पदः- राम सीता कहौ कृष्ण राधे कहौ विष्णु लक्ष्मी कहौ
क्या मिला दांव रे।
शम्भु गिरिजा कहौ ब्रह्मा शारद कहौ गणपति सरस्वति कहौ
क्या मिला दांव रे।
काली दुर्गा कहौ ज्वाला चण्डी कहौ गंगा यमुना कहौ
क्या मिला दांव रे।
सरयू गोमा कहौ हनुमत भैरव कहौ सुर मुनि शक्तिन कहौ
क्या मिला दांव रे।४।

१९४ ।। श्री तुका राम जी का कीर्तन ।।

पदः- सीता राम कहौ राधेश्याम कहौ रमा विष्णु कहौ सुधरै बिगरी।
उमा शम्भु कहौ शारद ब्रह्मा कहौ सरस्वति गणपति कहौ सुधरै बिगरी।
काली दुर्गा कहौ ज्वाला चण्डी कहौ गोमा सरयू कहौ सुधरै बिगरी।
हनुमत भैरव कहौ गंगा यमुना कहौ षट मुख शेषै कहौ सुधरै बिगरी।४।

१९५ ।। श्री राम राय जी का कीर्तन ।।

पदः-राम श्याम कहौ विष्णु शम्भु कहौ ब्रह्मा गणपति कहौ पार हो जक्त से।
सीता राधे कहौ रमा गिरिजा कहौ शारद सरस्वति कहौ पार हो जक्त से।
हनुमत भैरव कहौ षट मुख लोमश कहौ गंगा यमुना कहौ पार हो जक्त से।
दुर्गा काली कहौ गोमा सरयू कहौ चण्डी ज्वाला कहौ पार हो जक्त से।४।

१९६ ।। श्री नरसिंह दास जी का कीर्तन ।।

राम रामा कहौ श्याम श्यामा कहौ विष्णु कमला कहौ
लेहु नर तन क फल।

ब्रह्मा शारद कहौ गणपति सरस्वति कहौ शम्भु गिरिजा कहौ
लेहु नर तन क फल।
हनुमत भैरव कहौ षट मुख वामन कहौ नर हरि शूकर कहौ
लेहु नर तन क फल।
दुर्गा काली कहौ गोमा सरयू कहौ गंगा यमुना कहौ
लेहु नर तन क फल।४।

ज्वाला चण्डी कहौ कच्छ मच्छौ कहौ गोपी ग्वालिन कहौ
लेहु नर तन क फल।
कौशिल्या दशरथ कहौ वसुदेव देवकी कहौ नन्द यशुमति कहौ
लेहु नर तन क फल।
भरत माण्डवी कहौ लखन उर्मिला कहौ शत्रुहन श्रुति कीर्ति कहौ
लेहु नर तन क फल।
बलिराम रेवती कहौ सर्व सुर मुनि कहौ सर्व तीर्थन कहौ
लेहु नर तन क फल।८।

१९७ ।। श्री मीरा जी का कीर्तन ।।

पदः- हरे घनश्याम हरे श्रीराम हरे सुख धाम हो प्राण मेरे।
हरे गोपाल हरे नंद लाल हरे किरपाल हो प्राण मेरे।
हरे यदुनाथ हरे दीना नाथ हरे जय नाथ हो प्राण मेरे।
हरे वृज बिहारी हरे बनवारी हरे गिरिधारी हो प्राण मेरे।
हरे करुणासिन्धु हरे कृपा सिन्धु हरे दीन बन्धु हो प्राण मेरे।५।

हरे गोविन्द हरे जगदीश हरे श्री ईश हो प्राण मेरे।
हरे दधि चोर हरे मन चोर हरे सब ठौर हो प्राण मेरे।
हरे श्री कृष्ण हरे जय कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हो प्राण मेरे।
हरे वंशी वारे हरे सब के प्यारे हरे सब से न्यारे हो प्राण मेरे।
हरे जगदाधार हरे ज्ञानागार हरे सुख सार हो प्राण मेरे।१०।

हरे कृष्ण चन्द हरे आनन्द कन्द हरे वृज चन्द हो प्राण मेरे।
हरे वसुदेव लाल हरे देवकी लाल हरे यशुदा लाल हो प्राण मेरे।
श्याम श्याम हरे हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

जय श्री गोपाल की, जय मनोहर लाल की।
जय बनवारी लाल की, जय गिरिधारी लाल की।१५।

जय बिहारी लाल की, जय कन्हैया लाल की।
जय मदन गोपाल की, जय मनोहर लाल की।
जय जशोमति लाल की, जय देवकी लाल की।
जय त्रिभुवन भुवाल की, जय बोलो नन्दलाल की।
जय हो श्री कृष्ण की, जय हो श्री श्याम की।२०।

जय बोलो श्री कृष्ण की, जय बोलो घनश्याम की।
जय बोलो सरकार की, जय बोलो करतार की।२२।

१९८ ।। श्री नरसी जी का कीर्तन ।।

पदः- राधे कृष्ण कहौ राधे कृष्ण कहौ राधे कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।
प्रिय कृष्ण कहौ प्रिय कृष्ण कहौ प्रिय कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।
प्रिय श्याम कहौ प्रिय श्याम कहौ प्रिय श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
राधे श्याम कहौ राधे श्याम कहौ राधे श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
गोपी कृष्ण कहौ गोपी कृष्ण कहौ गोपी कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।५।

गोपी श्याम कहौ गोपी श्याम कहौ गोपी श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
गोपी कृष्ण कहौ गोपी कृष्ण कहौ गोप कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।
गोप श्याम कहौ गोप श्याम कहौ गोप श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
श्री श्याम कहौ श्री श्याम कहौ श्री श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
घनश्याम कहौ घनश्याम कहौ घनश्याम कहौ तन मन प्रेम से।१०।

श्री कृष्ण कहौ श्री कृष्ण कहौ श्री कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।
बृज चन्द कहौ बृज चन्द कहौ बृज चन्द कहौ तन मन प्रेम से।
आनन्द कन्द कहौ आनन्द कन्द कहौ आनन्द कन्द कहौ तन मन प्रेम से।
करुणा सिन्धु कहौ करुणा सिन्धु कहौ करुणा सिन्धु कहौ तन मन प्रेम से।
दीन बन्धु कहौ दीन बन्धु कहौ दीन बन्धु कहौ तन मन प्रेम से।१५।

दया सिन्धु कहौ दया सिन्धु कहौ दया सिन्धु कहौ तन मन प्रेम से।
शोभा धाम कहौ शोभा धाम कहौ शोभा धाम कहौ तन मन प्रेम से।
जगदीश कहौ जगदीश कहौ जगदीश कहौ तन मन प्रेम से।

गुणग्राम कहौ गुणग्राम कहौ गुणग्राम कहौ तन मन प्रेम से।
गोविन्द कहौ गोविन्द कहौ गोविन्द कहौ तन मन प्रेम से।२०।

गोपाल कहौ गोपाल कहौ गोपाल कहौ तन मन प्रेम से।
वसुदेव नन्दन कहौ वसुदेव नन्दन कहौ वसुदेव नन्दन कहौ तन मन प्रेम से।
देवकी नन्दन कहौ देवकी नन्दन कहौ देवकी नन्दन कहौ तन मन प्रेम से।
नँद लाल कहौ नँद लाल कहौ नँद लाल कहौ तन मन प्रेम से।
मन मोहन कहौ मन मोहन कहौ मन मोहन कहौ तन मन प्रेम से।२५।

गिरिधारी कहौ गिरिधारी कहौ गिरिधारी कहौ तन मन प्रेम से।
वनमाली कहौ वनमाली कहौ वनमाली कहौ तन मन प्रेम से।
बृजराज कहौ बृजराज कहौ बृजराज कहौ तन मन प्रेम से।
माखन चोर कहौ माखन चोर कहौ माखन चोर कहौ तन मन प्रेम से।
दधि चोर कहौ दधि चोर कहौ दधि चोर कहौ तन मन प्रेम से।३०।

चीर चोर कहौ चीर चोर कहौ चीर चोर कहौ तन मन प्रेम से।
लीला धारी कहौ लीला धारी कहौ लीला धारी कहौ तन मन प्रेम से।
यदुनाथ कहौ यदुनाथ कहौ यदुनाथ कहौ तन मन प्रेम से।
दीना नाथ कहौ दीना नाथ कहौ दीना नाथ कहौ तन मन प्रेम से।
श्री माधौ कहौ श्री माधौ कहौ श्री माधौ कहौ तन मन प्रेम से।३५।

मुरलीधारी कहौ मुरलीधारी कहौ मुरलीधारी कहौ तन मन प्रेम से।
श्री चक्री कहौ श्री चक्री कहौ श्री चक्री कहौ तन मन प्रेम से।
सब में व्यापक कहौ सब में व्यापक कहौ सब में व्यापक कहौ तन मन०।
सब से न्यारे कहौ सब से न्यारे कहौ सब से न्यारे कहौ तन मन प्रेम से।
सब के प्यारे कहौ सब के प्यारे कहौ सब के प्यारे कहौ तन मन०।४०।

सरकार कहौ सरकार कहौ सरकार कहौ तन मन प्रेम से।
करतार कहौ करतार कहौ करतार कहौ तन मन प्रेम से।
जगदाधार कहौ जगदाधार कहौ जगदाधार कहौ तन मन प्रेम से।
सर्वाधार कहौ सर्वाधार कहौ सर्वाधार कहौ तन मन प्रेम से।
हरे कृष्ण कहौ हरे कृष्ण कहौ हरे कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।४५।

हरे श्याम कहौ हरे श्याम कहौ हरे श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
नमो कृष्ण कहौ नमो कृष्ण कहौ नमो कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।
नमो श्याम कहौ नमो श्याम कहौ नमो श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
जय कृष्ण कहौ जय कृष्ण कहौ जय कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।
जय श्याम कहौ जय श्याम कहौ जय श्याम कहौ तन मन प्रेम से।५०।

हे कृष्ण कहौ हे कृष्ण कहौ हे कृष्ण कहौ तन मन प्रेम से।
हे श्याम कहौ हे श्याम कहौ हे श्याम कहौ तन मन प्रेम से।
जय जय कृष्ण कहौ जय जय कृष्ण कहौ जय जय कृष्ण कहौ तन मन०।
जय जय श्याम कहौ जय जय श्याम कहौ जय जय श्याम कहौ
तन मन प्रेम से।५४।

१९९ ।। श्री गुनियाँ शाह जी ।।

पदः- लखु मन हाट घट में लागि।
जाप विधि सतगुरु से जानि के मेटु भव की आगि।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जाय सुधि बुधि पागि।
विमल अनहद सुनो बाजै असुर गे तन त्यागि।४।

चक्र बेधैं कमल उलटैं जाय नागिनि जागि।
देव मुनि नित दर्श देवैं कहैं तव बड़ि भागि।
जाय सन्मुख में जुगुल छवि श्याम श्यामा तागि।
शाह गुनियाँ कहैं जियतै लेहु सब फल माँगि।८।

२०० ।। श्री गोजर शाह जी ।।

पदः- सुनु मन नाम धुनि रं कार।
जाप विधि सतगुरु से जानो जाय खुलि एकतार।
ध्यान लय परकाश होवै अमित रवि उजियार।
जानकी सँग राम सन्मुख रहैं तव निशि वार।४।

देव मुनि सब दर्श देवैं करैं जय जय कार।
ब्रह्म अगिनी में कर्म दोनौ होंय जरि के क्षार।
साज अनहद बजै घट में ताल सम मदमार।
कहैं गोजर शाह जियतै जाव बनि मतवार।८।

२०१ ।। श्री काशी नाथ जी ।।

पदः- भजु मन राम नाम महान।
जाप विधि सतगुरु से ले तब खुलैं आँखी कान।
ध्यान धुनि परकाश लय हो सुनो अनहद तान।
श्याम श्यामा रहैं सन्मुख क्या मधुर मुसक्यान।
देव मुनि दै दर्श बैठैं करैं हरि यश गान।
कहैं काशी नाथ तनि तजि लो अचल पुर थान।६।

२०२ ।। श्री कँचन शाह जी ।।

पदः- सुनु मन राम नाम कि तान।
जाप विधि सतगुरु से लैकर चलो बनि बलवान।
धनुष सूरति का बनाय कर शब्द का धरु बान।
रूप पर तव लक्ष होवै लेंय गोद में आन।
मातु पितु सिय राम सबके देत खान औ पान।
कहैं कँचन शाह जियतैं देंय पद निर्वान।६।

२०३ ।। श्री बइली माई जी ।।

पदः- जपु मन राम नाम पवित्र।
जाप विधि सतगुरु से जानि ले लगिहै तव चित्त।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जौन तप का वित्त।
राम सीता लखौ मइली कह मिटै भव पित्त।४।

२०४ ।। श्री विहारा सिंह चौहान जी ।।

पदः- हे मन राम नामहिं जान।
जाप विधि सतगुरु से जानि क त्यागु सान औ मान।
दीनता औ शान्ति को गहु होय तव कल्यान।
तेज अनहद साज धुनि लय मिलैं चारौं ध्यान।४।

रहैं सन्मुख सदा सीता सहित राम सुजान।
दाहिने कर तीर लीन्हें वाम हाथ कमान।
देव मुनि सब दर्श देवैं करैं अति सन्मान।
कह विहारा सिंह तन तजि लेव हरि पुर थान।८।

२०५ ।। श्री चिल्ला शाह जी ।।

पदः- भजु मन नाम सब सुख सार।
जाप विधि महरम से जानो होत जो निशिवार।
ध्यान लय परकाश होवै विमल धुनि रंकार।
श्याम श्यामा सामने हों क्या अजब सिंगार।४।

साज अनहद सुनो घट में हर समय एक तार।
देव मुनि सँग आय बैठैं करैं हंसि हंसि प्यार।
जगै नागिनि चक्र बेधैं खिलैं कमल निहार।
कहैं चिल्ला शाह चेतौ जियत हो भव पार।८।

२०६ ।। श्री किल्ला शाह जी ।।

पदः- भजु मन नाम सब सुख खानि।
जाप विधि सतगुरु से जानि क देहु ताना तानि।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जाय सुधि बुधि सानि।
निरखिये हर समय सीता सहित सारंग पानि।४।

विमल अनहद सुनो बाजै मिलैं सुर मुनि आनि।
नागिनी षट चक्र सातौं कमल लो पहचानि।
नेम प्रेम औ टेम करि सब गहौ यह मम बानि।
शाह किल्ला कहैं जियतै पार हो लो जानि।८।

२०७ ।। श्री धन्नो माई जी ।।

पदः- सिया कन्त राधे कन्त कमला कन्त सन्मुख छा रहे।
देव मुनि सब दर्श दें हरि यश विमल क्या गा रहे।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सातौं कमल दरशा रहे।
षट चक्र हर दम चाक से निज निज ठौर घुमा रहे।४।

नागिनि जगै सब लोक पासै देखने में आ रहे।
सतगुरु को करि करतल किया ते चढ़ि सिंहासन जा रहे।
जे रहे दुविधा में परे ते जग में चक्कर खा रहे।
धन्नो कहैं सुमिरन करो यह तन तो एक दिन ना रहे।८।

२०८ ।। श्री डल्लो माई जी ।।

पदः- सिय राम राधे श्याम को हर जां में देख लीजै।
सतगुरु से जानि मारग तन मन को एक कीजै।
धुनि ध्यान नूर लय में सुधि बुधि को सानि दीजै।
सुर मुनि के संग बैठक हो प्रेम प्याला पीजै।
डल्लो कहैं तव कथरी होती गुरु जव भीजै।
सुमिरन बिना वृथा तन आयू दिनो दिन छीजै।६।

२०९ ।। श्री निमाई निताई कीर्तन ।।

हरे गुरु देव हरे गुरु देव हरे गुरु देव हरे हरे।
नमो गुरु देव नमो गुरु देव नमो गुरु देव हरे हरे।
श्री गुरु देव श्री गुरु देव श्री गुरु देव हरे हरे।
जय जय गुरु देव जय जय गुरु देव जय जय गुरु देव हरे हरे।
हरे गुरु देव हरे गुरु देव हरे गुरु देव नमो नमो।५।

नमो गुरु देव नमो गुरु देव नमो गुरु देव नमो नमो।
श्री गुरु देव श्री गुरु देव श्री गुरु देव नमो नमो।
जय जय गुरु देव जय जय गुरु देव जय जय गुरु देव नमो नमो।
जय जय गुरु देव श्री गुरु देव नमो गुरु देव हरे हरे।
श्री गुरु देव जय जय गुरु देव हरे गुरु देव नमो नमो।१०।

शरनि गुरु लेव चरन गुरु सेव भजो गुरु देव नमो नमो।
मिटै सब भेव जियत सुख लेव लखौ गुरु देव हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे विष्णु हरे विष्णु हरे विष्णु हरे हरे।१५।
हरे श्याम हरे श्याम श्याम श्याम हरे हरे।
नमो सीता नमो सीता जय जय सीता नमो नमो।
नमो राधे नमो राधे जय जय राधे नमो नमो।
नमो कमला नमो कमला जय जय कमला नमो नमो।
नमो शंकर नमो शंकर जय जय शंकर नमो नमो।२०।

नमो ब्रह्मा नमो ब्रह्मा जय जय ब्रह्मा नमो नमो।

नमो गणपति नमो गणपति जय जय गणपति नमो नमो।

नमो गिरिजा नमो गिरिजा जय जय गिरिजा नमो नमो।

नमो शारद नमो शारद जय जय शारद नमो नमो।

नमो सरस्वती नमो सरस्वति जय जय सरस्वति नमो नमो।२५।

नमो हनुमत श्री हनुमत जय जय हनुमत नमो नमो।

नमो षट मुख श्री षट मुख जय जय षट मुख नमो नमो।

नमो भैरव श्री भैरव जय जय भैरव नमो नमो।

नमो शूकर श्री शूकर जय जय शूकर नमो नमो।

नमो नर हरि श्री नर हरि जय जय नर हरि नमो नमो।३०।

नमो बावन श्री बावन जय जय बावन नमो नमो।

नमो कच्छप श्री कच्छप जय जय कच्छप नमो नमो।

नमो मच्छव श्री मच्छव जय जय मच्छव नमो नमो।

नमो काली श्री काली जय जय काली नमो नमो।

नमो दुर्गा श्री दुर्गा जय जय दुर्गा नमो नमो।३५।

नमो सूरज श्री सूरज जय जय सूरज नमो नमो।

नमो चन्द्रै श्री चन्द्रै जय जय चन्द्रै नमो नमो।

नमो ज्वाला श्री ज्वाला जय जय ज्वाला नमो नमो।

नमो गंगा श्री गंगा जय जय गंगा नमो नमो।

नमो यमुना श्री यमुना जय जय यमुना नमो नमो।४०।

नमो सरयू श्री सरयू जय जय सरयू नमो नमो।

नमो विमला जय जय विमला श्री विमला नमो नमो।

नमो गोमा जय जय गोमा श्री गोमा नमो नमो।

नमो पुष्कर जय जय पुष्कर श्री पुष्कर नमो नमो।

नमो फणपति जय जय फणपति श्री फणपति नमो नमो।४५।

नमो धनपति जय जय धनपति श्री धनपति नमो नमो।

नमो खगपति श्री खगपति जय जय खगपति नमो नमो।

नमो भरथै जय जय भरथै श्री भरथै नमो नमो।

नमो लखनै जय जय लखनै श्री लखनै नमो नमो।
नमो रिपुहन जय जय रिपुहन श्री रिपुहन नमो नमो।५०।
नमो माण्डवी जय जय माण्डवी श्री माण्डवी नमो नमो।
नमो ऊर्मिला जय जय ऊर्मिला श्री ऊर्मिला नमो नमो।
नमो श्रुति कीर्ति जय जय श्रुति कीर्ति श्री श्रुति कीर्ति नमो नमो।
नमो दशरथ जय जय दशरथ श्री दशरथ नमो नमो।
नमो जनक जय जय श्री जनक श्री जनक नमो नमो।५५।

नमो कौशिल्या जय जय कौशिल्या श्री कौशिल्या नमो नमो।
नमो कैकेयी जय जय कैकेयी श्री कैकेयी नमो नमो।
नमो सुमित्रा जय जय सुमित्रा श्री सुमित्रा नमो नमो।
नमो सुनयना जय जय सुनयना श्री सुनयना नमो नमो।
नमो सुमन्त जय जय सुमन्त श्री सुमन्त नमो नमो।६०।

नमो शतानन्द जय जय शतानन्द श्री शतानन्द नमो नमो।
नमो वसुदेव जय जय वसुदेव श्री वसुदेव नमो नमो।
नमो नन्द जय जय नन्द श्री नन्द नमो नमो।
नमो देवकी जय जय देवकी श्री देवकी नमो नमो।
नमो यशुमति जय जय यशुमति श्री यशुमति नमो नमो।६५।

नमो रोहिणी जय जय रोहिणी श्री रोहिणी नमो नमो।
नमो रुक्मिणी जय जय रुक्मिणी श्री रुक्मिणी नमो नमो।
नमो सतिभामा जय जय सतिभामा श्री सतिभामा नमो नमो।
नमो रेवती जय जय रेवती श्री रेवती नमो नमो।
नमो बलराम जय जय बलराम श्री बलराम नमो नमो।७०।

नमो अवध श्री अवध जय जय अवध नमो नमो।
नमो मधुपुरी जय जय मधुपुरी श्री मधुपुरी नमो नमो।
नमो मिथिला श्री मिथिला जय जय मिथिला नमो नमो।
नमो काशी जय जय काशी श्री काशी नमो नमो।
नमो माया पुरी जय जय माया पुरी श्री माया पुरी नमो नमो।७५।

नमो जगदीशपुरी श्री जगदीशपुरी जय जय जगदीशपुरी नमो नमो।
नमो द्वारिका पुरी जय जय द्वारिका पुरी श्री द्वारिका पुरी नमो नमो।

नमो रामेश्वर श्री रामेश्वर जय जय रामेश्वर नमो नमो।
नमो बद्री नाथ जय जय बद्री नाथ श्री बद्री नाथ नमो नमो।
नमो पारसनाथ जय जय पारसनाथ श्री पारसनाथ नमो नमो।८०।

नमो मुक्तिनाथ जय जय मुक्तिनाथ श्री मुक्तिनाथ नमो नमो।
नमो गया जय जय गया श्री गया नमो नमो।
नमो प्रयाग जय जय प्रयाग श्री प्रयाग नमो नमो।
नमो विन्ध्याचल जय जय विन्ध्याचल श्री विन्ध्याचल नमो नमो।
नमो चित्रकूट जय जय चित्रकूट श्री चित्रकूट नमो नमो।८५।

नमो नासिक जय जय नासिक श्री नासिक नमो नमो।
नमो पंपासर जय जय पंपासर श्री पंपासर नमो नमो।
नमो विष्णुकांची जय जय विष्णुकांची श्री विष्णुकांची नमो नमो।
नमो शिवकांची जय जय शिवकांची श्री शिवकांची नमो नमो।
नमो मानसरोवर जय जय मानसरोवर श्री मानसरोवर नमो नमो।

नमो नैमिष जय जय नैमिष श्री नैमिष नमो नमो।
नमो कागभुशुण्डि जय जय कागभुशुण्डि श्री कागभुशुण्डि नमो नमो।
नमो लोमश जय जय लोमश श्री लोमश नमो नमो।
नमो सुरपति जय जय सुरपति श्री सुरपति नमो नमो।
नमो वरुण जय जय वरुण श्री वरुण नमो नमो।९५।

नमो पावक जय जय पावक श्री पावक नमो नमो।
नमो वायू जय जय वायू श्री वायू नमो नमो।
नमो पृथ्वी जय जय पृथ्वी श्री पृथ्वी नमो नमो।
नमो गगनै जय जय गगनै श्री गगनै नमो नमो।
नमो पाताल जय जय पाताल श्री पाताल नमो नमो।१००।

नमो मृत्यु लोक जय जय मृत्यु लोक श्री मृत्यु लोक नमो नमो।
नमो कैलाश जय जय कैलाश श्री कैलाश नमो नमो।
नमो इन्द्रपुरी जय जय इन्द्रपुरी श्री इन्द्रपुरी नमो नमो।
नमो चारो बैकुण्ठ जय जय चारो बैकुण्ठ श्री चारो बैकुण्ठ नमो नमो।
नमो विधिलोक जय जय विधिलोक श्री विधिलोक नमो नमो।

नमो गोलोक जय जय गोलोक श्री गोलोक नमो नमो।
नमो साकेत जय जय साकेत श्री साकेत नमो नमो।
नमो सब सुर जय जय सब सुर श्री सब सुर नमो नमो।
नमो ऋषि मुनि जय जय ऋषि मुनि श्री ऋषि मुनि नमो नमो।
नमो सब शक्ती जय जय सब शक्ती श्री सब शक्ती नमो नमो।११०।

नमो सब द्वीप जय जय सब द्वीप श्री सब द्वीप नमो नमो।
नमो सब खण्ड जय जय सब खण्ड श्री सब खण्ड नमो नमो।
नमो सब भुवन जय जय सब भुवन श्री सब भुवन नमो नमो।
नमो सब देश जय जय सब देश श्री सब देश नमो नमो।
नमो सब ग्राम जय जय सब ग्राम श्री सब ग्राम नमो नमो।११५।

नमो सब दिन जय जय सब दिन श्री सब दिन नमो नमो।
नमो सब तिथि जय जय सब तिथि श्री सब तिथि नमो नमो।
नमो सब राशी जय जय सब राशी श्री सब राशी नमो नमो।
नमो सब ग्रह जय जय सब ग्रह श्री सब ग्रह नमो नमो।
नमो सब नक्षत्र जय जय सब नक्षत्र श्री सब नक्षत्र नमो नमो।१२०।

नमो सब योग जय जय सब योग श्री सब योग नमो नमो।
नमो कृष्णपक्ष जय जय कृष्णपक्ष श्री कृष्णपक्ष नमो नमो।
नमो शुक्लपक्ष जय जय शुक्लपक्ष श्री शुक्लपक्ष नमो नमो।
नमो सब मास जय जय सब मास श्री सब मास नमो नमो।
नमो वेद शास्त्र नमो वेद शास्त्र जय जय वेद शास्त्र नमो नमो।

नमो वालमीकी जय जय वाल्मीकी श्री वाल्मीकी नमो नमो।
नमो गीता जय जय गीता श्री गीता नमो नमो।
नमो सब तीर्थ जय जय सब तीर्थ श्री सब तीर्थ नमो नमो।
नमो सब व्रत जय जय सब व्रत श्री सब व्रत नमो नमो।
नमो सब लोक जय जय सब लोक श्री सब लोक नमो नमो।१३०।

नमो सब भक्त जय जय सब भक्त श्री सब भक्त नमो नमो।
नमो सब सृष्टि जय जय सब सृष्टि श्री सब सृष्टि नमो नमो।१३२।

२१० ।। श्री मौलाना मुहम्मद अली जी ।।

शेरः- लन्दन गया जिस काम हित वह काम सब होगा भला।
मुझ पर दया रव ने किया दी भिश्त सुमिरन के बिना।
कहता मुहम्मद अली हरदम भजो परवरदिगार।
बस हुक्म से उन ही के होता जहां का सब है संभार।४।

२११ ।। श्री डुण्डी माई जी ।।

पदः- श्री यमुना श्री यमुना श्री यमुना क निर्मल जल।
नहावै गर नहावै गर नहावै गर तो छूटै मल।
प्रेम तन मन प्रेम तन मन प्रेम तन मन में जावै ढल।
पियै जल को पियै जल को पियै जल को तो होवै बल।४।

डरैं यम गण डरैं यम गण डरैं यम गण न हो दुख पल।
सबी लीला सबी लीला सबी लीला करै करतल।
भजो हरदम भजो हरदम भजो हरदम तजौ सब छल।
कहैं डुण्डी कहैं डुण्डी कहैं डुण्डी मिलै निज थल।८।

२१२ ।। श्री झुण्डी माई जी ।।

पदः- श्री गोमा श्री गोमा श्री गोमा में करु मज्जन।
बना देवैं बना देवैं बना देवैं तुझे सज्जन।
रेणुका लै रेणुका लै रेणुका लै करै अंजन।
धुन्ध माड़ा धुन्ध माड़ा धुन्ध माड़ा क हो भंजन।
कहैं झुण्डी कहैं झुण्डी कहैं झुण्डी है मन रंजन।५।

२१३ ।। श्री गपकू शाह जी ।।

पदः- श्री राम जी श्री राम जी श्री राम जी श्री राम जी।
श्री श्याम जी श्री श्याम जी श्री श्याम जी श्री श्याम जी।
श्री कृष्ण जी श्री कृष्ण जी श्री कृष्ण जी श्री कृष्ण जी।
श्री विष्णु जी श्री विष्णु जी श्री विष्णु जी श्री विष्णु जी।
श्री सीता जी श्री सीता जी श्री सीता जी श्री सीता जी।५।

श्री राधे जी श्री राधे जी श्री राधे जी श्री राधे जी।
श्री शम्भु जी श्री शम्भु जी श्री शम्भु जी श्री शम्भु जी।

श्री गणेश जी श्री गणेश जी श्री गणेश जी श्री गणेश जी।
श्री ब्रह्मा जी श्री ब्रह्मा जी श्री ब्रह्मा जी श्री ब्रह्मा जी।
श्री उमा जी श्री उमा जी श्री उमा जी श्री उमा जी।१०।

श्री सरस्वती जी श्री सरस्वती जी श्री सरस्वती जी श्री सरस्वती जी।
श्री शारदा जी श्री शारदा जी श्री शारदा जी श्री शारदा जी।
श्री हनुमत जी श्री हनुमत जी श्री हनुमत जी श्री हनुमत जी।
श्री षट मुख जी श्री षट मुख जी श्री षट मुख जी श्री षट मुख जी।
श्री भैरव जी श्री भैरव जी श्री भैरव जी श्री भैरव जी।१५।

श्री काली जी श्री काली जी श्री काली जी श्री काली जी।
श्री दुर्गा जी श्री दुर्गा जी श्री दुर्गा जी श्री दुर्गा जी।
श्री ज्वाला जी श्री ज्वाला जी श्री ज्वाला जी श्री ज्वाला जी।
श्री चण्डी जी श्री चण्डी जी श्री चण्डी जी श्री चण्डी जी।
श्री गंगा जी श्री गंगा जी श्री गंगा जी श्री गंगा जी।२०।

श्री यमुना जी श्री यमुना जी श्री यमुना जी श्री यमुना जी।
श्री गोमा जी श्री गोमा जी श्री गोमा जी श्री गोमा जी।
श्री सरयू जी श्री सरयू जी श्री सरयू जी श्री सरयू जी।
श्री सुरपति जी श्री सुरपति जी श्री सुरपति जी श्री सुरपति जी।
श्री शची जी श्री शची जी श्री शची जी श्री शची जी।२५।

श्री वरुण जी श्री वरुण जी श्री वरुण जी श्री वरुण जी।
श्री कुवेर जी श्री कुवेर जी श्री कुवेर जी श्री कुवेर जी।
श्री सूर्य्य जी श्री सूर्य्य जी श्री सूर्य्य जी श्री सूर्य्य जी।
श्री चन्द्र जी श्री चन्द्र जी श्री चन्द्र जी श्री चन्द्र जी।
श्री पृथ्वी जी श्री पृथ्वी जी श्री पृथ्वी जी श्री पृथ्वी जी।३०।

श्री पौन जी श्री पौन जी श्री पौन जी श्री पौन जी।
श्री अग्नि जी श्री अग्नि जी श्री अग्नि जी श्री अग्नि जी।
श्री गगन जी श्री गगन जी श्री गगन जी श्री गगन जी।
श्री नृसिंह जी श्री नृसिंह जी श्री नृसिंह जी श्री नृसिंह जी।
श्री वाराह जी श्री वाराह जी श्री वाराह जी श्री वाराह जी।३५।

श्री बावन जी श्री बावन जी श्री बावन जी श्री बावन जी।
श्री कमठ जी श्री कमठ जी श्री कमठ जी श्री कमठ जी।
श्री मच्छ जी श्री मच्छ जी श्री मच्छ जी श्री मच्छ जी।
श्री लोमश जी श्री लोमश जी श्री लोमश जी श्री लोमश जी।
श्री शेष जी श्री शेष जी श्री शेष जी श्री शेष जी।४०।

श्री गरुड़ जी श्री गरुड़ जी श्री गरुड़ जी श्री गरुड़ जी।
श्री भरथ जी श्री भरथ जी श्री भरथ जी श्री भरथ जी।
श्री लखन जी श्री लखन जी श्री लखन जी श्री लखन जी।
श्री शत्रुहन जी श्री शत्रुहन जी श्री शत्रुहन जी श्री शत्रुहन जी।
श्री ऊर्मिला जी श्री ऊर्मिला जी श्री ऊर्मिला जी श्री ऊर्मिला जी।४५।

श्री माण्डवी जी श्री माण्डवी जी श्री माण्डवी जी श्री माण्डवी जी।
श्री श्रुति कीर्ति जी श्री श्रुति कीर्ति जी श्री श्रुति कीर्ति जी श्री श्रुति कीर्ति जी।
श्री दशरथ जी श्री दशरथ जी श्री दशरथ जी श्री दशरथ जी।
श्री जनक जी श्री जनकजी श्री जनक जी श्री जनक जी।
श्री कौशिल्याजी श्री कौशिल्याजी श्री कौशिल्याजी श्री कौशिल्याजी।

श्री सुमित्रा जी श्री सुमित्रा जी श्री सुमित्रा जी श्री सुमित्रा जी।
श्री कैकेयी जी श्री कैकेयी जी श्री कैकेयी जी श्री कैकेयी जी।
श्री सुनयना जी श्री सुनयना जी श्री सुनयना जी श्री सुनयना जी।
श्री वसुदेव जी श्री वसुदेव जी श्री वसुदेव जी श्री वसुदेव जी।
श्री नन्द जी श्री नन्द जी श्री नन्द जी श्री नन्द जी।५५।

श्री देवकी जी श्री देवकी जी श्री देवकी जी श्री देवकी जी।
श्री रोहिणी जी श्री रोहिणी जी श्री रोहिणी जी श्री रोहिणी जी।
श्री यशोदा जी श्री यशोदा जी श्री यशोदा जी श्री यशोदा जी।
श्री रेवती जी श्री रेवती जी श्री रेवती जी श्री रेवती जी।
श्री रुक्मिणी जी श्री रुक्मिणी जी श्री रुक्मिणी जी श्री रुक्मिणी जी।

श्री सत्यभामा जी श्री सत्यभामा जी श्री सत्यभामा जी श्री सत्यभामा जी।
श्री बलराम जी श्री बलराम जी श्री बलराम जी श्री बलराम जी।
श्री गौराङ्ग जी श्री गौराङ्ग जी श्री गौराङ्ग जी श्री गौराङ्ग जी।

श्री नित्यानन्द जी श्री नित्यानन्द जी श्री नित्यानन्द जी श्री नित्यानन्द जी।
श्री रामानन्द जी श्री रामानन्द जी श्री रामानन्द जी श्री रामानन्द जी।६५।

श्री शंकराचार्य्यजी श्री शंकराचार्य्यजी श्री शंकराचार्य्यजी श्री शंकराचार्य्यजी।
श्री बुध्द जी श्री बुध्द जी श्री बुध्द जी श्री बुध्द जी।
श्री लक्ष्मणाचार्य्यजी श्री लक्ष्मणाचार्य्यजी श्री लक्ष्मणाचार्य्यजी श्री लक्ष्मणाचार्य्यजी।
श्री वशिष्ठ जी श्री वशिष्ठ जी श्री वशिष्ठ जी श्री वशिष्ठ जी।
श्री अगस्त जी श्री अगस्त जी श्री अगस्त जी श्री अगस्त जी।७०।

श्री घोर अंगिरस्तजी श्री घोर अंगिरस्तजी श्री घोर अंगिरस्तजी श्री घोर अंगिरस्तजी।
श्री अरुन्धती जी श्री अरुन्धती जी श्री अरुन्धती जी श्री अरुन्धती जी।
श्री अनसुइया जी श्री अनसुइया जी श्री अनसुइया जी श्री अनसुइया जी।
श्री मन्दालसा जी श्री मन्दालसा जी श्री मन्दालसा जी श्री मन्दालसा जी।
श्री ललिता जी श्री ललिता जी श्री ललिता जी श्री ललिता जी।७५।

श्री विशेषा जी श्री विशेषा जी श्री विशेषा जी श्री विशेषा जी।
श्री चन्द्राबलि जी श्री चन्द्राबलि जी श्री चन्द्राबलि जी श्री चन्द्राबलि जी।
श्री विष्णुप्रिया जी श्री विष्णुप्रिया जी श्री विष्णुप्रिया जी श्री विष्णुप्रिया जी।
श्री मनसुखा जी श्री मनसुखा जी श्री मनसुखा जी श्री मनसुखा जी।
श्री भद्रसेन जी श्री भद्रसेन जी श्री भद्रसेन जी श्री भद्रसेन जी।८०।

श्री नारद जी श्री नारद जी श्री नारद जी श्री नारद जी।
श्री सनकादिक जी श्री सनकादिक जी श्री सनकादिक जी श्री सनकादिक जी।
श्री सुखदेव जी श्री सुखदेव जी श्री सुखदेव जी श्री सुखदेव जी।
श्री नवोयोगेश्वरजी श्री नवोयोगेश्वरजी श्री नवोयोगेश्वरजी श्री नवोयोगेश्वरजी।
श्री नवोनाथ जी श्री नवोनाथ जी श्री नवोनाथ जी श्री नवोनाथ जी।८५।

श्री कर्ण जी श्री कर्ण जी श्री कर्ण जी श्री कर्ण जी।
श्री भीष्म जी श्री भीष्म जी श्री भीष्म जी श्री भीष्म जी।
श्री वाल्मीकि जी श्री वाल्मीकि जी श्री वाल्मीकि जी श्री वाल्मीकि जी।
श्री व्यास जी श्री व्यास जी श्री व्यास जी श्री व्यास जी।
श्री सेवरी जी श्री सेवरी जी श्री सेवरी जी श्री सेवरी जी।९०।

श्री कुब्जा जी श्री कुब्जा जी श्री कुब्जा जी श्री कुब्जा जी।
श्री कर्मा जी श्री कर्मा जी श्री कर्मा जी श्री कर्मा जी।
श्री गणिका जी श्री गणिका जी श्री गणिका जी श्री गणिका जी।
श्री जगदीश जी श्री जगदीश जी श्री जगदीश जी श्री जगदीश जी।
श्री बद्रीविशाल जी श्री बद्रीविशाल जी श्री बद्रीविशाल जी श्री बद्रीविशाल जी।९५।

श्री द्वारिका जी श्री द्वारिका जी श्री द्वारिका जी श्री द्वारिका जी।
श्री रामेश्वर जी श्री रामेश्वर जी श्री रामेश्वर जी श्री रामेश्वर जी।
श्री शिवकांची जी श्री शिवकांची जी श्री शिवकांची जी श्री शिवकांची जी।
श्री विष्णुकांची जी श्री विष्णुकांची जी श्री विष्णुकांची जी श्री विष्णुकांची जी।
श्री पुष्कर जी श्री पुष्कर जी श्री पुष्कर जी श्री पुष्कर जी।१००।

श्री गया जी श्री गया जी श्री गया जी श्री गया जी।
श्री काशी जी श्री काशी जी श्री काशी जी श्री काशी जी।
श्री अवध जी श्री अवध जी श्री अवध जी श्री अवध जी।
श्री मिथिला जी श्री मिथिला जी श्री मिथिला जी श्री मिथिला जी।
श्री माया पुरी जी, श्री माया पुरी जी श्री माया पुरी जी, श्री माया पुरी जी।

श्री मधु पुरी जी श्री मधु पुरी जी श्री मधु पुरी जी श्री मधु पुरी जी।
श्री नैमिषारण्य जी श्री नैमिषारण्य जी श्री नैमिषारण्य जी श्री नैमिषारण्य जी।
श्री चित्रकूट जी श्री चित्रकूट जी श्री चित्रकूट श्री चित्रकूट जी।
श्री नासिक जी श्री नासिक जी श्री नासिक जी श्री नासिक जी।
श्री सुदामा पुरी जी श्री सुदामा पुरी जी श्री सुदामा पुरी जी श्री सुदामा पुरी जी।

श्री पंपासर जी श्री पंपासर जी श्री पंपासर जी श्री पंपासर जी।
श्री प्रयाग जी श्री प्रयाग जी श्री प्रयाग जी श्री प्रयाग जी।
श्री विन्ध्याचल जी श्री विन्ध्याचल जी श्री विन्ध्याचल जी श्री विन्ध्याचल जी।११३।

२१४ ।। श्री लपकू शाह जी ।।

पदः- सिया राम जी कहौ राधेश्याम जी कहौ रमा विष्णु जी कहौ भव जाल कटै।
उमा शम्भु कहौ सरस्वति गणपति कहौ शारद ब्रह्मा कहौ भव जाल कटै।
श्री राम जय राम जय जय राम श्री श्याम जय श्याम जय जय श्याम।
श्री विष्णु जय विष्णु जय जय विष्णु।
श्री कृष्ण जय कृष्ण जय जय कृष्ण।५।

श्री सीता जय सीता जय जय सीता।

श्री राधे जय राधे जय जय राधे।

श्री कमला जय कमला जय जय कमला।

श्री गिरिजा जय गिरिजा जय जय गिरिजा।

श्री हनुमत जय हनुमत जय जय हनुमत।१०।

श्री भैरव जय भैरव जय जय भैरव।

श्री षटमुख जय षटमुख जय जय षटमुख।

श्री काली जय काली जय जय काली।

श्री दुर्गा जय दुर्गा जय जय दुर्गा।

श्री ज्वाला जय ज्वाला जय जय ज्वाला।१५।

श्री चण्डी जय चण्डी जय जय चण्डी।

श्री गंगा जय गंगा जय जय गंगा।

श्री यमुना जय यमुना जय जय यमुना।

श्री सरयू जय सरयू जय जय सरयू।

श्री विमला जय विमला जय जय विमला।२०।

श्री गोमा जय गोमा जय जय गोमा।

श्री पुष्कर जय पुष्कर जय जय पुष्कर।

श्री बावन जय बावन जय जय बावन।

श्री नरहरि जय नरहरि जय जय नरहरि।

श्री शूकर जय शूकर जय जय शूकर।२५।

श्री कच्छप जय कच्छप जय जय कच्छप।

श्री मच्छप जय मच्छप जय जय मच्छप।

श्री गौराङ्ग जय गौराङ्ग जय जय गौराङ्ग।

श्री नित्यानन्द जय नित्यानन्द जय जय नित्यानन्द।

श्री रामानन्द जय रामानन्द जय जय रामानन्द।३०।

श्री शंकराचार्य्य जय शंकराचार्य्य जय जय शंकराचार्य्य।

श्री रामानुज जय रामानुज जय जय रामानुज।

श्री बुध्द जय बुध्द जय जय बुध्द।

श्री ईशा जय ईशा जय जय ईशा।

श्री मोहम्मद जय मोहम्मद जय जय मोहम्मद।३५।

श्री नानक जय नानक जय जय नानक।

श्री तुलसी जय तुलसी जय जय तुलसी।

श्री कबीर जय कबीर जय जय कबीर।

श्री रैदास जय रैदास जय जय रैदास।

श्री कमाल जय कमाल जय जय कमाल।४०।

श्री सूरदास जय सूरदास जय जय सूरदास।

श्री नरसी जय नरसी जय जय नरसी।

श्री दादू जय दादू जय जय दादू।

श्री सुन्दर जय सुन्दर जय जय सुन्दर।

श्री ज्ञानेश्वर जय ज्ञानेश्वर जय जय ज्ञानेश्वर।४५।

श्री तुकाराम जय तुकाराम जय जय तुकाराम।

श्री एकनाथ जय एकनाथ जय जय एकनाथ।

श्री जग जीवन जय जग जीवन जय जय जग जीवन।

श्री रामकृष्ण परमहंस जय रामकृष्ण परमहंस
जय जय रामकृष्ण परमहंस।

श्री रघुनाथदास जय रघुनाथदास जय जय रघुनाथदास।५०।

श्री मीरा जय मीरा जय जय मीरा।

श्री सेवरी जय सेवरी जय जय सेवरी।

श्री कुब्जा जय कुब्जा जय जय कुब्जा।

श्री कर्मा जय कर्मा जय जय कर्मा।

श्री गणिका जय गणिका जय जय गणिका।५५।

श्री सधन जय सधन जय जय सधन।

श्री धना जय धना जय जय धना।

श्री पीपा जय पीपा जय जय पीपा।

श्री रंका जय रंका जय जय रंका।

श्री बंका जय बंका जय जय बंका।६०।

२१५ ।। श्री सलामत शाह जी ।।

पदः- हे प्रभु हाथ तुम्हारे लाज।

मैं अति अधम मलीन मन्दि मति आपु गरीब नेवाज।

परम पवित्र करत पतितन को भक्तन के शिरताज।

सुर मुनि वेद विरद नित गावत भव सागर के जहाज।

नर तन पाय गह्यौ जिन तव पद तिन सब साज्यौ साज।

जे भूले ते जन्म मरन के खेल में नाचत आज।६।

नर्क में यम ऐसा दुख देते जैसे लवा को बाज।

शिर पर लोह क दण्डा मारत मानहु टूटी गाज।

नेको दया नहीं तन मन में निर्भय उनका राज।

गारी दै दे टांगै चीरत जैसे वसन बजाज।

चारों तरफ़ से पहरा कर्रा कोई सकत न भाज।

सतगुरु करि गहि शान्ति दीनता तिन सारयौ निज काज।१२।

२१६ ।। श्री रंक शाह जी ।।

पदः- हे प्रभु लाज तुम्हारे हाथ।

पाप कि आँच में मै नित झुलसत असुरन बाँध्यौ साथ।

चहुँ दिश ते हर दम रहैं घेरे तन मन डारयौ पाथ।

सुमिरन पाठ कीरतन पूजन केहि विधि करौं हौं अनाथ।४।

करत अपावन को हौ पावन सुनिये दीना नाथ।

इन सब को समुझाय शान्ति करि कीजै मोहि सनाथ।

काहे देर करत किरपा निधि त्रिभुवन पति सियनाथ।

नर तन का फल दीजै स्वामी पद सेवौं धरि माथ।८।

२१७ ।। श्री सुमिरन शाह जी ।।

पदः- जे सुमिरन में हों लालायित वही दुर्लभ सुलभ करते।

वही लय नूर धुनि औ ध्यान से तन मन को खुब भरते।

वही सुर मुनि से बतलावैं सुनैं अनहद जियत बर लें।

वही सिय राम राधे श्याम को निज सामने कर लें।

वही सब लोक लखि आवैं त्यागि तन फेरि चलि घर लें।

वही समझो कि अधिकारी जे सतगुरु करके यह ज़र ले।६।

२१८ ।। श्री सफ़ाई शाह जी ।।

पदः- भाव सब में मुख्य है जो भाव की गहि लेलता।
भाव से सुमिरन करै प्रभु गोद में नित खेलता।
परकाश धुनि औ ध्यान लय में भाव ही लय पेलता।
भाव ही विधि गति को छेकै फिर न भव में ठेलता।
भाव सतगुरु करिके करिये भाव तन मन मेलता।
कहता सफाई शाह मानुष भाव बिन दुख झेलता।६।

२१९ ।। श्री खैरियत शाह जी ।।

पदः- भाव से भगवान मिलते भाव से मुनि देवता।
भाव सब में है शिरोमणि भाव भव से खेवता।
भाव से परकाश लय हो भाव नाम क धेवता।
भाव ही से ध्यान होवै भाव विधि गति छेवता।
भाव से अनहद क सुख लो भाव अमृत पेवता।
भाव सतगुरु करिके जानो भाव भावक लेवता।६।

२२० ।। श्री हुण्डी माई जी ।।

पदः- श्री गंगा श्री गंगा श्री गंगा कि क्या धारा।
नहावै जो नहावै जो नहावै जो हो निस्तारा।
विमल जल है विमल जल है विमल जल है लखो सारा।
जिसे शंकर जिसे शंकर जिसे शंकर ने शिर धारा।
लिया हरि ने लिया हरि ने लिया हरि ने जब अवतारा।
रूप बावन रूप बावन रूप बावन क अति प्यारा।६।
छला बलि को छला बलि को छला बलि को न बलि हारा।
किया तन को किया तन को किया तन को तब विस्तारा।
लोक तीनो लोक तीनो लोक तीनो नापि डारा।
तभी विधि ने तभी विधि ने तभी विधि ने पग पाखारा।
कमण्डल में कमण्डल में कमण्डल में उसे धारा।
जिसे पाते जिसे पाते जिसे पाते थे हर बारा।१२।

२२१ ।। श्री कोइली माई धनुकुनि जी ।।

(मिथिलापुर निवासिनी)

पदः- श्री विमला श्री विमला श्री विमला क करु दर्शन।
पिओ गर जल पिओ गर जल पिओ गर जल जुरै तन मन।
लखौ सिय हरि लखौ सिय हरि लखौ सिय हरि प्रेम में सन।
ध्यान धुनि लय ध्यान धुनि लय ध्यान धुनि लय मिलै रोशन।
अन्त निज घर अन्त निज घर अन्त निज घर चलौ बन ठन।५।

२२२ ।। श्री मुण्डा बाज नट जी ।।

पदः- तर्क करना तजो सब सुनो भाइयों
यह वशर के लिये अति बुरी बात है।
फर्क शुभ काम करने में देवै लगा
अन्त दोज़ख़ में भेजै न संग जात है।
पांचों चोरों कि हम शीरा है यह
कठिन छेड़खानी करे फेरि मुसक्यात है।
मन को काबू में अपने किया तुम से लै
चोट लागै न भागै न शरमात है।४।

२२३ ।। श्री कटार बाज नट जी ।।

पदः- कूट करना बुरा है मेरे भाइयों
इस से त्यागो इसे मान लो गर वचन।
दूसरों का कलेजा जला डालती
औ तुम्हारा लुटा लेती सब तप क धन।
है यह खाला कपट की बड़ी चण्ट
बस इस से रहना अलग तब ही होगा भजन।
करके मुरशिद गहो नाम विश्वास कर
ठीक हो जायगा सब यह चालो चलन।४।

२२४ ।। श्री घण्टा बाज नट जी ।।

पदः- फूट करना बुरा है गुनो भाइयों
है यह डाइन कलेजे को खा लेयगी।

खून रग रग क पीले बुढ़ापा बुला
अन्त दोज़ख में तुमको पठा देयगी।
प्यारी जोरू कपट की बड़ी बटचवी
चूकि जाओगे फौरन फंसा लेयगी।
घर घर घूमत फिरै साथ असुरों क दल
मन को काबू करो शिर झुका देयगी।४।

२२५ ।। श्री ठाकुर बेनी सिंह जी ।।

पदः- धनि धनि राम श्याम के दास।
सिया राधो प्रिया माधो रहत सन्मुख खास।
सब में समता मधुर बोलैं हरत क्षुधा पियास।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जहँ न वारि बताश।४।

चन्द्र सूर्य कि गम नही जहँ तहाँ पायो वाश।
देव मुनि सब देंय आशिष आय बैठें पास।
गगन ते अमृत झरै सो पिअत बारह मास।
कहत बेनी सिंह जियतै छूटि भव की त्रास।८।

२२६ ।। श्री छंगो धोबिन जी ।।

कजरीः- गोरिया चलो चलैं ससुररिया बैठें पिया के सँग हर्षाय।
पिया मिलन की चाह बढ़ी अब नैहर नहीं सुहाय।
सतगुरु ने रहिया बतलायो रहि रहि मन ललचाय।
शान्ति दीनता को गहि लेवै सूरति शब्द लगाय।
ठग बट पार न नेरे आवैं बैठें सब खिसि आँय।५।

राग रागिनी सुर मुनि दर्शै अनहद सुनै बधाय।
ध्यान प्रकाश नाम धुनि लय हो सुधि बुधि जहाँ हेराय।
वहाँ से चेति चलैं प्रेमातुर महा प्रकाश देखाय।
ताके मध्य पिया अविनाशी श्याम रूप सुखदाय।
अगणित सन्त तहां पर राजैं सिंहासन चमकाय।१०।

हँसै न बोलैं नैन न डोलैं प्रतिमा सम दिखलाय।
पहुँचि जाव जस पिया के पास में उठि लें गोद उठाय।

चूमैं मुख फिरि हिये लगावैं बार बार दुलराय।
सिंहासन पर तब बैठारैं दिव्य सिंगार बनाय।
निज स्वरूप सम रूप देंय करि मौन बोलि नहिं जाय।
हर दम पास न नैहर आवैं यह ससुरारि कहाय।१६।

दोहा:- अर्पन सतगुरु को करै, तन मन सो गृह पाय।
धन्य धन्य सो शिष्य है, सुर मुनि करैं बड़ाय।।

२२७ ।। श्री शताना नाउनि जी ।।

पद:- गोरिया कोरवा में हरि राजैं जब तुम जप की विधि लेव जान।
सतगुरु करौ होय मुद मंगल छोड़ो सान औ मान।
अनहद बाजै हर दम घट में सुनिये मधुरी तान।
सुर मुनि आय आय सँग खेलैं मानै प्रान समान।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन हो जान।
कहैं शताना जियत लखै सो पावै पद निर्वान।६।

दोहा:- सतगुरु बिन नहिं मिल सकै, यह पद दुर्लभ् जान।
कहैं शताना द्वैत गहि, उनके पकड़े कान।१।
अपने रंग में लीन रंगि, करै करावै पाप।
कहै शताना बचै तब, लेय नाम की छाप।२।

२२८ ।। श्री जनाका माई तेलिन जी ।।

पद:- सखियों छोड़ो अब नैहरवा चलि ससुरारि रहैं सुख पाय।
सतगुरु ने सब भेद बतायो उर में गयो समाय।
बाला पन सब खेल में बीता गई जवानी आय।
अब नैहर में गुजर होय नहिं ठग दें धर्म्म नशाय।४।

माता पिता जन्म के संघी फेरि संग नहिं जाय।
तन मन प्रेम से पति सेवकाई करि पति व्रता कहाय।
सदा सोहागिन रहै एक रस कबहूँ नहीं बुढ़ाय।
कहै जनाका पहुँचै सो जो सूरति शब्द लगाय।८।

२२९ ।। श्री धरामा माई तम्बोलिनि जी ।।

कजरीः- सखियों चलो चलें ससुरारि नैहर अब तो फीक बुझाय।
सतगुरु ने सब भेद बतायो तन मन गयो जुड़ाय।
वृथा जवानी जात पिया बिन ठग रहे घात लगाय।
धर्म्म जाय तो पिया त्यागि दें ठौर कहाँ फिरि पाय।
पतिव्रता ह्वै लाज गँवावैं कुल धब्बा लगि जाय।
कहै धरामा पहुँचै सो जो नाम के रँग रँगि जाय।६।

२३० ।। श्री धनाका माई लोहारिन जी ।।

कजरीः-चेतो नैहर बसर भला कैसे।
चढ़ी जवानी बड़ी दिवानी रोको इसका असर भला कैसे।
डाकू चहुँ दिशि घात में ठाढ़े काढ़ो उनकी कसर भला कैसे।
मझवानी सतगुरु बिन बालम फेरै तुम पर नज़र भला कैसे।४।

२३१ ।। श्री फुलेसरि माई मालिनि जी ।।

कजरीः- चेतो नैहर गुजारा न होगा।
आय जवानी गइ मद माती लूटैं चोर सँभारा न होगा।
केहि विधि बचि ससुरे को जैहौ अब तो ब्याह दुबारा न होगा।
अपनावैं सैंया तुम्हैं कैसे जब तक गुरु का इशारा न होगा।४।

२३२ ।। श्री जय कुंवारा माई चमारिनि जी ।।

पदः- कमाने हित जगत आये बताओ क्या कमाया है।
संघ में चोरों के पड़कर कोष अपना लुटाया है।
विमुख पितु मातु से होकर दाग़ कुल में लगाया है।
करो सतगुरु भजो हरि को सखुन कहि हम चेताया है।४।

२३३ ।। श्री नगेसरी माई बढ़इनि जी ।।

रेखताः- कदम धर दस्त नीरज सम चांद चौदस के सा मुख है।
जिन्हैं कहते हैं मन मोहन लखौ कैसा अजब सुख है।
देव मुनि सब के जीवन धन बिना देखे दुखै दुख है।
सदा भक्तों के बश रहते लखा करते कि क्या रुख है।४।

२३४ ।। श्री रम क्वारा माई पासिन जी ।।

पदः- चेतो गोरी सुनो सब मोरी।

नैहर में अब गुजर होय नहिं ठगवा लें धन छोरी।

या से सतगुरु करि गहि मारग चलिये पति की ओरी।

हर दम ससुरे का सुख लूटैं कौन करै फिरि चोरी।

राम क्वारा कहैं जियत लखैं जो सो भ्रम भाड़ा फोरी।

नाहीं तो फिरि लोटै घूमैं ज्यों कीचड़ में सोरी।६।

२३५ ।। श्री सम क्वारा माई कुम्हारिन जी ।।

पदः- चेतो बहिनो भजो सियवर को।

जग पितु मातु देव मुनि कहते जिनसे और सुघर को।

सब को असन वसन हैं देते तिनसे क्यों तुम फरको।

कब तक जग में रहौ बताओ त्यागि के अपने घर को।

चारि दिना की यह जिंदगानी त्यागों झूठे जर को।

सम क्वारा कहैं मान वचन मम करि सतगुरु चट सरको।६।

२३६ ।। श्री सुखाना माई भुरजिन जी ।।

पदः- चलि है साटी भजन बिन तन पर।

अब हीं तो जग जाल में भूले पाप ओहार लगा है मन पर।

नेकी बदी संघ में जावै काहे फूले फिरत हौ धन पर।

छिन भंगुर तन क्या चिकनावत धोका खैहौ चढ़यौ नहिं रन पर।

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो हर दम श्याम लखौ अहि फन पर।

कहैं सुखाना गर नहिं मानौ तन तजि नर्क चलौ यम गन पर।६।

२३७ ।। श्री मखाना माई अहिरिन जी ।।

पदः- हरि सुमिरन बिन सुख नहिं पैहो।

अब हीं तो कछु ख्याल करत नाहिं आखिर में फिर पछितैहो।

यहां कमाय के बांधौ गठरी तब वहँ पर सुख से खैहो।

कहैं मखाना सतगुरु के बिन कैसे भला वहाँ जैहो।४।

२३८ ।। श्री जुड़ाना माई मुराइनि जी ।।

पदः- तन मन प्रेम से हरि गुन गावो।
देखौ श्याम संग संग डोलै जियत नैन फल पावौ।
दुर्लभ तन को पाय हाय क्यों विषयन साथ गंवावो।
सतगुरु करौ भेद सब जानौ असुरन फ़ौज भगावो।
लय धुनि ध्यान प्रकाश मिलै जब निज घर बैठक पावो।
कहैं जुड़ाना अजर अमर ह्वै फेरि न जग में आवो।६।

२३९ ।। श्री सुंदारा माई भंगिन जी ।।

पदः- सतगुरु करो मन को गहो यह तो बड़ा बेशर्म है।
दीनता औ शान्ति से चुपकारिये तो नर्म है।
धमकी अगर तुम देवगे तो फिर न मानै गर्म है।
इसके बिना काबू भये होता नहीं कोई धर्म्म है।
क्रोध करना साधकों के दिल प करता वर्म्म है।
कहती सुँदारा चेतिये दिन चारि का यह चर्म है।६।

२४० ।। श्री इँदारा माई वारिन जी ।।

पदः- मन कूकुर भागत तजि मढ़िया।
सकल पदारथ पास धरे हैं मति वाकी गइ कोढ़िया।
सतगुरु मिलै मार्ग तब जानै ह्वै जावै फिरि बढ़िया।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय भरै तन लढ़िया।४।
सन्मुख राम श्याम नारायण लखै सिंहासन चढ़िया।
सुर मुनि आय देंय नित दर्शन पग धोवै लै अढ़िया।
कहैं इंदरा तन मन प्रेम से यह पद गुनि जो पढ़िया।
वाके हिये कपार कि उधरैं मिलै नाम की लोढ़िया।८।

२४१ ।। श्री लखाना माई कलवारिन जी ।।

पदः- भक्त होना बड़ा है कठिन मान लो।
भक्त भगवन्त में कोइ अन्तर नहीं।
सब में समता रहै द्वैत हो ला पता।
जैसे हरि नाम सम कोइ मन्तर नहीं।

नाम का ही नशा हर समय पीजिये।
धन्य नर तन के सम कोई जन्तर नही।६।

ब्रह्मचारी विरागी उदासी वही।
लागि सकता उसे कोइ तन्तर नहीं।
प्रेम तन मन लगा सेवा सतगुरु की कर।
बिना उनके मिलैगी यह सन्तर नहीं।
रोक सकता तुम्हें कौन हो बे धड़क।
साफ़ मैदान है कांटे कंकर नहीं।१२।

२४२ ।। श्री जुगधी माई कहारिन जी ।।

पदः- सखियों चलो अमीरस चाखैं गगन से टपकत बारह मास।
सतगुरु करो गहौ अब मारग छोड़ौ जग की आस।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन हो खास।
अनहद घट में बाजत हरदम सुनि मन होय हुलास।४।

अलबेली जोड़ी क्या बाँकी निरखत हो दुख नाश।
मुरली अधर धरे संग में प्रिय सखा सखी बहु पास।
सन्मुख रहे न अन्तर होवै पूरण सुख की रास।
सुर मुनि आय के दर्शन देवैं अन्त अचल पुर वास।८।

२४३ ।। श्री गुर्गी माई गोड़िनि जी ।।

पदः- सखियों तुम्हरा ठेकाना ससुरारि, नैहरवा एक दिन त्यागै क परी।
सतगुरु करि खुब लेहु निहारि, नहीं तो पिया कैसे वरी।
लीजै शान्ति दीनता धारि, गहौ एक नाम लरी।
लय ध्यान प्रकाश में जाय, कर्म्म दोउ जारै क परी।
तब कोई न सकै निहारि, जाय हो पास खरी।
सोइ कुलवन्तिन हुशियार, नारि सुकुमारि हरी।६।

२४४ ।। श्री छेदुई माई कुर्मिन जी ।।

पदः- मन महरा अब डोलिया को कसुरे,
सैंया मिलन हित चलिहौं मैं ससुरे।

नैहर में अब गुजर नहीं है,

चढ़ली जवानी मैका घेरे पांच पशुरे।

जखमी होय पास किमि पहुँचै,

लागि जाय कुल में अपयशु रे।

सतगुरु ने सब भेद बतायो,

चलु सब तजि निज घर में बसुरे।४।

२४५ ।। श्री फुलिया माई सोनारिन जी ।।

पदः- छोड़ो चोरी भजन में लागौ।

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानौ तन मन प्रेम में पागौ।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि जानि जियत जग जागौ।

सीता राम राधिका मोहन की छवि सन्मुख तागौ।४।

हर यश सुनौ देव मुनि बरनैं उनसे कछु मति मांगौ।

अनहद बाजा हरदम बाजै नाचे रागिनि रागौ।

गान सुनावैं भाव बतावैं नित प्रति परै न नागौ।

फूल कली कहैं अन्त त्यागि तन अचल धाम को भागौ।८।

२४६ ।। श्री हिरिया माई ठठेरिन जी ।।

पदः- तौलत घाटि बरक्कत भागी।

यहाँ वहाँ नहिं मिलै ठेकाना नर्क में चलिहैं सांगी।

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानौ काहे बनै हो बागी।

यह तन दुस्तर फेरि न पैहौ जाहि बनायो दागी।४।

ध्यान प्रकाश नाम धुनि जानो लय मे जाओ पागी।

सन्मुख कमला विष्णु को निरखौ प्रगटै ब्रह्म कि आगी।

कर्म शुभाशुभ का हत होवै तब होओ अनुरागी।

हिरिया कहैं अन्त हरि के पुर पहुँचि जाव तन त्यागी।८।

२४७ ।। श्री शान्ती माई वनिनि जी ।।

पदः- तन मन मेरा लुभाया घनश्याम तेरी बँसिया।

ऐसा कोई न पाया तुम तो बड़े हो रसिया।

एकी दफे सुनाया गले डालि प्रेम फँसिया।
करि देव मुझ पै दाया छूटै जगत कि फसिया।४।

यह वर मिलै मन भाया सुन लेव वृज के बसिया।
दिन चारि की है काया आवै न आवै सँसिया।
तेरी कठिन है माया कर लीन्हे द्वैत हँसिया।
चाहौ जिसे बचाओ लागै न नैकौ लसिया।८।

२४८ ।। श्री दुगाना माई विसातिन जी ।।

पदः- सँवलिया को तब हर समय देखना है।
जब दुविधा को तन मन से गहि फेंकना है।
श्री मुरशिद की बानी को लै टेकना है।
धुनी ध्यान लय नूर में ठेकना है।
लिखा विधि का तब तो गुनो छेकना है।
ये अनुभव मुनी देव कह मेखना है।६।

सुना भी पढ़ा भी कि रँग रेख ना है।
यह बातें हैं लय की सबी में सना है।
गरीबों के खातिर यह कूचा बना है।
चलै जांय बैठे फरक नेक ना है।
झुकैं जे नहीं उनको जाना मना है।
दुगाना कहैं आहिनी का चना है।१२।

(२)

सुरति कि मीसी शब्द क सुरमा।
जा को मिलै खाय सो खुरमा।१।
मुरशिद करि होवै ज्यों नरमा।
कहैं दुगाना बैठै घर मां।२।

२४९ ।। श्री रोज़ाना माई मनिहारिन जी ।।

पदः- लीजै राम नाम की गोली।
एक रंगी पच रंगी प्यारी बहु रँगी अनमोली।
सतगुरु से खेलन विधि जानौ छूटै भव की होली।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय ते भरि लीजै झोली।४।

देखौ राम श्याम सन्मुख में हर दम सकै न डोली।
अनहद सुनौ देव मुनि आवैं बोलैं मीठी बोली।
नाहीं तो पछिताव अन्त में बातैं छाँटत पोली।
कहैं रोजाना चेत करौ अब चारि दिना की चोली।८।

२५० ।। श्री जीतनि माई दर्जिन जी ।।

पदः- अँगरेजी अंगरेज से भाखौ पंजाबी पंजाब से।
हिन्दी में तो यहाँ पै भाखौ सत्य कहौं मैं आप से।
व्योंतत ढील कतरि फिरि सीवत पूरा परे न नाप से।
चारि दिना की यह जिंदगानी धन कमात हैं पाप से।
अन्त समय जम नर्क जाय लै मूंदै लोह के टाप से।५।

चारौं ओर से सूजन कोचैं तड़ फड़ात तब साँव से।
सतगुरु करि जब नाम गहै तब छूटै भव के ताप से।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय मिलि लें माई बाप से।
जीतनि कहैं जीति ले बाजी राम नाम की छाप से।
नाहीं तो चकरात फिरैंगे दारुण दुख की दाप से।१०।

२५१ ।। श्री रगुरी माई हलवाइन जी ।।

पदः- सखियों केहि विधि पहुँचों पास पिया तव दूरि रहैं।
तन धर्म हो सत्या नास, आय जब चोर गहैं।
तब केहि की लेहौ आस वहाँ तुम्हैं कौन चहै।
नैहर से होहु निराश वचन हम सत्य कहैं।
सतगुरु करि मेटौ त्रास चलौ पिय पास रहैं।
जहँ रवि शशि वारि बतास कबहुँ नहीं गभ्य लहै।६।

२५२ ।। श्री यदुरी माई कोरिन जी ।।

पदः- सखियों केहि विधि पहुँचब होय पिया तव दूरि बसैं।
तन मन को पीटत दोय चोर चहुँ ओर हँसै।
सतगुरु करि दुख डारौ धोय चलौ पिय पास लसैं।
सब जहँ के तहँ रहै रोय फेरि हम काहे क खसैं।

लेवै शान्ति दीनता टोय उसे फिरि कौन गसै।
जिन कर्म धर्म दियो खोय वही जग जाल फंसै।६।

२५३ ।। श्री मेड़ाना माई ललाइन जी ।।

पदः- किन किन पिंजड़ों में पले फिरे सैं शारद शेष न गाय सकैं।
कहती है मेड़ाना तब हम फिर किस बुध्दि से तुम्हैं बताय सकैं।
सतगुरु करिकै अब नाम जपौ वै भर्म औ शर्म मिटाय सकैं।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सिय राम सामने छाय सकैं।४।

अनहद बाजन की हद्द नहीं धुनि सुनि तन मन हर्षाय सकैं।
सुर मुनि आवैं हरि यश गावैं औ अर्थ भि कछु समुझाय सकैं।
जे मानि वचन लेवैं मेरा गुनि सूरति शब्द लगाय सकैं।
ते जियतै में निर्भय ह्वै कर तन त्यागि अचल पुर जाय सकैं।८।

२५४ ।। श्री गनेशा माई भाटिन जी ।।

पदः- प्रतिष्ठा सूकरी विष्टा देव मुनि जब बताया है।
वाह औ स्वाह में पड़कर उसे फिर क्यों भुलाया है।
बुजुर्गों की तजी बानी मसी मुख में लगाया है।
पढ़ा क्या है सुना क्या है गुना क्या है थुकाया है।
समय औ तन मिला अनमोल हा विरथा गँवाया है।
अन्त होने के पहिले ही नर्क में घर बनाया है।६।

करै सतगुरु भजै हरि को वही सच्चा कहाया है।
वही परकाश धुनि औ ध्यान लय का सुख उठाया है।
वही सुर मुनि के संग खेलैं वही विधि गति मिटाया है।
वही सब लोक लखि आवै वही साधू कहाया है।
वही निर्भय रहै हर दम रूप सन्मुख में छाया है।
गनेशा कह वही भव से दूसरों को छोड़ाया है।१२।

शेरः- मान अपमान का ख्याल करना बुरा।
इस से आखिर चलैगा गले पर छुरा।१।
इसको समझो है आमिष औ सीसा सुरा।
गनेशा कहैं गर फँसा सो ढुरा।२।

२५५ ।। श्री खौरी माई भाँड़िन जी ।।

पदः- शरन होना कठिन जानो सुनै श्रोता कहैं वक्ता।
प्राण का लोभ जो त्यागै वही तो शरण हो सक्ता।
काम शुभ आ पड़ै कोई करै फिरि नहिं खड़ा तक्ता।
कृपा सतगुरु कि हो उस पर लोक सब पास ही लख्ता।४।

ध्यान धुनि नूर लय पावै रूप सन्मुख में लख पड़ता।
देव मुनि आय दें दर्शन सुनै अनहद अमी चखता।
दृष्टि सम जाय निर्भय ह्वै इधर औ उधर नहिं तक्ता।
अन्त तन छोड़ि कह खौरी कभी जग में नहीं पड़ता।८।

शेरः- अजब कुदरत खुदा की है, करो सतगुरु तो कछु जानो।
ये रीती तो सदा की है, कहै खौरी वचन मानो।।

२५६ ।। श्री अलवदी माई वेहनिन जी ।।

पदः- धुनिये राम नाम दिन रतिया।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानौ बाजै हर दम तँतिया।
सिया राम प्रिय श्याम हमेशा सन्मुख सखा औ सखिया।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै भूलि जाय सब बतिया।
सुर मुनि दर्शैं अनहद बाजैं सुनि सुनि तन मन लसिया।
कुण्डलिनी माता जगि जावै षट चक्कर सुधै हँसिया।६।

सातौं कमल खिलैं तब जानौ उड़ै विचित्र सुवसिया।
कर्म शुभाशुभ का हत होवै प्रगटै ब्रह्म कि अगिया।
तन मन प्रेम से जो कोइ ध्यावै सबै पदारथ पसिया।
नाहीं तो फिरि अन्त नर्क में शिर धुनि रोवै कसिया।
नेकौ दया करैं नहिं जम गण तूरैं सब तन नसिया।
या से मानौ कहा हमारा विनय करैं अलवदिया।१२।

२५७ ।। श्री नारायण दास जी ।।

चौपाईः- ठाकुर मन्दिर दिया लगावा। अन्त समय हरि पुर हम पावा।
कहैं नारायण दास पुकारी। यह सेवा फल लीन्ह निहारी।२।

२५८ ।। श्री परेवा माई खटकिन जी ।।

पदः- चाखौ भाँति भाँति की मेवा।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो तब पावो कछु भेवा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि दर्शें बहु मुनि देवा।
रमा विष्णु सिय राम श्याम प्रिय हर दम सन्मुख लेवा।४।

अनहद सुनो पिओ नित अमृत मेटौं कर्म की छेवा।
सूरति शब्द क मारग बहिनो सत्य सत्य भव खेवा।
युग युग जियो मरो नहिं जन्मौ करती विनय परेवा।
जो न गुनौ तो भुनौ नर्क में छोड़ि के कुल की टेवा।८।

२५९ ।। श्री झुकावन शाह जी ।।

पदः- पावन बने अपावन घूमत, बने अपावन पावन।
धनि करतार आप की माया, कहते शाह झुकावन।२।

२६० ।। श्री फुलवसिया माई जोशिन जी ।।

पदः- नौबत हर दम रहे बजाय पाप की ढोल गले में डारे।
काम क्रोध मद लोभ मोह को नेकौ नहीं सँभारे।
तन मन कैसे काबू होवै अन्त नर्क जाँय पारे।
महा कष्ट तहँ वरण सकै को शारद फणपति हारे।
सतगुरु करै भजन विधि जानै तब हो जीव सुखारे।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख रूप निहारे।६।

सुर मुनि सँग भनै हरि को यश बोलै जय जय कारे।
अनहद बाजन की धुनि सुनि सुनि मस्त होंय मन मारे।
सूरति शब्द की जाप है अजपा जानत कोइ कोइ प्यारे।
अगणित जन्म कि होय कमाई सो प्राणी उर धारे।
फुलवसिया कह धीरे धीरे होत कार्य्य हैं सारे।
शान्ति दीनता को गहि लीजै जो कुल रीति तुम्हारे।१२।

२६१ ।। श्री धमाका माई जगइन जी ।।

कजरीः- हरवा पाप क गले में डारे घूमत गलिन गलिन अठिलात।
जहँ दुर्गन्धि मिलै सूँघन को तहाँ पै चट ठहरात।

चकर मकर सब ओर निहारि के फेरि लगावै घात।
करै कमाई तन मन भाई अन्त नर्क में जात।
छिन सुख हेत सजा जो पावै सो नहिं बरन सेरात।
सतगुरु करि गर सुमिरै हरि को सबै पाप कटि जात।६।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय में चलि जावैं मात।
अनहद सुनै देव मुनि दर्शें रहि रहि पुलकै गात।
सिया राम की झांकी बाँकी सन्मुख में ठहरात।
जियतै मुक्ति भक्ति हों करतल अन्त अचल पुर जात।
कहैं धमाका जगइन जागो काहे धोखा खात।
निज कुल की मर्याद त्यागि हा खरन कि सहते लात।१२।

२६२ ।। श्री जगदम्बा वख्श सिंह जी ।।

(ग्राम धनुहाँ)

दोहाः- नारायण के दर्श भे, अन्त समय मोहिं जान।
तन तजि सिंहासन चढ़ेन, हरि पुर कीन पयान।
कोटि वर्ष तहँ पर बसैं, श्री प्रभु कह्यौ सुनाय।
द्विज कुल में फिर जन्म लै, भजन करै मन लाय।४।

मरै वासना सबै जब, तब साकेत को जाय।
नाहीं तो जन्मै मरै, सत्य भेद हम पाय।
कह जगदम्बा बख्श मोहिं, सब प्रकार सुख मान।
वरनन केहि विधि करि सकौं, धरि कै देखौ ध्यान।८।

२६३ ।। श्री चंदुली माई भँडारिन जी ।।

पदः- जे गुरु में तन मन मिला चुके हैं, वे जियतै सब सुख उठा चुके हैं।
प्रकाश धुनि ध्यान पा चुके हैं, औ लय में सुध बुध भुला चुके हैं।
स्वरूप सन्मुख में छा चुके हैं, सुर मुनि के संग नित बतला चुके हैं।
कुण्डलिनी शक्ती जगा चुके हैं, सब लोक फेरी लगा चुके हैं।
षट चक्र बेधि के घुमा चुके हैं, कमल भि सातों खिला चुके हैं।
लिखा भि विधि का मिटा चुके हैं, तन त्यागि निज पुर को जा चुके हैं।६।

२६४ ।। श्री खोजनी माई तर्पतिहारिन जी ।।

पदः- विनय श्री मातु माया से करौ मुझ को नचाना ना।
भजन हित है मिला नर तन दया हो अब रुलाना ना।
जगत के दुख औ सुख में अब कभी नेकौ बझाना ना।
सदा हरिनाम सुमिरन में रहूँ पीछे हटाना ना।
दीनता शान्ति आने दो द्वैत परदा लगाना ना।५।

कभी पर नाजिनी के संग मेरे दिल को फंसाना ना।
सदा निर्वैर औ निर्भय मुझे बागी बनाना ना।
वसन भोजन भरे को धन और ज्यादा दिलाना ना।
ध्यान धुनि नूर लय पाऊँ मन को तन से भगाना ना।
लखूँ सिय राम को सन्मुख शीश नीचे झुकाना ना।१०।

देव मुनि संग हरि यश को सुनौ भाखौ हँसाना ना।
कमल औ चक्र कुण्डलिनी जगै गड़ बड़ मचाना ना।
सदा अनहद कि धुनि प्यारी सुनौ भृकुटी फिराना ना।
लोक सब घूमि लखि आऊँ रास्ते में गिराना ना।
रहै जब तक जगत में तन विमुख गुरु से कराना ना।
अन्त तन त्यागि लूँ हरि पुर गर्भ में फिर झुलाना ना।१६।

२६५ ।। श्री श्याम जनी गंगा पुत्रिन जी ।।

पदः- अपने तन से किसी को दुःख देना ना मुनासिब है ।
किसी के धन को उस से ठग के लेना नामुनासिब है।
पराई नाजिनी का सँग करना ना मुनासिब है।
अन्न रज तम क सेवन भी समझ लो नामुनासिब है।४।

तन को सुकुमार कर रखना मानिये ना मुनासिब है।
भजन बिन जिन्दगी खोना जान लो ना मुनासिब है।
बिना सतगुरु शरन लीन्हे छूटना ना मुनासिब है।७।

२६६ ।। श्री झवुई माई भुँइहारिन जी ।।

पदः- बिना सतगुरु के सुमिरन विधि क मिलना गैर मुमकिन है।
ध्यान धुनि नूर लय में जाय पड़ना गैर मुमकिन है।

रूप का हर समय सन्मुख में लखना गैर मुमकिन है।
देव मुनि संग हरि यश का भि सुनना गैर मुमकिन है।४।
साज अनहद कि धुनि प्यारी भि सुनना गैर मुमकिन है।
प्रेम बिन तन में मन हर दम ठहरना गैर मुमकिन है।
अन्त तन तजि अचल पुर वास करना गैर मुमकिन है।७।

२६७ ।। श्री रुपाना माई कंकालिन जी ।।

पदः- छोड़ कर टण्ट औ घण्ट दुनिया के सब
कर के सतगुरु सदा नाम का जाप कर ।
ध्यान धुनि नूर लय में समाना पड़ै
फेरि आवो उतर ताप सब जाँय जर।
रूप सन्मुख रहै राम औ जानकी
राधिका श्याम श्री विष्णु गिरिजा औ हर।
देव मुनि दर्श दै कर के जय जय करैं
सत्य मानो वचन जाव जियतै में तर।४।

२६८ ।। श्री गुजिया माई लोनिन जी ।।

पदः- भजन बिन होइ हौ मरि के मुसरी।
सतगुरु करौ जपौ निशि बासर तब सुधरै तन गुदरी।
सन्मुख राधा माधौ सोहैं निरखि निरखि छवि हँसुरी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय बैठु घर घुसरी।४।
सुर मुनि के संग बैठक होवै कहु सुनु हरि को यशुरी।
अनहद बाजा घट में बाजै सब से प्यारी बँसुरी।
गुजिया कहै मिटै बिधि की गति तन मन प्रेम से लसुरी।
नाहीं तो फिरि अन्त नर्क में यमन के हाथ में फँसुरी।८।

२६९ ।। श्री महरजिया माई लोधिन जी ।।

पदः- भजन बिन होइ हौ मरि कै कुतिया।
सतगुरु करौ भजन विधि जानौ छूट जाय तब दुतिया।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर दम बोलैं तुतिया।
सीता राम सामने राजैं जो सब के बल बुतिया।४।

सुर मुनि आवैं हंसि बतलावैं कर्म होंय, आहुतिया।
अनहद सुनौ चलौ दरबारे हरि यश जहां बहुतिया।
युग औ वेद राग औ रागिनि औ तुम्बूरू कहुतिया।
महरजिया कहैं जियत लखै जो छूटै भव की छुतिया।८।

२७० ।। श्री रउवाँ कोल जी ।।

पदः- रउवाँ कह रम जाय जो, सतगुरु की गहि बानि।
सोई सांचा भक्त है, सत्य वचन लेव मानि।।

२७१ ।। श्री सउवाँ किरात जी ।।

दोहाः- सउवाँ कह सतगुरु करौ, समता आवै पास।
मानुष का तन पाइकै, क्यों हो सत्यानाश।।

२७२ ।। श्री वलिया भील जी ।।

दोहाः- वलिया कह बलि देव दै, तन मन को जब भाय।
सतगुरु के परताप से, सब करतल ह्वै जाय।।

२७३ ।। श्री जगनुवा भर्र जी ।।

दोहाः- कहै जगनुवा जागिये, जग में जीवन थोर।
सतगुरु बिन चढ़िहै नहीं, तन मन नाम क वोर।।

२७४ ।। श्री धधुवाँ वनमानुष जी ।।

दोहाः- धधुवाँ कह धन धाम सब, छूटै जाय न साथ।
या से सतगुरु करि भजौ, सबै पदारथ हाथ।।

२७५ ।। श्री यमुना राम गूजर जी ।।

दोहाः यमुना कह जग जाल से, निकसि जाय सो वीर।
सतगुरु से जो पायगो, तरकश धनु औ तीर।।

२७६।। श्री छवीले राम पंडा जी ।।

दोहाः- कहैं छवीले राम जेहि, सतगुरु दीन लखाय।
सो जग जाल से छूटि के, हरि ढिग बैठो जाय।।

२७७ ।। श्री राजकिशोरी माई जी ब्राह्मणी ।।

पदः- जय सिय राम जगत पितु माता, बसो हमारी आँखों में।
अधम उधारन दीनन छाता, बसो हमारी आँखों में।१।

जय प्रिय श्याम जगत पितु माता, बसो हमारी आँखों में।
अधम उधारन दीनन छाता, बसो हमारी आँखों में।२।

जय श्री विष्णु जगत पितु माता, बसो हमारी आँखों में।
अधम उधारन दीनन छाता, बसो हमारी आँखों में।३।

जै गिरिजा शिव जग पितु माता, बसो हमारी आँखों में।
अधम उधारन दीनन छाता, बसो हमारी आँखों में।४।

जय चतुरानन सृष्टि के करता, बसो हमारी आँखों में।
कर्म अनुसार दुःख सुख भरता, बसो हमारी आँखों में।५।

जै शारद विद्या बुधि सागर, बसो हमारी आँखों में।
रूप सिंगार छटा छवि आगर बसो हमारी आँखों में।६।

जय गण पति मुद मंगल स्वामी, बसो हमारी आँखों में।
वन्दौं चरण नमामि नमामी, बसो हमारी आँखों में।७।

जय सरस्वती रूप गुण खानी, बसो हमारी आँखों में।
हरि के भजन में तन मन सानी, बसो हमारी आँखों में।८।

जय षट मुख तारक संघारन, बसो हमारी आँखों में।
देवन के सब कष्ट निवारन, बसो हमारी आँखों में।९।

जय बजरंग भक्त भय टारन, बसो हमारी आँखों में।
तन मन राम सिया पर वारन, बसो हमारी आँखों में।१०।

जय भैरव काली के नन्दन, बसो हमारी आँखों में।
भक्तन का दुख करत निकन्दन, बसो हमारी आँखों में।११।

जय श्री वीर भद्र बलवाना, बसो हमारी आँखों में।
शिव गिरिजा के प्राण समाना, बसो हमारी आँखों में।१२।

जै दुर्गा दारिद दुख हरनी, बसो हमारी आँखों में।
असुर मार भक्तन सुख करनी, बसो हमारी आँखों में।१३।

जय काली कराल दुख टारनि, बसो हमारी आँखों में।
काल न होय ताहि संघारनि, बसो हमारी आँखों में।१४।

जय श्री भरत भक्त तपराशी, बसो हमारी आँखों में।
श्यामल गात चमक चपला सी, बसो हमारी आँखों में।१५।

जय श्री लखन राम सिय प्यारे, बसो हमारी आँखों में।
सेवा हेत जगत तन धारे, बसो हमारी आँखों में।१६।

जय शत्रुहन अतुल बल धारी, बसो हमारी आँखों में।
लवणासुर छिन माँहि सँघारी, बसो हमारी आँखों में।१७।

जय श्री शेष शीश महि लीन्हे, बसो हमारी आँखों में।
राम नाम में तन मन दीन्हे, बसो हमारी आँखों में।१८।

जय श्री गरुड़ प्रभू के पांयक, बसो हमारी आँखों में।
सब प्रकार भक्तन सुख दायक, बसो हमारी आँखों में।१९।

जय श्री काक राम यश रसिया, बसो हमारी आँखों में।
अजर अमर गिरि नील पै बसिया, बसो हमारी आँखों में।२०।

जय श्री लोमश अवध के बासी, बसो हमारी आँखों में।
परमानन्द सदा अविनाशी, बसो हमारी आँखों में।२१।

जय सनकादिक चारों भाई, बसो हमारी आँखों में।
पांच वर्ष के रहत सदाई, बसो हमारी आँखों में।२२।

जय नव योगेश्वर नव नाथा, बसो हमारी आँखों में।
जय शुकदेव राम गुण गाथा, बसो हमारी आँखों में।२३।

जय नारद हरि सुयश भनैया, बसो हमारी आँखों में।
भक्त अभक्तन को फरियैया, बसो हमारी आँखों में।२४।

जै श्री शची सुरेश कृपाला, बसो हमारी आँखों में।
जल दै जीवन करत निहाला, बसो हमारी आँखों में।२५।

जय वशिष्ठ रघुकुल के गुरुवर, बसो हमारी आँखों में।
सुर मुनि मानत सब नारी नर, बसो हमारी आँखों में।२६।

जय कुबेर धन बाँटन हारे, बसो हमारी आँखों में।
आज्ञा हरि की उर में धारे, बसो हमारी आँखों में।२७।

जय श्री चक्र अभक्त नशावन, बसो हमारी आँखों में।
सुर मुनि को नित सुख उपजावन, बसो हमारी आँखों में।२८।

जय कुम्भज सामुद्र सुखावन, बसो हमारी आँखों में।
राम नाम यश जग फैलावन, बसो हमारी आँखों में।२९।

जय बराह हिरणाक्ष विदारन, बसो हमारी आँखों में।
मही लाय जग काज सँवारन, बसो हमारी आँखों में।३०।

जय नृसिंह प्रह्लाद उबारन, बसो हमारी आँखों में।
हिरनाकश्यप कियो सँघारन, बसो हमारी आँखों में।३१।

जय बावन बलि के मन भावन, बसो हमारी आँखों में।
होत प्रभात दर्श दै आवन, बसो हमारी आँखों में।३२।

जय श्री कमठ मीन अवतारा, बसो हमारी आँखों में।
भक्तन हित सहते दुख सारा, बसो हमारी आँखों में।३३।

जय विराट तुम में जग सारा, बसो हमारी आँखों में।
महिमा भनत शेष हिय हारा, बसो हमारी आँखों में।३४।

जय श्री बालमीकि मुनि व्यासा, बसो हमारी आँखों में।
हरि यश जग बहु किह्यो प्रकाशा, बसो हमारी आँखों में।३५।

जय श्री तुलसी सूर बखानो, बसो हमारी आँखों में।
हरि कीरति जिन प्रेम से छानो, बसो हमारी आँखों में।३६।

जय सब सुर मुनि शक्ती माई, बसो हमारी आँखों में।
जय सब भक्त सुनो चित लाई, बसो हमारी आँखों में।३७।

जय भृगु जी द्विज कुल पुजवइया, बसो हमारी आँखों में।
विष्णु के उर में चरन मरैया, बसो हमारी आँखों में।३८।

जय बलराम श्याम के भ्राता, बसो हमारी आँखों में।
हल मूसल तव जग विख्याता, बसो हमारी आँखों में।३९।

जय श्री चन्द्र सूर्य सुखकारी, बसो हमारी आँखों में।
तिमिर भगाय करत उजियारी, बसो हमारी आँखों में।४०।

जय श्री अन्नपूरना माता, बसो हमारी आँखों में।
रिद्ध सिद्ध की आप हो दाता, बसो हमारी आँखों में।४१।

दया दृष्टि अब हम पर कीजै, बसो हमारी आँखों में।
गर्भ वास से छुट्टी दीजै, बसो हमारी आँखों में।४२।

२७८ ।। श्री केशरा वेलदार जी ।।

शेरः- आबे हयात वहदत कौसर अमी वही हैं।
पीयूष और अमृत कहते सुधा कहीं हैं।१।
धुनि ध्यान नूर लय बिन अमरत्व कुछ नहीं है।
सन्मुख में रूप छाया सुर मुनि क सँग सही है।२।
मुरशिद बिना यह कूचा मिलना बड़ा है मुश्किल।
मन चोर तन में हरदम रहते मचाये किल किल।३।

२७९ ।। श्री मकुवा कंजड़ जी ।।

पदः- हरि लछिमन मुनि की यज्ञ संभारयो सो यज्ञ संभारयो।

चौपाईः- राम लखन अति कोमल गाता। दशरथ अवध नरेश के ताता।
लै निषंग धनु शर दोउ भ्राता। मुनि संग चले मगन बतलाता।
कानन में जस कीन प्रवेशा। लख्यौ ताड़ुका को बड़ भेषा।
दौरी रघुनायक की ओरी। छिन में अहंकार प्रभु तोरी।
एकै शर मस्तक पर मारा। लागत निकसि गयो वहि पारा।५।
गिरी राक्षसी छूटे प्राना। दिव्य रूप ह्वै बैठि विमाना।
राम नाम सुमिरत चल दीन्ही। जाय विष्णु पुर आसन लीन्ही।
पहुँचि गये जब मुनि के धामा। ऋषि मुनि को तहँ कीन प्रणामा।
कह्यौ करौ मख तन मन लाई। हम रक्षक रहिहैं दोउ भाई।
वचन सुनत ऋषि मुनि हर्षाये। मख के सब पदार्थ लै आये।१०।

यज्ञ करन लागे सब ऋषि मुनि। घृत साकल्य को छोड़त पुनि पुनि।
राम लखन धनु शायक लीन्हें। निज निज पारि पै खड़े प्रवीने।
पश्चिम दिशि पूरब मुख कीन्हे। ठाढ़े रघुनायक मनु दीन्हे।
पूरव दिशि पश्चिम मुख ठाढ़े। लछिमन वीर वचन के गाढ़े।
चहुँ दिशि ऊपर दृष्टि चलावैं। देखैं कौन कहाँ ते आवैं।१५।

स्वाहा की धुनि व्यापी कानन। सुर निरखैं नभ ते चढ़ि यानन।
सुनि मारीच असुर लै धावा। रघुनायक के ढिग चलि आवा।
थोथा बाण राम एक फेंका। सौ योयन गा देर न नेका।
सात दिवस बीते तब चेता। बोला धनि धनि कृपा निकेता।
चला सुबाहु राम पर कैसे। नभ ते गाज गिरत है जैसे।२०।

अगिन बाण ते प्रभु तेहि मारा। लागत ही जरि कै भा छारा।
दिव्य शरीर पाय चढ़ि याना। चल्यौ कहत जय कृपा निधाना।
विष्णु धाम में पहुँच्यो जाई। आसन तहाँ मिल्यौ सुखदाई।
लखन राक्षस दल सब मारा। सुर मुनि कीन्ह्यौ जय जय कारा।
मारे लखन निशाचर जेते। गे विमान चढ़ि हरि पुर तेते।२५।

फूलमाल नभ ते बरसायो। सुर मुनि निज निज साज बजायो।
कछु दिन रहे तहाँ दोउ भाई। ऋषि मुनि के तन सुख उपजाई।
विश्वामित्र सुखी अति भयऊ। राम ब्रह्म कहँ विद्या दयऊ।
भोजन जल की रुचि नहिं जानो। बल अपार तन में भा मानो।
छवि सिंगार छटा की शोभा। बरनि सकै जग में अस को भा।३०।

सो विद्या प्रभु अवध में आई। भरथ लखन रिपुहनहिं बताई।
मकुवा कह मकान तन भाई। खोजै तेहि सब परै दिखाई।३२।

२८० ।। श्री पंचमा मंगता जी ।।

पदः- भजन बिन मंगिहौ घर घर भीख।
सतगुरु करौ जाप विधि जानौ मानौ मेरी सीख।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय अनुपम अमृत चीख।
नाहीं तो यम अन्त आय के मींजै जैसे लीख।४।

२८१ ।। श्री छोटू बेड़िया जी ।।

पदः- भजन बिन होइहौ मरि कै गोहिया।

सतगुरु करौ भजन विधि जानौ छोड़ौ तन मन वोहिया।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय जाव बनि लोहिया।

सन्मुख कमला विष्णु की झांकी हर दम निरखौं सोहिया।

अनहद सुनौ देव मुनि आवैं आशिष देवैं तोहिया।

छोटू कहैं त्यागि तन बैठो अचल धाम निर्मोहिया।६।

२८२ ।। श्री सेवका यानी खुटकड़ा जी ।।

पदः- भजन बिन व्यॉंवरि तन में परिहै।

अबहीं तो कछु ख्याल करत नहिं नर्क में चलि बहु हड़िहै।

तन में खूब बजार लगावै सौदा करि तब कढ़िहै।

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानिके तन मन को जे गढ़िहै।४।

ते जियतै धुनि ध्यान प्रकाश को पाय समाधि में चढ़िहै।

हरदम राधा माधौ सन्मुख निरखि निरखि मन लढ़िहै।

अनहद सुनै देव मुनि दर्शै तन तजि जग नहिं पढ़िहै।७।

२८३ ।। श्री कसिया वेलवार जी ।।

पदः- सिया राघौ सदा सन्मुख सोहैं।

सतगुरु से सुमिरन विधि जानिके सूरति शब्द में जब पोहै।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय अनहद बाजा मन मोहै।

कसिया कहै कसर सब छूटै सुर मुनि दर्शै मुख जोहै।४।

२८४ ।। श्री रूप सनातन जी का कीर्तन ।।

पदः- नमो राम सीता नमो राम सीता नमो राम सीता नमो नमो।

नमो कृष्ण राधे नमो कृष्ण राधे नमो कृष्ण राधे नमो नमो।

नमो विष्णु कमला नमो विष्णु कमला नमो विष्णु कमला नमो नमो।

नमो शम्भु गिरिजा नमो शम्भु गिरिजा नमो शम्भु गिरिजा नमो नमो।४।

श्री राम सीता श्री राम सीता श्री राम सीता नमो नमो।

श्री कृष्ण राधे श्री कृष्ण राधे श्री कृष्ण राधे नमो नमो।

श्री विष्णु कमला श्री विष्णु कमला श्री विष्णु कमला नमो नमो।
श्री शम्भु गिरिजा श्री शम्भु गिरिजा श्री शम्भु गिरिजा नमो नमो।८।

भजो राम सीता भजो राम सीता भजो राम सीता नमो नमो।
भजो कृष्ण राधे भजो कृष्ण राधे भजो कृष्ण राधे नमो नमो।
भजो विष्णु कमला भजो विष्णु कमला भजो विष्णु कमला नमो नमो।
भजो शम्भु गिरिजा भजो शम्भु गिरिजा भजो शम्भु गिरिजा नमो नमो।१२।

कहौ राम सीता कहौ राम सीता कहौ राम सीता नमो नमो।
कहौ कृष्ण राधे कहौ कृष्ण राधे कहौ कृष्ण राधे नमो नमो।
कहौ विष्णु कमला कहौ विष्णु कमला कहौ विष्णु कमला नमो नमो।
कहौ शम्भु गिरिजा कहौ शम्भु गिरिजा कहौ शम्भु गिरिजा नमो नमो।१६।

२८५ ।। श्री जगई व मधई जी का कीर्तन ।।

पदः- राम भगवान राम भगवान राम भगवान जी।
श्याम भगवान श्याम भगवान श्याम भगवान जी।
विष्णु भगवान विष्णु भगवान विष्णु भगवान जी।
शम्भु भगवान शम्भु भगवान शम्भु भगवान जी।
गरुड़ भगवान गरुड़ भगवान गरुड़ भगवान जी।५।

शेष भगवान शेष भगवान शेष भगवान जी।
नृसिंह भगवान नृसिंह भगवान नृसिंह भगवान जी।
शूकर भगवान शूकर भगवान शूकर भगवान जी।
कमठ भगवान कमठ भगवान कमठ भगवान जी।
मीन भगवान मीन भगवान मीन भगवान जी।१०।

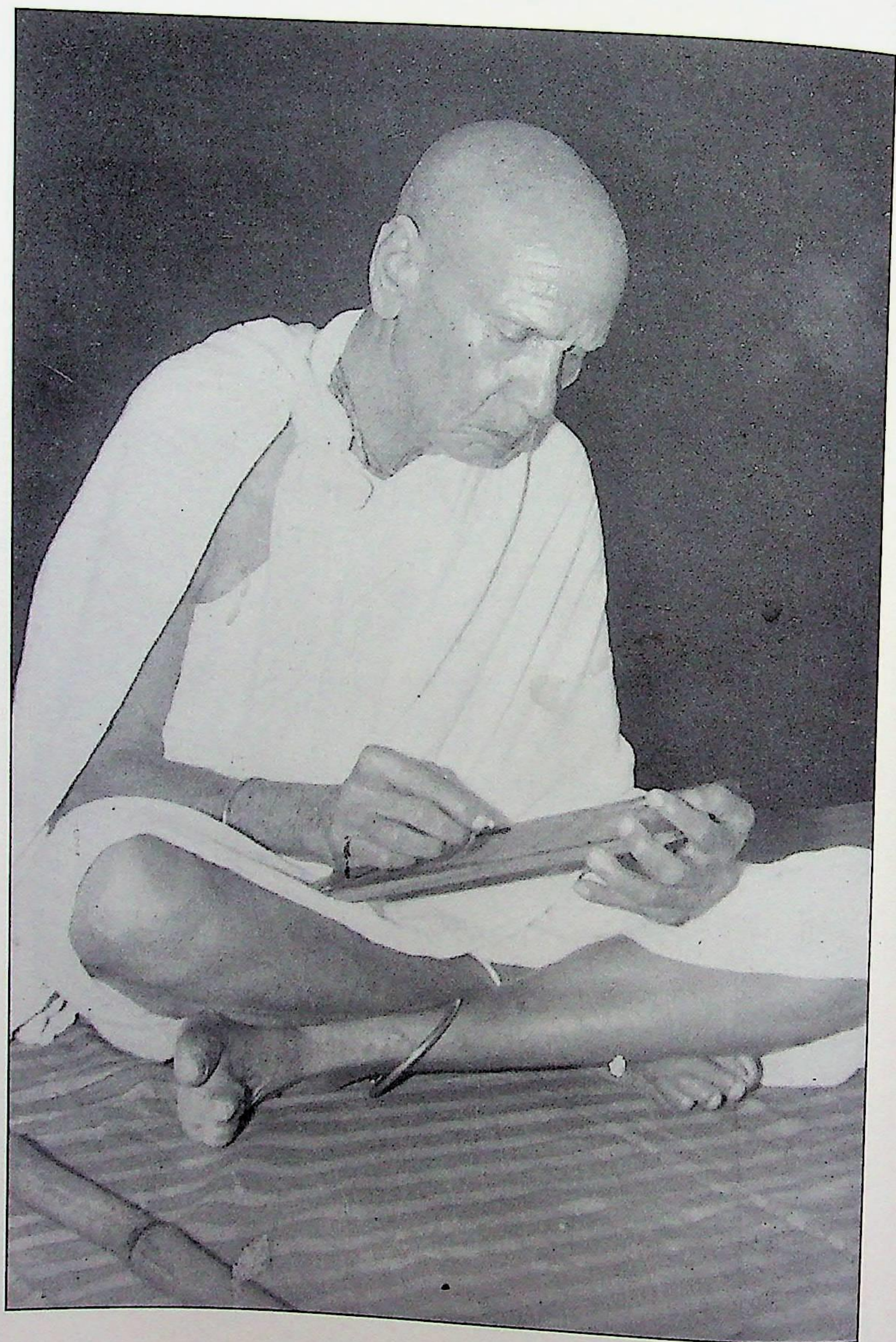
बावन भगवान बावन भगवान बावन भगवान जी।
बुद्ध भगवान बुद्ध भगवान बुद्ध भगवान जी।
गौर भगवान गौर भगवान गौर भगवान जी।
विराट भगवान विराट भगवान विराट भगवान जी।१४।

२८६ ।। श्री सार्वभौम जी का कीर्तन ।।

पदः- राम सीता कि जय राम सीता कि जय
राम सीता कि जय राम सीता कि जय।



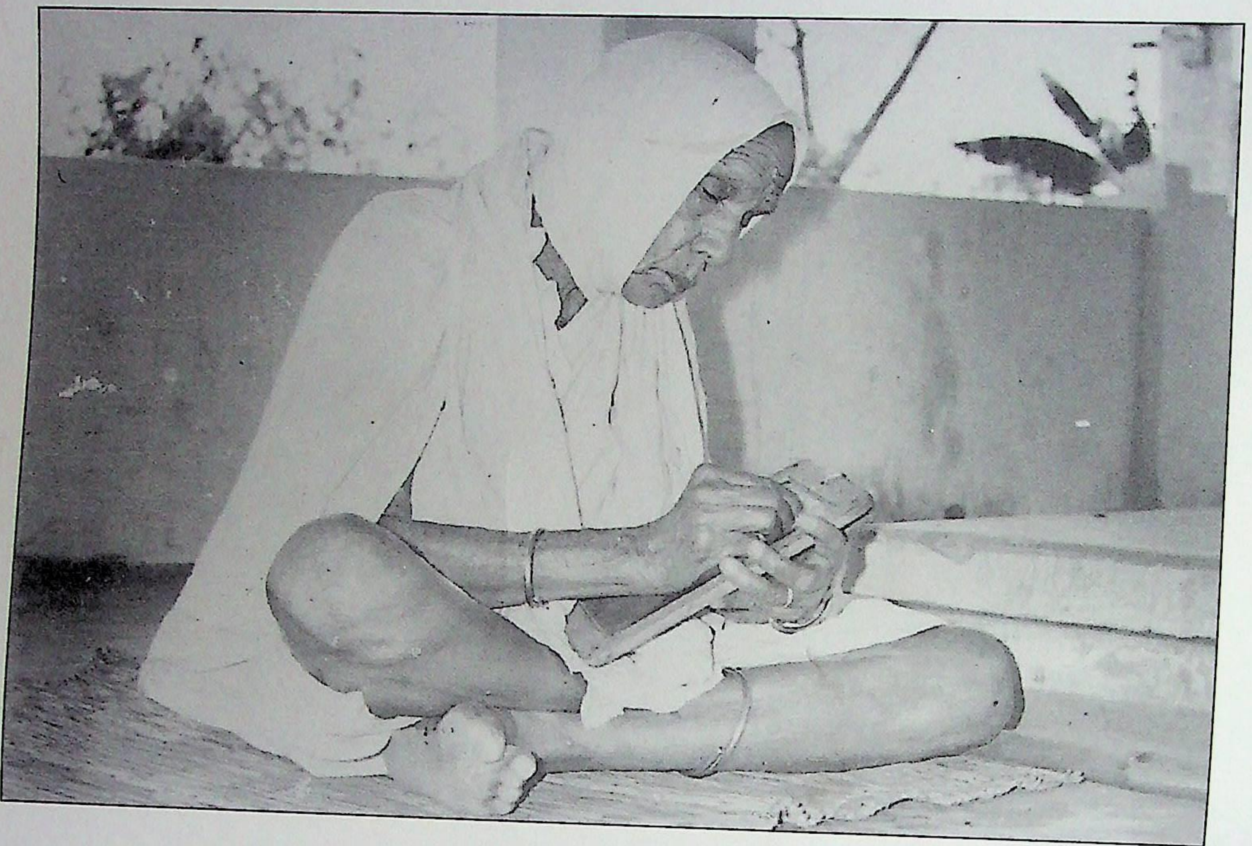
श्री गुरुदेव।



श्री गुरुदेव स्लेट पर लिखते हुये।



श्री गुरुदेव आश्रम में उपदेश देते हुये।



श्री गुरुदेव स्लेट पर उपदेश लिखते हुये।

कृष्ण राधे कि जय कृष्ण राधे कि जय

कृष्ण राधे कि जय कृष्ण राधे कि जय।

विष्णु कमला कि जय विष्णु कमला कि जय

विष्णु कमला कि जय विष्णु कमला कि जय।

शम्भु गिरिजा कि जय शम्भु गिरिजा कि जय

शम्भु गिरिजा कि जय शम्भु गिरिजा कि जय।

ब्रह्मा शारद कि जय ब्रह्मा शारद कि जय

ब्रह्मा शारद कि जय ब्रह्मा शारद कि जय।५।

गणपति सरस्वति कि जय गणपति सरस्वति कि जय

गणपति सरस्वति कि जय गणपति सरस्वति कि जय।

सीता राघो कि जय सीता राघो कि जय सीता राघो कि

जय सीता राघो कि जय।

राधा माधो कि जय राधा माधो कि जय राधा माधो कि

जय राधा माधो कि जय।

श्री विष्णु कि जय श्री विष्णु कि जय श्री विष्णु कि

जय श्री विष्णु कि जय।

उमा शंकर कि जय उमा शंकर कि जय

उमा शंकर कि जय उमा शंकर कि जय।

शारद ब्रह्मा कि जय शारद ब्रह्मा कि जय

शारद ब्रह्मा कि जय शारद ब्रह्मा कि जय।११।

२८७ ।। श्री औतार वर वार जी ।।

पदः- तजो जग जाल तन मन से पास मुरशिद से लो चल के।

ध्यान धुनि नूर लय जानो मिटा दो द्वैत को मल के।

सुनो अनहद चखौ अमृत गगन से बहि रहा गल के।

देव मुनि आय दें दर्शन मिलावै दस्त क्या हल के।

सदा प्रिय श्याम कि झाँकी रहै सन्मुख न मन छल के।

अन्त तन तजि चलो हरि पुर मौन बैठो मगन ढल के।६।

२८८ ।। श्री वोधा राम काँदू जी ।।

पदः- कुण्डलिनी जग जाय जब, षट चक्कर सुध जाँय।
कमल सातहूँ जांय खिलि, हर दम महक उड़ाय।
सुखमन होवै स्वांस जब, तब सब कारज होय।
चेतो मुरशिद को करो, काहे रहे हो सोय।
सूरति शब्द कि जाप का, भेद जाव जब जान।
तब मन की तस्वी फिरै, खुलैं चश्म औ कान।६।

२८९ ।। श्री वृजवासी अम्बर जी ।।

पदः- पछोरत भूसा घूमत यार।
पढ़ि सुनि लिखि धरि वयस गवाँइन मिली न नैकौ सार।
घोचे पू की शिक्षा देते बुद्धि ते हीन लवार।
ऐसे जीव न छुट्टी पावैं बार बार भव जार।
अन्त समय यम रेरं येरं मारैं दै फटकार।५।

सतगुरु करैं भेद तब जानै बनि जावैं मतवार।
ध्यान प्रकाश समाधि होय तब खुलै नाम धुनि तार।
हर दम राम सिया सन्मुख में निरखैं पलक न मार।
सुर मुनि आय आय शिर ऊपर कर फेरैं करि प्यार।
अनहद सुनैं मधुर धुनि बाजै कर्म होंय जरि छार।१०।
जगै नागिनी चक्र बेधि जांय फूलैं कमल बहार।
अमृत हर दम मिलै पियन को गगन ते जारी धार।
सूरति शब्द क मारग यह है जियत करैं भव पार।
तन मन जुरै बेर नहिं लागै सुखमन स्वांस को डार।
पांचौ चोर अजा तीनौ गुण आपै आप गे हार।१५।

बड़ी भागि से यह पद मिलता जानि न सकैं गँवार।
नर तन दुर्लभ पाय भजन कर अम्बर कहैं पुकार।१७।

२९० ।। श्री टिकाना माई कर्नाटकिन जी ।।

पदः- गुरु करके तन मन सुनो जोड़ना है।
भरम भाँड़ा तब तो उठा झोड़ना है।

असुर सब पकड़ उनका मुख मोड़ना है।
जब काबू में हों तब उन्हें छोड़ना है।४।

धुनी ध्यान परकाश लय रोड़ना है।
सिया राम सन्मुख सदा ओड़ना है।
टिकाना कहैं ख्याल सब तोड़ना है।
अलग तन से ह्वै हरि के पुर दौड़ना है।८।

२९१ ।। श्री मेंहदी हुसुन जी ।।

पदः- विनय कलिराज से करिये आप चाहैं तो तरि जाऊँ।
विकट दल आप का जग में रोक लीजै तो बिलगाऊँ।
देव मुनि आय दें दरशन विहँसि नित संग बतलाऊँ।
नागिनी को जगा करके घूम सब लोक लखि आऊँ।४।

चक्र षट बेधि चालू कर कमल सातों को उलटाऊँ।
सुनौं अनहद की धुनि प्यारी विमल श्री हरि क यश गाऊँ।
करूँ सतगुरु मिलै मारग पास ही अपना घर पाऊँ।७।

२९२ ।। श्री वेनी कलार जी ।।

पदः- ऋषि मुनि कि बानी है सही तन मन लगा के पढ़ना।
गर बांचता हो कोई तो ध्यान दे के सुनना।
फिर जाय कर अकेले चुप बैठ उसको गुनना।
जो वचन शान्ति देवैं उन्हीं को यार चुनना।४।

मुरशिद से जान करके दिन रात नाम धुनना।
धुनि ध्यान नूर लय हो चोरन क छूटै घुरना।
प्रिय श्याम सामने हों मिटि जाय मन का उड़ना।
सुर मुनि से लेव आशिश कटि जाय गर्भ झुलना।८।

२९३ ।। श्री विरहिमा जी ।।

पदः- सुर मुनि वेद शास्त्र सब गावत राम नाम की महिमा।
मानुष का तन पाय भजो नित करता विनय विरहिमा।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय करि सतगुरु लखु केहिमा।
सन्मुख राम सिया रहैं हर दम रेफ़ बिन्दु गहु तेहिमा।४।

२९४ ।। श्री वाला दीन संग तराश जी ।।

पदः- तन में डाकू पांच हैं दोषी।
शुभ कारज में विघन लगावत मारत बर्छी चोखी।
मन को इन काबू करि लीन्हेव केहि विधि तेहि पर तोषी।
अधरम ही ये भोजन करते भरत न इनकी कोषी।४।
सतगुरु देव मिलाय श्री हरि पकरि इन्हैं हम जोखी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय में सुधि बुधि को भोखी।
हर दम राम जानकी सन्मुख तब तो हो सन्तोषी।
वालादीन कहैं जियतै में मिटि जावै सब धोखी।८।

२९५ ।। श्री अला बकस सीदी जी ।।

पदः- जिन जिन योनिन में आये तुम तहँ रक्षा दीन दयाल करी।
अब तुम चोरन के संग में पड़ि क्यों फूले घूमत छोड़ि हरी।
बाला पन खेल में बीति गयो तरुणाई तिया के संग टरी।
वृद्धा पन में गर चेत करौ सब माफ़ होय पाओ डिगरी।४।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानौ जियतै ह्वै जाओ यार बरी।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सन्मुख प्रिय श्याम कि जोड़ी खड़ी।
सुर मुनि दर्शैं हरि यश वर्षैं तन मन में धुनी अनहद कि भरी।
शुभ अशुभ जरैं विधि लेख टरै लखि दूरिहि ते यम काल डरी।८।

२९६ ।। श्री परागी कुचवँधिया जी ।।

पदः- जान विधि सतगुरु से जप की मन क माला फेर लो।
ध्यान धुनि परकाश लय हो रूप सन्मुख हेर लो।
देव मुनि दर्शैं सुनो अनहद असुर गहि पेर लो।
जंग जियतै में फ़तेह करि कोट अपना घेर लो।
फेरि डर किसका रहै तप धन क करि खुब ढेर लो।
कहता परागी शब्द पै सूरति को अपनी गेर लो।६।

२९७ ।। श्री बुक्का राय जी का कीर्तन ।।

पदः- राम सियनाथ सियनाथ सियनाथ हैं।
श्याम प्रियनाथ प्रियनाथ प्रियनाथ हैं।

विष्णु श्री नाथ श्री नाथ श्री नाथ हैं।
राम रघुनाथ रघुनाथ रघुनाथ हैं।
श्याम यदुनाथ यदुनाथ यदुनाथ हैं।
विष्णु जगनाथ जगनाथ जगनाथ हैं।६।

राम सियकन्त सियकन्त सियकन्त हैं।
श्याम प्रियकन्त प्रियकन्त प्रियकन्त हैं।
विष्णु श्रीकन्त श्रीकन्त श्रीकन्त हैं।
राम सिय प्राण सिय प्राण सिय प्राण हैं।
श्याम प्रिय प्राण प्रिय प्राण प्रिय प्राण हैं।
विष्णु श्री प्राण श्री प्राण श्री प्राण हैं।१२।

राम सरकार सरकार सरकार हैं।
श्याम सरकार सरकार सरकार हैं।
विष्णु सरकार सरकार सरकार हैं।
राम करतार करतार करतार हैं।
श्याम करतार करतार करतार हैं।
विष्णु करतार करतार करतार हैं।१८।

राम सुख सिन्धु सुख सिन्धु सुख सिन्धु हैं।
श्याम सुख सिन्धु सुख सिन्धु सुख सिन्धु हैं।
विष्णु सुख सिन्धु सुख सिन्धु सुख सिन्धु हैं।
राम गुण ग्राम गुण ग्राम गुण ग्राम हैं।
श्याम गुण ग्राम गुण ग्राम गुण ग्राम हैं।
विष्णु गुण ग्राम गुण ग्राम गुण ग्राम हैं।२४।

राम निष्काम निष्काम निष्काम हैं।
श्याम निष्काम निष्काम निष्काम हैं।
विष्णु निष्काम निष्काम निष्काम हैं।
राम जग जान जग जान जग जान हैं।
श्याम जग जान जग जान जग जान हैं।
विष्णु जग जान जग जान जग जान हैं।३०।

राम सर्वत्र सर्वत्र सर्वत्र हैं।
श्याम सर्वत्र सर्वत्र सर्वत्र हैं।
विष्णु सर्वत्र सर्वत्र सर्वत्र हैं।
राम अवतार अवतार अवतार हैं।
श्याम अवतार अवतार अवतार हैं।
विष्णु अवतार अवतार अवतार हैं।३६।

राम निर्लेप निर्लेप निर्लेप हैं।
श्याम निर्लेप निर्लेप निर्लेप हैं।
विष्णु निर्लेप निर्लेप निर्लेप हैं।
राम धुनि ध्यान धुनि ध्यान धुनि ध्यान हैं।
श्याम धुनि ध्यान धुनि ध्यान धुनि ध्यान हैं।
विष्णु धुनि ध्यान धुनि ध्यान धुनि ध्यान हैं।४२।

राम लय नूर लय नूर लय नूर हैं।
श्याम लय नूर लय नूर लय नूर हैं।
विष्णु लय नूर लय नूर लय नूर हैं।
राम सब वस्तु सब वस्तु सब वस्तु हैं।
श्याम सब वस्तु सब वस्तु सब वस्तु हैं।
विष्णु सब वस्तु सब वस्तु सब वस्तु हैं।४८।

२९८ ।। श्री भानु दास जी का कीर्तन ।।

पदः- सिय राम हरे प्रिय श्याम हरे रमा विष्णु हरे नर नारि कहौ।
सीता राघो हरे राधा माधो हरे श्री नारायण हरे नर नारि कहौ।
रघुनाथ हरे यदुनाथ हरे श्री नाथ हरे नर नारि कहौ।
श्री राम हरे श्री कृष्ण हरे श्री विष्णु हरे नर नारि कहौ।
राम श्याम हरे श्याम श्याम हरे विष्णु श्याम हरे नर नारि कहौ।
राम राम हरे कृष्ण कृष्ण हरे विष्णु विष्णु हरे नर नारि कहौ।६।

सीता नाथ हरे राधे नाथ हरे रमा नाथ हरे नर नारि कहौ।
सीता रमन हरे राधे रमन हरे लक्ष्मी रमन हरे नर नारि कहौ।
करुणा सिन्धु हरे दीन बन्धु हरे दया सिन्धु हरे नर नारि कहौ।
रामचन्द्र हरे कृष्ण चन्द्र हरे विष्णु चन्द्र हरे नर नारि कहौ।

धनुष धारी हरे मुरली धारी हरे चक्र धारी हरे नर नारि कहौ।
माखन चोर हरे दधि चोर हरे मही चोर हरे नर नारि कहौ।१२।

चीर चोर हरे चित चोर हरे बर जोर हरे नर नारि कहौ।
गिरिधारी हरे बनवारी हरे औ भिखारी हरे नर नारि कहौ।
नर सिंह हरे बाराह हरे श्री बावन हरे नर नारि कहौ।
श्री कच्छ हरे श्री मच्छ हरे श्री बौद्ध हरे नर नारि कहौ।
दशरथ लाल हरे वसुदेव लाल हरे नँद लाल हरे नर नारि कहौ।
कौशिल्या नन्दन हरे यशुदा नन्दन हरे देवकी नन्दन हरे नर नारि कहौ।१८।

गोपी कृष्ण हरे ग्वाल कृष्ण हरे जय जय कृष्ण हरे नर नारि कहौ।
आनन्द कन्द हरे ब्रह्मा नन्द हरे परमानन्द हरे नर नारि कहौ।
सुखधाम हरे गुण ग्राम हरे निष्काम हरे नर नारि कहौ।
राम ब्रह्म हरे कृष्ण ब्रह्म हरे विष्णु ब्रह्म हरे नर नारि कहौ।
सब में पूरण हरे सब से न्यारे हरे सर्वा धारे हरे नर नारि कहौ।
है सोई तरे जे ना बिसरे वसुयाम हरे नर नारि कहौ।२४।

गुरु देव भजौ महि देव भजौ सब के देव भजौ जग जाल तजौ।
उमा शम्भु भजौ शारद ब्रह्मा भजौ सरस्वति गणपति भजौ जग जाल तजौ।
हनुमत भैरव भजौ वीर भद्र भजौ श्री षट मुख भजौ जग जाल तजौ।
दुर्गा काली भजौ ज्वाला चण्डी भजौ गंगा यमुना भजौ जग जाल तजौ।
गोमा सरयू भजौ विमला तमसा भजौ सब तीर्थ भजौ जग जाल तजौ।
सब देव भजौ सब शक्ती भजौ सब ऋषि मुनि भजौ जग जाल तजौ।३०।

२९९ ।। श्री खोदा वख्श जी ।।

पदः- जानि सतगुरु से जियतै में जौन भवपार हो जाये।
वही औरौं कि नैया का खेवने हार हो जाये।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर विमल हरि के चरित गाये।
सुनै अनहद मधुर धुनि क्या विलग तन से न मन जाये।४।

एक रस हर समय रहता मधुर बानी से बतलाये।
देव मुनि आय दें दर्शन प्रेम करि उनसे लिपटाये।
सदा सिय राम राधे श्याम लक्ष्मी विष्णु लखि पाये।
त्यागि तन चढ़ि सिंहासन फिरि जाय निजपुर न जग आये।८।

३०० ।। श्री वैरम खां मोची जी ।।

पदः- चरन चुम्बन में सतगुरु के कसर जिसने नहीं रक्खा।
वही कौसर के प्याले को दीनता शान्ति से चक्खा।
समाधी नूर धुनि औ ध्यान सन्मुख रूप है लक्खा।
देव मुनि आय दें दर्शन विहँसि नित उनसे है भक्खा।
जगी नागिनि सुधे चक्कर खिले सब कमल के पक्खा।
सदा निर्वैर औ निर्भय कभी नेकौ नहीं मक्खा।६।

३०१ ।। श्री शुकरू शाह जी ।।

पदः- सनेमा और क्या ठेठर लखौ तन में सदा होती।
सीख मुरशिद से लो यारों लगाना उस तरफ़ गोता।
चखौ अमृत मगन हो तब गगन से चल रहा सोता।
ध्यान धुनि नूर लय पाओ होय सुर मुनि के गृह न्योता।
सदा सिय राम सन्मुख हों असुर सारे पकड़ि व्योंता।
करैं खिदमत डरैं तब सब कि जैसे पुत्र औ पोता।६।

३०२ ।। श्री रसूल बख्श जी ।।

पदः- पिता माता को चाही निज औलाद को दै कर सिक्षा सुधारैं
हो नर तन सुफ़ल।
वरना वै अन्त में जाय दोज़ख पड़ैं आह नारे भरैं
पावैं पल भर न कल।
वै तो पशुओं कि गणना में भी हैं नहीं शौकिया रत किया
खोया निज वीर्य्य बल।
उनकि सोहबत न करना कभी भाइयों वै हैं अधरम के संघी
बड़े बंडखल।४।
उनको सिक्षा अगर धर्म की दीजिये तो वै कहते हैं
हम से नहीं होगि हल।
मास मदिरा बिना लुकमा उठता नहीं रोम रग जितने
तन में गया पाप ढल।
कितनी चीज़ें जरात में ग़िजा के लिये सो न खाते
उड़ाते हैं क्या मूत्र मल।

बख्शा अनमोल तन ईश ने किस लिये उसको कर डाला खुद
हाय मोरी क नल।८।

३०३ ।। श्री रहीम बख्श नाल बन्द जी ।।

पदः- विवाह लड़का औ लड़की के में जे जन भांजी मारत हैं।
उन्हें फिरि अन्त में यमदूत गहि करके पछारत हैं।
जाय दरबार में लेकर करौ पेशी सुधारत हैं।
पीटते लै चलैं नरकै हौज गन्दे में डारत हैं।
तरे से ऊपर जब आवैं हाय रे हा पुकारत हैं।
पकरि फिरि दूत कर पग ले ऐंठ तन खून गारत हैं।६।

झोंक जलती हुई भट्ठी में दें सब तन को जारत हैं।
फेरि तन ज्यों का त्यों बाहर लखैं भाले प्रहारत हैं।
कराहों में खौलता तेल कसि तामें लेटारत हैं।
उबलि जलि जाय फिरि देखैं खड़ा तुरतै बिठारत हैं।
दण्ड बहु विधि के भोगवावैं दया उर में न धारत हैं।
विनय मेरी गुनो सब जन करो सतगुरु वै तारत हैं।१२।

३०४ ।। श्री हुशियारी लाल वैश्य जी ।।

पदः- काम क्रोध मद लोभ मोह औ रज तम सत माया जानो।
पांच तत्व प्रकृती पचीस औ चित मिलि कै चालिस मानो।
यह सब बांट बटोरि के यारों धरिये ठीक ठेकानो।
दया धर्म के पलरे करिये डाँड़ी सत्य लगानो।४।

शान्ति शील सन्तोष दीनता सरधा छिमा मिलानो।
इनकी जोती डारि पकड़ विश्वास ज्ञान ते तानो।
सतगुरु से तौलन विधि सीखो तन मन प्रेम में सानो।
कहैं हुशियारी लाल फेरिये हर दम नाम क बानो।८।

३०५ ।। श्री बुलाकी लाल वैश्य जी ।।

पदः- नेवाले पाप के रहे उड़ाय किया कैसा गंदा मन है।
हर दम अनुभव अधरम ही का जोरि रहे धन है।

उन से भले श्वान खर शूकर पक्षिन के तन है।
अपने तन से यहां किसी को सुख न दियो पन है।४।

अन्त छोड़ि तन वही जीव चलि होते यम गन हैं।
वहाँ भला वै कैसे मानो यमपुर के जन हैं।
कहैं बुलाकी लाल नाम गहि चढ़े जे नहिं रन हैं।
वे आने जाने के वस्त्र में रहे सदा छन हैं।८।

३०६ ।। श्री वुल वुली शाह जी ।।

शेरः- बनना सुखी गर तुम चहो सुख का रास्ता खोज लो।
मुरशिद से सुमिरन सीख फिरि निज तन में यारों रोज लो।
पढ़ सुन के जे हो गये हैं चर वाक मन मुखी।
वे हो नहीं सकते हैं कभी मानिये सुखी।४।

३०७ ।। श्री अब्दुल अली रवावी जी ।।

पदः- जिनके सीकर छीट से सुर मुनि सुखी रहते बने।
उनका सुमिरन कीजिये बसु जाम निगमागम भने।
ध्यान धुनि परकाश लय हो रूप सन्मुख आ तने।
प्रेम करि सुर मुनि मिलैं सतसंग हरि यश का छने।
अनहद सुनो अमृत चखो हो शान्ति चोर न फिर हने।
सतगुरु करौ मारग गहौ बनि जाव जियतै टनमने।६।

३०८ ।। श्री हिम्मत जान जी ।।

पदः- कोटिन में कोई भक्त सूरति शब्द का मारग गहै।
धुनि ध्यान लय परकाश पावै रूप सन्मुख में रहै।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनै तन से विलग नहिं मन बहै।
नागिन जगै सब चक्र बेधैं सातों कमल ख़ुशबू लहै।४।

निर्वैर निर्भय एक रस अच्छे बुरे सब को चहै।
बेखता कीन्हे व्यंग वचनों को सदा सुख से सहै।
सतगुरु बिना यह अगम जानो कहने को कोई कहै।
तन त्यागि जावै अचलपुर जग में न फिर कबहूँ ढहै।८।

३०९ ।। श्री पहलवान दीदी जी ।।

पदः- द्वैत बौरहा कूकुर यारों या को मति कोइ पालो जी।
काटि के तुम्हैं देय चौपट करि कितने घर यह घालो जी।
सुमिरन पाठ कीरतन पूजन में लगाय दे तालो जी।
अन्त समय यमदूतन सौंपै नर्क में रोवौ हालो जी।४।

दोहाः- मन सरपट दौरत फिरत, भजन करै किमि जीव।
सतगुरु करि या को गहै, पासै पावै पीव।।

३१० ।। श्री चन्द्र कली जी ।।

दोहाः- सतगुरु करि भव जाल को, जियतै तै करि लेव।
चन्द्र कली कहैं नाम पर, प्रेम से तन मन देउ।।

कवित्तः- बेद औ शास्त्र पुरान पढ़ै जग में सन्मान से द्रव्य कमावै।
मंत्र औ यंत्र औ तंत्र को जानि के जीवन को बहु शिष्य बनावै।
दान करै धन धाम महीगुन केर निशान उठाय घुमावै।
मौन बनै सब वर्त करै चाहे तीरथ पांय पियादेहिं धावै।४।

भद्र रहै चहै राखै जटा पर स्वारथ हेतु शरीर कटावै।
पौन अहार तजै जल अन्न टँगे उलटा औ भुजा चढ़वावै।
मुरदा को करै तुरतै जिन्दा तन त्यागि के और शरीर में जावै।
कहैं चन्द्रकली प्रभु नाम बिना लय ध्यान प्रकाश औ रूप न पावै।८।

३११ ।। श्री बच्ची माई जी ।।

गारीः- छोड़ कर ऐस आराम संसार की जिसने तन मन लगा
प्रेम गुरु से किया।
ध्यान धुनि नूर लय पाय जियतै तरी सामने में लखै
झांकी रघुवर सिया।
देव मुनि दें दरश साज अनहद सुनै सब में समता भई
कर्म हत कर दिया।
त्यागि कर तन कहै बच्ची जग से चली जाय कर के
अचलपुर में बैठक लिया।४।

३१२ ।। श्री मुजफ्फर हुसेन भिश्ती जी ।।

पदः- जय मुरलीधर जय चक्रधर जय गिरवर धर श्री कृष्ण जी।
जय मदन मोहन जय सुरभि दोहन जय मन के मोहन श्री कृष्ण जी।
जय दीन बन्धु जय कृपा सिन्धु जय करुणासिन्धु श्री कृष्ण जी।
जय कमल नयन जय मधुर बयन जय सबके अयन श्री कृष्ण जी।
जय चीर चोर जय दही चोर जय मही चोर श्री कृष्ण जी।५।

जय दया नाथ जय प्रिया नाथ जय दीनानाथ श्री कृष्ण जी।
जय निराकार जय सर्वाधार जय सब से न्यार श्री कृष्ण जी।
जय सगुण रूप जय तेज रूप जय सबके भूप श्री कृष्ण जी।
जय धुनी ध्यान जय लय में समान जय साजगान श्री कृष्ण जी।
जय अगम आप जय अकथ आप जय अकह आप श्री कृष्ण जी।१०।

जय अटल आप जय अघट आप जय अजर आप श्री कृष्ण जी।
जय अमर आप जय जवर आप जय सवर आप श्री कृष्ण जी।
जय लीलाधारी जय बृज बिहारी जय अजर बिहारी श्री कृष्ण जी।
जय नृसिंह रूप जय वाराह रूप जय बावन रूप श्री कृष्ण जी।
जय कमठ रूप जय मीन रूप जय बौध्द रूप श्री कृष्ण जी।१५।

जय वसुदेव लाल जय नन्द लाल जय त्रिभुवन भुवाल श्री कृष्ण जी।
जय देवकीलाल जय यशुदालाल जय अति विशाल श्री कृष्ण जी।
जय विराट रूप जय विष्णु रूप जय राम रूप श्री कृष्ण जी।
जय रामानन्द रूप जय गौर रूप जय ज्ञानेश्वर रूप श्री कृष्ण जी।
जय प्रणतपाल जय जगत पाल जय सब से आल श्री कृष्ण जी।२०।

३१३ ।। श्री हिकारत खाँ जी ।।

पदः- साढ़े तीन हाथ मानुष्य शरीर सुमिरन बिन नर्क में डारत जी।
सतगुरु करि जियतै भव तरिये करते यह विनय हिकारत जी।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिलै नित सन्मुख रूप निहारत जी।
सुर मुनि आवैं क्या प्यार करैं निज वस्त्र से सब तन झारत जी।४।

हर दम अनहद घट में सुनिये जो संसारी दुख टारत जी।
जब तक तन में है द्वैत घुसा तब तक सब चोर पछारत जी।
बिन गोश चश्म हम तुम न मिटै या से सब होत है ग़ारत जी।७।

३१४ ।। श्री छटी जान जी ।।

पदः- मन को रंगा नहिं नाम रंग कपड़े रंगा बेकार है।
सतगुरु बिना नहिं पाइहै धुनि ध्यान लय उजियार है।
हर समय आनन्द ले जो प्रेम में मतवार है।
सन्मुख कन्हैया राधिका साजे अजब सिंगार है।
अनहद सुनै सुर मुनि मिलैं शुभ अशुभ बाके छार है।
मिल गई छुट्टी यहां से सो जियत ही भव पार है।६।

३१५ ।। श्री ठनी जान जी ।।

पदः- हम तो हर दम हैं निरखती प्रिय श्याम कोमल गात को।
धुनि ध्यान क्या परकाश लय अनहद सुनो दिन रात को।
सुर मुनि मिलैं करि प्यार जैसे कोई अपने भ्रात को।
तन मन लगा सुमिरन करौ छोड़ौ जगत के नात को।
पांचों कि आंच में नाचते सहते हो उनकी लात को।
सतगुरु करो वै दें मिला सब विश्व के पितुमात को।६।

३१६ ।। श्री खनी जान जी ।।

पदः- पीली ने छीन ली है उजारों की रोशनी।
करती न शुक्र रव का दोज़ख़ में जम हनी।
पाकर वशर के तन को हा पाप में सनी।
बेकार श्वास जाती अनमोल यह मनी।४।

मुरशिद से सीख सुमिरौ बनि जाव टन मनी।
धुनि ध्यान नूर लय हो सनमुख में हो धनी।
सुर मुनि के होंय दरशन गिनि क्या सकौ अनी।
तन छोड़ि कै अचलपुर बैठौ कहै खनी।८।

३१७ ।। श्री वनी जान जी ।।

पदः- हम तो हर दम निरखती रहती हैं सीता राम को।
धुनि ध्यान लय परकाश क्या अनहद सुनो वसुयाम को।
सुर मुनि के दर्शन होत नित बरनै सुयश हरि नाम को।
सतगुरु करौ पावो पता छोड़ो जगत के काम को।

जीतै में कर लीजै सुफ़ल यह तन मिला जो वाम को।
तन तजि सिंहासन चढ़ि चलो कहती वनी निज धाम को।६।

३१८ ।। श्री तनी जान जी ।।

पदः- देखौ मोहन मुरारी की चितवन।
चहुँ दिशि घूमि हँसत झुकि नाचत पग पग पर करि मटकन।
मुरली अधर धरत फिरि कूकत मोहत सब के तन मन।
सखा सखी सब सँग में नाचत जय जय कार करत सुर मुनि जन।
जब राधे कर से कर पकड़ै तब हरि गुद गुदाय दें प्रिय तन।
तनी कहैं सतगुरु करि निरखौ जियतै में बिगड़ी जावै बनि।६।

३१९ ।। श्री छनी जान जी ।।

पदः- सतगुरु करि चलौ गगन मगन ह्वै देखौ राधा माधौ गावत।
सखा सखी संग में सब सोहत उनको भाव बताय सिखावत।
मुरली मधुर बजाय देत जब सुर मुनि सब धुनि सुन हर्षावत।
भांति भांति के सुमन माल है श्याम प्रिया सखा सखिन पिन्हावत।४।
होय प्रकाश दशालय पहुँचो सुधि बुधि सारी तहां हेरावत।
उतरौ सुनौ नाम धुनि प्यारी रग रोवन हर शै से सुनावत।
छनी जान कहैं जियत करै तै सो तन तजि साकेत सिधावत।
नाहीं तो है छूटब मुश्किल बार बार जग में चकरावत।८।

३२०।। श्री सुथरे शाह जी ।।

कीर्तनः- अल्ला अल्ला अल्ला अल्ला खुदा खुदा खुदा खुंदा
नवी नवी नवी नवी रवी रवी रवी रवी
साहब साहब साहब साहब मालिक मालिक मालिक मालिक
खालिक खालिक खालिक खालिक दाता दाता दाता दाता
कुदरत कुदरत कुदरत कुदरत मौला मौला मौला मौला।१।
अल्ला नवी खुदा रवी साहब नवी मालिक रवी।
खालिक नवी दाता रवी कुदरत नवी मौला रवी।
अल्ला रवी खुदा नवी साहब रवी मालिक नवी।
खालिक रवी दाता नवी कुदरत रवी मौला नवी।५।

अल्ला खुदा अल्ला खुदा नवी खुदा नवी खुदा।
दाता खुदा दाता खुदा कुदरत खुदा कुदरत खुदा मौला खुदा
मौला खुदा अल्ला नवी अल्ला नवी अल्ला रवी अल्ला रवी।
रवी खुदा रवी खुदा साहब खुदा साहब खुदा मालिक खुदा
मालिक खुदा खालिक खुदा खालिक खुदा।
अल्ला साहब अल्ला साहब अल्ला मालिक अल्ला मालिक
अल्ला खालिक अल्ला खालिक।
अल्ला दाता अल्ला दाता अल्ला कुदरत अल्ला कुदरत
अल्ला मौला अल्ला मौला।१०।

अल्ला खुदा नवी रवी साहब मालिक खालिक दाता कुदरत मौला।
मौला अल्ला कुदरत अल्ला दाता अल्ला खालिक अल्ला मालिक
अल्ला साहब अल्ला रवी अल्ला नवी अल्ला खुदा
अल्ला अल्ला अल्ला।
मौला खुदा कुदरत खुदा दाता खुदा खालिक खुदा मालिक खुदा साहब
खुदा रवी खुदा नवी खुदा खुदा खुदा अल्ला खुदा।
परवर दिगार गरीब परवर करीम रहीम साईं।
महबूब हकीकी कहौ दिलदार सनम भाई।१४।

३२१ ।। श्री इश्क जान जी ।।

पदः- मुहम्मद साहब मुस्तफ़ा पैग़ाम्बर का आदेश है।
जब तक रहम दिल में नहीं तब तक न वह दरवेश है।
छूटै दुई तब जान ले रव हर जगह में पेश है।
जिसके तन मन पर चढ़ा नहि राम रँग का लेश है।
उसने झूठा ही धरा मानो फकीरी भेष है।
धुनि ध्यान लय परकाश बिनु छूटत न भव की ठेस है।६।

यम अन्त में उसको पकड़ ले जात अपने देश हैं।
बेदर्द ठोकैं बस नहीं कछु फिर चलाते केस हैं।
इजलास पर हाजिर करैं कागज़ लखै शुभ रेस है।
देखैं पकरि के मुख को तब जैसे कि अश्व के नेश हैं।
थूकैं कहैं हा तन वशर खोये जो कीमत वेश हैं।
मुरशिद बिना दोज़ख में सड़ पाये न तू उपदेश है।१२।

शेरः- कहती है इश्क जान इश्क बिन न रव मिलै।
जब इश्क में तुम चूर हो तब सामने खिलै।।

३२२ ।। श्री रफ़ा जान जी ।।

पदः- बन ठन के अभी घूमती हो यार बनाये।
जब अन्त समय होगा यम पकड़ि दबाये।
मल मूत्र की जगह से मल मूत्र गिराये।
देखैंगे खड़े यार मुख से बोल न आये।
परिवार नातेदार खड़े रोवैं मुँह बाये।५।

चारा नहीं चलै तुम्हैं किस तरह बचाये।
ले कर के दूत फिर तुम्हैं दोज़ख में रुलाये।
सुमिरा न नाम रव का पटकैं औ सुनाये।
टांगैं पकड़ि घुमाय शिर को नीचे गड़ाये।
इन्द्री में लोह सींक लाली करके चलाये।१०।

जलती हुई वह सींक मुख में जाय दिखाये।
साधे हैं हाथ पैर वहां कौन छुड़ाये।
गर मानो सखुन मेरा सब काम बनि जाये।
मुरशिद करो आनन्द हो सब पाप नशाये।
धुनि ध्यान नूर लय हो नित रूप दिखाये।
कहती है रफ़ा जान तुम्हैं सत्य बताये।१६।

३२३ ।। श्री सफ़ा जान जी ।।

पदः- सफा हो पाप तजि बहिनो करो मुरशिद लखौ जौहर।
ध्यान धुनि नूर लय पावो सामने होय तब शौहर।
मिलैं सुर मुनि सुनै अनहद मधुर धुनि क्या बजै मौहर।
सखुन गर मानि मम जाओ जियति करतल हो जग दौहर।४।

३२४ ।। श्री कनी जान जी ।।

दोहाः- मुरशिद करि हरि को भजो, छोड़ो शान औ मान।
दमकनिया भव की मिटै, खुलै नाम की तान।

ध्यान प्रकाश समाधि हो, सन्मुख छावै रूप।
सुर मुनि सब के दर्श हों, अनहद सुनो अनूप।४।

अन्त छोड़ि तन जाव चलि, अचल धाम हो बास।
गर्भ हिंडोला मिटै तब, जब या विधि हो पास।
कनी कहैं अब तान लो, ताना बहिनों भाय।
नाही तो पछितावगे, आयू बीती जाय।८।

पदः- मुरशिद करो हर दम सुनो घट में कीरतन हो रहा।
अनमोल नर तन है मिला, काहे वृथा में खो रहा।
साज अनहद बाजते संघ राग रागिनि नाचते।
सुर मुनि सुनैं लखि गाजते तू मोह नींद में सो रहा।
यह ध्यान ही की बात है सो जान तेरे पास है।५।

जग की तजे नहि आस है, या ही से कूड़ा ढो रहा।
धुनि नाम की तू जान ले, तन मन से ताना तान ले।
परकाश लय सुख खान ले जो पाप ताप को धो रहा।
सन्मुख में राधे श्याम हों सुर मुनि मिलैं लय नाम हो।
तब सब तुम्हारा काम हो हर वक्त यहं पर को रहा।१०।

यह मार्ग सूरति शब्द का, गहि कर चलो निज हद्द का।
फिरि रहै बाकी मद्द का सारे असुर यह नो रहा।
तन छोड़ि प्रभु के पास में बैठो सिंहासन खास में।
आओ न फिर भव फांस में कहती कनी क्यों रो रहा।१४।

दोहाः- कना पेट भर नहीं मिलै, सत्य कहौं मैं भाय।
दुर्बलता ऐसी भई मारग चला न जाय।।
माटी पोतन के लिये, खोदन गइ जहँ खान।
ता में एक कनी मिली, नैनन चमक समान।।
घर लाई सब ने लख्यौ, गई जौहरी पास।
पारिख ह्वै बिक्री भई, दुख भयो सब नास।।
स्वामी रामानन्द जी, मोहिं लीन अपनाय।
राम नाम को दीन दै, द्वैत गयो विलगाय।।

कनी जान कहने लगे, तब से सब मम नाम।
शिव गिरिजा को वास जहँ श्री काशी शुभधाम।५।

३२५ ।। श्री दत्त जी ।।

पदः- बाँकुड़े वीर सो साधू जो मन इन्द्रिन सँभारे हैं।
फौज असुरन कि जो तन में पकड़ि करके पछारे हैं।
ध्यान धुनि नूर लय पा कर रूप सन्मुख मतवारे हैं।
सुनैं अनहद बजै घट में देव मुनि के दुलारे हैं।४।

नागिनी चक्र औ नीरज सभी सुख से सुधारे हैं।
दीनता शान्ति की मूरति सदा गुरु के सहारे हैं।
करैं हरि नाम की चर्चा बचन कोमल उचारे हैं।
दत्त कह अन्त हरिपुर ले फेरि जग पग न धारे हैं।८।

३२६ ।। श्री अरविन्द जी ।।

पदः- बाँकुड़े वीर सो साधू जो मन इन्द्रिन सुधारे हैं।
फ़ौज असुरन की थी तन में उसे एक दम निकारे हैं।
नूर लय ध्यान धुनि जाना रूप सन्मुख निहारे हैं।
विमल अनहद सुनै हर दम देव मुनि संग खेलारे हैं।४।

जगी नागिन सुधे चक्कर कमल भी सब फुलारे हैं।
रहैं निर्बैर औ निर्भय सदा सतगुरु के प्यारे हैं।
मगन ह्वै कर भनै हरि यश शब्द मधुरे सुखारे हैं।
कहैं अरविन्द तन तज कर अचल पुर को सिधारे हैं।८।

३२७ ।। श्री नवल विहारी जी ।।

पदः- सतगुरु से सुमिरन विधि जांचो।
तन मन प्रेम से हरि रंग रांचो।
असुरन की सब फौज फते हो मिटै भाल विधि खाँचो।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय मिलै रूप तब साँचो।
अनहद सुनौ देव मुनि के संग करौ कीरतन नाचो।
चारौं तन सोधन ह्वै जावैं तत्वै दर्शै पांचौं।६।

नागिनी चक्र कमल सब जानो ग्रन्थ मुनिन के बाँचो।
हर दम छाया हरि की ऊपर नेक न लागै आंचो।
जो न भजो तो आओ जाओ मिलै न कौड़ी काँचो।
या से चेत करौ नर नारी दीन बनौ औ मांचो।
नवल विहारी कहैं सुरति को शब्द पै धरि कै टाँचो।
जियतै सब करतल ह्वै जावै करौ सुफल नर ढाँचो।१२।

३२८ ।। श्री रूप कली माई जी ।।

पदः- सतगुरु करि तन मन वारी। सुमिरौ श्री अवध बिहारी।
लय ध्यान धुनी उजियारी। सुर मुनि संग खेल मचारी।
अनहद धुनि सुनिये प्यारी। सब असुरन जीतौ पारी।
पीजै अमृत सुखकारी। जो गगन ते सोता जारी।८।

छवि जिनकी जग से न्यारी। ते सन्मुख रहैं सदारी।
जियतै लूटौ सुख भारी। तब सकौ और को तारी।
जो हमने विनय उचारी। सो सुनि लो मंगलकारी।
यह विनय जौन उर धारी। सो कार्य्य आपनो सारी।१६।

३२९ ।। श्री पण्डित श्री धर जी ।।

पदः- दश आठ षट चारि पढ़ि सुन लिख लीन्हों
पायो नहिं हाय राम नाम सुख सार को।
सतगुरु कीन्हें बिन भेद यह मिलत नाहीं
या से चकरावै जीव तोड़ै किमि जार को।
ध्यान परकाश धुनि लय रूप पावे गुनि
अनहद बाजा सुनि भर्म फेंकै भार को।
हरि यश देव मुनि कहैं आवैं पुनि पुनि
श्री धर कहैं जौन जानै सूत्रधार को।४।

३३० ।। श्री अद्वैता नन्द जी ।।

पदः- रेफ़ बिन्दु की जाप को, सतगुरु से ले जान।
धुनी ध्यान परकाश लय, मिलै सर्व सुख खानि।
रूप सदा सन्मुख लखै, अन्तराय नहिं होंय।

निर्भय औ निर्वैर हो, छूटि जाय तब दोय।
अनहद घट में हर समय, बजै सुनै क्या तान।५।

सुर मुनि आवैं मिलन को, करैं बड़ा सन्मान।
पढ़ सुन लिख सब दीन धरि, कीन्ह नहीं अभ्यास।
या से अन्त समय मिलो, श्री विष्णु पुर वास।
कपिल देव आये तहां, भेद दीन विलगाय।
अब तो वह तन है नहीं, केहि विधि करौं उपाय।१०।

परस्वारथ जो कछु किहेन, सो सब जग विख्यात।
कर्म बिना त्यागे कोई, अचल धाम नहिं जात।
कहैं अद्वैता नन्द जब, भोग पूर ह्वै जांय।
तब जग में अवतरित ह्वै, भजन करौ मन लाय।१४।

३३१ ।। श्री श्याम तीर्थ जी ।।

पदः- अजपा रेफ़ औ बिन्दु को, सतगुरु करि ले जान।
ध्यान धुनी परकाश लय, रूप से हो पहिचान।
अनहद बाजन धुनि सुनो, सुर मुनि आवैं पास।
आशिष दै प्रभु नाम यश, वरनै सहित हुलास।
जिह्वा से जप कीन हम, ओ३म को तन मन मान।५।

पर स्वारथ जो कछु सधा, तौन कीन जग जान।
अन्त समय बैकुण्ठ चलि, सुन्दर आसन लीन।
कपिल देव आये तहां, भेद विलग सब कीन।
धर्म सबै जब देय तजि, भजन करै निष्काम।
तब तन तजि कै लेय चलि, अचल धाम विश्राम।१०।

भोग भोगि बैकुण्ठ का, फिरि आवैं जग माहिं।
सुमिरन की विधि जानकर, अचल धाम तब जाहिं।
ग्रन्थ जौन हम लिखि गयन, सो निज मति अनुसार।
होनहार जैसा रहा, वैसी उठी विचार।
तन बिन हरि का भजन नहिं, होय मानिये ठीक।
श्याम तीर्थ कहैं देव मुनि कहैं सदा की लीक।१६।

३३२ ।। श्री पं. श्याम किशोर जी ।।

पदः- राम श्याम रूप रंग अजब सलोनो लागल।
सतगुरु करि लखो काटो भव केर दागल।
भाल में तिलक राजै दृगन में सोहै काजल।
धनु शर कर धारे मुरली मधुर बाजल।
ध्यान परकाश धुनि लय में सुधि बुधि पागल।
अनहद नाद घट बाजै सुनो संघ रागल।६।
सुर मुनि दर्श देंय बसु जाम जौन जागल।
अन्त तन छोड़ि चलौ छूटै गर्भ उर्ध टांगल।
तन मन प्रेम करि भजिये न होय नागल।
नर तन पाय चेतो वृथा वयस जात खांगल।
छटा सिंगार छवि लखि काम रति भागल।
हर दम देखौ शोभा यही वरदान मांगल।१२।

३३३ ।। श्री पं. करम चन्द जी ।।

पदः- जब मन रंगा हरि नाम रंग तब फिर विलग जाता नहीं।
सतगुरु बिना यह मार्ग अपनै आप कोइ पाता नहीं।
धुनि ध्यान लय परकाश बिन भव पार कोइ पाता नहीं।
इनके बिना प्रभु हर समय छवि सामने छाता नहीं।
रूप के यह अंग हैं मैं झूठ बतलाता नहीं।
दीनता औ शान्ति गहि क्यों इस तरफ़ आता नहीं।६।
पढ़ सुन किया कंठस्थ तू पर प्रेम में माता नहीं।
तन मन कि करिके एकता सुर मुनि से बतलाता नहीं।
नागिन जगा चक्कर चला कर कमल उलटाता नहीं।
अनहद को सुन पीकर अमी विधि गति को छेकवाता नहीं।
नर तन मिला अनमोल है हरि चरित नित गाता नहीं।
करि ले कमाई जियत में तब जग से कोइ नाता नहीं।१२।

३३४ ।। श्री ठाकुर प्रताप सिंह जी ।।

पदः- ज्वार भाटा यह मन की बड़ी भारी।
इसने जीवों कि कीन्ही गिरा ख्वारी।

पड़े चक्कर में रोते हैं नर नारी।
अमी पासै वे जाने पियत खारी।४।
बिना सतगुरु के भव ते न हो पारी।
यह रीती सनातन ते है जारी।
दल दैत्यन का तन में है बल धारी।
नाम तेगा बिना को सकै मारी।८।

३३५ ।। श्री उत्तम सिंह जी शिष्य ।।

पदः- झूठी चतुरता कहैं सांच।
हर समय चोरन की संगति में रहे हैं नाच।
पढ़ि औ सुनि कछु गुनि न पायो बसत पासै पांच।
मती मन की अती करि शिर धरयौ पाप क खांच।
श्रवन बहिरे नयन अन्धे क्या सुनैं क्या बाँच।
अन्त की बेरिया बली यम आय लेवैं टांच।६।
मारते यमपुर चलैं लै निकसि लटकै कांच।
बड़ी भागि से मिलत है यह सुनो मानुष ढांच।
करो सतगुरु भजो हरि को मिटै भव की आंच।
ध्यान धुनि परकाश लय हो रूप सन्मुख सांच।
सुनो अनहद पिओ अमृत जाव हरि रंग रांच।
देव मुनि संग होय बैठक करैं पक्की जांच।१२।

३३६ ।। श्री गयन नाथ जी ।।

पदः- कीजै राम नाम की चोरी।
न कर चलै न जिह्वा डोलै सूरति शब्द में जोरी।
ररंकार धुनि खुलै अखण्डित जो भव बन्धन तोरी।
अनहद सुनो देव मुनि आवैं मिलैं दोउ कर जोरी।४।
ध्यान प्रकास समाधी होवै आनन्द हिये हिलोरी।
झांकी युगुल सामने हरदम राम श्याम सिय गोरी।
सतगरु करौ मिलै तब मारग तन मन हो एक ठोरी।
गयन नाथ कहैं प्रेमी सो जो नाम के रंग जाय बोरी।८।

३३७ ।। श्री कनीफ़ नाथ जी ।।

पदः- मारो राम नाम का डाका।

जिह्वा कर औ नयन न डोलैं सूरति शब्द में टांका।

ररंकार धुनि जारी होवै मिटि जावै दुख छाका।

ध्यान प्रकाश समाधी होवै तन मन ह्वै जाय बांका।

सुर मुनि आय प्रेम से भाई देंय मधुर स्वर हाका।

अनहद सुनौ छकौ नित अमृत मिटैं भाल के आँका।६।

मातु पिता हर दम रहैं सन्मुख संग में तीनों काका।

सतगुरु करौ जियत सब जानौ ऐसा नाम पताका।

नागिन जगै चक्र हों चालू खिलैं कमल के फांका।

सुखमन स्वांस विहंग मारग ह्वै जाय अपन घर ताका।

शान्ति दीनता प्रेम बिना है पास खजाना ढाका।

कानीफ़ नाथ कहैं मस्त बनो तब चलै युगै युग साका।१२।

३३८ ।। श्री जालन्धर नाथ जी ।।

पदः- सतगुरु करिके जानिये, रेफ़ बिन्दु की जाप।

जालन्धर कह ध्यान धुनि, लय प्रकाश हो आप।

झांकी सन्मुख में रहै, सिया मातु प्रभु बाप।

जालन्धर कह जियत ही, कटि जावै भव ताप।

अनहद बाजा बजै घट, सुनिये मधुरी तान।५।

जालन्धर कह देव मुनि, मानै जिमि महिमान।

कुण्डलिनी जगि जाय औ, षट चक्कर सुधि जाय।

जालन्धर कह सातहू, फूलै कमल दिखाय।

कुम्भक होवै स्वांस तब, वीर्य्य उर्ध्व ह्वै जाय।

जालन्धर कह शीत औ, उष्ण न परै बुझाय।१०।

सोरठाः- सूरति शब्द कि जाप, अजपा या को कहत हैं।

काल मृत्यु यम कांप, जे जन या को गहत हैं।१।

राज योग की छाप, लैकर दुख सुख सहत हैं।

जालन्धर लियो नाप ते नित निर्भय रहत हैं।२।

३३९ ।। श्री मैना जी ।।

पदः- मैना कह मैं त्यागिये, तब हरि पासै देख।
ध्यान धुनी परकाश लय, जहां रूप नहिं रेख।१।
सतगुरु बिन कछु नहिं मिलै, वृथा बनायो भेष।
जग की यह मर्य्याद है, मति मानै कोइ मेख।२।

३४० ।। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ।।

दोहाः- गोविन्द सिंह गोविन्द भजि, गो मन ले जो जीति।
ध्यान धुनी परकाश लय, रूप से होवै प्रीति।।

३४१ ।। श्री माधौ बाबा जी ।।

दोहाः- माधौ कह सतगुरु बिना, शिष्य जात ह्वै क्रूर।
आंखी कान खुलैं नहीं, रहै झूर का झूर।।

३४२ ।। श्री निरञ्जन बाबा जी ।।

दोहाः- कहै निरञ्जन शिष्य बनि, गह्यौ न सतगुरु बैन।
मूरि सजीवन त्याग फिरि, भटकि मरयौ दिन रैन।।

३४३ ।। श्री वोप देव जी ।।

दोहाः- वोप देव कह गुरु बिन, भक्ति न पावत कोय।
पढ़ि सुन कै नहिं हटि सकै, बड़ी कठिन यह दोय।।

३४४ ।। श्री छत्तीस कवि जी ।।

पदः- कृपा के पात्र हैं जे जन उन्हीं पर प्रभु कृपा करते।
वही सतगुरु के सेवक बन, जियत भव सिन्धु हैं तरते।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर कर्म दोनों को हैं जरते।
रूप सन्मुख सदा उनके दीनता शान्ति से भरते।४।

सुनै अनहद मिलैं सुर मुनि विहंसि उनके चरन परते।
कमल सातौं खिलैं देखैं चक्र भी षट चला करते।
जगै नागिनि चलै ऊपर अमी पी मस्त नहिं मरते।
कहैं छत्तीस साधन कर करो पहिचान निज घर ते।८।

पदः- कलेवर काल का भोजन एक दिन होयगा भाई।
कहैं छत्तीस छत्तिस सम रहै जग में सो सुख पाई।
करै सतगुरु मिलै मारग ध्यान धुनि नूर लय धाई।
सदा सिय राम की झांकी सामने में रहै छाई।४।

मिलैं सुर मुनि सुनै अनहद बरनि मुख से न कछु जाई।
कमल फूलैं सुधै चक्कर नागिनी लोक दिखलाई।
दीनता शान्ति तन मन से गहै सो अचल पद पाई।
वही नेमी वही टेमी वही प्रेमी न चकराई।८।

३४५ ।। श्री कोक जी ।।

पदः- सुखी जग में वही जानो जौन प्रभु नाम रंग माते।
करै सतगुरु गहै मारग विलग तब तो रहै छाते।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर तोड़ि दे मृत्यु के दांते।
सदा प्रिय श्याम को देखैं करैं जब जी चहै बातें।
आय सुर मुनि मिलैं बैठैं सुनै बाजा भजन गाते।
कोक कह अन्त तन तजि के अचल पुर बास हैं पाते।६।

खजाना नाम का जोड़ो बदौलत जिसके जाना है।
करौ सतगुरु पता पाओ हमैं तुम को चेताना है।
मिलै परकाश धुनि औ ध्यान लय में चलि समाना है।
लखौ प्रिय श्याम को हर दम मन्द गति मुसकराना है।
मिलाओ हाथ सुर मुनि संग सुनो घट साज गाना है।
कोक कह अन्त निजपुर लो न आना है न जाना है।१२।

३४६ ।। श्री सच्चिदानन्द बाबा जी ।।

पदः- वासना सब निगल कर मन भया संघी हमारा है।
करौ सतगुरु गहौ मारग अभी वह तुमसे न्यारा है।
ध्यान धुनि नूर लय जानो जहां चलता न चारा है।
लखौ प्रिय श्याम को हर दम जगत जिनका पसारा है।४।

देव मुनि आय लें कनियां कहैं तू हरि का प्यारा है।
विमल अनहद सुनो घट में मधुर धुनि एक तारा है।

जगै श्री ब्रह्म की आगी कर्म करि देत छारा है।
सच्चिदानन्द कह भाई जियत भव सिन्धु पारा है।८।

३४७ ।। श्री महीपति बाबा जी ।।

पदः- महीपति कह महीपति को मही पर आय पहिचानो।
करौ सतगुर गहौ मारग जुरै तन मन तब सुख मानो।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर सुनो अनहद कि धुनि तानो।
मिलैं सुर मुनि करैं आदर प्रेम में निज को जब सानो।४।

कमल सातौं खिलैं सुन्दर चक्र षट का हो घुमरानो।
जगै नागिनि मिटै सुसती लोक लखि होय हर्षानो।
चखौ अमृत कर्म जारो घुमा कर नाम का बानो।
त्यागि तन चढ़ि सिंहासन पर चलो जग में न फिर आनो।८।

३४८ ।। श्री गुड़ गुड़ी शाह जी ।।

पदः- जगत पितु मातु सीता राम राधे श्याम कमला विष्णु सब कहते।
करो सतगुरु भजो देखो हर समय सामने रहते।
ध्यान धुनि नूर लय होवै देव मुनि आय कर गहते।
सुनो अनहद पिओ अमृत असुर पकड़ो जो गढ़ ढहते।
सुरति को शब्द पर धरिये कहा मानो कहाँ बहते।
गुड़ गुड़ी शाह कह तन मन ते प्रेमी हो तो वै चहते।६।

३४९ ।। श्री मुन्नू कुम्हार जी ।।

पदः- सुमिरन बिना गम में घुलो बीमार जिस तरह।
मुरशिद करो पाओ पता दिलदार किस तरह।
मुरली मधुर बजाते सिंगार किस तरह।
नूपुर बजैं छमा छम मतवार किस तरह।४।

धुनि ध्यान नूर लय हो सुखसार किस तरह।
अनहद सुनो बजै घट गुमकार किस तरह।
सुर मुनि के होंय दर्शन करैं प्यार किस तरह।
तन त्यागि लो अचल पुर बलिहार किस तरह।८।

३५० ।। श्री सद्धू तेली जी ।।

पदः- सतगुरु किया मारग मिला घनश्याम छवि छाने लगे।
नैनो का करि इशारा लखि मुझको मुसुकाने लगे।
बंशी अजब सुरीली भरि राग क्या गाने लगे।
परकाश - ध्यान - समाधि धुनि रग रोम भन्नाने लगे।४।
सुर मुनि मिलन के हेतु करिके प्रेम नित आने लगे।
हर समै अनहद बजै घट अमी पी पाने लगे।
नागिनि जगी चक्कर सुधे खिलि कमल दिखलाने लगे।
अजपा यह सूरति शब्द का अब हम भि बतलाने लगे।८।

३५१ ।। श्री अवसान बंजारा जी ।।

पदः- मुरशिद करो मारग गहो निज घर क कार देखो।
धुनि ध्यान नूर लय मिले दिलदार यार देखो।
अनहद सुनो मधुर धुनि सुर मुनि क प्यार देखो।
तन मन से प्रेम करिके प्रभु का दरबार देखो।
सब शान्ति रूप बैठे साजे सिंगार देखो।
बरनै क्या शेष शारद अद्‌भुत बहार देखो।६।

३५२ ।। श्री गोरे खां कसाई जी ।।

पदः- जब तक मारग मिलै न घर का तब तक जीव बहुत अकुलाय।
सतगुरु बिना भेद नहिं पावै जग में चक्कर खाय।
खुलैं किवाड़ी चढ़ै अटारी अनहद सुनि हर्षाय।
ध्यान में लीला नाना देखै जो नहिं बरनि सेराय।४।
होय प्रकाश समाधि में जावै सुधि बुधि तहां हेराय।
उतरै सन्मुख झांकी बाँकी राम सिया सुख दाय।
सुर मुनि आवैं हिये लगावैं गोद में लेंय उठाय।
तन मन प्रेम से सूरति शब्द में लागै सब बनि जाय।८।

३५३ ।। श्री भय्या जी ।।

पदः- मन पाजी करता नित खटपट।
मति या की ऐसी बौरानी जैसे तिरिया छमकट।

सतगुरु बिना जीव किमि छूटै परयो फेरि अति अटपट।
उठै गिरै बस चलै नहीं कछु निबर्लता से लटपट।४।
मारग पाय जाय जब भाई पहुँचि जाय तब चटपट।
ध्यान धुनी परकाश जानि कै लय में जावै झटसट।
हर दम श्याम प्रिया की झांकी निरखै सन्मुख घट घट।
अन्त त्यागि तन अचल धाम ले छूटै जग का खट खट।८।

३५४ ।। श्री भंगी माई जी ।।

पदः- मन मतंग बांधे पाप क तबला।
मति मलीन ऐसी है वा की जैसे कुलटा अबला।
निकसै जीव कौन विधि जग से तन अति ह्वैगो गंदला।
असुरन का दल कहे न मन के छिन छिन करता हमला।
सतगुरु करै मार्ग तब लौकै छूटै भव का घपला।
जियतै में तै कीन चहै जो सत्य दीनता गमला।६।

३५५ ।। श्री लँगड़ शाह जी ।।

पदः- सुनिये राम नाम का घण्टा।
सतगुरु करौ भजन विधि जानौ चढ़ि जावो तब अण्टा।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै छूटे भव का टण्टा।
सन्मुख राम सिया की झांकी जियत बनो तब चण्टा।
जो नहिं मानो कहा हमारा अन्त हनै यम बण्टा।
नर्क में पल भर कलि नहिं पावो दोउ दिशि ते हो खण्टा।६।

३५६ ।। श्री राजेश्वरी माई जी ।।

पदः- मन में भरी जग कामना हैं, पास मिलते राम ना।
सतगुरु बिना कोइ थाम ना, होता सुफल नर चाम ना।
परकाश-लय-धुनि ध्यान ना, प्रभु सामने छवि भान ना।
अनहद कि जब तक सान ना, तब तक अमी को पान ना।४।
सुर मुनि क सुनता गान ना, तन मन को प्रेम में सान ना।
नागिनि जगा गति जान ना, सब लोक लखि पहचान ना।
षट चक्र जब घुमरान ना, सातों कमल उलटान ना।
जब तक कि आँखी कान ना, तब तक कि मिलता थान ना।८।

३५७ ।। श्री गङ्गेश्वरी माई जी ।।

पदः- सतसंगति बिनु मन भयो मोटा। कैसे छूटै पाप लगोंटा।।
सतगुरु के चरनन जो लोटा। सो गहि पायो नाम क सोंटा।।
ध्यान-प्रकाश-समाधि में औटा। जन्म मरण के छूटै पौटा।।
भजन बिना हो श्वान बिलौटा। सहौ दुःख पावो मल लौटा।८।

३५८ ।। श्री विन्ध्येश्वरी माई जी ।।

पदः- राज सदन में राम सिया के बालक रामायन जस गायो।
लव औ कुश की पीठि पै कर धरि बालमीकि मुनि ध्यान लगायो।
इष्ट शिवा शिव को बन्दन करि तब कुँवरन श्लोक उठायो।
वीणा के संग तन मन प्रेम से धुनि स्वर एकै साथ मिलायो।
शब्द शब्द के रूप प्रगट ह्वै नाच नाच कै भाव बतायो।५।

ताल ग्राम-स्वर धुनि सम तन धरि राग रागिनिनि के संग आयो।
छवि सिंगार छटा सब साजौ निज निज तन ते धूम मचायो।
पांच वर्ष के बालक दोनो अवध में यह कौतुक दिखलायो।
लोक भुवन औ द्वीप खण्ड सब लखि लखि नैन नीर झरि लायो।
बन गिरि सरिता सागर नाले ताल तलैयन तन पुलकायो।१०।

जल चर थल चर नभ चर मोहे माया मृत्यु काल गश खायो।
अगिनि पौन-जल-पृथ्वी गगनौ सुर मुनि सब के होश उड़ायो।
शान्ति शील सन्तोष दीनता सरधा छिमा सत्य चुपकायो।
ज्ञान-ध्यान-जप-तप सुख गण औ प्रेम-प्रीति विश्वास लुभायो।
यह लीला सतगुरु करि देखा केवल सूरति शब्द लगायो।
विन्ध्येश्वरी कहैं नर नारी भजन करौ जेहि हित तन पायो।१६।

३५९ ।। श्री रामेश्वरी माई जी ।।

पदः- अटई डण्डा खेलैं चारिउ भैया।
गुरु वशिष्ठ-दशरथ सब रानी लखि तन मन हर्षैया।
वयसि बराबर के बहु बालक आवैं संग खेलैया।
नर नारी पुर के लखि लखि के प्रेम में पगे सदैया।
राम भरत औ लखन शत्रुहन की झांकी छवि छैया।
सुर मुनि चढ़े विमानन निरखैं हँसि हँसि सुमन फेंकैया।६।

जय जय कार करें दशरथ को धन्य अवध के रैया।
निज निज वाद बजावैं नाचैं आनन्द उर न समैया।
सतगुरु करिकै जानौ जियतै त्यागौ जग औंधैया।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुधि बुधि जहां भुलैया।
चारौं रूप सामने राजैं चम चम चम चमकैया।
सूरति शब्द का मारग यह है हर दम बजै बधैया।१२।

३६० ।। श्री खड़ेश्वरी माई जी ।।

पदः- गुल्ला गुलेल खेलैं चारिउ लाला।
राम भरथ औ लखन शत्रुहन संग सखा बहु आला।
गुरु वशिष्ठ सब रानी दशरथ लखि लखि होत निहाला।
दुइ खम्भे मलया गिरि चन्दन के गाड़े करि साला।
ता में तार डबल चाँदी का हेम क पच्छी डाला।
स्वर्णकार हुसियारी से क्या पांच रंग भरि ढाला।६।

ता के भीतर मोती छोड़े बाजै नेकौ हाला।
ता पर करत निशाना सब मिलि कहँ तक कहौं हवाला।
सुर मुनि नभ ते जय जय बोलैं छोड़ै फूलन माला।
साज बजावैं नाचैं गावैं देंय दोऊ कर ताला।
भाग्य सराहैं पुर बासिन की मातु-पिता जिन पाला।
सतगुरु करौ लखौ नित लीला होय सुफल नर छाला।१२।

३६१ ।। श्री शिव पाल सिंह जी ।।

पदः- मन छिनरा मति भई छिनाल। नर नारी सब चलत कुचाल।।
वृद्ध तरुण का कौन हवाल। माते पांच सात सिन बाल।।
माया फेंकि दीन यह जाल। नाचैं जीव देंय करताल।।
धर्म्म भागि कै छिप्यो पताल। धन्य धन्य श्री युग कलि काल।।
अन्त समय पर आयो काल। पकरि उठाय लीन धरि गाल।१०।

सतगुरु करि मेटौ दुख टाल। भजौ सदा सिय राम कृपाल।।
लय प्रकाश धुनि-ध्यान विशाल। सन्मुख जोड़ी निरखौ आल।।
तन मन प्रेम से हो मतवाल। होय न कबहूँ बांको बाल।।

चलौ बुज़ुर्गन की जब चाल। तब तो हो खुब मालोमाल।।
जाव अचल पुर ठोंकि कै ताल। मेटौ जियतै लिखा जो भाल।२०।

सुर मुनि तब तो होहिं दयाल। दर्शन देहिं पिन्हावैं माल।।
सूरति शब्द पै धरि करु ख्याल। घट में अनहद की सुनु ताल।।
नागिनि जगै चक्र षट साल। कमल उलटि खिलि होंहि बहाल।।
राजयोग यह कह शिवपाल। जानि लेय सो करै कमाल।२६।

३६२ ।। श्री सुख पाल सिंह जी ।।

पदः- यह तन अनमोल मिला नर का हरि नाम में खूब लगा लेना।
सतगुरु करि सूरति शब्द पै धरि धुनि ध्यान प्रकाश औ लय लेना।
सन्मुख में झांकी क्या बांकी प्रिय श्याम कि यारों करि लेना।
सुर मुनि आबें बैठें बोलें हरि यश गावें सो सुनि लेना।
गहि शान्ति दीनता सत्य मता कटु मीठी बातें सह लेना।
तन त्यागि मगन ह्वै यान में चढ़ि सुखपाल कहैं निज घर लेना।६।

३६३ ।। श्री मुन्दर शाह जी ।।

पदः- भजु रेफ़ बिन्दु अखण्ड तन मन प्रेम कर दुई अक्षरम।
सतगुरु से जप विधि जान ले भागि जांय सारे तसकरम।
शेष लोमस पवन सुत जेहि भजत विधि माहेश्वरम।
शुकदेव सनकादिक गरुड़ औ काक नव योगेश्वरम।
सारद गणेश दिनेश सुर सब रटत ऋषी मुनेश्वरम।
धुनि ध्यान लय परकाश हो भटकत हो क्या बन कन्दरम।६।

अमृत पियो अनहद सुनो बाजत रहत घट अन्दरम।
सुर मुनि मिलैं उर में लिपटि ग्रह हाट बाट औ मन्दिरम।
नागिन जगै चक्कर चलैं फूलैं कमल क्या सुन्दरम।
सन्मुख सदा झांकी लखौ सिया राम रूप विश्वम्भरम।
भूषन वसन छवि चन्द्रिका क्या मुकुट शिर श्रुति कुँडलम।
दिव्य सिंहासन पै आसन दोनो कर में धनु सरम।१२।

अजपा पे सूरति शब्द का जानै ते पीछे नहिं टरम।
जियति सब करतल करै तन त्यागि हो पावन परम।
अनमोल स्वाँसा समय यह करते रहो नित शुभ करम।

दीनता औ शान्ति सत्य न छोड़िये दाया धरम।
इनके बिना सुनि गुनि लिया छूटत नहीं नेकौ भरम।
माया पकड़ लेती न बनना भूल कर हम है बरम।१८।

सेवक व स्वामी भाव कबहूँ कर नही सकता गरम।
नारि नर तरुणाई में साधन करैं तजि कै शरम।
उनके ऊपर हो नहीं सकता कभी कोई वरम।
विश्वास करि जुट जाव अब है चारि ही दिन का चरम।
सब के लिये यह पद कहा कैसा सुलभ औ है नरम।
मुन्दर कहैं हम जा रहे लिखवा दिया सब है मरम।२४।

३६४ ।। श्री मगन शाह जी ।।

पदः- भक्तों बाल रूप सरकार हमारे तन मन चित्त औरैं। हमारे तन मन चित्त।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो हटै दुःख लौरै। हमारे तन मन चित्त।
तोतरि बयन कहैं हँसि हँसि कै कूदि कूदि ठौरैं। हमारे तन मन चित्त।
कटि करधनी पगन दोऊ पौटा बाजैं जब दौरैं। हमारे तन मन चित्त।
भोजन करन संग में बैठें छीन खात कौरैं। हमारे तन मन चित्त।
मञ्जन करन जाँय जमुना तट सिखलावैं पौरैं। हमारे तन मन चित्त।६।

भद्र होन जब चलैं कहैं हम प्रथम होव छौरैं। हमारे तन मन चित्त।
सोवैं संग लिपटि कै उर में उठैं होत भोरैं। हमारे तन मन चित्त।
पाँच वर्ष की वयस अमित बल दोऊ कर गहि दौरैं। हमारे तन मन चित्त।
चकई सम घूमैं चारों दिसि चलैं न कछु गौरैं। हमारे तन मन चित्त।
मुरली फूँकि बगल तर दावैं फेरि दृगन कोरैं। हमारे तन मन चित्त।
कांधे चढ़ि दोऊ पगन हिलावैं शिषा पकरि छोरैं। हमारे तन मन चित्त।१२।

भांति भांति के खेल दिखावैं शर्म भर्म फोरैं। हमारे तन मन चित्त।
पुलकावली कंठ हो गद गद नयन झरैं लोरैं। हमारे तन मन चित्त।
ऐसे दीन दयाल दयानिधि ते जे मुख मोरैं। हमारे तन मन चित्त।
तिनको ठौर ठिकान नहीं कहुँ जिमि पागल बौरैं। हमारे तन मन चित्त।
तन मन प्रेम लगाय भजो नित्य सब के शिर मौरै। हमारे तन मन चित्त।
सुर मुनि सब जिनका गुन गावत झलैं पंख चौरैं। हमारे तन मन चित्त।१८।

जियतै जानि मानि सुख लूटैं ते असुरन तोरैं। हमारे तन मन चित्त।
नाहीं तो यम अन्त पकरि लै चलत न कछु जोरैं। हमारे तन मन चित्त।
हर दम तहँ पर पड़ै पिटाई कहैं अधम चोरैं। हमारे तन मन चित्त।
क्षुदा प्यास हित प्राणी बोलैं मुख में मल घोरैं। हमारे तन मन चित्त।
बांधि अथाह हौज में फेंकैं उठत विकट भौरैं। हमारे तन मन चित्त।
अति अंधियार फिरै चौतरफा हाय हाय औरैं। हमारे तन मन चित्त।२४।

दोहा:- मगन शाह तो मगन हैं लगन लगी निशि वार।
सतगुरु से जप भेद ले सो होवै भव पार।।

३६५ ।। श्री निशाना शाह जी ।।

शेर:- सीखो निशाना नाम का कहते निशाना शाह हैं।
मुरशिद बिना किमि पास हो यह खेल तो अवगाह हैं।१।
दीन बनि लो नाम वल्ली यह मेरी सल्लाह है।
ध्यान करि मुरशिद के लागौ वे चतुर मल्लाह हैं।२।

पद:- लखो नित सन्मुख जनक जमाई।
संग बहू श्री दशरथ जी की शोभा बरनि न जाई।।
राम श्याम रंग परम मनोहर सीता गौर सोहाई।
भक्तन हित सर्गुन तन धरि कै सुर मुनि सुख दियो आई।
एक बार दर्शन हो जिनको छूटै तन मन काई।५।
माया चोर शान्ति ह्वै बैठे सकत न नैन घुमाई।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै नाम खुलै भन्नाई।
हाड़ हाड़ रग रग सब रोवन हर शै में धुनि छाई।
तब मन भागि कहां को जावै हर दम सुनै बधाई।
अमृत पियो मिलैं सब सुर मुनि बिहँसि लेंय उर लाई।१०।
नागिनि जगै चक्र सब बेधै कमलन महक उड़ाई।
आदि पुरुष औ आदि शक्ति जो सब के पितु औ माई।
तिनको छोड़ि ठेकान मिलै कहं जिन सब सृष्टि बनाई।
या से भजन करो नर नारी छोड़ि कै चंचलताई।
कहैं निशाना शाह नहीं तो रोये नहीं सिराई।१६।

शेरः- ख्वाब में गर हों दरस सिय राम राधेश्याम के।
कहते निशाना शाह तन मन शांति हों नर बाम के।।
देव मुनि शक्तिन के तन धरि ठगिनि दर्शन देत हैं।
कहते निशाना शाह तन मन खींचिं सब धन लेत है ।।
सुर मुनि व शक्तिन के दरस से होत तन मन शान्ति है।
कहते निशाना शाह मानौ तब न कोई भ्रान्ति है।।
दीनता औ शान्ति गहि सतगुर कदम की आस लो।
कहता निशाना शाह तन तजि निज वतन में बास लो।।
ठगिनी से बचने का तरीका इस से बढ़ कर है नहीं।
कहते निशाना शाह चेतो सखुन यह मानो सही।५।

३६६ ।। श्री हुल्लर शाह जी ।।

पदः- रेफ विन्दु से राम शब्द भा राम से ॐ बना है।
ॐ से ब्रह्मा विष्णु शम्भु भये सृष्टि का खेल सना है।
सतगुरु करि जप भेद जानं ले ताको शांति मना है।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख रूप तना है।४।
सुर मुनि मिलैं सुने घट अनहद तन के असुर हना हैं।
अमृत पान करै जब चाहै पासै कूप खना है।
मृत्यु दूर ते लखि कर जोरै करि नहिं सकत फना है।
अंत त्यागि तन निजपुर राजै गर्भ न फेरि छना है।८।

३६७ ।। श्री ब्वारा शाह जी ।।

पदः- पावो राम नाम का ह्वारा।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो टूटै द्वैत का द्वारा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि बैठौ हरि के क्वारा।
अनहद सुनो अमी रस चाखो घट में उठत हिलौरा।
सुर मुनि मिलैं सुनावैं हरि यश मग ग्रह तुम्हरे द्वारा।।
सूरति शब्द में तन मन प्रेम से जिन जियते में ज्वारा।६।
तिन सब करतल कीन मगन भे भर्म का भाँडा फ्वारा।
दीनन को उन भेद बताइ के भव का बँधन त्वारा।

सारे असुर भगैं खिसियाई के निज निज मुख को म्वारा।
शांति सत्य विश्वास से भाई ख्याल कीजिये थ्वारा।
तब तो साधन सिध्दि जाय ह्वै नेक न लगै झिक्वारा।
मानो बचन समय मत खोवो बार बार कहैं ब्वारा।१२।

३६८ ।। श्री चर्वन शाह जी ।।

पदः- रेफ विन्दु मे मन रमा तब फिरि विलग किमि जाई है।
धुनि ध्यान नूर समाधि पा विधि का लिखा कटवाई है।
अनहद सुनै कौसर चखै सुर मुनि के संग बतलाई है।
नागिनि जगै चक्कर चलैं सब कमल उलट खिलाई है।
अद्भुत छटा सिंगार छवि सिया राम सन्मुख छाई है।
श्री गरुड़ जी उनके लिये नित दिव्य भोजन लाई है।६।

मुरछल करन हित काक जी चट नील गिरि ते धाइ है।
दीनता औ शांति गहि करि प्रेम खुदी मिटाई है।
निर्वैर निर्भय ते सदा हरि यश विमल बरसाई है।
सब में लखै निज को वो निज में सब को तो लखि पाई है।
सतगुरु बिना यह जाप विधि कोइ नारि नर नहिं पाई है।
तन त्यागि चलि साकेत तब वै फिरि गर्भ न आई है।१२।

३६९ ।। श्री ब्रह्मण्य जी ।।

पदः- सतगुरु बचन जे गहि लिये ते नारि नर जग धन्य हैं।
धुनि ध्यान नूर समाधि में चलि जान एकदम सन्य हैं।
अमृत पियै अनहद सुनै लखि कै सकत नहिं गन्य हैं।
देव मुनि के दरश हों हरि यश सुनैं जी भन्य है।
नागिन जगै चक्कर चलैं सब कमल खिलि कै तन्य हैं।
निर्वैर निर्भय डोलते कोई नेम टेम न ठन्य है।६।

माया असुर यम काल मृत्यु तब उन्हें किमि हन्य हैं।
धर्म राज औ चित्रगुप्त न लेख उनका जन्य है।
ब्रह्म सुख अन भवहिं तन मन ते रहत परसन्य हैं।
सब में अपने इष्ट ही को निरखते नहिं अन्य हैं।

तन त्यागि निज पुर बास ले फिर गर्भ में नहिं घन्य है।
समय स्वांसा तन मिला अनमोल कहत ब्रह्मण्य हैं।१२।

३७० ।। श्री बटावन शाह जी ।।

पदः- भजिये राम नाम अति पावन।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो सूरति शब्द लगावन।
खुलै नाम धुनि रं रं रं रं हर शै से भन्नावन।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि तहां भुलावन।
ज्ञान अगिन में कर्म जांय जरि विधि का लिखा मिटावन।
अमृत पियो सुनो घट अनहद सुर मुनि हंसि उर लावन।६।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं सातों कमल फुलावन।
इड़ा पिंगला जाय एक ह्वै सुखमन घाट नहावन।
विहँग मार्ग ह्वै चलि पश्चिम दिस निज घर लखि हर्षावन।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छवि छावन।
जियतै जानि लेय जो प्रानी मेटै आवन जावन।
शांति दीनता बिन न होय कछु कहते शाह बटावन।१२।

३७१ ।। श्री नक्की शाह जी ।।

पदः- खोलो राम नाम चटशाला।
सतगुरु करि जप भेद जान लो फेरो मन का माला।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय पाय बनों मतवाला।
वेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुरान क्या आला।
गीता रामायण सुर मुनि नित कहैं करो तो ख्याला।५।
अमृत पियो सुनो घट अनहद उठत मधुर है ताला।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं फूलैं कमल विशाला।
इड़ा पिंगला सुखमन होवै होय विहंग की चाला।
सन्मुख आय छटा छवि छावैं प्रिया सहित नन्द लाला।
जियतै पंडित होहु न खंडित मिटै करम गति भाला।१०।
माया असुर भगैं सब तन से मुख निज निज करि काला।
अन्त त्यागि तन अचल धाम लो बनि पितु मातु के लाला।

सूरति शब्द क मारग यह है करि रियाज़ जिन ढाला।
तिनकी गो सारी बध ह्वै गईं भयो सुफ़ल नर छाला।
अजपा जाप हर समय होवै तप धन का भयो टाला।
नक्की शाह कहैं मम बानी सुनि चेतो नर बाला।१६।

३७२ ।। श्री अल्ला जान जी ।।

पदः- राम नाम का कल्प जान लो सतगुरु करि नर नारी जी।
ध्यान प्रकास समाधी होवै सुधि बुधि जहां बिसारी जी।
खुलै धुनी हो रं रं रं रं एक तार रहै जारी जी।
हड्डी हड्डी रग रग बोलै रोम रोम भनकारी जी।
हर शै से तब सुनो कहौ क्या तन मन होय सुखारी जी।५।

अमृत पियो सुनो घट अनहद बाजै न्यारी न्यारी जी।
सुर मुनि मिलैं लिपटि उर लावैं बोलैं हंसि बलिहारी जी।
करैं कीर्तन प्रेम मगन ह्वै नाचि कूद दै तारी जी।
गदगद कंठ टक टकी लागै पलक सकौ नहिं मारी जी।
जियतै मुक्ति भक्ति मिलि जावै विधि गति लात से टारी जी।१०।

पुलकावली नैन जल छूटै चलै मनहु पिचकारी जी।
फूलैं कमल चलैं सब चक्कर नागिन जागै प्यारी जी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सब के पितु महतारी जी।
सन्मुख रहें न अन्तर होवैं सूरति लेहु सँभारी जी।
शेष गणेश पवन सुत लोमश जपैं जिन्हें त्रिपुरारी जी।
अल्ला जान कहैं तन तजि कै बैठौ भवन मँझारी जी।१६।

३७३ ।। श्री गाना शाह जी ।।

पदः- सुनिये रेफ़ बिन्दु का गाना।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो जियति बनो मस्ताना।
होत हर समय रं रं रं रं हर शै से तर्राना।
ध्यान प्रकास समाधी होवै सुधि बुधि जहां भुलाना।४।

सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद करो अमी रस पाना।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं उलटि कमल खिल जाना।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि दर्शन दें मन माना।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन हो साकेत रवाना।८।

३७४ ।। श्री घीसा दास जी ।।

पदः- भजिये पार ब्रह्म रंकारा।
अगम अलेख अपार अकथ औ अकह मिला औ न्यारा।
निराकार अविनाशी निर्गुन जो सब विश्व पसारा।
सो भक्तन संग सरगुन बनिकै संग करत खेलवारा।
सतगुरु करि जप भेद जानि लो नाम खुलै एकतारा।५।

सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमी पियो निशि वारा।
ध्यान परकाश दसा लय जावो कर्म होंय जरि छारा।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं कमलन होय पसारा।
उड़ै तरंग मस्त हो तन मन नैन चलै जल धारा।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख लो दीदारा।१०।

ईड़ा पिंगला जाय एक ह्वै तब हो सुखमन प्यारा।
विहंग मार्ग से चलि कै प्राणी निज घर देखै सारा।
पांचों तत्वन के रंग दर्शैं सुन्दर हो झलकारा।
चारों तन जब सोधन होवैं टूटै द्वैत केंवारा।
निज तन अमित सामने आवै चमकै रवि शशि तारा।१५।

माया मृत्यु काल सब यमगण लखि कै खांय पछारा।
सूरति शब्द का मारग यह है जियतै करत सँभारा।
नर नारी सुन चेत जाव लगि मानो वचन हमारा।
अन्त त्यागि तन चढ़ सिंहासन बैठो भवन मंझारा।
घीसा दास कहैं तब जान्यो मिट्यो जगत का भारा।२०।

३७५ ।। श्री फलक शाह जी ।।
(मुकाम शिकोहाबाद)

पदः- सुमिरन बिना यम दूत गहैं आय एक दिन।
अब ही तो नहीं चेत को छोड़ाय एक दिन।
मुरशिद करो पावो पता दुख जाय एक दिन।

धुनि ध्यान नूर लय मिलै मन भाय एक दिन।
अमृत चखो अनहद सुनो अघाय एक दिन।५।

सुर मुनि मिलैं लिपटि कै मुस्कियाय एक दिन।
नागिन जगै चक्कर चलैं भन्नाय एक दिन।
फूलैं कमल तरँग क्या गमकाय एक दिन।
सन्मुख में राम सीता छवि छाय एक दिन।
तन त्यागि पास बास हो यश पाय एक दिन।१०।

३७६ ।। श्री मौला जान जी रण्डी ।।

पदः- सतगुरु करैं ते नारि नर सुख पांय दिनों दिन।
लय ध्यान नूर औ धुनी खुलि जाय दिनों दिन।
अमृत चखै अनहद भी घट चटकाय दिनों दिन।
सुर मुनि से होंय बातैं मुसक्याय दिनों दिन।
नागिन जगैं सब चक्कर भन्नाय दिनों दिन।५।

फूलैं कमल अजब सुगन्ध आय दिनों दिन।
भैरों जी मधुर भोजन करवांय दिनों दिन।
झारी में वीरभद्र जी जल लांय दिनों दिन।
सन्मुख में विष्णु कमला छवि छाय दिनों दिन।
तन त्यागि पास वास ले न आय दिनों दिन।१०।

३७७ ।। श्री नवी जान जी रण्डी ।।

पदः- सतगुरु करैं ते नारि नर सुख पांय सभी दिन।
परकास ध्यान लय धुनी भन्नाय सभी दिन।
अनहद सुनै कौसर पियै हर्षाय सभी दिन।
सुर मुनि मिलैं विहँसि के गले लाय सभी दिन।
नागिन जगै षट चक्र भी घुमराय सभी दिन।५।

सातों कमल खिलैं तरंग आय सभी दिन।
तांडव क नृत्य शिव जी दिखलांय सभी दिन।
बजरंग संग में गदा फिरांय सभी दिन।
तन त्यागि राम धाम ले बनि जाय सभी दिन।९।

३७८ ।। श्री रबी जान जी रण्डी ।।

पदः- सतगुरु करैं ते नारि नर सुख पाँय दिन पै दिन।
धुनि ध्यान नूर लय में चलि समांय दिन पै दिन।
अमृत पियें अनहद सुनैं चटकांय दिन पै दिन।
सुर मुनि मिलैं लपटि के हँसि बतलांय दिन पै दिन।
नागिन जगै सब चक्र भी भन्नाय दिन पै दिन।५।

फूलैं कमल सुगन्ध मन्द आय दिन पै दिन।
खाना खिलावैं काली जी लाय दिन पै दिन।
जल अति सुगन्ध दार दुर्गा प्यांय दिन पै दिन।
सन्मुख में श्याम श्यामा छवि छांय दिन पै दिन।
तन त्यागि कर जहां में न चकरांय दिन पै दिन।१०।

३७९ ।। श्री शान्ति सिंह जी ।।

दोहाः- जनमेजय आसतीक का तीन वेर ले नाम।
ताली देय बजाय फिर एक वार निज धाम।१।
सर्प निकर गृह ते चलैं रहैं न फिर वहि ठौर।
कहैं शान्ति सिंह मम वचन मानि लेव करि गौर।२।

३८० ।। श्री धर्म सिंह जी ।।

दोहाः- कबिता ज्योतिष व्याकरण अन्त देंय नहि काम।
यह संसार क खेल है जानि लेव हरि नाम।।

चौपाईः- सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो। तन मन प्रेम से ताना तानो।
ध्यान धुनी परकाश समाधी। तै करि मेटो सकल उपाधी।
कुण्डलिनी जाग्रत ह्वै जावै। सब लोकन कै दरश करावै।
षट चक्कर वेधैं घुमरावैं। सातों कमल फूल तब जावैं।४।

उड़ै सुगन्ध कहौ का मुख से। हर दम मस्त रहौ तब सुख से।
सुर मुनि शक्तिन संघ बतलावौ। अनहद सुनो अमी रस पावो।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि। सन्मुख निरखो जियति जाव तर।
धर्म सिंह कहैं मानो बाता। करि अभ्यास लखौ अब ताता।८।

दोहाः- देरी करना ठीक नहीं धर्म सिंह कह भाय।
ना मालुम किस समय में काल पकड़ि ले जाय।

३८१ ।। श्री ठाकुर दुनिया सिंह जी ।।

पदः- भजन बिन काल अचानक खाय।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो तब नहिं कुछ करि पाय।
ध्यान परकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख परभू छवि छाय।
सुर मुनि आवैं हरि गुण गावैं जय जय कार सुनाय।४।

अनहद सुनो पियो नित अमृत ताल भरे हहराय।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं कमलन महक उड़ाय।
सूरति शब्द का मारग यह है जानि लेव सुखदाय।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो गर्भवास मिट जाय।८।

३८२ ।। श्री महाराना प्रताप सिंह जी ।।

चौपाईः- क्षत्री होकर धर्म न छोड़ै। समर भूमि चल मुख मति मोड़ै।।
अन्त त्यागि तन हरि पुर जावै। जहां क सुक्ख वरनि को पावै।२।

३८३ ।। श्री सीता जी ।।
(अद्वैताचार्य्य जी की धर्म पत्नी)

पदः- सुनो नर नारि सतगुरु करि भजो प्रिय श्याम लखि पावो।
ध्यान परकाश लय धुनि हो देव मुनि संग बतलावो।
सुनो अनहद पिओ अमृत रहौ निर्वैर मुसक्यावो।
कहैं सीता अन्त तन तजि न जग में फेरि चकरावो।४।

३८४ ।। श्री रतन दास जी ।।

पदः- सतगुरु करो लखौ सुनो घट ही में कीर्तन।
सुर मुनि सभी हैं कर रहें कैसे मृदुल वचन।
शोभा श्रंगार क्या कहूँ कोमल अजब वदन।
एक बार जाय जो वहां लेते लोभाय मन।४।

तहां बीच में विराजैं प्रिय श्याम जग के धन।
फिर आस पास गोपी ग्वाल नाच में मगन।

धुनि ध्यान नूर लय मिलै फिर अन्त निज वतन।
गुनि मानो भाई बहिनों कहत जो रतन।८।

३८५ ।। श्री ठाकुर यतन सिंह जी कलहंस ।।

पदः- सतगुरु से जप की लीजै जतन। हर दम तब रहियो यार मगन।।
धुनि ध्यान परकाश समाधि में सन। सुर मुनि सब दर्शैं सुघर वदन।।
सन्मुख छवि गौर औ नील बरन। सिया राम विराजैं आनन्द घन।।
जियतै मिट जावै जग की लगन। तन तजि निज पुर लो कहत जतन।८।

३८६ ।। श्री भाग्यवती माई जी ।।

पदः- लेटे बैठे खड़े चलते सुनो।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानौ तन मन प्रेम लगाय शब्द धुनौ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होय जियत दोऊ कर्म भुनो।
सुर मुनि मिलैं सुनावैं हरि यश मन मानै नित राग चुनौ।
सन्मुख श्यामा श्याम की झांकी कीन चहौ मम बैन गुनौ।
अन्त त्यागि तन निजपुर बैठौ जग में काहे फिरि घुनौ।६।

३८७ ।। श्री लीलाबती माई जी ।।

पदः- करते श्याम नज़र लखौ टेढ़ी।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानौ फूटै द्वैत की मेढ़ी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय जाव बनि खेढ़ी।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद कौन सकै तब वेढ़ी।४।

३८८ ।। श्री मुंडा बाज नट जी ।।

पदः- सतगुरु करो मारग गहौ सारे असुर तन से भगैं।
परकाश ध्यान समाधि धुनि हो श्रवन रोम औ रग जगै।
नैन फल पावै सामने राम सीता जगमगैं।
प्रेम से करि कीर्तन सुर मुनि दरश देने लगैं।
अमृत चखौ अनहद सुनो तब कवन फिरि तुमको ठगैं।
त्यागि तन निज धाम लो जहँ राम खुद निज रंग रंगै।६।

३८९ ।। श्री घण्टा बाज नट जी ।।

पदः- मन मन्दिर में बीज अस्थापौ।

विधवत कृत जानि सतगुरु से जियतै भव दुख ढांपौ।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय पास न मांझा नापौ।

सुर मुनि सब के दरश होंय नित अनहद सुनौ अलापौ।

सन्मुख राम सिया रहैं हर दम नैन खुलै चहै झांपौ।

अन्त त्यागि तन निजपुर राजौ फिर क्यों गर्भ में कांपौ।६।

३९० ।। श्री कटार बाज नट जी ।।

पदः- मन मन्दिर में नाम पधारो।

सांगो पांग जानि सतगुरु से जियतै भव दुख टारो।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सुनो होत रंकारो।

सुर मुनि मिलैं बजै घट अनहद पियो अमी मतवारो।४।

स्वाद बताय सकौ का भाई नहिं खट्टा नहिं खारो।

श्यामा श्याम सामने राजैं जिन सब जगत संवारो।

निर्भय औ निर्वैर जाव ह्वै शान्ति दीनता धारो।

अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो गर्भ में पगि मति डारो।८।

३९१ ।। श्री सिपाही बाज नट जी ।।

पदः- राखो राम नाम पर ख्याल।

सतगुरु करि जप भेद जान लो जियत बनो मतवाल।

ध्यान धुनी परकाश दसा लय सुनिये अनहद ताल।

अमृत पियो देव मुनि आवैं प्रेम करैं जिमि बाल।

हर दम सन्मुख में छवि छावैं श्री राधे नन्दलाल।

अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो काह करैं यम काल।६।

३९२ ।। श्री कबूतर बाज नट जी ।।

पदः- कीजै राम नाम का ध्यान।

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो खुल जांय आंखी कान।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रोम रोम हो आन।

अनहद सुनो देव मुनि दर्शैं करौ अमी रस पान।

सीता राम सामने राजैं जो सब जीवन जान।
अन्त त्यागि तन निज पुर चलिये बैठि के सुभग विमान।६।

३९३ ।। श्री बन्दूक बाज नट जी ।।

पदः- कीजै बीज मंत्र की जाप।
सतगुरु करि जप भेद जानि कै बैठ जाव चुप चाप।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि खुलि जाय आपै आप।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद असुर भगैं सब कांप।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सनमुख जावैं छाप।
अन्त छोड़ि तन निज पुर बैठो फिर न परौ भव ताप।६।

३९४ ।। श्री तलवार बाज नट जी ।।

पदः- धरिये सूरति शब्द पै भाई।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो तन मन प्रेम लगाई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन खुल जाई।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै पियो अमी हर्षाई।४।
नागिन जगै लोक सब देखो षट चक्कर घुमराई।
सातौं कमल खिलैं क्या सुन्दर स्वरन से महक उड़ाई।
राम सिया हर दम रहें सन्मुख विश्व के जे पितु माई।
अन्त त्यागि तन निजपुर राजौ छूटै गर्भ झुलाई।८।

३९५ ।। श्री घुंघरू बाज नट जी ।।

पदः- सूरति रेफ बिन्दु पै दीजै।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो वृथा न आयु द्वीजै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि अनहद घट सुन लीजै।
अमृत पियो देव मुनि दर्शै बात सबन संघ कीजै।
सीता राम सामने राजैं कौन तुम्हैं फिर मीजै।
अंत त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निज पुर को चल दीजै।६।

३९६ ।। श्री पहलवान बाज नट जी ।।

पदः- जपिये सोहं का आधार।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो जियत होहु भवपार।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रं रं हो एक तार।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमी पियो निशवार।
सीता राम सामने राजैं साजे अजब श्रंगार।
अंत त्यागि तन निजपुर बैठो पड़ो न गर्भ मंझार।६।

३९७ ।। श्री कमान बाज नट जी ।।

पदः- भजिये ओंकार का प्रान।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो छूटै जग दौरान।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम की रं रं रं हो तान।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शं करो अमी नित पान।
श्यामा श्याम सामने राजैं जो सब सुख की खानि।
अन्त छोड़ि तन निज पुर बैठो मिटै गर्भ लटकान।६।

३९८ ।। श्री बरछी बाज नट जी ।।

पदः- अजपा जाप सत्य रंकार।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो मिलि जावै सुखसार।
ध्यान धुनी प्रकाश दसा लय अनहद की गुमकार।
अमृत पियौ गगन ते टपकै करैं देव मुनि प्यार।
राम सिया प्रिय श्याम सामने साजैं सुभग श्रंगार।
अंत त्यागि तन श्याम रूप बनि बठौ भवन मंझार।६।

३९९ ।। श्री कैबर बाज नट जी ।।

पदः- अजपा रेफ बिन्दु सुखदाई।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो तव मुद मंगल आई।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय सुध बुध जहां हेराई।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि लें उर लाई।
रेफ़ पिता हैं राम विष्णु के बिन्दु जानकी माई।५।
हर दम सन्मुख में छवि छावैं शोभा बरनि न जाई।
अचल अखंड औ सहज समाधी यही कहावै भाई।
नाम की धुनि हर शै से होती सब में रूप देखाई।
राज योग या को सब कहते सूरति शब्द में लाई।
अंत छोड़ि तन राम धाम चलि बैठ जाव चुपकाई।१०।

४०० ।। श्री तमँचा बाज नट जी ।।

दोहाः- बेदन ते धुनि होत जो सतगुरु करि लेव जान।
ध्यान प्रकाश समाधि हो सन्मुख सिय-भगवान।।

४०१ ।। श्री वल्लम बाज नट जी ।।

दोहाः- श्रुति से जो धुनि होत है सतगुरु करि लेव जान।
ध्यान प्रकाश समाधि हो निरखौ प्रिय भगवान।।

४०२ ।। श्री लढ़ा बाज नट जी ।।

पदः- जियतै ब्रह्म परायन बनिये सतगुरु करिके नर औ नारी।
ध्यान परकाश समाधि नाम धुनि करम देय दोऊ जारी।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमृत पियो संभारी।
हर दम सन्मुख में तब राजैं राधे सहित मुरारी।
जिनका विश्व रचा है जानो बांटत हैं फल चारी।
अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो भव दुख लात से टारी।६।

४०३ ।। श्री पंडित गोपीनाथ जी ।।

पदः- सतगुरु बिना हरि नाम जप का भेद कोई पाया नहीं।
धुनि ध्यान लय परकाश अनहद साज सुनि पाया नहीं।
देव मुनि संग कीर्तन करि प्रेम उमड़ाया नहीं।
श्याम श्यामा की छटा छवि सामने छाया नहीं।
दीनता औ शान्ति इन्द्री दमन गुन आया नहीं।
कहते हैं गोपी नाथ तन तजि अचल पुर ध्याया नहीं।६।

कीर्तनः- सिया राम हरे सिया राम हरे सिया राम हरे कहना चाहिये।
प्रिय श्याम हरे प्रिय श्याम हरे प्रिय श्याम हरे कहना चाहिये।
रमा विष्णु हरे रमा विष्णु हरे रमा विष्णु हरे कहना चाहिये।
उमा शम्भू हरे उमा शम्भू हरे उमा शम्भू हरे कहना चाहिये।४।

सिया राम नमो सिया राम नमो सिया राम नमो कहना चाहिये।
प्रिय श्याम नमो प्रिय श्याम नमो प्रिय श्याम नमो कहना चाहिये।
रमा विष्णु नमो रमा विष्णु नमो रमा विष्णु नमो कहना चाहिये।
उमा शम्भु नमो उमा शम्भु नमो उमा शम्भु नमो कहना चाहिये।८।

जय राम सिया जय राम सिया जय राम सिया कहना चाहिये।
जय श्याम प्रिया जय श्याम प्रिया जय श्याम प्रिया कहना चाहिये।
जय विष्णु रमा जय विष्णु रमा जय विष्णु रमा कहना चाहिये।
जय शम्भु उमा जय शम्भु उमा जय शम्भु उमा कहना चाहिये।१२।

श्री राम सिया श्री राम सिया श्री राम सिया कहना चाहिये।
श्री श्याम प्रिया श्री श्याम प्रिया श्री श्याम प्रिया कहना चाहिये।
श्री विष्णु रमा श्री विष्णु रमा श्री विष्णु रमा कहना चाहिये।
श्री शम्भु उमा श्री शम्भु उमा श्री शम्भु उमा कहना चाहिये।१६।

(२)

राम राम हरे राम राम हरे राम राम हरे रटि लावो तो।
श्याम श्याम हरे श्याम श्याम हरे श्याम श्याम हरे रटि लावो तो।
विष्णु विष्णु हरे विष्णु विष्णु हरे विष्णु विष्णु हरे रटि लावो तो।
शम्भु शम्भु हरे शम्भु शम्भु हरे शम्भु शम्भु हरे रटि लावो तो।४।

जय राम हरे जय राम हरे जय राम हरे रटि लावो तो।
जय श्याम हरे जय श्याम हरे जय श्याम हरे रटि लावो तो।
जय विष्णु हरे जय विष्णु हरे जय विष्णु हरे रटि लावो तो।
जय शम्भु हरे जय शम्भु हरे जय शम्भु हरे रटि लावो तो।८।

श्री राम हरे श्री राम हरे श्री राम हरे रटि लावो तो।
श्री श्याम हरे श्री श्याम हरे श्री श्याम हरे रटि लावो तो।
श्री विष्णु हरे श्री विष्णु हरे श्री विष्णु हरे रटि लावो तो।
श्री शम्भु हरे श्री शम्भु हरे श्री शम्भु हरे रटि लावो तो।१२।

नमो राम हरे नमो राम हरे नमो राम हरे रटि लावो तो।
नमो श्याम हरे नमो श्याम हरे नमो श्याम हरे रटि लावो तो।
नमो विष्णु हरे नमो विष्णु हरे नमो विष्णु हरे रटि लावो तो।
नमो शम्भु हरे नमो शम्भु हरे नमो शम्भु हरे रटि लावो तो।१६।

(३)

सीता राम हरे सीता राम हरे सीता राम हरे भजि लीजै जी।
राधे श्याम हरे राधे श्याम हरे राधे श्याम हरे भजि लीजै जी।

रमा विष्णु हरे रमा विष्णु हरे रमा विष्णु हरे भजि लीजै जी।
उमा शम्भु हरे उमा शम्भु हरे उमा शम्भु हरे भजि लीजै जी।४।

सीता राम नमो सीता राम नमो सीता राम नमो भजि लीजै जी।
राधे श्याम नमो राधे श्याम नमो राधे श्याम नमो भजि लीजै जी।
रमा विष्णु नमो रमा विष्णु नमो रमा विष्णु नमो भजि लीजै जी।
उमा शम्भु नमो उमा शम्भु नमो उमा शम्भु नमो भजि लीजै जी।८।

श्री सीता राम श्री सीता राम श्री सीता राम भजि लीजै जी।
श्री राधे श्याम श्री राधे श्याम श्री राधे श्याम भजि लीजै जी।
श्री रमा विष्णु श्री रमा विष्णु श्री रमा विष्णु भजि लीजै जी।
श्री उमा शम्भु श्री उमा शम्भु श्री उमा शम्भु भजि लीजै जी।१२।

जय सीता राम जय सीता राम जय सीता राम भजि लीजै जी।
जय राधे श्याम जय राधे श्याम जय राधे श्याम भजि लीजै जी।
जय रमा विष्णु जय रमा विष्णु जय रमा विष्णु भजि लीजै जी।
जय उमा शम्भु जय उमा शम्भु जय उमा शम्भु भजि लीजै जी।१६।

(४)

राम राम नमो राम राम नमो राम राम नमो जप करिये हो।
श्याम श्याम नमो श्याम श्याम नमो श्याम श्याम नमो जप करिये हो।
विष्णु विष्णु नमो विष्णु विष्णु नमो विष्णु विष्णु नमो जप करिये हो।
शम्भु शम्भु नमो शम्भु शम्भु नमो शम्भु शम्भु नमो जप करिये हो।४।

जय राम नमो जय राम नमो जय राम नमो जप करिये हो।
जय श्याम नमो जय श्याम नमो जय श्याम नमो जप करिये हो।
जय विष्णु नमो जय विष्णु नमो जय विष्णु नमो जप करिये हो।
जय शम्भु नमो जय शम्भु नमो जय शम्भु नमो जप करिये हो।८।

श्री राम नमो श्री राम नमो श्री राम नमो जप करिये हो।
श्री श्याम नमो श्री श्याम नमो श्री श्याम नमो जप करिये हो।
श्री विष्णु नमो श्री विष्णु नमो श्री विष्णु नमो जप करिये हो।
श्री शम्भु नमो श्री शम्भु नमो श्री शम्भु नमो जप करिये हो।१२।

हरे राम नमो हरे राम नमो हरे राम नमो जप करिये हो।
हरे श्याम नमो हरे श्याम नमो हरे श्याम नमो जप करिये हो।

हरे विष्णु नमो हरे विष्णु नमो हरे विष्णु नमो जप करिये हो।
हरे शम्भु नमो हरे शम्भु नमो हरे शम्भु नमो जप करिये हो।१६।

(५)

श्री राम सिया श्री राम सिया श्री राम सिया कीर्तन कीजिये।
श्री श्याम प्रिया श्री श्याम प्रिया श्री श्याम प्रिया कीर्तन कीजिये।
श्री विष्णु रमा श्री विष्णु रमा श्री विष्णु रमा कीर्तन कीजिये।
श्री शम्भु उमा श्री शम्भु उमा श्री शम्भु उमा कीर्तन कीजिये।४।

जय राम सिया जय राम सिया जय राम सिया कीर्तन कीजिये।
जय श्याम प्रिया जय श्याम प्रिया जय श्याम प्रिया कीर्तन कीजिये।
जय विष्णु रमा जय विष्णु रमा जय विष्णु रमा कीर्तन कीजिये।
जय शम्भु उमा जय शम्भु उमा जय शम्भु उमा कीर्तन कीजिये।८।

हरे राम सिया हरे राम सिया हरे राम सिया कीर्तन कीजिये।
हरे श्याम प्रिया हरे श्याम प्रिया हरे श्याम प्रिया कीर्तन कीजिये।
हरे विष्णु रमा हरे विष्णु रमा हरे विष्णु रमा कीर्तन कीजिये।
हरे शम्भु उमा हरे शम्भु उमा हरे शम्भु उमा कीर्तन कीजिये।१२।

नमो राम सिया नमो राम सिया नमो राम सिया कीर्तन कीजिये।
नमो श्याम प्रिया नमो श्याम प्रिया नमो श्याम प्रिया कीर्तन कीजिये।
नमो विष्णु रमा नमो विष्णु रमा नमो विष्णु रमा कीर्तन कीजिये।
नमो शम्भु उमा नमो शम्भु उमा नमो शम्भु उमा कीर्तन कीजिये।१६।

(६)

हरे राम सिया हरे राम सिया हरे राम सिया कहि कहि नाचो।
हरे श्याम प्रिया हरे श्याम प्रिया हरे श्याम प्रिया कहि कहि नाचो।
हरे विष्णु रमा हरे विष्णु रमा हरे विष्णु रमा कहि कहि नाचो।
हरे शम्भु उमा हरे शम्भु उमा हरे शम्भु उमा कहि कहि नाचो।४।

नमो राम सिया नमो राम सिया नमो राम सिया कहि कहि नाचो।
नमो श्याम प्रिया नमो श्याम प्रिया नमो श्याम प्रिया कहि कहि नाचो।
नमो विष्णु रमा नमो विष्णु रमा नमो विष्णु रमा कहि कहि नाचो।
नमो शम्भु उमा नमो शम्भु उमा नमो शम्भु उमा कहि कहि नाचो।८।

जय राम सिया जय राम सिया जय राम सिया कहि कहि नाचो।
जय श्याम प्रिया जय श्याम प्रिया जय श्याम प्रिया कहि कहि नाचो।
जय विष्णु रमा जय विष्णु रमा जय विष्णु रमा कहि कहि नाचो।
जय शम्भु उमा जय शम्भु उमा जय शम्भु उमा कहि कहि नाचो।१२।

श्री राम सिया श्री राम सिया श्री राम सिया कहि कहि नाचो।
श्री श्याम प्रिया श्री श्याम प्रिया श्री श्याम प्रिया कहि कहि नाचो।
श्री विष्णु रमा श्री विष्णु रमा श्री विष्णु रमा कहि कहि नाचो।
श्री शम्भु उमा श्री शम्भु उमा श्री शम्भु उमा कहि कहि नाचो।१६।

४०४ ।। श्री कम्मल शाह जी ।।

पदः- पढ़े सुने का ज्ञान है भौंक। साधन बिना सकल नहिं लौंक।
लै यम नर्क में देवैं छौंक। भूलि जाय सब झूठी शौक।
सतगुरु करि अब जावो चौंक। जियतै छूटै भव की चौंक।
बात कहैं हम सब के गौंक। या में मानो पड़े न रौंक।
तन मन प्रेम में दीजै घौंक। उघरै ढक्कन नाम की खौंक।१०।

टूटि जाय तब द्वैत की वोंक। नर तन धन्य मिला क्या मौक।
ध्यान समाधि में जावो पौक। सन्मुख श्याम मिली क्या धौक।१४।

४०५ ।। श्री पंडित मुक्त नाथ जी ।।

पदः- प्रेम भक्ती बिना प्रेम भक्ती बिना प्रेम भक्ती बिना गति होती नहीं।
सतगुरु करिये सतगुरु करिये सतगुरु करिये मानो वैन सही।
धुनि ध्यान खुलै धुनि ध्यान खुलै परकाश दसा लय जाय लही।
मुनि देव मिलैं मुनि देव मिलैं घट अनहद सुनिये बाजि रही।
सन्मुख हर दम सन्मुख हर दम प्रिय श्याम छटा छवि छाय रही।५।

जियतै जानो जियतै जानो सो भव न परै सुर वेद कही।
शान्ति दीन बनै शान्ति दीन बनै घट ही में धरी खुल जाय वही।
नहि द्वैत रहै नहि द्वैत रहै तन शोधन हो फिर कौन गही।
जेहि दिशि ताकै जेहि दिशि ताकै जेहि दिशि ताकै सर्वत्र वही।
जप छूटि गयो जप छूटि गयो जप छूटि गयो नहिं माल चही।१०।

४०६ ।। श्री अनन्य दास जी ।।

पदः- सांचे भक्त अनन्य कहावैं।
सतगुरु से जप भेद जान के तन मन प्रेम से ध्यावै।
ध्यान प्रकाश समाधि होवै शुभ औ अशुभ जरावै।
राम नाम धुनि रग रोवन औ हर शै से सुनि पावै।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छवि छावै।५।

सुर मुनि दर्शन दें आय नित हर्ष के उर में लावैं।
अनहद सुनैं बजै घट हर दम अमी पाय हर्षावैं।
नागिन जगै चक्र षट वेधैं सातों कमल खिलावैं।
सब में अपने इष्ट को देखैं जियतै भेद मिटावैं।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठैं फेरि न जग में आवैं।१०।

पढ़ि सुन के जे बातैं करते ते फिर धोका खावैं।
विषय वासना संग न छोड़े बार बार चकरावैं।
झूठे भक्त उन्हीं को कहते सुर मुनि बेद बतावैं।
नाम रूप को जान्यो नाहीं समय अमोल गंवावैं।
राम कृष्ण औ विष्णु नाम सुनि रिस कर गाल फुलावैं।१५।

उन सम अधम और को जग में निज सिर पाप चढ़ावैं।
उनके गुरु वैसे ही जानो जे यह सीख सिखावैं।
सत्य कहौ तो झूंठ मानि कै उठ चट मारन धावैं।
माया जाल में ऐसे भूले मन मानी नित गावैं।
आखिर का परिनाम बुरा है मुख में मसी लगावैं।२०।

४०७ ।। श्री नर हरि सोनार जी ।।
(शिष्य श्री ज्ञानेश्वर महाराज)

पदः- त्रिवेनी नहावो मन चन्दै।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो जियत मिटावौ भव फन्दै।
ध्यान परकाश समाधि नाम धुनि पाय जाव बनि निर्द्वन्दै।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद होय ना फिर कबहुं बन्दै।
श्यामा श्याम सामने राजैं जे सब विश्व के सुख कन्दै।
नर हरि कहैं अन्त निजपुर लो जहं हर दम परमानन्दै।५।

४०८ ।। श्री शीलवती जी ।।

चौपाईः- मुरली अधर पर धारे सन्मुख विराजैं बालम।
हैं वाम भाग राधे संग देव मुनि क आलम।।

४०९ ।। श्री क्षिमावती जी ।।

चौपाईः- सन्मुख लखौ खड़े हैं मन मोहन प्यारे सइयां।
हैं वाम दिश में राधे मुनि देव पड़ते पइयां।।

४१० ।। श्री शिव प्यारी माई जी ।।

चौपाईः- मुक्ति भक्ति प्रेम की नारी। प्रेम करौ होवै सुख भारी।
सन्मुख राजैं प्रिय वनवारी। सुर मुनि मिलैं करैं बलिहारी।
ध्यान समाधि धुनी उजियारी। अनहद सुनो बजै हर वारी।
अमृत पियो भरी घट क्यारी। शुभ औ अशुभ होंय जरि छारी।४।

सतगुरु करि गुनिये नर नारी। दुर्लभ तन यह लेहु संभारी।
शान्ति दीनता ले उर धारी। लागि जाय तब प्रेम की तारी।
जियतै जीति लेव भव पारी। तन तजि बैठो भवन मंझारी।
सब से विनय करैं शिव प्यारी। ना मानै सो रहै दुखारी।८।

४११ ।। श्री रामचन्द्र खां जी ।।

(शिष्य श्री गौरांग जी)

पदः- सदगुरु करो हरि नाम लो दर्शै कन्हैया राधिका।
धुनि ध्यान लय परकाश हो दुख भगै सकल उपाधि का।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत पियो निज साधिका।
अन्त तन तजि चलो निज पुर जहां नाम न व्याधि का।४।

४१२ ।। श्री हबीबा रण्डी जी ।।

(मिती अगहन वदी २ सम्वत १९९३ विक्रमी)

पदः- सतरह वर्ष बाद भारत में भारी सुख सौ वर्ष को होय।
सम्वत २००० बीतत समय जाय वह खोय।
स्वामी रामानन्द गये कहि मानि लेव सब कोय।
मोहन दास कबीर की ज्योती दुख दरिद्र दे धोय।४।

राम नाम का प्रेमी पक्का सूरति दीन मिलोय।
ध्यान परकाश समाधि औ दर्शन अब ही उन्हें न होय।
जवन कार्य्य हित प्रभु ने भेजा तवन देंय जब पोय।
कहे हबीबा हरि की इच्छा कवन लगावै दोय।८।

४१३ ।। श्री गल्ला शाह जी ।।

पदः- बकाने में नहीं आया न यह मुझको सुहाया है।
सूचना पहले ही से देने को चलि यहं पै आया है।
समय नगिचा रहा श्री स्वामी रामानन्द जी ने जो बताया है।
करम चन्द गांधी का सुत हो के मोहन दास आया है।
अंश श्री कबीर का जानो अजब कौतुक दिखाया है।५।
देश उद्धार हित भाई भुजा दोनों उठाया है।
करैं उद्धार भारत का नाम हरि का मन भाया है।
२००० सम्वत बीते पर होय सुख जो सुनाया है।
सदा हरि नाम को सुमिरो उन्हीं की सब यह माया है।
कहैं गल्ला वचन मानो विश्व उन्हीं का जाया है।१०।

४१४ ।। श्री नजूमा जी रण्डी ।।

पदः- सम्वत दो हजार जब बीतै जानो सुख भारत में होय।
स्वामी रामानन्द की वानी कहि सकै को धोय।
लाय गांधी नाम की आंधी देंय उपाधी खोय।
जनता सब समता से निर्मल होवै जैसे तोय।
जप पूजन कीरतन पाठ औ हवन बीज जाय बोय।
कहै नजूमा दुख तब आपै भागैं सारे रोय।६।

४१५ ।। श्री हल्ला शाह जी ।।

पदः- करम चन्द गांधी का लाला मोहन दास कबीर का अंश।
स्वामी रामानन्द गये कहि करै दुःख विध्वंश।
कथा कीरतन सुमिरन पूजन धर्म कै बाढ़े बन्स।
सम्वत दो हजार जब बीतै छूटै सब अवतन्स।
भारत देश में देखो भाई बकन के हों बहु हंस।
हल्ला कहैं नारि नर त्यागैं जवन शब्द अपभ्रंस।६।

४१६ ।। श्री हलीमा जी रण्डी ।।

पदः- कांग्रेस कमेटी अब तो जीतेगी मान लीजै।
श्री स्वामी रामानन्द के वचनों पै ध्यान दीजै।
प्रगटै हैं वैश्य कुल में मोहन दास जान लीजै।
होगा उन्हीं से देश का उद्धार छान लीजै।
सम्वत २००० को आकर के जाने दीजै।५।

फिर दिन पर दिन बढ़े सुख काहे किसान मींजै।
सतरह वरस के बीते सब सुख की खानि लीजै।
सुमिरन औ पाठ पूजन कीरतन औ गान कीजै।
पट अन्न प्रेम से फिर नित चाहै दान कीजै।
निर्वैर और निर्भय तब कौन तुमको मीजै।१०।

अब ही से भाई बहिनों तजि शान मान दीजै।
तन मन व प्रेम से चल सतगुरु से ज्ञान लीजै।
अपने से यह न मिलता हा कुल की कान छीजै।
धुनि ध्यान नूर औ लय हरि से पहिचान कीजै।
यह बैन जो कहै हम सो उर में ठान लीजै।
कहती हलीमा जागो अब आंखी कान कीजैं।१६।

४१७ ।। श्री हलचल शाह जी ।।

चौपाईः- राम ने रावन कुल संहारा। सब को फिर बैकुंठ बिठारा।।
कृष्ण ने कंस को पटक के मारा। चट बैकुंठ को ताहि पंवारा।।
गांधी गौरमेन्ट संग लागे। तब से बहुत जीव हैं जागे।।
मोहन दास नाम कहवावा। बालक तरुण वृद्ध मन भावा।।
सब के उर में कीन्ह प्रवेशा। शान्ति दीन साधारण भेशा।५।

गुजर बसर भर बसन अहारा। सो सब जानत नर औ दारा।।
सन्त के लक्षण जवन कहावैं। निर्भय नेक शंक नहिं लावैं।।
राम नाम तन मन से ध्यावैं। या के बल सब दुःख नशावैं।।
श्री कबीर की ज्योति हैं भाई। स्वामी रामानन्द बताई।।
भारत देश सुधारन आये। दाया करि प्रभु स्वयं पठाये।१०।

दो हजार जब बीते जब सम्बत। वैसे देश मे होवै सम्मत।।
सतरह बरस जब ह्वै जावैं। तब सब जन्ता सुखी कहावैं।।
बिना प्रताप होय नहिं कामा। गुनिये कैसा जग में नामा।।
सौ वर्ष भारत सुख सोई। पाप ताप सब जावे धोई।।
पूजा पाठ कीरतन गाना। सुमिरन हवन धर्म हों नाना।।
या में संशय तनिको नाहीं। सत्य कहैं हल चल तुम पाहीं।१६।

दोहाः- करम चन्द पत्नी सहित हरिपुर बैठक लीन्ह।
हल चल कह मानो वचन ठीक भेद कहि दीन्ह।।

४१८ ।। श्री एक नाथ जी ।।

(शिष्य श्री जनार्दन स्वामी जी)

पदः- कहैं एक नाथ मोंहि सतगुरु ज्ञान दीन्हो
शब्द पै सुरति धरि द्वैत को भगायो है।
नाम धुनि एक तार रोम रोम झनकार
ध्यान परकाश पाय शून्य में समायो है।
सुर मुनि वसुयाम दरश देत हर ठाम
प्रिय श्याम छटा छवि सन्मुख छायो है।
अनहद नाद ताल तन मन माहिं साल
राग औ रागिनी कुटुम्ब दर्शायो है।
पांच तत्व चारि तन पांच मुद्रा सोधि लीन
कोटिन शरीर निज देखने में आयो है।५।

शक्ति नागिनी जगाय लोक सब देखा जाय
षट चक्र बेधे सातों पदुम खिलायो है।
गगन ते अमी झरै कहत ना स्वाद सरै
उड़त तरंग प्यारी हिय हर्षायो है।
हरि यश नित्य कह्यों दुःख सुख सम सह्यों
शान्ति दीनता की गोद ठीक ठौर पायो है।
सेवा सत्कार करि सर्व जाति मन भरि
जियतै में गयन तरि सत्य सब सुनायो है।
अन्त समय तन छोड़ि जगत से मुख मोड़ि
बैठि कै विमान राम धाम को सिधायो है।१०।

४१९ ।। श्री तुकाराम जी ।।

(शिष्य श्री गौरांग जी)

पदः- तुकाराम कहैं सतगुरु करि गहो मग
धुनि ध्यान परकाश लय तब पावोगे।
देव मुनि आय मिलैं अनहद बाजा सुनो
गगन ते अमी झरै पाय हर्षावोगे।
सीता राम राधे श्याम रमा विष्णु झांकी वांकी
हर दम सन्मुख तब निज छावोगे।
कीरतन सतसंग करौ संग संत जन लखौ
तब नाना रंग प्रेम उमड़ावोगे।४।
निर्भय निर्वैर रहो दुख सुख सम सहौं
सब धन पास लहौ खावो व खिलावोगे।
कबहूँ न टूटा पड़ै दिन दिन और बढ़ै
दीनता औ शान्ति चढ़ै मंगल मचावोगे।
सूरति को शब्द धरि सुखमन स्वांस करि
जियति में जावो तरिदास तब कहावोगे।
अंत तन त्यागि देव पास चलि वास लेव
छूटै जग लेव देव काहे आवो जावोगे।८।

४२० ।। श्री नरसी जी ।।

पदः- सतगुरु शम्भु मोहिं श्याम को मिलाय दीन्हों
कार्य्य सब सिद्ध भयो प्रेम उमड़ायो है।
नाम धुनि एकतार ध्यान होत उजियार
सून्य में समाय सब सुधि बिसरायो है।
अनहद नाद सुना सुर मुनि दर्शन दीन
गगन ते अमी रस पाय हर्षायो है।
कीरतन रोज कीह्यों दुख मानि सुख लीह्यों
श्याम छटा छवि आप सन्मुख छायो है।
सूरति से सब काम होत यह बात आम
नरसी कहत समय ऐसे मैं बितायो है।

अन्त तन त्यागि चढ़ि यान में पहुँचि गयो राम धाम
बैठने को ठीक ठौर पायो है।६।

दोहाः- जग मर्य्यादा के लिये श्यामदास गुरु कीन।
शंकर जी आज्ञा दियो सो शिर पर धर लीन।१।
नरसी कह नर नारि सब हरि सुमिरो वसुयाम।
अन्त त्यागि तन अचल पुर बैठ करो विश्राम।२।

४२१ ।। श्री मीरा जी ।।
(शिष्य श्री रैदास जी)

पदः- श्री रैदास गुरु मोहिं उपदेश दै के
जियति में तन मन स्वच्छ कर दीन है।
रोम रोम एक तार धुनि होत ररंकार
ध्यान परकाश पाय लय का सुख लीन है।
अनहद घट बाजै सुर मुनि मिलैं गाजै
सुधा नित पायो झरि लाग शुभ झीन है।
विष भयो अमी आम नाग भयो सालिग राम
नाना दुःख सुःख भये जिमि जल मीन है।४।
गाय नाचि खेल श्याम संग प्रेम भरा अंग कर्म
गुण चोर भये शान्ति जैसे पीन है।
करुणानिधान सब जीवन के जान
मेरे सन्मुख छटा छवि वसुयाम कीन है।
वरनि श्रृंगार शेष शारद गये हैं हारि
इनके समान और कौन परवीन है।
सूरति अटक जाय नाम संघ जाकी भाय
मीरा कहैं तवन पावै निज धाम चीन्ह है।८।

४२२ ।। श्री निर्भय शाह जी ।।

पदः- पूरन कृपा करैं हरि वा पर जो बे खता सहैं कटु बात।
सच्चा सतगुरु का सोई चेला मातु पिता का तात।
ध्यान परकाश समाधि नाम धुनि बाजै हरदम ताँत।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद चखै अमी हरखात।४।

राम सिया की झांकी सन्मुख संग में तीनो भ्रात।
जगै नागिनी चक्र चलैं सब कमलन महक उड़ात।
सारे तीर्थ नहाय लोक सब घूमि सभा नित जात।
निर्भय शाह कहैं तन त्यागि के चलि निज पुर ठहरात।८।

४२३ ।। श्री धर्म शाह जी ।।

पदः- पावन परम पावन परम पावन परम पावन परम।
बनना चहो बनना चहो बनना चहो तो होहु नम।
सतगुरु करो सतगुरु करो सतगुरु करो भागै अधम।
धुनि ध्यान हो धुनि ध्यान हो धुनि ध्यान हो क्या नूर चम।
लय में चलो लय में चलो लय में चलो जहां तुम न हम।
सुर मुनि मिलैं सुर मुनि मिलैं सुर मुनि मिलैं हंसि दम बदम।६।

अनहद सुनो अनहद सुनो अनहद सुनो घट उठत घम।
अमृत पियो अमृत पियो अमृत पियो जो झरत सम।
सन्मुख लखौ सन्मुख लखौ सन्मुख लखौ प्रिय श्याम थम।
जियतै मिटै जियतै मिटै जियतै मिटै सब घोर तम।
निर्भय रहौ निर्भय रहौ निर्भय रहौ तब कवन गम।
तन त्यागि चलि तन त्यागि चलि तन त्यागि चलि निज धाम रम।१२।

शेरः- धर्म धन जमा करते बढ़े।
वाही जीव नीचे से ऊपर चढ़े।१।
धरम शाह कहते धरम है वही।
जो निज तन से सुख सब को देवै सही।२।

४२४ ।। श्री डब डब शाह जी ।।

पदः- तन मन दिया सतगुरु को जिसने उसने सब करतल किया।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप हरि का छा लिया।
देव मुनि के दर्श हों अनहद सुनै अमृत पिया।
हरि के चरित गाया सुना लखि दीन उर बोया विया।४।

सब में समता भाव माना जब तलक यहं पर जिया।
त्यागि तन निज धाम पहुँचा फिर न जग में पग दिया।

डबडब कहैं मानो सखुन सुमिरो तो हो निर्मल हिया।
है पास में सब धन तुम्हारे द्वैत का परदा सिया।८।

४२५ ।। श्री निर्वैर शाह जी ।।

पदः- पाचों चोर अजा मन मर्कट जीतै है सो सूर।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानै पकरि देंय कर चूर।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुनै साज घट तूर।
सुर मुनि मिलैं चखै नित अमृत है पासे नहीं दूर।४।

राम सिया घनश्याम प्रिया की झांकी सन्मुख पूर।
अन्त त्यागि तन राम धाम लै छूटै भव की घूर।
कह निर्वैर शाह भजि लीजै नाम सजीवनि मूर।
नाहीं तो जम जांय नरक लै मारैं कहि कहि कूर।८।

४२६ ।। श्री वाँड़े शाह जी ।।

पदः- भक्त सच्चा है वही निज को सफ़ा निज राखता।
नाहीं तो जानो है गलत बातों का फकना फांकता।
पढ़ि सुनि के बातैं सीख कर औरों को देता दुःख है।
उसको कभी मिलता नहीं हरि नाम रूप क सुक्ख है।४।

शेरः- भगवत सम्बन्धी बातों में करता है जौन तर्क।
बस उसके जानि लीजिये मादर पिदर में फर्क।
पापों से उसका तन मन एक दम भया है गर्क।
वांड़े कहैं तन छोड़ि चलैं लेंय वास नर्क।८।

४२७ ।। श्री कम खर्च शाह जी ।।

पदः- पाठ जप यज्ञ पूजन से अजनमा भी प्रगट होता।
करे सतगुरु सुफ़ल तन हो जीव तू मोह में सोता।
समय अनमोल पाकर के इसे बेकार क्यों खोता।
खेत अपना बना करके बीज उसमें नहीं बोता।
देव दुर्लभ यह नर तन है जिसे तू समझता पोता।५।
पदारथ चार इस से ले लगा कर देख तो गोता।
ध्यान धुनि नूर लय होवै भगै असुरन के दल रोता।

सुनै अनहद मिलैं सुर मुनि द्वैत का जाय उड़ि तोता।
सुरति को शब्द पै धरिकै कहै कम खर्च जो नोता।
लखै सिया राम को हर दम त्यागि तन फिर न दुख ढोता।१०।

(२)

पदः- ध्यान क दिया ज्ञान घृत ता में सूरति बाती शब्द जलावै।
सतगुरु से जो भेद जानि ले सो जियतै करतल करि पावै।
नाम की धुनि लय नूर देव मुनि अनहद बाजा सुनि हर्षावै।
राम सिया की झांकी अदभुत सन्मुख आय छटा छवि छावै।
अजब श्रृंगार बनै नहिं वर्णत अगणित शारद शेष लजावैं।५।
अमित जन्म के सुकृत होंय जब तब प्राणी यहि मार्ग पै आवै।
निर्भय औ निर्वैर जाय ह्वै हरि यश कहै अमी बरसावै।।
ता के वचन जवन गहि लेवै सो मानो भव से विलगावै।
कहैं कम खर्च शाह गुनि लीजै सब के हित हम राह बतावैं।९।

शेरः- पढ़ि सुनि के चिहचिहा रहे हो क्यों परिन्दों की तरह।
दीनता वो शान्ति बिन तुम हो दरिन्दों की तरह।१।
कम खर्च कह सतगुरु से जप विधि जान कर हरि नाम लो।
तन छोरि बैठि विमान पर चल अचल पुर विश्राम लो।२।

(३)

पदः- क्या घट में गुलजार दरबार लखै कोई सतगुरु का लाल।
अंधे बहिरे मत बनो गँवार भजो तजि सकल बवाल।
लय ध्यान धुनी उजियार सामने प्रिय नन्द लाल।
सब सुर मुनि मिलैं करि प्यार सुनो नित अनहद की ताल।४।
यह सूरति शब्द का कार करो तन मन दै ख्याल।
खुले टेलीफुन का तार जियत हो माला माल।
तब होय न बांको बाल मिटै विधि अच्छर भाल।
कहैं कम खर्च पुकार त्यागि तन होहु अकाल।८।

(४)

पदः- गंजीफ़ा शतरंज औ सोरही चौपरि नक्की जुट हरि खेलैं।
संग बलराम सखा सब राजैं निज निज दांव पै करत हुलेलैं।

सुर मुनि नभ ते माल गिरावैं श्री राधे सब के उर मेलैं।
यह झांकी सतगुरु करि देखै ते फिर भव का दुख नहिं झेलै।४।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय कै शुभ औ अशुभ को बेलैं।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद निर्भय चलि दरबार में पेलैं।
तन मन प्रेम से सूरति शब्द पै धरि जियतै सब सुक्ख सकेलैं।
सब समाज सन्मुख हों हरि की यह कम खर्च हंसै औ रेलैं।८।

(५)

पदः- बुझनी सुननी कथा पहेली कहैं श्याम वो श्यामा।
सखी लाड़िली की जै बोलैं सखा श्याम कह नामा।
दोनों दिश की जय में शामिल बैठि तहां बलिरामा।
सुर मुनि नभ ते लीला देखैं फेकैं सुमन तमामा।४।

नाचैं गावैं खूब बजावैं निज निज लिहे दमामा।
यह झांकी सतगुरु कर निरखै सुफ़ल होय नर चामा।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय सन्मुख सोभा धामा।
कहैं कम खर्च शाह तन तजि कै पावै अचल मुकामा।८।

(६)

कीर्तनः- श्याम श्यामा की जय जय बोलो। सखी सखियन की जय जय बोलो।।
बलराम रेवती की जय जय बोलो। नन्द यशुमति की जय जय बोलो।।
वसुदेव देवकी की जय जय बोलो। श्री रोहिणी की जय जय बोलो।।
वृज वासिन की जय जय बोलो। श्री यमुना की जय जय बोलो।४।

वृज भूमी की जय जय बोलो। पशु पक्षिन की जय जय बोलो।।
सब सुर मुनि की जय जय बोलो। सब सृष्टि की जय जय बोलो।।
श्री सतगुरु की जय जय बोलो। कम खरच कहैं सुख सो लो।७।

शेरः- कम खरच कह सतगुरु से नाम जान ध्याइये।
तन मन को प्रेम में मिला हरि पास पाइये।१।
धुनि ध्यान नूर लय हो हरि रंग में भीजिये।
कम खर्च कह तब दीनों को पहिचान दीजिये।२।

(७)

पदः- श्यामा सिखावै श्याम को नाचना।

सारी गत की रीति बताय कै हंसि मुख को चट ढाकना।

कटि झुकाय दै भौह मिरोरा बैठि लेटि कै माखना।

दै थिरकैइया कर उठाय दोऊ नयन मूँदि फिर ताकना।

कूदि घूमि फिर धीरे धीरे धरि फिर चक्कर खांचना।५।

राग रागिनी ग्राम सप्त स्वर ताल तान सम सांसना।

भरि अलाप नीचै से ऊपर लै फिर अक्षर छाटना।

सबै बाध्य करतल करवाय कै कीन्ह शुरू फिर जांचना।

सखा सखी बलिराम लखैं तहं बोलि सकैं एक आंक ना।

सुर मुनि नभ ते जय जय बोलैं चाखैं प्रेम क चाखना।१०।

सतगुरु करि यह लीला निरखै छूटै भव का कांखना।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहां जात नित भाखना।

अनहद सुनै देव मुनि दर्शै हर्ष के फाँकै फाँकना।

सूरति शब्द क मारग यह है हर दम ख्याल को राखना।

सन्मुख सब समाज प्रिय प्रियतम औ बलिराम को टांचना।

कहें कमखर्च अन्त हरिपुर लें जहां जात कोई आंचना।१६।

दोहाः- कहैं कमखर्च हरि भजौ लगै न नेकौ आँच।

तन छूटै हरि पुर चलौ गर्भ न झूलैं ढांच।।

चौपाईः- नाच गान व भाव बताना। सब के तन मन प्रेम बढ़ाना।।

साज मिलाय बजाय सुनाना। सब पर ख्याल विलग नहि जाना।।

राधे सखा सखिन बतलायो। बृज भर में क्या मंगल छायो।।

सतगुरु करि देखो धरि ध्याना। कहैं कमखर्च होय तब ज्ञाना।४।

(८)

पदः- खेलैं गोट्टा प्रिय सखियन संग।

एक्कठि दोक्कठि तिक्कठि चौक्कठि बोलैं पूरी पचौकठि का अंग।

एकै एक उलारि गोंचि फिर विलग विलग धरि दिखलावैं रंग।

सब उठाय ऊपर को फेकैं बहुत तरह के दिखलावैं ढंग।

सुर मुनि नभ ते जय जय बोलैं बरसैं सुमन प्रेम में सब पग।५।

सतगुरु करै भजन में लागै पाय जाय सो यह मग।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जाय जियत जीतै असुरन दल जंग।
सुर मुनि मिलैं सुनै नित अनहद टूटि जाय तब द्वैत केर तंग।
श्यामा श्याम सामने राजैं पिये अमी डोलै निर्भय चंग।
कहैं कम खर्च शाह तन तजि कै निजपुर चलि बैठै न होय भंग।१०।

(९)

पदः- रूठैं श्यामा मनावैं मोहन।
सखा सखी कहैं सुनि सब लेवैं करैं न उर में पोहन।
श्याम आय चट लै उछंग मुख चूमि कहैं तजो रोहन।
चलिये रास भवन मम प्यारी तन मन सब के दोहन।
चारों दिश गृह गृह हम ढूंढ़ि कै यहं पर आये टोहन।
तुम बिन रास होयगो कैसे हमैं न नेकौ सोहन।६।
हरि के वचन प्रेम के सुनि प्रिय मुख छवि लागी जोहन।
उतरि गोद ते चट चल दीन्हों सखा सखी संग मोहन।
सतगुरु करौ लखौ सब पासै क्यों घूमत वन खोहन।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय चखौ अमी भरा पोहन।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद सन्मुख प्रिय मनमोहन।
कहैं कम खरच शाह मम बानी मानि करो तो बोहन।१२।

शेरः- सतगुरु से लै के बानगी सौदा खरीदिये।
धुनि ध्यान नूर लय मिलै कौसर भी पीजिये।१।
सन्मुख में राम सीता जब तक कि जीजिये।
कम खर्च कह तन त्यागि पास वास लीजिये।२।

४२८ ।। श्री रंग लाल जी ।।

पदः- किसमत उसी की अच्छी सतगुरु जिसे मिला है।
धुनि ध्यान नूर जाना चलि शून्य में पिला है।
अनहद सुनै मधुर घट सुर मुनि के संग हिला है।
प्रिय श्याम सामने भे करना न कुछ गिला है।४।
तन मन व प्रेम तीनों एकै में तब सिला है।
निर्वैर और निर्भय आनन्द का टिला है।

तन त्यागि जाय निजपुर हरि रूप बनि खिला है।
जहं पर न दुःख पहुँचै ऐसा अगम किला है।८।

४२९ ।। श्री रंग नाथ जी ।।

पदः- कर्म करि निष्कर्म होवै उपासना ते चाह मरै।
ज्ञान ते गैव गली खुलि जावै सो प्रानी भव में न परै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन ह्वै कर निकरै।
अनहद सुनै देव मुनि आवैं सब के चरनन शीश धरै।४।
नागिन जगै चक्र सब वेधैं तन मन कमलन महक भरै।
निर्भय मस्त अमी रस चाखै गगन ते हर दम जौन झरै।
सीता राम कि झांकी बांकी सन्मुख रहै न नेक टरै।
अन्त त्यागि तन निजपुर बैठे फिर जग में काहे विचरै।८।

४३० ।। श्री मस्तानी माई जी ।।

पदः- देखो देखो बहार घट देखो जी।
सतगुरु करौ भजन विधि जानौ भागै द्वैत गंवार। घट देखो जी।।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख प्रिय सरकार। घट देखो जी।।
अनहद सुनो पियो नित अमृत करैं देव मुनि प्यार। घट देखो जी।।
अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो छूटै भव का जार। घट देखो जी।।
नर नारी सुनिये मम विनती प्रभु सुमिरन सुख सार। घट देखो जी।६।

४३१ ।। श्री मनमानी जी ।।

पदः- देखो देखो बहार घट देखो जी।
सतगुरु करि सुमिरन में लागो टूटै द्वैत गंवार। घट देखो जी।।
लय परकाश ध्यान धुनि होवै रोम रोम झनकार। घट देखो जी।।
सुर मुनि मिलैं छकौ नित अमृत लो अनहद गुमकार। घट देखो जी।।
हर दम नैनन सन्मुख राजैं सिया सहित सरकार। घट देखो जी।।
अन्त छोड़ि तन लेहु अचलपुर जहं पर सुक्ख अपार। घट देखो जी।६।

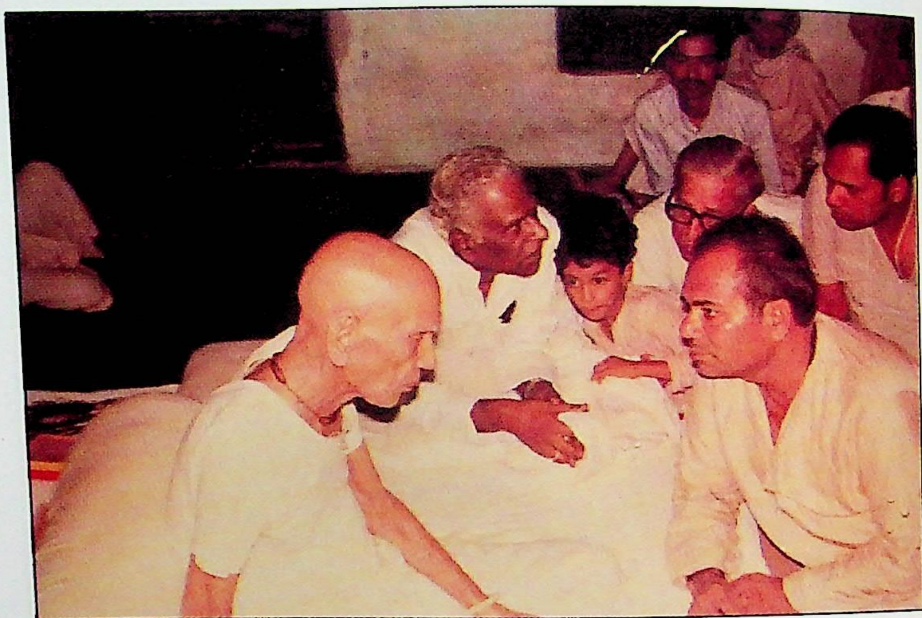
४३२ ।। श्री दशरथ लाल जी वैश्य ।।

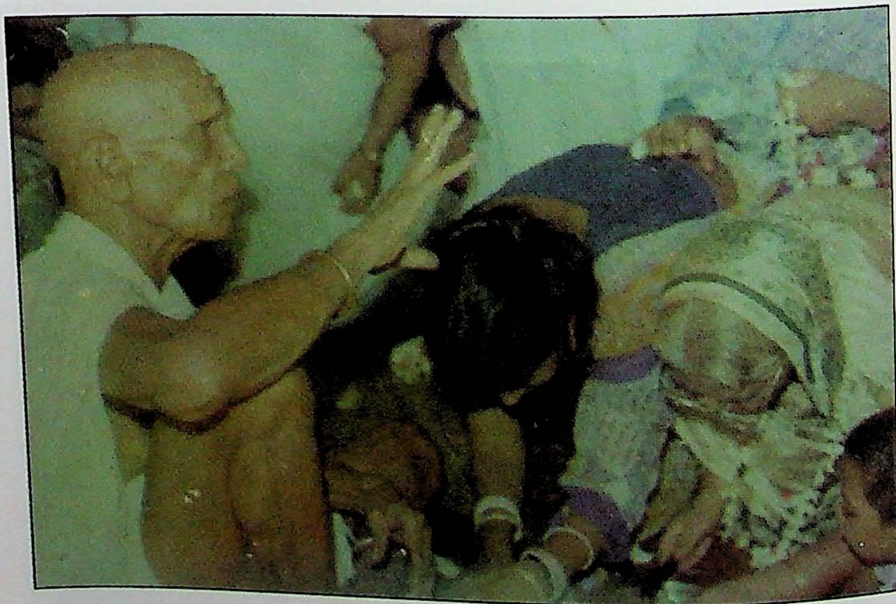
पदः- शंकर शतनाम जपत जो हैं सतगुरु करि सो सुमिरन कीजै।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सन्मुख सिया राम को लखि लीजै।





गुरुदेव, गोकुल भवन आश्रम में, भक्तों के बीच ।



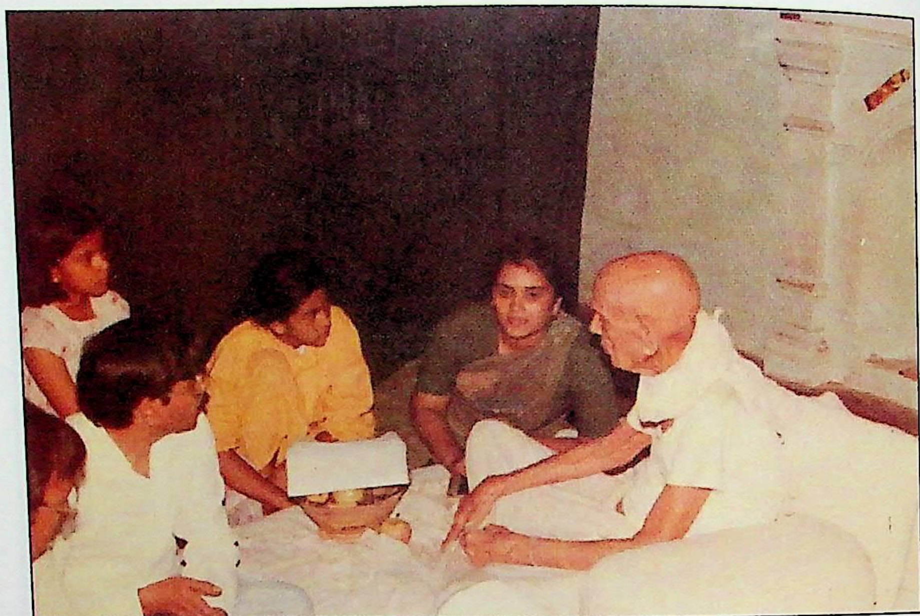


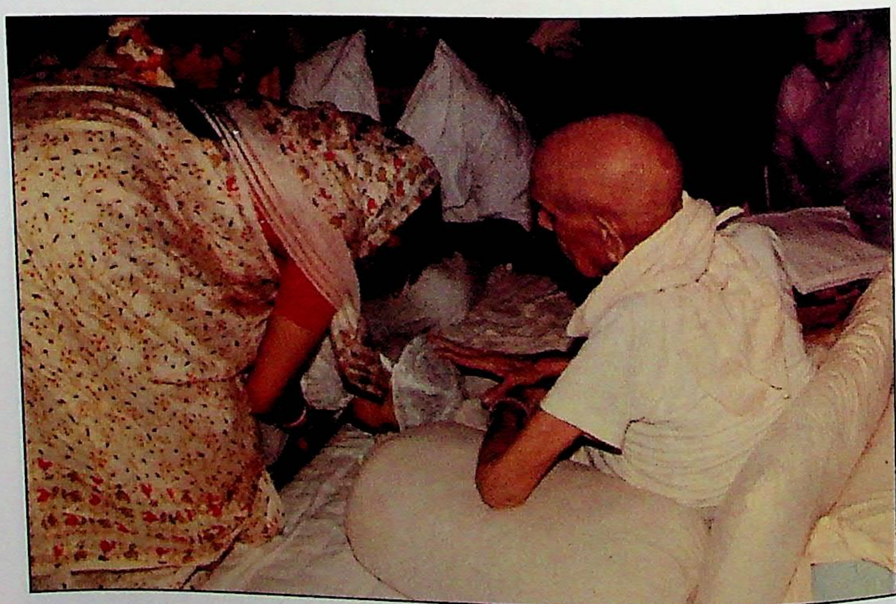
भक्तों के बीच श्री परमहंस राममंगलदास जी ।





भक्तों के बीच श्री परमहंस राममंगलदास जी।





गुरुदेव भक्तों को उपदेश व आशीर्वाद देते ।

मुनि देव मिलैं घट साज सुनो अमृत अनुपम टपकै पीजै।
जियतै निर्मल निर्वैर बनो बेकार में आयू क्यों छीजै।
यह सूरति शब्द क मारग है तन मन जहं एक रंग भीजै।
तन छोड़ि अन्त साकेत बसो जग में फिर काहे पग दीजै।६।

४३३ ।। श्री नाम देव जी ।।

पदः- सतगुरु करि नाम जप विधि जान लेव
आँखी कान खुलि जांय पावो सुखसार जी।
जियतै में मुक्त भक्त तब तो कहावो भाय
शुभ औ अशुभ कर्म होंय जरि छार जी।
धुनि ध्यान परकाश पाय लय में समाय
सुधि बुद्धि केर जहां रहै न संभार जी।
सुर मुनि मिलैं आय हर्षि उर लेंय लाय
अनहद ताल घट सुनो निशिवार जी।
विप्र धेनु सन्त सब जीवन पै दृष्टि सम
कीरतन करौ बनि दीन शान्ति धार जी।
सन्मुख श्याम छटा हर समय छाय रहै
नाम देव कहैं बनि जावो मतवार जी।६।

दोहाः- गुरु पाय का झूठ है सुर मुनि वेदन गाय।
नाम देव कह नारि नर या से बचौ सदाय।।

४३४ ।। श्री नर हरि जी ।।

पदः- सुमिरो नाम जगत पितु मातु।
सतगुरु करि जप की विधि जानो मानौ मेरी बात।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय होवै करतल तात।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद प्रेम में जावो मात।४।

अमृत चखौ गगन ते झरता कबहूँ नाहिं सुखात।
श्यामा श्याम की झांकी सन्मुख निरखौ क्या मुसकात।
अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो कौन करै फिर घात।
नर हरि कहैं अमोल पाय तन वृथा न काढ़ो दांत।८।

४३५ ।। श्री मुरारी जी ।।

पदः- चलो पाय नर तन लखौ निज वतन को।
करौ ध्यान पहिले गुरु के पगन को।
धुनी ध्यान लय नूर पावो लखन को।
सुनो साज अनहद अमी लो चखन को।४।

४३६ ।। श्री जसोवा खेचर जी ।।

पदः- लीजै लीजै श्री सतगुरु करि लीजै। कीजै कीजै तन मन अर्पन कीजै।।
दीजै दीजै शब्द पर सुधि दीजै। जीजै जीजै ध्यान धुनि सुनि जीजै।।
बीजै बीजै कहत यहि सब बीजै। मीजै मीजै असुर निज कर मीजै।।
भीजै भीजै नगुदरी क्यों भीजै। छीजै छीजै न आयु काहे छीजै।।
कीजै कीजै दरश हरि के कीजै। सीजै सीजै नूर लय में सीजै।।
चीजै चीजै वचन मम सुख चीजै। पीजै पीजै अमी रस घट पीजै।१२।

४३७ ।। श्री गरोवा कुम्हार जी ।।

पदः- लागो लागो श्री सतगुरु पग लागो। जागो जागो जगत से तब जागो।।
त्यागो त्यागो कपट मल को त्यागो। वागो वागो पहिन लो सुख वागो।।
तागो तागो शब्द पर सुधि तागो। रागो रागो ध्यान धुनि हों रागो।।
भागो भागो नूर लय में भागो। पागो पागो रूप छवि संग पागो।।
मांगो मांगो काह फिरि तब मांगो। टांगो टांगो असुर सब गहि टांगो।।
नागो नागो होय नहि तब नागो। दागो दागो नाम की दागो।१२।

४३८ ।। श्री चोखा मेला जी ।।

पदः- जावो जावो शरन सतगुरु जावो। पावो पावो भजन विधि तब पावो।।
लावो लावो शब्द पर सुधि लावो। तावो तावो जियति तन मन तावो।।
आवो आवो ध्यान धुनि पर आवो। धावो धावो नूर लय में धावो।६।

छावो छावो रूप सन्मुख छावो। भावो भावो देव मुनि को भावो।।
गावो गावो सदा हरि गुण गावो। खावो खावो सतोगुणी अन्न खावो।।
बावो बावो वृथा मूंह मत बावो। ध्यावो ध्यावो सदा हरि को ध्यावो।१२।

४३९ ।। श्री वल्ली जान जी रण्डी ।।

पदः- मुरशिद बिना भजन की मिलती नहीं गली।
जैसे बिना तरी के खिलती नहीं कली।
जिसने गहा शब्द को फूली वही फली।
मुख में नहीं धरौगे जब तक कि गुड़ डली।
गुड़ गुड़ कहे से मीठ मुख होवैगा किमि अली।५।

धुनि ध्यान नूर लय को जानि जाव घर चली।
जियतै में पाप ताप को डारो पगन मली।
सुर मुनि के होंय दर्शन भाखै तुम्हें भली।
अमृत पियो सुनो धुनि अनहद श्रवण ढली।
सन्मुख हों श्याम श्यामा सब से जो हैं वली।१०।

मानो कहा नहीं तो फिर अन्त में खली।
हरि का भजन किहे बिन कैसे वतन चली।
सिर पर सवार मृत्यु है एक दिन तुम्हें झली।
रग रग को कूट कर के तूरैं सबै नली।
जे जाय करके नर्क में देवैं तुम्हे थली।१५।

जागो उठो ऐ बहिनों तब फिर न कोई छली।
है नाम हरि का सांचा कर्मन की गति टली।
सारे असुर उसी से जाते हैं चट दली।
तन मन व प्रेम करके जयतै में जो जली।
सो त्यागि तन बनैगी हरि रंग कह वली।२०।

४४० ।। श्री हलचल शाह जी ।।

पदः- नजूमें कमाले दखल से किसी की रिहाई न होगी जहां से सुनो।
इस मे नेकी वदी का है चक्कर लगा आने जाने में यारों रहौगे गुनो।
मान लो गर सखुन लेहु मुरशिद शरन ध्यान परकाश लय नाम की धुनो।
हर समय राधिका श्याम सन्मुख रहैं देव मुनि जो कहैं शब्द सारे सुनो।
साज अनहद बजै जाम कौसर पियो जाव तन तजि बतन प्रेम में जब भुनो।
दीन बनि कर रहौ राखौ तन मन रहम चोर भागैं सभी सत्य ताना बुनो।६।

(२)

पदः- जानो राम नाम की ज्योतिष।

सतगुरु करौ मिलै तब मारग और चलै नहिं कोशिश।

ध्यान प्रकाश समाधि होवै लेहु नाम धुनि पोशिश।

जो न भजौ तो चलौ नर्क को अन्त में आवै नोटिश।४।

(३)

पदः- पहिरो राम नाम की झूल।

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो जियत मिटै सब शूल।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सुनौ करै को तूल।

सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी अनुकुल।

सिया राम की झांकी सन्मुख जो सब जीवन मूल।

अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो जग छूटै जिमि धूल।१०।

४४१ ।। श्री कुँजनी माई जी ।।

पदः- ओढ़ो राम नाम की सुजनी।

सतगुरु करि जप की विधि जानो कर्म होंय दोऊ भुजनी।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि की खुलि जावै गुँजनी।

अनहद सुनो देव मुनि आवैं पकरि करैं पग पुजनी।

राधे श्याम सामने राजैं करौ सुफल दोउ दुजनी।

अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो सत्य वचन कहैं कुँजनी।६।

(२)

पदः- सतगुरु करि पढ़ि लो नाम सबक। मिटि जावै जियतै भव की हबक।।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि जमक। सुर मुनि आवैं करि लेंय लपक।।
अनहद की सुनिये मधुर घमक। अमृत को चाखो रहा है टपक।।
सब असुर आप हीं जायं दबक। देखौ घट में चौदहौं तबक।।
सन्मुख हों श्यामा श्याम छमक। नाना विधि लीजै पार गमक।।
तन तजि बैठो जहं जल न गपक। शशि उठान सूर्य्य न पवन धमक।६।

४४२ ।। श्री हबीबा जान जी रण्डी ।।

पदः- झुलनी नई राधिका प्यारी।
रसिया नवा श्याम सुखकारी।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो सन्मुख लखो सदारी।
ध्यान परकाश समाधि नाम धुनि सुनि सुनि हो सुख भारी।४।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी हर वारी।
नागिन जगै कमल हों चालू कमलन महक उड़ारी।
इड़ा पिंगला सुखमन होवै विहंग करै भव पारी।
कहैं हबीबा अन्त त्यागि तन बैठौ निज पुर जारी।८।

४४३ ।। श्री बड़े दादाजी ।।

पदः- सिद्धिन में फंसि के हम भाई। विरथा आयू दीन गँवाई।
कुवाँ में कूदि के बाहर आना। निकसि के सब को दर्श दिखाना।
कीन खेल जो मम मन माना। राम नाम जपि विधि नहिं जाना।
या से यहीं रहेन चकराई। नाम बड़े दादा कहवाई।४।

४४४ ।। श्री बड़ी अम्मा जी ।।
(ऋण मोचन घाट, श्री अयोध्याजी)

पदः- श्री हरि पूजन सुमिरन कीन्हा। अन्त छोड़ि तन हरि पुर लीन्हा।।
पूजा पाठ धरम औ सुमिरन। जे जन करैं लगाय के तन मन।।
ते सब जाय वास वहं पावैं। सब प्रकार सुख बरनि न जावै।।
कहैं बड़ी अम्मा गुनि लीजै। नर तन पाय सुफल करि लीजै।४।

४४५ ।। श्री छोटी अम्मा जी ।।
(चुनारगढ़)

पदः- जवनिया रोकै जो कोई भाई।
सतगुरु की किरपा ते ता की सब दिसि भली भलाई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनि पाई।
अनहद सुनैं देव मुनि दर्शै लोक घूमि सब आई।४।
सन्मुख राम सिया की झाँकी हर दम ता के छाई।
निर्भय और निर्वैर एक रस सब दरबार मझाई।

अजा चोर सब जियति बिदा करि विजय की ढोल बजाई।
छोटी अम्मा कहैं त्यागि तन फेरि न जग चकराई।८।

४४६ ।। श्री छोटी बुआ जी ।।

पदः- राम रवी श्याम नवी एक ही न और।
मुरशिद से जान कर के कर देखिये तो गौर।
छोटी बुआ कहैं क्या कहते हैं सुर मुनि वेद।
भेद उनमे है नहीं अभेद हैं अखेद।
आपस में लड़ रहे हो क्या हिन्दू मुसलमां।५।
दोनों ने नहीं जाना सुमिरन कि विधि कलमां।
छोटी बुआ कहैं पकड़ि दोजख़ में जाओगे।
हर दम लगैंगे कोड़े पल कल न पाओगे।
छोटी बुआ कहैं अगर तजि देव तुम कपट।
धुनि ध्यान नूर लय हो हंसि रूप जाय लिपट।१०।

४४७ ।। श्री हिफ़ाजत शाह जी ।।

पदः- लूटैं चोर शरीर साढ़े तीन हाथ।
मन तो उनका साथी बनिगा या से जीव अनाथ।
सब मिल जीव को पकड़ि गिराइन डारिन नाक में नाथ।
नजर बन्द कछु बोलि न पावै राखत अपने साथ।
सतगुरु बिन बचिहै नहिं कोई कितनो कूटै माथ।५।
जपविधि देंय बताय दया करि सूरति शब्द में साथ।
ध्यान धुनी परकाश दशालय सुधि बुधि जहं पर पाथ।
अनहद सुनैं देव मुनि दर्शैं सनमुख सिया रघुनाथ।
कहैं हिफाज़त शाह जियति जो जानि के होय सनाथ।
सो तन तजि साकेत को जावै छूटै जग से साथ।१०।

४४८ ।। श्री मनावन शाह जी ।।

पदः- सिया राम को सुमिरन नहिं करते खाते हौ यारों तानि तानि।
नहि नैन खुलै नहि कान खुलै पड़िहौ तन तजि दुख खानि खानि।
सतगुरु बिन कोई भव न तरै यह कहते सुर मुनि बानि बानि।
धुनि ध्यान समाधि प्रकाश लखै सूरति निज शब्द में खानि खानि।

अनहद धुनि हो सुर मुनि आवैं परनाम करौ नित जानि जानि।
सन्मुख पितु मातु सदा राजैं हरखौ हर दम सुख मानि मानि।६।

है नर तन क्या अनमोल बना करते बिरथा क्यों हानि हानि।
जुटि जावो तन मन प्रेम लगा सब नेम टेम की ठानि ठानि।
आडम्बर से यह ज्ञान न हो घट में घुसि हेरो छानि छानि।
जियतै में सब तय करके अब राखो निज कुल की कानि कानि।
गहि शान्ति दीनता सत्य धर्म पावो मत अनुचित धानि धानि।
तन त्याग चलौ साकेत डटौ फिर गर्भ न झूलौ आनि आनि।१२।

४४९ ।। श्री पड शाह जी ।।

शेरः- सरवरि किसी की मति करौ। तुम से बने तो नित करौ।।
मन से वचन से करम से। करि लीजिये इस चरम से।।
हो जावो काबिल जिस समय। शारीक करि लेंय उस समय।।
मानो सखुन मति डोलना। दिन चारि का है चोलना।४।

४५० ।। श्री लाला दीना नाथ जी ।।

पदः- सीता राधे कमला गिरिजा शारद काली दुर्गा माय।
हरदम सन्मुख मेरे राजैं शोभा बरनत बनै न भाय।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै सो यह आनंद पाय।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन खुलि जाय।४।

सुर मुनि शक्ती दर्शन देवैं अनहद विमल सुनाय।
श्री ज्वाला जी नित्य खिलावैं खीर सुगन्धित लाय।
तन के चोर भागि सब जावैं फेरि न परैं दिखाय।
दीनानाथ कहैं मम बानी गुनै सो दुःख नसाय।८।

४५१ ।। श्री लाला नाथ प्रसाद जी ।।

पदः- राम कृष्ण नारायण शंकर ब्रह्मा गणपति हनुमत वीर।
हर दम सन्मुख मेरे सोहैं चमकैं चम चम दिव्य शरीर।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै मेटै भव भय पीर।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय है सब अपने तीर।४।

तन मन प्रेम से जो कोई लागै माफ़ होय तकसीर।
कोई काम सिद्धि नहिं होवै बिना किहे तदबीर।

सुर मुनि कहैं रीति यह अनुपम तब खुलती तकदीर।
कहैं नाथ परसाद वचन मम गुनै सो बनै फ़कीर।८।

४५२ ।। श्री कलुवा वीर जी ।।

दोहाः- कलुवा कह हरि नाम सम और मंत्र नहिं कोय।
सुर मुनि सब या को जपैं देत पाप सब धोय।।

४५३ ।। श्री अगिया वैताल जी ।।

दोहाः- मंत्र यंत्र वो तंत्र सब हरि सुमिरन बिन सून।
जैसे अग्नी के परे दे दुर्गंधी ऊन।१।
अगिया कह जग में वृथा मानुष तन ह्वै जात।
सतगुरु करि को भजौ काहे धोखा खात।२।

४५४ ।। श्री कोइलिया वैताल जी ।।

दोहाः- सब विद्या बेकार है हर सुमिरन है सार।
या से सतगुरु करि भजो छूटि जाय जग जार।१।
कहै कोइलिया स्वप्न सम तन धन ग्रह परिवार।
चेति जाय सो पार है नाहीं तो दुख भार।२।

४५५ ।। श्री तदबीर शाह जी ।।

पदः- पाप करना त्यागिये तोबा करो तोबा करो।
मुरशिद को करि अब जागिये तोबा करो तोबा करो।
सूरति शब्द पर पागिये तोबा करो तोबा करो।
तन मन वो प्रेम से लागिये तोबा करो तोबा करो।
तन के असुर गहि टांगिये तोबा करो तोबा करो।५।
मिटि जाय भव की आग ये तोबा करो तोबा करो।
हो ध्यान लय में भागिये तोबा करो तोबा करो।
सुधि बुधि प्रकाश में पागिये तोबा करो तोबा करो।
तदबीर शाह की सांगि ये तोबा करो तोबा करो।
रब सामने क्या मांगिये तोबा करो तोबा करो।१०।

४५६ ।। श्री शकरार पीर जी ।।

पदः- शकरार पीर के सखुन गर मान लीजिये।
मुरशिद को करिके नाम रब का जान लीजिये।
धुनि ध्यान नूर लय हो कौसर को पीजिये।
हर वक्त होंय दर्शन इस रंग में भीजिये।४।

४५७ ।। श्री वाले पीर जी ।।

शेरः- मुरशिद बिना मिलती नहीं रब नाम की बूंटी।
चश्मों में छाया माड़ा गोशों में है खूंटी।
या से नहीं रब लौकता सुनता नहीं धुनी।
परकाश ध्यान लय में चलता नहीं गुनी।४।

तन मन को इस कूचे में जियत करदे तू फना।
हर वक्त मस्त प्यारे तब तो रहा बना।
शैतान तन के जब तक होते नहीं कतल।
कहते हैं वाले पीर तब तक हो नहीं दखल।८।

४५८ ।। श्री चापलूस शाह जी ।।

पदः- भजिये राम नाम सुख सागर।
सतगुरु करि जप भेदि जान ले अब हीं तन में जांगर।
चौथे पन में का करि पैहौ ह्वै जैहौ जब डांगर।
चेतो शान्ति दीनता पकड़ो छोड़ो कपट की बागर।४।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय पाय होहु गुण आगर।
सन्मुख झांकी हर दम निरखौ धनु धारी नट नागर।
सुर मुनि मिलैं सुनो नित अनहद फूटै भर्म की गागर।
चापलूस कहैं अन्त त्यागि तन निजपुर लेहु उजागर।८।

४५९ ।। श्री खबीस शाह जी ।।

पदः- लीजै राम नाम का छूरा।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानि कै करो कार्य निज पूरा।
तन कै असुर पकड़ि कै मूड़ो जियत जाव बन सूरा।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय सुनिये अनहद तूरा।४।

सुर मुनि मिलैं प्रेम करि बोलैं कहें मिटी भव धूरा।
शिव गिरिजा नित आय खिलावैं दही खांड़ औ चूरा।
सन्मुख राम सिया की झांकी लखौ सजी बन मूरा।
कहैं खबीस अन्त निज पुर लो छूटै तन मन कूरा।८।

४६० ।। श्री मन्हूस शाह जी ।।

पदः- लीजै राम नाम की कैंची।
सतगुरु से कतरन विधि सीखौ असुर लेव सब ऐंची।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय जानि धरौ भव खैंची।
सन्मुख मुरली अधर धरे क्या झांकी हो तिरवैंची।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै कर्म जांय दोउ पैंची।
कहे मनहूस अन्त हरि पुर हो झूलै गर्भ न खैंची।६।

४६१ ।। श्री शैतान शाह जी ।।

पदः- क्या नील कलेवर श्री हरि का श्रृंगार छटा छवि अति प्यारी।
अनुपम झांकी को वरनि सकै फणपति गणपति शारद हारी।
कोई कहता है सीता वर औ कोई कहता धनुधारी।
कोई कहता है राधे वर औ कोई कहता गिरधारी।
कोई कहता है रघुनन्दन औ कोई कहता जग धारी।५।
कोई कहता है यदुनन्दन औ कोई कहता बनवारी।
कोई कहता है सर्वेश्वर कोई कहता मंगल कारी।
कोई कहता है नट नागर कोई कहता लीला धारी।
कोई कहता है रघुकुल मणि कोई कहता मुनि मन हारी।
कोई कहता है मन मोहन कोई कहता चक्कर धारी।१०।
कोई कहता है दीन बन्धु कोई कहता भव भय टारी।
कोई कहता है बृज भूषन कोई कहता है भिखियारी।
कोई कहता है विश्वम्भर कोई कहता संकट हारी।
कोई कहता है दही चोर कोई कहता सब गुण कारी।
मुरशिद करके जप विधि जानो धुनि रग रोवन होवै जारी।१५।
परकाश समाधी ध्यान होय जीतौ जियतै भव की पारी।
अनहद बाजै सुर मुनि गाजैं मिल लेव सबन संग बलिहारी।

सन्मुख हो झांकी राम श्याम छवि जिनकी सब से है न्यारी।
तन मन से जौन ग़रीब बनै सो पावैगा यह सुख भारी।
शैतान शाह कह अन्त वही हरि के ढिग बैठ चुप धारी।२०।

४६२ ।। श्री जवर शाह जी ।।

पदः- बांधो राम नाम का सोंटा।
सतगुरु करि पकड़न विधि जानो अजा क पकड़ो झोंटा।
सारे असुर घेरि के पीटो दावो पकरि कै टोटा।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय पाय जाव ह्वै मोटा।४।
राम सिया को सन्मुख देखौ हर योनिन जिन पोटा।
ईश्वर अंस कहाय हाय क्यों खरे से बनिगो खोटा।
थोड़े दिन जग में है रहना निज को समझो छोटा।
जवर सिंह कहैं पार होहु तब मातु पिता के ढोटा।८।

४६३ ।। श्री सवर सिंह जी ।।

पदः- बांधो राम नाम की लाठी।
सतगुरु करि भांजन विधि जानो तूरो असुरन गांठी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि चखौ अमी की आठी।
सियाराम को हर दम ताकौ बांधो भव की भाठी।
शान्ति दीनता उर में धारो उघरै ज्ञान की टाठी।
सवर सिंह कहैं अब मति चूकौ चारि दिना की ठाटी।६।

४६४ ।। श्री आस्तीक मुनि जी ।।

वार्तिकः- शास्त्र पढ़ कर के जे उसके विरुध्द करते हैं वे अधम हैं, और जे पढ़े नहीं हैं और शास्त्र की मर्य्यादा पर चलते हैं वे धर्म निष्ठ हैं और जे राम नाम की विधि सतगुरु से जानकर अभ्यास करके अभ्यन्तर की धुनि प्राप्त कर लिया उनके ध्यान प्रकाश समाधि और स्वरूप करतल हो गया। वे त्रिगुणातीत होकर चिद धाम के अधिकारी हो गये।

४६५ ।। श्री कतल जान जी ।।

पदः- कतल जान कह जियत कतल हो तब हरि सन्मुख होवैंगे।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि मिलै कलुष सब धोवैंगे।

मुरशिद करौ जुरै तब तन मन तुख्म वही उर बोवैंगे।
जे नहिं माने सखुन हमारा जग चक्कर में रोवैंगे।४।

४६६ ।। श्री जान मन जी ।।

पदः- जब तक मिलै न सजनी सजना तब तक जीव धरत नहिं धीर।
मुरशिद करौ पता तब पावो छूटै भव की पीर।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हरि प्रिय तुम्हरे तीर।
सुर मुनि शक्ती तीर्थ इसी में लागि बड़ी है भीर।
शान्ति दीनता गहि सब देखौ मेटौ भाल लकीर।
कहै जान मन चला चहै जो करै इही तदबीर।६।

४६७ ।। श्री झुलनी माई जी ।।

पदः- भाव से आशिष मिलत है मिलत कुभाव से श्राप।
आशिष से सुख होत है श्राप से दारुन दाप।
आतम से आतम मिलै छूटै भव की ताप।
शिष्य गुरु की एकता सुर मुनि दीन्हो थाप।४।

४६८ ।। श्री जगनी माई जी ।।

दोहाः- पुरुष पराई नारि संग रमन करै भा भ्रष्ट।
नारि पराये पुरुष संग गमन करै हो नष्ट।।

पदः- टीम टाम क्या करौ टिमाक। तन तो जरि ह्वै जैहै खाक।।
राम नाम जप के हो पाक। तब हो गर्भ क रिन बेवाक।।
असुर सकैं तब तुम्हैं न ताक। शरमांवें जिमि कटि गई नाक।।
सतगुरु बिना चलै नहिं चाक। कैसे छूटै तन मन झाक।४।
अब ही बने फिरत हो बांक। नीक वचन सुनि लेत न सांक।
उर में धरी द्वैत की फांक। रेफ़ बिन्दु का मिला न आंक।।
खर सूकर कूकर औ काक। तोसे भला इहां त्रण पांक।।
मानु वचन ले आँखैं ढाक। सूरति शब्द में अपनी टांक।८।

४६९ ।। श्री ककूलत शाह जी ।।

दोहाः- चोर न चोरी कर सकै भूप सकै नहि छीन।
राम नाम अन्मोल है मिलै होय जब दीन।।

कहैं ककूलत आय जग भज्यौ न सिया रघुराय।
अन्त समय पछताईहौ जब यम लेंय उठाय।२।

पदः- नाटक रहस्र घट में लखौ सतगुरु करौ लूटौ मज़ा।
यहं पर तो है रहना नहीं यक दिन उठा लेगी कज़ा।
कल्पों पड़ो चलि नर्क में जहं हर समय भारी सज़ा।
कोष पासै में तुम्हारे है तहां अति धन गंजा।
निर्भय जो हो खोलै उसे है द्वैत का ढक्कन रँजा।५।

तन मन की करके एकता सारे असुर दीजै भजा।
डरपोंक किमि पावैं दखल है फौज की मालिक अजा।
पांच उसके मूँह लगे हैं पकड़ि दे आँखैं अंजा।
कहते ककूलत शाह यारों जियत इहाँ जो ले भंजा।
वही भव से पार हो पितु मातु शिर धर दें पंजा।१०।

४७० ।। श्री तरद्दुद रसूल जी ।।

पदः- सतगुरु बिन भव दुख झेलैं। गहि शब्द ना घट में पेलैं।
जे तन मन प्रेम से रेलैं। ते विधि गति लात ते हेलैं।
प्रिय श्याम सामने खेलैं। हंसि हंसि कर मुख में मेलैं।
तब वयस वृथा हा बेलैं। तजि अमृत खाक सकेलैं।४।

४७१ ।। श्री तफ़क्कुल रसूल जी ।।

पदः- किया मुरशिद कि खिदमत हम ठेकाना ठीक है पाया।
खुली धुनि ध्यान भा रोशन सून्य में सुधि को बिसराया।
सुना अनहद मधुर घट में देव मुनि सब से बतलाया।
नहाये तीर्थ हैं जितने लोक सब घूमि फिर आया।
श्री सियाराम राधेश्याम सन्मुख आय छवि छाया।५।

गये मुरशिद अचलपुर जब सदा श्री हरि के गुनि गाया।
रहा निर्वैर औ निर्भय सभी जीवों ने की दाया।
गिजा तन को दिया थोड़ी कभी भर पेट नहिं खाया।
किया ब्रह्मचर्य्य को धारन घटा बल कुछ न अलसाया।
गुजर भर को बसन राखे मिले ज्यादा तो बरताया।१०।

प्रेम से आ दिया जिसने किया उसका ही मन भाया।
किया आराम वसुधा पर पलंग तख्ता न बनवाया।
शयन पांचै घड़ी निशि में किया फिर शौच को धाया।
नित्य क्रिया से छुट्टी पा जपा निज मंत्र मन लाया।
रहा जब तक तन जगत में तन दिवस निशि ऐसे निपटाया।
गया तन छोड़ि मुरशिद ढिग प्रभू कर गहि के बैठाया।१६।

४७२ ।। श्री हलनी माई जी ।।

पदः- करो करो सुमिरन सुमिरन सुमिरन।
मारो मारो तन मन तन मन तन मन।
होवैं होवैं परसन परसन परसन।
देवैं देवैं दरशन दरशन दरशन।
जीतो जीतो भव रन भव रन भव रन।
लीजै लीजै तप धन तप धन तप धन।६।

पावो पावो रोशन रोशन रोशन।
जावो जावो लय सन लय सन लय सन।
खुलै खुलै नाम झन नाम झन नाम झन।
मिलै मिलै ध्यान पन ध्यान पन ध्यान पन।
छूटै छूटै जब तन जब तन जब तन।
चलौ चलौ घर छन घर छन घर छन।१२।

४७३ ।। श्री पाटा शाह जी ।।

पदः- लीजै राम नाम का आटा।
सतगुरु करि सब भेद जान लो परै न कबहुं घाटा।
धुनी ध्यान प्रकाश दशा लय मिलै मिटै भव कांटा।
अनहद सुनौ देव मुनि दर्शै असुर भगैं जिमि भांटा।
सियाराम प्रिय श्याम रमा हरि सुर मुनि बेदन छांटा।
सन्मुख रहैं न अन्तर होवैं प्रेम कि मारैं चाटा।६।

अगम अपार अकथ षट झांकी भाव से भक्तन बांटा।
सूरति को जिन शब्द पै धरि कै बैठि एकान्त में सांटा।

उनका मुद मंगल भा जानो लागि ग पक्का लाटा।
नर तन पाय नाम नहिं चीन्हा अन्त उन्हैं यम डाटा।
जाय नर्क लै सज़ा कठिन दें भूजैं जैसे भांटा।
नर नारी सब भजन करो नित विनय करैं यह पाटा।१२।

४७४ ।। श्री मोटी माई जी ।।

पदः- पावो राम नाम की रोटी।
सतगुरु करि जप भेद जानिये कहै तुम्हैं को खोटी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि बाँधौ सातौं चोटी।
श्याम सामने हर दम राजैं प्रिय उनसे कछु छोटी।
सुर मुनि मिलैं सुनौ नित अनहद बांधौ सत्य लंगोटी।
माया मृत्यु आय कर जोरैं शिर धर चरनन लोटी।६।
या से मानो भजो निरन्तर गुनौ जवन हम पोटी।
नर तन पाय चूकि गर जैहौ अन्त चलैं तन सोंटी।
नर्क में यम गण बांटि खांय हंसि तुम्हरे मास की बोटी।
प्राण निकारत में दुख देवैं गहि कै दाबैं घोंटी।
सूरति शब्द लगाय जियति करि देव बन्द दुख टोटी।
तब तौ तन तजि चलौ अचलपुर सब हित कहती मोटी।१२।

४७५ ।। श्री छोटी माई जी ।।

पदः- कीजै राम नाम जल भोजन।
सतगुरु करि जप भेद जानि ले पाय सकै यह सो जन।
पासै में सब वस्तु धरी है कहां जात हौ खोजन।
पांच समय की पढ़त नमाजै रहते तीसौ रोजन।
व्रत त्योहार दोऊ दीनन के साथ न दें एक पोयन।
यह तो सब बैकुण्ठ के साथी इन से कौन प्रयोजन।६।

४७६ ।। श्री शारदा देवी जी ।।

चौपाईः- माता भाव पती मोहिं माना। हमहुं पुत्र भाव उर ठाना।।
तन मन प्रेम से सेवा कीन्हा। काली माता आशिष दीन्हा।।
विषय वासना कबहूँ न जागी। अजा चोर तन से गये भागी।।
परमहंस जप भेद बतावा। सुर मुनि सब के दर्शन पावा।४।

धुनि खुल गई नाम की प्यारी। ध्यान समाधि मिली उजियाली।
राधा माधो सन्मुख छाये। को वरनै छवि शेष लजाये।।
तन तजि निजपुर कीन्ह पयाना। कहैं शारदा सत्य बखाना।७।

४७७ ।। श्री ठन ठन पाल जी ।।

दोहाः- बे कसूर जे दण्ड दें ते पाजी हत्यार।
उनसे तो मृत्यु भली समय पै करती वार।
जग में वै बदनाम हैं तन तजि नर्क को जांय।
पल भर कल पावैं नहीं बूड़ैं औ उतिरांय।
ठन ठन पाल कहैं सुनो दया धर्म जिन कीन।
ते हरि धाम को जात हैं यहां वहां यश लीन।६।

४७८ ।। श्री घोंघा बसन्त जी ।।

दोहाः- दया धर्म जिनमे नहीं वै हैं पागल श्वान।
मिलै जवन काटैं उसै पाप कमात महान।१।
यहां पै खूब बटोरि कै दीन्हीं खोल दुकान।
तन तजि नर्क में सहैं दुख कोई सुनै न कान।२।
घोंघा बसन्त की विनय यह दया धर्म मति त्यागु।
या से शुभ कारज सरैं तन तजि हरि पुर भागु।३।

४७९ ।। श्री ठाकुर राम सिंह वैश्य जी ।।

पदः- जे जन जाय बृज में बसैं।
जाप विधि सतगुरु से लेकर असुर तन के कसैं।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जियति भव दुख चसैं।
श्याम श्यामा गोप सखियां सदा सन्मुख हंसै।४।
देव मुनि सब दर्श देवैं प्रेम करि उर लसैं।
साज अनहद सुनैं घट में चखैं अमृत रसैं।
विश्वास शान्ति औ दीनता गहि जौन यहि मग फंसैं।
त्यागि तन ते जांय निजपुर फिर न जग में खसैं।८।

४८० ।। श्री ठाकुर अभय सिंह जी भदवरिया ।।

पदः- जे जन जाय काशी रहैं।
जाप विधि सतगुरु से जानि कै चोर तन के गहैं।

विमल सुर सरि करैं मज्जन जियति सुख सब लहैं।
अन्नपूरना काल भैरव प्रेम से नित चहैं।४।

शिवा शिव सन्मुख में सोहैं देव मुनि यश कहैं।
ध्यान धुनि परकाश लय हो मन न तन से बहैं।
साज अनहद सुनै हर दम दुख सुख सम लहैं।
अन्त तन तजि चलै निजपुर फिर न जग में ढहैं।८।

४८१ ।। श्री ठाकुर लखन सिंह सेंगर जी ।।

पदः- जे जन करैं अवध में वास।
जाप विधि सतगुरु से जानै असुर लें सब फांस।
ध्यान धुनि परकाश लय हो मिटै भव की त्रास।
सिया राघो भरत लछिमन शत्रुहन जी पास।४।

लखैं हर दम छंटा छवि श्रृंगार अजब सुबास।
सुनैं अनहद मिलैं सुर मुनि होंय जियतै दास।
मान औ अपमान छूटै करै को तेहि नास।
अन्त तन तजि लेय आसन अचलपुर चलि खास।८।

४८२ ।। श्री ठाकुर शत्रुहन सिंह जी कछवाह ।।

पदः- जे जन चित्रकूट को जांय।
जाप विधि सतगुरु से लेवैं असुर देंय भगाय।
वास तब सुख से करैं वह कौन सकत हटाय।
ध्यान धुनि परकाश लय हो विधि की गति मिट जाय।४।

राम सीता सहित लछिमन रहैं सन्मुख छाय।
मिलैं सुर मुनि करैं जय जय शीश पर कर लाय।
सुनै अनहद नाम मधुरी हर्ष हिय न समाय।
अन्त तन तजि अचल पुर लेंय फिर न जग चकराय।८।

४८३ ।। श्री ठाकुर गंगा सिंह जी जनवार ।।

पदः- जे जन बसैं सुरसरि तीर।
जाप विधि सतगुरु से जानै हटै असुरन भीर।

ध्यान धुनि परकाश लय हो कटै भव की पीर।
राम सीता शम्भु गिरिजा संग हनुमत वीर।४।

हर समय सन्मुख में राजैं दिव्य अजब शरीर।
देव मुनि निज निज बसन ते करहिं सुभग समीर।
सुनै अनहद ताल घट में रहै तन मन धीर।
अन्त तन तजि जाय निजपुर आस जग की चीर।८।

४८४ ।। श्री ठाकुर यमुना सिंह जी परिहार ।।

पदः- जगत सुख है सब स्वप्न समान।
मातु पिता भ्राता सुत बनिता धन पट और मकान।
अन्त समय कोई काम न दै हैं जब यम पकड़ैं कान।
झूंठ प्रपंच संग दुष्टन को बाजत चतुर सुजान।४।

कल्पन नर्क में चलि ते सड़िहैं चलै न शेखी शान।
राम भजन बिन छिन सुख नाहीं मिलै न ठीक ठिकान।
या से चेत करो नर नारी जो चाहो कल्यान।
सतगुरु करो चलौ निज घर को जानि नाम की तानि।८।

४८५ ।। श्री ठाकुर भगौती सिंह जी अहिबन ।।

पदः- ध्यान सतगुरु का प्रथम करि वीर बनना चाहिये।
नाम पर सूरति लगाकर धीर धरना चाहिये।
परकाश लय धुनि ध्यान पा पीर हरना चाहिये।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो पट चीर रहना चाहिये।
निर्वैर निर्भय जियत ह्वै बन हीर रहना चाहिये।
सन्मुख में माधो राधिका हों तीर रहना चाहिये।६।

शेरः- अनमोल तन मानुष का पा बेकार काहे खो रहे।
चेतो करो सतगुरु इंहा आये करन क्या सो रहे।।

४८६ ।। श्री ठाकुर गनेश सिंह जी रघुवन्शी ।।

पदः- तन मन भरा हरिनाम रंग कोई चाह नहीं है।
मरने वो जीने की ज़रा परवाह नहीं है।

दुनियां की सारी बातों में कुछ स्वाद नहीं है।
सतगुरु बिना निज घर की मिलती राह नहीं है।
भक्तों में हरि का प्रेम कोई थाह नहीं है।
हर दम भगत मगन रहैं कोई दाह नहीं है।६।

हरि के भजन बिना करत कोई वाह नहीं है।
यम नर्क लै ढकेलैं कहैं साह नहीं है।
मारैं सहो रोवो ज़रा बल बांह नहीं है।
जहां घोर अंधेरा है धूप छांह नही है।
आंखैं निकार लें उन्हैं कुछ डाह नही है।
क्यों की गरभ में कवल अब तक ख्वाह नहीं है।१२।

४८७ ।। श्री ठाकुर शंकर सिंह जी यदुवन्शी ।।

पदः- श्री हरि प्रेम में पागल बौरा।
भक्त स्मरण उनका करते चाहत नहिं कछु औरा।
आप संघ में रहत हमेशा शुध्द अशुध्द न मानत ठौरा।
पंथ चलत में खेल करत क्या लटकति पकरि पखौरा।
भोजन करत संघ हंसि हंसि के छीन खाय लें कौरा।५।

निशि में नाना खेल दिखावैं भाजत खींचि पिछौरा।
धाय झपटि बैठैं छाती पर पकरैं कानन लौरा।
जांय हाट नौकर बनि कबहूं सौदा के हित दौरा।
सब सामान खरीद लै आवैं शिर धर बांस क डौरा।
भक्तन के कहुं खेत बनावैं कर में साधि मठेई फौरा।१०।

चरनन की पनही कहुं पोछत कहूँ देत करि छौरा।
कहूँ मसाल दिखावत निशि में कहूँ सिखावत वारि में पौरा।
कहीं पे वेद शास्त्र को भाखैं कहीं पे गीता मानस गौरा।
सतगुरु करौ भेद सब जानौ हो अब हीं तुम घौरा।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहां मकान न चौरा।
खुलै नाम धुनि रग रोवन ते भन भनात जिमि भौरा।१६।

४८८ ।। श्री ठाकुर कामता सिंह जी चौहान ।।

पदः- संतन का कोई मरम न पावैं।

जहं चाहैं तहं लीला देखैं जहं चाहैं बैकुण्ठ बनावैं।
जहं चाहैं तहं अन्तर होवैं जहं चाहैं तहं दर्श दिखावैं।
जहं चाहैं तहं भोजन करलें जहं चाहैं तहं डाट सुनावैं।
जहं चाहैं तहं हाली पहुँचैं जहं चाहैं तहं देर लगावैं।५।

जहं चाहैं तहं शिक्षा देवैं जहं चाहैं तहं खूब बकावैं।
जहं चाहैं तहं नेक न बोलैं जहं चाहैं तहं हंसि बतलावैं।
जहं चाहैं तहं सेवा करदें जहं चाहैं तहं आप करावैं।
जहं चाहैं तहं मिलैं लपटि कै जहं चाहैं तहं दूरि परावैं।
जहं चाहैं तहं लोटें पोटें जहं चाहैं फौरन उठि जावैं।१०।

जहं चाहैं तहं करैं कीरतन जहं चाहैं तहं ध्यान लगावैं।
जहं चाहैं तहं मूरति पूजैं जहं चाहैं तहं पाठ सुनावैं।
जहं चाहैं तहं सुमिरैं मन में जहं चाहै तहं लय में समावैं।
जहं चाहैं तहं वस्तर लै लें जहं चाहैं तहं देखि हटावैं।
सारे विश्व में राज्य है उनका जहं चाहैं तहं मौज उड़ावैं।
कहैं कामता सिंह सदा हम संतन के चरनन शिर नावैं।१६।

४८९ ।। श्री राम रतन जी कसौधन बनिया ।।

पदः- हरि सुमिरन में तन मन कौरा।

सतगुरु करि जप की विधि जानो जियति मिटा भव लौरा।
साल दुशाला छोड़ि के भाई ओढ़ेन कमरी टाट भंगौरा।
अच्छे अच्छे भोजन त्यागेन पायन कैथा बेल औ औंरा।
कबहूँ मोथी चना चवायन कबहूँ मकई साँवा के चौरा।५।

कबहूँ भगवा कटि में बांधेन कबहूँ कसेन कोपीन कुठौरा।
कबहूँ मांगि मधुकरी खायन लपसी कढ़ी औ भात पकौरा।
कबहूँ दाल साग जो मिलिगा कबहूँ रोटी बरा मुंगौरा।
सुमिरन करो जियति सब तै हो पहुँचै अपने ठौरा।
नाहीं तो फिर अन्त नर्क में यमन के चलैं हथौरा।

सब तन कूटैं नेकि न मानैं बांधि के चाभ पिछौरा।
कल्पन भोग भोगाय कै छोड़ैं फिर हो जल में सौरा।१२।

दोहाः- मुरदा मांस खखार जल मिलै खान हित जान।
या से हरि सुमिरन करो ह्वै जावै कल्यान।।

४९० ।। श्री ठाकुर शुभ करन सिंह जी ।।

दोहाः कुक्कुट तीतरि बुलबुलैं बटई मेढ़ा स्वान।
आपस में लड़ि जात हैं बाजत ये अज्ञान।१।
पढ़ि सुनि गुनि जे जन लड़ै उन्हैं कौन है ज्ञान।
जियतै बीमा नर्क का लीन उठाय बिकान।२।

शेरः- दीनता औ शान्ति से सुमिरन करै सो ऊँच है।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप जग से कूँच है।।

४९१ ।। श्री ललिता नाऊ जी विलोरिया ।।

पदः- बचायो भाई निज धन है हरि नाम।
डाकू पांच रहत हैं तन में घात करत वसुयाम।
सम्हरा रहे हर समय जो जन ता से हो बेकाम।
लूटि न सकैं निराश जाय ह्वै जैसे नर बिन बाम।
ऐसी जगह बनाये बैठे ढूंढे मिलत न ठाम।५।
सतगुरु करो भेद जब पावो इन्हैं सकौ तब थाम।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय सनमुख सीताराम।
सुर मुनि मिलैं सुनो नित अनहद सुफल जियति हो चाम।
आशीरबाद श्राप को त्यागो या से तब हो खाम।
तिरगुन से बिन व्यार भये कोई पावत नहिं सुखधाम।१०।

४९२ ।। श्री ईश्वरी नाऊ जी श्रीवास्तव्य ।।

पदः- इसुरी कहैं इस तन से सतगुरु करिके हरि आराधिये।
काबू में होवैं असुर सब हर समय करत उपाधिये।
सूरति के संग में मन को लै चलि नाम में गहि बांधिये।
धुनि ध्यान लै परकाश हो अपना खज़ाना साधिये।

श्याम राधे रहैं सन्मुख कर्म दोनो रांधिये।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो मेटौ जियति भव आंधिये।६।

४९३ ।। श्री गनी मियां जी ।।

पदः- बजा के मुरली विपिन में मोहन नचाया वृक्षों को सत्य मानो।
जिधर को झुकते थे श्याम सुन्दर उधर को झुकते थे वृक्ष मानो।
जहां पै कूदैं मुरली मनोहर वहां पै कूदैं सब वृक्ष मानो।
जहां पै दौरैं घनश्याम प्रिय बर वहां पै दौरैं सब वृक्ष मानो।
मर्याद जग की मिटाया उस दिन दिखाया सुर मुनि को सत्य मानो।
फूलों की वर्षा जयकार की धुनि बजाया सुर मुनि ने साज मानो।६।

भरा था मुरली में नाम प्रिय का कहवाया वृक्षों से सत्य मानो।
करौ तो मुरशिद मिलै ये कूचा लखौ यह लीला तब सत्य मानो।
धुनि ध्यान तै हो परकाश लय हो जियति अभय हो यह सत्य मानो।
अनहद सुनो घट सुर मुनि मिलैं चट सकौ न फिर हट यह सत्य मानो।
प्रिय श्याम झांकी अलवेली वांकी सन्मुख में टांकी यह सत्य मानो।
यहीं सम्हर लो जियति में वर लो तन त्यागि घर लो यह सत्य मानो।१२।

दोहाः- शान्ति दीनता के बिना गनी कहैं दुख होय।
मन स्थिर नहिं हो सकै कैसे छूटै दोय।।

४९४ ।। श्री कमबख्त शाह जी ।।

पदः- बेद ओ शास्त्र पौराण पढ़ि सुनि कोई
नाम की तान को जान सकता नहीं।
ध्यान परकाश लय रूप की छवि छटा
हर समय सामने अपने लखता नहीं।
देव मुनि संघ बैठक औ हरि कीर्तन
साज अनहद की धुनि तान सुनता नहीं।
दीनता शान्ति औ सत्य विश्वास बिन
प्रेम आ कर के तन मन में भरता नहीं।
इसमें सतगुरु की भाई ज़रूरत बड़ी
भेद पाये बिना मार्ग खुलता नहीं।

कहते कमबख्त जियतै में जो तय करै

त्यागि तन फेरि जग में विचरता नहीं।६।

दोहाः- सीना ढीला देय करि गर्दन देय झुकाय।

आँखै दोनों बन्द करि पल्थी लेय लगाय।।

गोफ़ा दोनों कर लगा निज आगे रखि लेय।

उन्मुनी मुद्रा है यही सूरति शब्द पै देय।।

कहैं कमबख्त शाह मोहिं सतगुरु दीन्हों ज्ञान।

महा सुखी ह्वै जाय सो मानो वचन प्रमान।।

मेरु दण्ड के झुके बिन मिलत न ठीक ठिकान।

कहैं कमबख्त शाह मोहिं सतगुरु दीन्हों ज्ञान।।

राज योग या को कहत योगन का शिरताज।

कहैं कमबख्त जान कर सारो अपना काज।५।

वार्तिकः- सुखी उसको कहते हैं जो नाम की धुनि ध्यान प्रकाश औ समाधि को जान ले। महा सुखी उसको कहते हैं जिसके सामने रूप हर समय विराजता है। नाम की तान सुन रहा है, ध्यान प्रकाश औ समाधि करतल है।

४९५ ।। श्री वेदीन शाह जी ।।

शेरः- मूर्खों के वचन सह लो क्योंकि वे अन्धे बहिर।

नाम सुख सतगुरु बिना मिलता नहीं है अति गहिर।।

पदः- सतगुरु करि मन ठहरावो। षट चक्कर बेधि घुमावो।

सुखमनि पर मौज उड़ावो। हरि रूप सामने छावो।

वेदीन कहैं सुख पावो। पढ़ि सुन क्यों धोका खावो।

निज सूरति शब्द लगावो। सातों फिर कमल खिलावो।४।

परकाश ध्यान लय पावो। सब लोक घूमि फिर आवो।

तन छोड़ि वतन को जावो। फिर जग में नहिं चकरावो।

कुन्डलिनी शक्ति जगावो। सुर मुनि के संग बतलावो।

मम बैन गुनो उर लावो। नाहक में बयस गँवाबो।८।

४९६ ।। श्री बेकस शाह जी ।।

पदः- यम काल मृत्यु माया सब दैत्य तन से भाजैं।
सतगुरु से नाम जानो प्रभु सामने में राजैं।
धुनि ध्यान नूर लय हो सुर मुनि मिलैं औ गाजैं।
अनहद मधुर सुनो घट कैसी उठैं अवाजैं।
तन मन को प्रेम के संग एकतार करि जे माजैं।
बेकस कहैं ते तन तजि साकेत में विराजैं।६।

४९७ ।। श्री नागा शाह जी ।।

पदः- पढ़ना सुनना क्या है सतगुरु से नाम पाया।
धुनि ध्यान नूर लय में दुनों करम जलाया।
प्रिय श्याम सामने भे अद्भुद छटा को छाया।
सुर मुनि के साथ खेला हंसि हंसि हिये लगाया।
अनहद की तान सुनि सुनि फूला नहीं समाया।
नागा कहैं तजा तन साकेत को सिधाया।६।

४९८ ।। श्री बेवकूफ़ शाह जी ।।

पदः- सुनो बेवकूफ़ी मेरे भाईयों। बिना सतगुरु कीन्हें न सुख पाइयो।।
धुनी ध्यान परकाश लय धाइयो। तो सिया राम छवि सामने छाइयो।।
सबी देव मुनि संग बतलाइयो। सुनो घट में अनहद औ मुसक्याइयो।।
लिखा विधि का जियतै में कटवाइयो। छुटै तन तो निजपुर चले जाइयो।८।

४९९ ।। श्री बेशहूर शाह जी ।।

शेरः- मुरशिद करो तरो भव कहता है बेशहूर।
धुनि ध्यान लय व रूप के चारों तरफ़ में नूर।।

५०० ।। श्री फट फट शाह जी ।।

शेरः- सब पदारथ चार देवैंगे समय पर जो लिखे।
कहते हैं फट फट शाह मानो हम भी तो कुछ हैं सिखे।।

पदः- बारो चिराग यारों देखो बहार घट में।
मुरशिद से भेद जानो सब राम नाम रट में।।

मुरली मधुर बजावैं घनश्याम यमुना तट में।
धुनि ध्यान नूर पावो पहुँचो फिर लय के पट में।
संसार सब बंधा है सरकार ही के लट में।
फट फट कहैं गुनो तो जिमि बीज वृक्ष वट में।६।

पदः- निर्गुन निराकार बनि सर्गुन हर दम भक्तन मुख जोवैं।
भोग भोगावैं भेद बतावैं बस्तर मल धोवैं।
मग भूलैं तो चलैं अगाड़ी निशि में संघ सोवैं।
हंसि हंसि तेल लगावैं शिर में खेत जाप बोवैं।४।

खांय खिलावैं फल लै मधुरे पाक पाक टोवैं।
दालि बनावैं भात बनावैं रोटी हु पोवैं।
चापैं चरण भुलावा दैकर मग का श्रम खोवैं।
फट फट कहैं भजै मुरशिद करि ते नहिं जग रोवैं।८।

शेरः- हम में न कुछ तुम में न कुछ सब कुछ भरा एकै हरफ़।
फट फट कहैं मुरशिद करो यारों चलो तो उस तरफ़।।

पदः- प्रिय श्याम की लीला लखौ सब सखा सखियां साथ में।
भूषन बसन साजे अजब मुरली लिये प्रभु हाथ में।
केशर तिलक रबि भोर सम छवि देत हरि के माथ में।
फट फट कहैं सब में रमें सब रमें प्रिय यदुनाथ में।४।

पदः- करत हरि भक्तन संग लड़िकैयां।
मुख चूमत कांधे चढ़ि बैठत भाजत बैयां बैयां।
भक्त खवावत खात हंसत औ बोलत नहियां नहियां।
फट फट शाह कहैं मुरशिद करि निरखौ रहियां रहियां।४।

पदः- श्याम प्रिय खेलत पांसा सारी।
प्रिय की जीत होय तब सखियां हंसैं सबै दै तारी।
जीतैं श्याम सखा सब कूदैं बोलैं जय जय कारी।
राधे पांसा चट उठाय कै दें जब नीचे डारी।४।

श्याम लाड़िली के मुख पर कर देवैं हंसि दोउ मारी।
श्यामा तब हरि को मुख चूमैं बोलैं हंसि बलिहारी।

मुरशिद करै लखै सो लीला देखी बात हमारी।
शान्ति दीनता गहि सुख लूटौ फट फट कहत विचारी।८।

शेरः- फट फट कहैं हरि को भजो तन मन वो प्रेम में हो गरक़।
मुरशिद से सुमिरन जान लो पल भर न होवै तब फरक।।

कवित्तः- यशुदा की उछंग में उमंग से विराजैं श्याम
देव मुनि धन्य धन्य कहैं पितु मातु जी।
दहिने दिश ठाढ़े कर थाम्हे क्या शोभा देत
गौर रंग सोहैं प्यारे बलिराम तात जी।
प्रेम की तरंग में खड़े हैं नन्द सन्मुख में
बेला हेम दहिने कर तामे दूध भात जी।
छवि श्रृंगार छटा लखि सुधि बुधि भूली
पुलकावलि रोम रोम फूल्यो सब गात जी।४।

कण्ठा अवरोध भयो नयनन में नीर छयो
कहै कौन भांति बोलैं मुख नेक बात जी।
झांकी कवन बरनै शेष शारद चुप चाप
बैठे काम रति देखि गिरे लागी जनु लात जी।
मुरशिद करि नाम गहो दीन बनि शान्ति रहो
फट फट के बैन गहौ काढ़ौ मति दांत जी।
सन्मुख में रूप लेव सूरति को शब्द देव
ध्यान लय प्रकाश लेव कैसी मिली घात जी।८।

पदः- उछंग में नन्द की हरि राजैं।
पीत झंगुलिया कटि करधनियां पौटा पगन विराजैं।
फूल कलिन रचि केश संवारैं सुर मुनि लखि लखि गांजै।
यशुमति दुइ अंगुलिन लिहे काजल घात करैं दृग आंजै।
हंसि बलराम बजावैं तारी नैन मूंदि प्रभू लाजैं।५।

यह झांकी मुरशिद करि निरखै उनके दुख सब भाजैं।
हर दम नाम पै सूरति राखै नित मुद मंगल छाजै।
ध्यान प्रकाश समाधि को जानै तन मन प्रेम में माजैं।

नर तन हरि सुमिरन बिन भाई आवत नहिं कोई काजै।
फट फट शाह कहैं तन तजि कै चलि पितु मातु के बाजैं।१०।

पदः- यशुमति को हरि खूब बकावैं।
हंसैं हंसावैं चिढ़ैं चिढ़ावैं लोटैं मचल दिखावैं।
छिन में कहैं देहु मोहिं माखन छिन में दूध मंगावैं।
छिन में कहैं खाब हम साढ़ी छिन में दही मंगावैं।
छिन में कहैं ले आवो खोवा छिन में खुरचन खावैं।५।
छिन में कहैं मलाई पइहौं छिन में रबड़ी पावैं।
छिन में दाल भात वो रोटी छिन में छांछ सुनावैं।
छिन में माल पुवा औ हलुवा खीर को हांक लगावैं।
छिन में पूरी और कचौरी खुरमां कहि गोहरावैं।
छिन में पेड़ा बरफ़ी लड्डू छिन में मिश्री गावैं।१०।
छिन में कलाकन्द औ खाजा बालूशाही ध्यावैं।
छिन में कहैं जिलेवी अमृती रसगुल्ला मन भावै।
छिन में कहैं निसास्ता दीजै छिन में गोझिया पावैं।
छिन में रोट पिराक औ माठै कहैं अँदरसा आवैं।
छिन में कहैं गुलगुला मीठे लोन बड़ियां मोहिं भावैं।१५।
छिन में कढ़ी पकौड़ी बोलैं छिन में बरा सुहावैं।
छिन में खरिका और रसा जय छिन में बरी बतावैं।
छिन में सन्तोला औ घेवर छिन में माल दही मंगवावैं।
छिन में सन्देशन हित झगड़ैं छिन में घुघुरी हित दोरावैं।
छिन में गट्टा और बताशा छिन में बुंदियन हित चिल्लावैं।२०।
छिन में गुलाब जामुन औ पापर छिन में चुरमा पपरी खावैं।
छिन में कटवा मटवा मांगैं छिन में भाजी साग सुनावैं।
छिन में कहैं रिकौचैं खइहों छिन में चटनी चाट लगावैं।
छिन में कहैं महेरी रइता छिन में शरबत को घोरवावैं।
छिन में कहैं ले आवो बूरा छिन में कहैं अचारहि खावैं।२५।
छिन में लाई चीउरा मांगैं छिन में बोलैं चना चबावैं।
छिन में निमक मिर्च हित टेरत छिन में अदरख मूली पावैं।

छिन ही में सब मेवा मांगैं छिन ही में सब फल बतलावैं।
माता परेशान ह्वै बैठीं सखी देंय नेकहु नहिं पावैं।
कहैं हमारे लावो खेलौना माई सब को नाम बतावैं।३०।

नाहीं तो हम पियें न पानी कर मुख की जूठन न धोवावैं।
कहैं बलिराम मान जाव भइया सुनि चट मारन धावैं।
उठि बलराम भाग जांय द्वारे नयन मूंदि मुसक्यावैं।
सखी कहैं आवो मम कनियां हरि दोउ हाथ हिलावैं।
गोप खड़े कर जोरे निरखैं मुख से बोलि न पावैं।३५।

सुर मुनि नभ ते जै जै बोलैं फूलन की झरि लावैं।
भाग्य सराहैं मातु पिता की पुरवासिन बल जावैं।
जिनके सुकृत से हम सब नित प्रित नैनन का फल पावैं।
सर्वेश्वर को जिन वश कीन्हों पल भर नहिं बिलगावैं।
नाना भांति के खेल करैं क्या सब उर प्रेम बढ़ावैं।४०।

मुरशिद करै लखै सो लीला नाम पै सूरति लावैं
ध्यान प्रकाश समाधि होवै रूप सामने छावै।
अनहद नाद की आनन्द लूटैं सुर मुनि संघ बतलावैं।
नागिन जगै चक्र षट घूमैं सातों कमल खिलावैं।
इड़ा पिंगला सुखमन होवै विहंग मार्ग ते जावै।४५।

चौदह तबक लखै घट भीतर अमृत छकि हर्षावै।
जियतै मुक्ति भक्ति सो जानै तन तजि निजपुर धावै।
फट फट शाह कहैं तब प्रानी भव बन्धन नहिं आवै।४८।

पदः- सूरति तुम्हारी मोहन तन मन लुभाने वाली।
मुरशिद करै सो जानै सब दुख छुड़ाने वाली।
धुनि ध्यान नूर लय हो सुधि बुधि भुलाने वाली।
मुरली की तान मधुरी सन्मुख सुनाने वाली।
अभिमान होय नेकौं फौरन उड़ाने वाली।५।

दै शान्ति दीनता को भक्तन झुकाने वाली।
दाया क कोष हंसि हंसि दीनन लुटाने वाली।
सुमिरन में जवन कच्चे उनसे लुकाने वाली।

पढ़ि सुनि जे मानते नहीं उनको रुलाने वाली।
बसुयाम जे लगे हैं पलना झुलाने वाली।१०।

उन्ही के संघ डोलैं कर गहि उठाने वाली।
भव का समुन्द्र उन हित पल में सुखाने वाली।
फट फट कहैं गरभ रिन आपै चुकाने वाली।
नाहीं तो कवन उबरै सबको सुलाने वाली।१४।

पदः- सखी कहैं छोड़ो हरि लरिकइयां।
बारह वर्ष की वयस भई है अब लाज न आवत दैया।
दूध दही माखन नित छीनत चलत बकैयां बकैयां।
वृज भर के लड़िकन को फोरि कै लियो बनाय संघैया।
हम सब भागि कहां को जावैं चलत न कछु चतुरैया।
सारी नोचि घांघरा फारत नेको नहीं मनैया।६।

काहे दुःख देत हौ प्यारे नौ लख तुम्हरे गैया।
प्रेम के वैन सखिन के सुनि कै प्रभु अन्तर ह्वै जैया।
मुरशिद करो लखो नित लीला दर्शै कुंवर कन्हैया।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि अनहद सुनौ बधैया।
सुर मुनि आवैं हरि गुण गावैं हंसि हंसि हिये लगैया।
फट फट शाह कहैं तन तजि के चलो अचलपुर भैया।१२।

पदः- अजिर निज खेलैं दुनों भैय्या।
कटि करधनियां पग पैजनियां बाजैं आनन्द छैय्या।
छोरे केश वसन नहिं तन में दौरैं हंसि सुखदेय्या।
लड़ैं गिरैं उठि बैनै बोलैं प्रेम की करि लपटय्या।
चोटिया हरि बलराम की पकरैं बलि चट पट ह्वै जैय्या।५।

ऊपर हरि सवार ह्वै जावैं कहैं चलो घोड़रैय्या।
उठि बलराम चलैं हरि बोलैं दौरो करो कुदय्या।
कहैं बलिराम चुटय्या छोड़ौ तब चलि हैं हम धैय्या।
तब हरि छोड़ि चुटय्या देवैं बोलै बलि मुसकैय्या।
लागि लोटासि मेरे अब मानो उतरो चट पट भैय्या।१०।

तब हरि कहैं बकावत हो तुम जानेन हम चतुरैय्या।
सुर मुनि नभ ते जय जय बोलैं सुमनन की झरि लैय्या।
मातु पिता लखि लखि हरखावैं मुख से बोल न पैय्या।
भांति भांति के खेल दिखावैं बरनन शेष लजैय्या।
मुरशिद करै लखै सो लीला छूटै द्वैत बलैय्या।१५।

ध्यान धुनी परकाश दसा लय हो शुभ अशुभ जलैय्या।
सन्मुख में बलिराम श्याम की जोड़ी रहै सदैय्या।
सुर मुनि आवैं हंसि दुलरावैं निज निज नाम बतैय्या।
अन्त त्यागि तन प्रभु ढिग राजै छूटै जग औंघैय्या।
फट फट शाह कहैं मम बानी गुनै सो सुख लुटैय्या।२०।

५०१ ।। श्री डग मग शाह जी ।।

पदः- मुरशिद करो हरि को भजो नाहीं तो अन्त में फेल हो।
यमदूत पीटैं बेदर्द निकसैगो नीचे वेल हो।
जाय लै पेशी करावैं देंयगे फिर जेल हो।
नेकी बदी संग में चलै चौथा सकत नहिं पेल हो।
या से सखुन मानो मेरा बनि जाव इहां अकेल हो।५।

शब्द को सूरति को दो तब जीव ब्रह्म का मेल हो।
ध्यान धुनि लय नूर पा सुर मुनि के संघ में खेल हो।
अनहद सुनो निर्भय बनो जियतै में भव दुख झेल हो।
फिर क्या करै कोई तुम्हारा जब खजाना रेल हो।
डग मग कहैं तन त्यागि चलिये अचलंपुर सुख से लहो।१०।

पदः- विहंसि हरि भक्तन संघ दुलरावैं।
मुख चूमैं गोफा गले डालैं फिर उर में चपटावैं।
निशि में आय लखैं जब सोवत गुदगुदाई उचकावैं।
डग मग कहैं भजो मुरशिद करि तव सन्मुख छवि छावैं।४।

पदः- क्या जाति पांति का भेद तजा सब संग उमंग से खाते हैं।
कोई ब्राह्मण हैं कोई क्षत्री हैं कोई वैश्य, शूद्र कहलाते हैं।
ते मुसलमान अंगरेज़ों के होटलों में जाकर पाते हैं।

जरदा पुलाव बिस्कुट कबाब कुछ किमाम भी खाते हैं।
तन्दुरी रोटी दाल भात मछली के पकौड़े आते हैं।५।

अन्डों के बरे कहैं लावो कछु मीठे चावल भाते हैं।
कोई नान पाव औ शीर माल कछु दाल मोठ गोहराते हैं।
कोई नेबू रस अदरख पियाज मूली औ नमक मिलाते हैं।
कोई दही बरे कोई कहैं खुश्क कोई खट्टे मीठे पाते हैं।
कोई साग कड़ू औ रसेदार बिन कहते मजे न आते हैं।१०।

कोई सोडा पानी मांगि रहे कोई दाल को कड़ू बताते हैं।
कोई ठन्डा पानी मांगि रहे कोई ताजा तुरत भराते हैं।
कोई मुर्ग गोश्त कोई गाय गोश्त कोई भैंस गोश्त रखवाते हैं।
बकरे का गोश्त कहैं रक्खौ कछु मेंढा का बतलाते हैं।
ताज़ी चटनी औ नमक मिर्च लैकर फिर चाट लगाते हैं।१५।

हंसि हंसि के स्वाद बयान करैं नहीं शर्म ज़रा मन लाते हैं।
सूजा चाकू चिम्मच कैंची मोचनों से दांव चलाते हैं।
लन्डन के गोश्त में जो कीड़े मोचनों से मुख में लाते हैं।
जब दाढ़ों से उनको दावैं मरि जांय निगल तब जाते हैं।
तारीफ़ करैं ऐसी ताकत की चीज कहां कोई पाते हैं।२०।

अण्डे मुर्गी के कच्चे भी कोई फोरि के मुख में नाते हैं।
कोई दूध मिला करके पीवैं कहैं ताक़त खूब बढ़ाते हैं।
जा बजा धरे बिजुली पंखे जो हवा खूब लहराते हैं।
कोई बटन कोट को खोलि दिया कोई सर से हैट हटाते हैं।
खा पी कर के दें नोट कहैं लो जलदी जी हम जाते हैं।२५।

बकरे का गोश्त चुरा करके कोई उस का रस निकलाते हैं।
फिर उस में चीनी दूध मिला कर बरतन में भरवाते हैं।
जावित्री जयफर जाफरान तज पत्रज लौंग ढिलाते हैं।
गोल मिर्च इलायची खुर्द कलां पिसवा कर फिर मिलवाते हैं।
कुरसी पर चारों तरफ़ डटैं फिर प्याले भर भर आते हैं।३०।

फिर घूंट घूंट धीरे धीरे पी कर के सब मुसकाते हैं।
कोई बन्दूकों से जीव वधैं हा जरा रहम नहिं लाते हैं।

खरगोश हिरन चिड़ियां ग़रीब जा कर के मार गिराते हैं।
फिर उनको उठवा ले आवैं दै हुक्म साफ करवाते हैं।
खुर पंख पंज ओझरी आंतैं खाल आंखै चोंच फेंकाते हैं।३५।

सींगों को कहते रहने दो कमरों में उन्हें जड़ाते हैं।
गर खाल हिरन की चित चाहा सो सुखवा कर पकवाते हैं।
फिर उसके जूते औ बेगैं थैले बटुवे सिलवाते हैं।
छूरी से गोश्त के टुकड़े करवा बनवा कर फिर खाते हैं।
कोई दोस्तों के हित भेजवावैं खत लिख कर कुली पठाते हैं।४०।

कहैं जवाब जलदी ले आना हम हुक्म यही फरमाते हैं।
वे कुली सितावी से पहुँचैं दै गोश्त जवाब लै आते हैं।
कोई घर में नित खाने के हित बकरों के गले कटाते हैं।
कोई मछली ही घर में मंगवा कर तर औ खुश्क भुनाते हैं।
पी कर शराब जब नशे में हों तब मन मानै सो गाते हैं।४५।

कोई दावत आपस में करते दिन रात को धूम मचाते हैं।
तहं जाय जाय कर नर नारी खा खा कर वाह सुनाते हैं।
फिर सिगरेट पान तमाकू लै फूकैं औ धुआं उड़ाते हैं।
तजि नमशकार परनाम दियो क्या हाथ में हाथ मिलाते हैं।
अपनी अपनी औरतों को लै फिर सैर कराने जाते हैं।५०।

बाजारों में कोई घूमि रहे कर से कर गहि बतलाते हैं।
कोई सौदा हाथ में ले कर के फिर उसका मोल कराते हैं।
जब मोल बतावैं सौदागर तब औरत को दिखलाते हैं।
कहते हैं पसन्द तुम्हारे हो तो इसका दाम चुकाते हैं।
गर हो पसन्द तो लै लीजै वरना हम इसे घुमाते हैं।५५।

यह नाटक होते दुनियां में हम सांच तुम्हैं लिखवाते हैं।
यह खान पान व ऐश बुरे इनसे सब बिगड़े जाते हैं।
इन में रज तम का ज़ोर बड़ा कुल में हा दाग लगाते हैं।
रण्डी लौंडे परनारिन संग फंस कर नित पाप कमाते हैं।
तन छोड़ि नर्क में जाय पड़ैं कल्पों तहं दुःख उठाते हैं।६०।

अबहीं कुछ चेति नहीं करते जियतै यम हाथ बिकाते हैं।
है सब से अर्ज यही मेरी जे मानैं ते सुख पाते हैं।
सब छोड़ि सतो गुण पर आवैं मुरशिद करि पाप जलाते हैं।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि लहैं सिया राम सामने छाते हैं।
सुर मुनि सब के नित हों दर्शन अनहद सुनि हिय हर्षाते हैं।६५।
तन त्यागि वतन को हो रुखसत फिर गर्भ वास नहिं पाते हैं।
अब चन्द रोज़ के बाद सुनो यह शौक इहां से जाते हैं।
फिर आगे धरम ध्वजा फहरै यह सुर मुनि नित बतलाते हैं।
कहैं डग मग शाह सुनो भाई हमहूँ नित यही मनाते हैं।
मेरा भारत देश सुधर जावै जो सब के गुरु कहाते हैं।७०।

पदः- सिया राम की झांकी लखौ संग बैठि तीनो भ्रात हैं।
छटा छवि श्रृंगार अद्‌भुत अजब कोमल गात हैं।
दीन बन्धु दया के निधि भक्तन के हाथ बिकातु हैं।
मुरशिद करो पावो पता तब सामने ठहरात हैं।४।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सुर मुनि भि संग बतलात हैं।
अनहद की तान मधुर सुनो एक तार जो न सिरात हैं।
डग मग कहैं तन तजि चलौ साकेत जहं पितु मातु हैं।७।

पदः- चरखी डोरि पतंग उठाय के चारों कुँवर सफ़र में जावैं।
सखा जाय आगे सब बैठैं निज निज करन पतंग उड़ावैं।
मलया गिर चन्दन की चरखी देंय सुगन्ध उमंगैं आवैं।
श्री वशिष्ट जी की बनवाई ठीक भेद हम तुम्हें बतावैं।
डोरी विधि हरि शिव की दीन्हीं टूटि न सकै दिब्य कहलावैं।५।
उमा रमा शारद जी लाय कै दीन पतंगें मन ललचावै।
नेको फटैं न मैली होवैं वैसे चम चम चम चमकावैं।
मांझा जवन लगा है उनमें जब कटि जाय सुमन्त बनावैं।
पानी फल का आटा घोरि कै आगी पर तेहि खूब चुरावैं।
ता में हीरा शुक्ल पीस कै छोड़ि उतारि फेरि ठण्ढावैं।१०।
तब फिर सूत की रस्सी बंटि के तामे वाको लेप लगावैं।
लेंय सुखाय फेरि घामे में यह मांझा बढ़िया कहवावै।

कटैं पतंगे सुर मुनि लूटैं नीचे एक गिरन नहिं पावैं।
आय आय सब देंय जमा करि लखि लखि पुरवासी हर्षावैं।
श्री वशिष्ट जी श्री दशरथ जी बैठे तहं पर हिय हुलसावैं।१५।

गद गद कण्ठ रोम सब पुलकैं नेको मुख से बोलि न पावैं।
यह लीला मुरशिद करि देखौ जो कोई सूरति शब्द लगावैं।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि वा के सब करतल ह्वै जावैं।
अन्त त्यागि तन लेय अचलपुर गर्भ वास में फिर नहिं आवैं।
डग मग शाह कहैं यह नर तन है अनमोल जो राह को पावैं।२०।

पदः- राम रंग नील नील श्याम रंग नील नील
विष्णु रंग नील नील अद्‌भुद छवि छाई।
सिया रंग गौरपीत राधे रंग गौरपीत
कमला रंग गौरपीत अति ही सुखदाई।
मुरशिद से जानि नाम सुमिरै जो अष्टयाम
पावै सो ठीक ठाम दर्शै सब आई।
ध्यान धुनी नूर पाय लय में सुधि बुधि भुलाय
उतरै फिर आय जाय तन में हर्षाई।
सुर मुनि का सुनै गान अनहद की उठै तान
छूटै सब सान मान निर्भय ह्वै जाई।
डग मग कहैं धरै धीर सोई हो शूर वीर
दुर्लभ यह नर शरीर मानो सच भाई।६।

शेरः- मीटिंग स्पीच करते भूखों को नहिं खिलाते।
कहते हैं डग मग तन तजि दोज़ख़ में वास पाते।१।
कानों से हुये बहिरे आंखों से हुये अन्ध।
डग मग कहैं मुरशिद बिना हा सूंघते दुर्गन्ध।२।

पदः- सइयां तेरी पइयां परूँ बहियां मति तोर।
अपनी कहत न सुनत मोरी एकौ बरजारी कर दीन्हीं बहियां झिझकोर।
दुध दही माखन सब लूटत छोड़त नहि किहे शोर।
तन मन ते हम तुमको चाहैं ऊपर ते कुल कानि निबाहैं
हौ सब के चित चोर।४।

उतपति पालन सब तव करतल बाजत नन्द किशोर।
दोऊ कर जोरे विनय करैं सखी नयनन टपकै लोर।
प्रेमातुर हरि देखि सखी को फैरयौ नैन की कोर।
डग मग कहैं हुये चट अन्तर लीन्हों सुधि बुधि छोर।८।

पदः- खबरिया लेहैं रामै श्याम।
मुरशिद करि दरवाजा पकड़ौ पूरन हों सब काम।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सुनिये आठोंयाम।
तब फिर आय सामने राजैं सुन्दर शोभा धाम।
डग मग शाह कहैं जियतै यह सुफ़ल होय नर चाम।
अन्त समय तन त्यागि अचलपुर बैठि करौ विश्राम।६।

पदः- भजु नित राम श्याम के नाम।
जाप विधि मुरशिद से लै कर सारि ले निज काम।
ध्यान धुनि परकाश लय हो जहां वायु न घाम।
सामने सुखमा भवन दोऊ निरखु आठौ याम।
देव मुनि सब आय तोसे करैं नित प्रनाम।
साह डग मग कहैं तन तजि पाव अचल मुकाम।६।

पदः- लड़के लड़की स्कूलों में पढ़ि निज निज धर्म को त्यागि किया।
स्कूल नहीं यह सूल तूल हा मूल हमारी छीन लिया।
भगवान वह दिन जलदी आवैं यह भारत से उठि जाय छिया।
डग मग कह घर घर हरि कीरतन का चौमुख फिर जल जाय दिया।४।

पदः- लखौ किमि सन्मुख सीता राम।
मन शूकर विष्ठा पर दौरत सकत नहिं तेहि थाम।
जाप पाठ कीरतन बनैं नहि चोरन छीनौ दाम।
भेष की लाज न नेकौ आवत चिकनावत नित चाम।
तुमते तो ग्रहस्थ बहु नीके भजन करत वसु याम।५।
तन सुकुमार किह्यो अस भाई जस नरेश की वाम।
कैसे नाम सिद्ध हो गुनिये सह्यौ शीत नहि घाम।
इन्द्रिन दमन किहे बिन कोई पायो है निज ठाम।

मुरशिद करो होय मुद मंगल जौन संत का काम।
डग मग शाह कहैं अब चेतो काहे हो बदनाम।१०।

पदः- पापी जग में जब आन बढ़ैं तब भारत माता शोच किया।
ये दुष्ट नहीं अब मानैंगे या से चट आप समाधि लिया।
अब थोड़े दिन में जागैंगी घर घर में जामे नाम बिया।
डग मग कहैं हम अब जाते हैं जो कहना था लिखवाय दिया।४।

५०२ ।। श्री चटपट शाह जी ।।

पदः- वलैयां लें किमि सन्मुख श्याम।
आंखिन अन्धे कानन बहिरे पायो रूप न नाम।
मुरशिद करैं भेद तब पावैं होय सुफ़ल नर चाम।
जेहि दिशि देखैं तेहि दिशि दर्शै नेक न खाली ठाम।४।

सूरति शब्द क मारग है यह होत जाप वसु याम।
ध्यान प्रकाश समाधी करतल सुर मुनि कहैं गुन ग्राम।
तन तजिकै साकेत विराजैं कौन सकै फिर थाम।
चटपट कहैं भजैं नहिं हरि को ते जन नमक हराम।८।

५०३ ।। श्री माई गँगा रौताईन जी ।।

पदः- चुकता हिसाब कर दो तब तो हो कौल मरदां।
पट्टा लिखा गर्भ में अब करते हरि से परदा।
पढ़ि सुनि के क्या गुना है तुम से भले हैं बरदा।
तन से कपट न छूटा खाते हो जग में गरदा।
तन छूटने की देरी जम खांय जैसे जरदा।
गांगा कहैं अब चेतो सतगुरु बिना हो छरदा।६।

पदः- निर्भय निर्वैर रहै जग में सो श्री सतगुरु का है चेला।
नाहीं तो भाई है मुशकिल क्यों पास में दाम न है धेला।
या से चित चेत कमा लीजै यह चारि दिना का है मेला।
गांगा कहैं तन मन एक करै वाके हित यह जिमि है खेला।४।

पदः- वाउं दुख जग में उन्हैं जिनका न हरि में चाव है।
सतगुरु बिना कटता नहीं यह अगम भव का ताव है।

नाम वल्ली को गहो तन खूब तुम्हरी नाव है।
गांगा कहैं नर तन मिला मत चूकिये क्या दांव है।४।

पदः- बटो हरि नाम की रसरी।
सतगुरु करि सब भेद जानिये होय न मोटी पतरी।
लय परकाश ध्यान धुनि होवै बैठै रूप से पटरी।
गांगा कहैं अन्त तन छोड़ि कै अचल धाम चल बसरी।४।

५०४ ।। श्री झट पट शाह जी ।।

पदः- परमात्मा का नाम जानै पाप तब वाके कटैं।
सतगुरु करै मारग मिलै तन मन लगा करके डटै।
विघ्न जो कुछ होंय सहले पग न पीछे को हटै।
सो रूप ध्यान प्रकाश लय धुनि पाय भक्तन में छटै।
बाटैं गरीबों को यह धन नित जाय बढ़ता नहि घटै।
झट पट कहैं तन छोड़ि कै निज धाम में जा कर अटै।६।

पदः- अजब हरि रूप रंग है भाई।
सतगुरु करौ भजौ निशि वासर तन मन प्रेम लगाई।
लय परकाश ध्यान धुनि होवै सन्मुख जावैं छाई।
कौ वरनै अद्भुद है झांकी शारद शेष चुपाई।
दीन दयाल दया के सागर भक्तन के सुख दाई।
झट पट शाह कहैं जियते में जानै सो मरि पाई।६।

५०५ ।। श्री चङ्गी माई जी ।।

पदः- रसनियां है बड़ी दुख दाई।
नीक नीक भोजन यह चाहत छोड़त नहिं लबराई।
या के बिन रोके कोइ जग में सुख कबहूँ नहिं पाई।
कथा कीरतन सुमिरन में यह चलत नहीं हरजाई।
झूठ मसखरी लोभ की बातन में यह चपल लुगाई।५।
पांचौ चोरन को पालन करि दीन्हिस बली बनाई।
मन संग पांचों को लै करके करता पाप कमाई।
या से जीव निकसि नहिं पावत चलत न कछु चतुराई।

सतगुरु करो मानिहै तब यह जो देहौ सोखाई।
तन मन ते तब भजन करी नित नाम निशान घुमाई।१०।

परा मध्यमा पैशन्ती लै ब्रह्म नाड़ि ढिग धाई।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय दर्शै प्रिय यदुराई।
अनहद सुनो देव मुनि आवैं प्रेम करैं लिपटाई।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं जावैं कमल फुलाई।
सुखमन स्वांस बिहंग मारग ह्वै जाय कै घर लखि पाई।
तन तजि कै साकेत चलो फिर कहती चंगी माई।१६।

दोहाः- कारन की गठरी बनी रसना याको नाम।
सतगुरु बिन वश होय नहिं करती अपना काम।१।
चंगी कह चंगा वही या को ले जो खींच।
निर्भय औ निर्वैर हो नाघि जाय भव कीच।२।

५०६ ।। श्री लम्बू शाह जी नियारिया ।।

पदः- नाम धन पाये बिना संसार में तन है वृथा।
ध्यान लय जाये बिना संसार में तन है वृथा।
परकाश लय होये बिना संसार में तन है वृथा।
अनहद के चटकाये बिना संसार में तन है वृथा।४।

सुर मुनि से बतलाये बिना संसार में तन है वृथा।
सन्मुख में प्रभू छाये बिना संसार में तन है वृथा।
तन तजि के ढिग जाये बिना संसार में तन है वृथा।
मुरशिद के खटकाये बिना संसार में तन है वृथा।८।

शेरः- तन मन की एकता हो फट जाय आबरन।
तब यार बे खता हो लगि जाय चित चरन।१।
तब तो जवां से नाम को तुम जप नहीं सकते।
अन्दर से नाम धुनि हो छबि रूप की लखते।२।

पदः- सिया राम की छटा छवि प्रिय श्याम की छटा छवि
श्री विष्णु की छटा छवि अद्भुद करै को वरनन।
मुरशिद करै भजै नित चित को लगा के चरनन।

धुनि ध्यान नूर लय हो सुर मुनि मिलैं मगन मन।
अनहद बजै सुनै घट अमृत पियै रहा छन।
जियतै में जान करके जो जाय यार यहं बन।
तन तजि वतन हो रुखसत मिट जाय गर्भ का रिन।६।

५०७ ।। श्री पण्डित चूड़ामणि जी पाण्डेय ।।

पदः- सुनिये लंगर माई रारि करतु है।
मैं यमुना जल लै के चलों जब गगरी गिराय मोरी वहियां धरतु है।
हाट बाट एकौ नहिं मानत नेकौं नहिं यह धीर घरतु है।
निशि में सोवत जाय जगावत मुख हंसि चूमत हंसि लिपट परतु है।
लाज हाट में बेंचि के खायो चोरी करत नहि पेट भरतु है।
दूध दही माखन सब लूटत मुरली बजाय मेरे मन को हरतु है।६।

सासु ससुर मेरी नन्द रिसाती रोय सहौं उर दाह बरतु हैं।
बार बार मैं बरज के हारी वसन चलत मेरा छूट घरतु है।
निरखे बिना श्याम के अब तो नैनन ते मेरे नीर झरतु है।
सतगुरु करि देखै जो प्रभू छवि सो तन मन के पाप छरतु है।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय जगत में फिर न सरतु है।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद चखै अमी वसु याम गरतु है।१२।

शेरः- घनश्याम के सौन्दर्य्य सम सौन्दर्य्य किसका है।
सतगुरु करौ लखौ सब बिश्व जिसका है।।

५०८ ।। श्री आगा गंवार शाह जी ।।

पदः- मुरशिद करो गहो मग देखो बहार क्या है।
सन्मुख में राम सीता शोभा सिंगार क्या है।
धुनि ध्यान नूर लय हो अनहद गुमकार क्या है।
सुर मुनि के होंय दर्शन हंसि करत प्यार क्या है।
जिसने जियत न जाना उसका शुमार क्या है।
सब आप ही की लीला कहता गंवार क्या है।६।

५०९ ।। श्री कङ्गाल शाह जी अफ़रीदी ।।

पदः- मन से वचन से कर्म से विश्वास करि हरि नाम पर।
मुरशिद से मारग जान कर तू लागि जा निज काम पर।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सुर मुनि मिलैं वसुयाम पर।
अनहद की मधुरी तान सुन जो हो रही दर आम पर।
प्रिय श्याम की अद्‌भुद छटा सन्मुख लखौ हर ठाम पर।
अन्त में तन छोड़ि चल कंगाल कह निज धाम पर।६।

५१० ।। श्री हलवल शाह जी ।।

पदः- सिया राम राधे श्याम कमला विष्णु को नित ध्याइये।
मुरशिद से जप विधि जानकर सन्मुख छटा छवि छाइये।
धुनि ध्यान नूर समाधि हो सुधि बुधि वहां बिसराइये।
अनहद बजै हर दम सुनो सुर मुनि के संग बतलाइये।
जियतै में तय करि त्यागि तन जग में न फिर चकराइये।
अनमोल नर का तन कहै हल वल न धोका खाइये।६।

५११ ।। श्री परमानन्द जी वैश्य ।।

पदः- राम कृष्ण विष्णु देव सुर मुनि हैं सोई।
जो सन्मुख में आय प्रेम बेलि देंय बोई।
ध्यान धुनि प्रकाश जाय लय में सुधि खोई।
अनहद की मधुर तान सुन सुन सुख होई।४।
सूरति को शब्द बांधि तन मन दे धोई।
आपै सब आय जायं परिचय करि टोई।
जियतै जो जानि लेय सो न गर्भ रोई।
सतगुरु की शरन बिना पावत नहिं कोई।८।

५१२ ।। श्री भल भल शाह जी ।।

पदः- भजै सिया राम सब दुख जावै।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानै तन मन प्रेम में तावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि अनहद नाम सुनावै।
नित दरबार जाय कर देखै सुर मुनि संघ बतलावै।

यह जग सरगुन तन है हरि का जानि हिये हर्षावै।
भल भल शाह कहैं तन तजि कै गर्भ वास में फिर नहिं आवै।६।

५१३ ।। श्री लम्पट शाह जी ।।

पदः- मन से बचन से कर्म से सतगुरु सरन जे जातु हैं।
धुनि ध्यान लय परकाश पा सुर मुनि के संघ बतलात हैं।
सन्मुख में सीता राम छवि अनहद सुनैं मुसक्यात हैं।
निर्वैर निर्भय जियत ह्वै कौसर चखैं हुलसात हैं।
सुकृत जिनके हैं बड़े यहि मार्ग ते ठहरात हैं।
लम्पट कहैं तन से बिदा ह्वै जायं जहं पितु मातु हैं।६।

५१४ ।। श्री बटपार शाह जी ।।

पदः- भजो प्रिय श्याम को एक तार।
मुरशिद करि सुमिरन बिधि जानो खुलि जाय धुनि रंकार।
ध्यान समाधि होय तब करतल छाय जाय उजियार।
सुर मुनि आवैं हिये लगावैं मुख चूमै करि प्यार।४।

दरवाजे पर नौबत बाजै सुनिये क्या गुमकार।
सन्मुख मातु पिता छवि छावैं टरै न फिर निशि वार।
को वरनै छवि विश्व के स्वामी शोभा अजब सिंगार।
वटपार शाह कहैं तन जब छूटै पास में लेयं बिठार।८।

५१५ ।। श्री लोलुप शाह जी ।।

पदः- सिया राधे रमा लखौ सोहतीं।
सतगुर करि जप की विधि जानो भक्तन के मुख जोहतीं।
चुनि चुनि फूल सुगन्धित लावैं हार प्रेम से पोहतीं।
भक्तन को फिर जाय पिन्हावैं सुधि बुधि सारी मोहतीं।४।

मचलैं भक्त मनावैं हंसि हंसि नेको नहिं मन रोहतीं।
हैं सरवज्ञ करैं क्या बातैं हम सब भक्तन टोहतीं।
प्राण समान भक्त हैं मेरे दुख देखैं तब कोहतीं।
भोग भोगाय पास में लेवैं लोलुप कह अस चोहतीं।८।

सोरठाः- कन्द मूल फल वारि भोजन रुचि अनकूल जो।
लावैं मातु सम्हारि भक्तन हित लोलुप कहैं।।

५१६ ।। श्री डाकू शाह जी ।।

पदः- तन मन लगा सतगुरु से जप विधि जान कर जो ध्यावता।
धुनि ध्यान लय परकाश पा सन्मुख में प्रभु छवि छावता।
अनहद सुनै सुर मुनि मिलैं दरबार में नित जावता।
प्रेम में जब मौज हो हरि का बिमल यश गावता।
समता रहे सब में सदा नहिं द्वैत मन में लावता।
डाकू कहैं तन छोड़ि बैठक अचलपुर में पावता।६।

५१७ ।। श्री चोर शाह जी ।।

पदः- झूठी बातैं न पूकौ भजो हरि हरि हरि।
सतगुरु से जप की विधि जानो तन मन प्रेम में करि करि करि।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय जियति जाव मरि मरि मरि।
सुर मुनि मिलैं सुनौ नित अनहद पिओ अमी रहा गिर गिर गिर।
शान्ति दीनता सरधा दाया विश्वास सत्य उर धरि धरि धरि।
चोर शाह कहैं अन्त त्यागि तन जाहु अचल पुर ठरि ठरि ठरि।६।

५१८ ।। श्री छिछोर शाह जी ।।

पदः- पढ़ि सुनि लिखि न पैहौ हरि हरि हरि।
सतगुरु करि सुमिरन विधि लीजै कर्म जांय दोऊ जरि जरि जरि।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय पाय जियति जाव तरि तरि तरि।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै पिऔ अमी तन भरि भरि भरि।
काल मृत्यु माया औ यम गण भागै लखि तुम्हैं डरि डरि डरि।
कहैं छिछोर शाह तन छोड़ि के बैठी निज पुर सरि सरि सरि।६।

५१९ ।। श्री थुक्कन शाह जी ।।

पदः- सतगुरु से जप विधि जानकर तन मन लगा जो ध्यायगा।
परकाश लय धुनि ध्यान पा सन्मुख में हरि छवि छायगा।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनै अमृत पिये मुसक्यायगा।
नागिन दिखावै लोक सब षट चक्र शोधि घुमायगा।

सातों कमल खिल जायं सुन्दर क्या सुगन्ध उड़ायगा।
थुक्कन कहैं तन त्यागि कै साकेत को चलि जायगा।६।

५२० ।। श्री नमक हराम जी ।।

पदः- भाग्य भाजन जाव बन सतगुरु से जप विधि जान कर।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सुर मुनि मिलैं नित आन कर।
अनहद सुनो घट में बजै अमृत टपकता पान कर।
प्रिय श्याम की झांकी लखौ सन्मुख हँसौ पहिचान कर।
दीनता औ शान्ति हो उसको भजन यह दान कर।
कहता है नमक हराम निजपुर जाहु तन तजि ज्ञान कर।६।

५२१ ।। श्री जानकी बाई जी ।।

पदः- धर्म जगत में सधा सो कीन्हा। तन तजि हरि पुर बैठक लीन्हा।
साधू ब्राह्मण जाति हो कोई। भूखा होय आय जाय सोई।
भोजन वसन लाय तेहि देवै। सो तन तजि हरि पुर चलि लेवै।
कहैं जानकी बाई बच्चा। सांचे को मिलता है सच्चा।४।

५२२ ।। श्री पौवा माई जी ।।

पदः- पीसौ राम नाम की चकिया।
सतगुरु करिके दाँव जानि लेव छोड़ो तन मन मखिया।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय सुधि बुधि जहं हो खखिया।
सुर मुनि मिलैं सुनो नित अनहद अजा की काटो नकिया।
सन्मुख राम सिया छवि छावैं जियत सुफल हो अंखिया।
पावौ कहैं अन्त साकेतै चलौ सत्य हम भखिया।६।

५२३ ।। श्री छटंकी माई जी ।।

पदः- लीजै राम नाम की सूजी।
सियै की गौं सतगुरु करि सीखो जमा होय तब पूँजी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन में गूंजी।
अनहद सुनो मिलैं सुर मुनि सब कर्म जियत जांय भूँजी।
तब निज धन दीनन को देना कभी न बनना मूँजी।
कहैं छटंकी अन्त अचलपुर छूटि जाय सब रुजी।६।

५२४ ।। श्री घट घट शाह जी ।।

पदः- प्रेम सतगुरु से किया उसकी बधाई बाजी।
ध्यान धुनि नूर समाधी में जाय निज को माजी।
चोर सब शान्त हुये दुष्टता उनकी भाजी।
श्याम श्यामा की छटा सामने हर दम राजी।४।

देव मुनि आय लिपटि करैं वाह यहां जी।
साज निज घट में बजै सुनै ताल महा जी।
त्याग तन घट घट कहैं वास लेंय उहां जी।
जाय तब छूटि गर्भ कौल कुल कान हां जी।८।

५२५ ।। श्री सीताराम जी ।।

(श्री काशी निवासी, शिष्य श्री स्वामी रामानन्द जी)

पदः- साँचा रसिक तवन कहवावै।
जो कोई सतगुरु करि सुमिरन विधि जान के तन मन लावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनि पावै।
अनहद बजै अमी रस पीवै सुर मुनि संग बतलावै।
सीता राम की झांकी अद्‍भुद निज सन्मुख में छावै।
सीता राम शरन कह तन तजि अचल धाम चलि जावै।६।

५२६ ।। श्री खुशीराम जी ।।

पदः- सांचे रसिक बनो सब भाई।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानि के सुमिरो तन मन लाई।
ध्यान प्रकाश समाधी होय धुनि नाम की परै सुनाई।
अनहद बजै देव मुनि दर्शै पिऔ अमी हरखाई।
सीता राम की झांकी सन्मुख रहै हमेशा छाई।
खुशी राम कहैं अन्त त्यागि तन बैठो निज पुर जाई।६।

५२७ ।। श्री राधेश्याम जी रसिक ।।

(मधुपुरी, शिष्य श्री स्वामी रामानन्द जी)

पदः- सांचा रसिक कहावै सोई।
सतगुरु करै भजै निस वासर तन मन प्रेम में लोई।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन ते होई।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद कर्म जांय दोऊ धोई।
श्यामा श्याम सामने राजैं देय नाम जग वोई।
राधे श्याम सरन कह तन तजि गर्भ में परि नहिं रोई।६।

५२८ ।। श्री नारायण शरण जी रसिक ।।

(श्री द्वारकापुरी)

पदः- सांचा रसिक तवन श्रुति कहई।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै मन अन्तै नहिं वहई।
लय प्रकाश ध्यान धुनि पावै सुर मुनि के पग गहई।
अनहद सुनै पियै घट अमृत सब में समता चहई।
राम विष्णु की झांकी ताके सन्मुख हर दम रहई।
श्री नारायण शरण कहैं तन तजि नहिं जग में ढहई।६।

५२९ ।। श्री मोहन शरण जी रसिक ।।

(श्री अवध, प्रमोद वन)

पदः- राम कृष्ण नारायण मंत्र में भेद न कोई लावो।
तीनो एकै गती देत है ह्वै निष्काम जो ध्यावो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन सुनि पावो।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शैं अमी पाय हर्षावो।
राम सिया प्रिय श्याम रमा हरि की छवि सन्मुख छावो।
मोहन शरन कहैं तन तजि कै गर्भ वास नहिं पावो।६।

५३० ।। श्री कृपा चार्य्य जी ।।

दोहाः- कृपा चार्य्य कहैं शिव कृपा अमर भयन हम जान।
जो या में शंसय करै सो देखै धरि ध्यान।।

५३१।। श्री प्रेमा माई जी ।।

पदः- चित चोर को बांधो पकरि प्रेम की डोरी।
तब पहुँचि जाव हरखाय वतन की ओरी।
सतगुरु करि जप विधि जान त्रिगुण दो तोरी।
तन मन जुरि होवै एक नाम रंग बोरी।

धुनि ध्यान प्रकाश समाधि लेय सुधि छोरी।
शुभ अशुभ की होवै नाश जरै जिमि होरी।६।

अनहद धुनि घट में बजै सुनो शुभ ठौरी।
सुर मुनि सब आवैं लपटि मिलैं झकझोरी।
सन्मुख दें श्यामा श्याम छटा छवि जोरी।
लो शान्ति दीनता धारि त्यागि छल चोरी।
जियतै में सब लखि लेव भर्म घट फोरी।
तन तजि बैठो साकेत सुनो सब मोरी।१२।

५३२ ।। श्री प्रेम निधि जी ।।

पदः- तरुणाई में अबला पति बिना बिरह अनल जरि जावै।
वैसे सतगुरु करि जप विधि जानो मन को जो तावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोंवन खुलि जावै।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमी पाय हर्षावै।
राम सिया की झांकी सनमुख आय छटा छवि छावै।
अन्त त्यागि तन अचल धाम लै फिर जग में नहिं आवै।६।

५३३ ।। श्री मूसर चन्द जी ।।

पदः- सतगुरु बिना गती न होला। परि नाना योनिन में रोला।
फूटै नहिं भर्म फफोला। बिन मिले नाम का गोला।
लय ध्यान प्रकाश अमोला। जग हेतु देव मुनि खोला।
यह भजन करत शिव भोला। जो देत हैं भक्ति अमोला।४।

५३४ ।। श्री पंडित आशीरवादी जी ।।

पदः- सतगुरु करि तन मन ताईला। सो जियतै सब सुख भाईला।
परकास ध्यान लय धाईला। धुनि नाम की खुलि भन्नाईला।
सुर मुनि सब दर्श दिखाईला। अनहद सुनि हिय हर्षाईला।
कुंडलिनी जब जग जाईला। सब लोकन माहिं घुमाईला।
षट चक्कर बेधि घुमाईला। सातौं तब कमल फुलाईला।
सिय राम सामने छाईला। तन तजि सो गर्भ न आईला।६।

५३५ ।। श्री शीलवती माई जी ।।

पदः- बिना सतगुरु नहीं मिलता नाम अनमोल है मोती।
जानि जप विधि ओनावो तो धुनी एकतार है होती।
ध्यान परकाश लय पावो भजै सारी अजा रोती।
लखौ सिया राम को सन्मुख अमित ब्रह्मांड जिन जोती।
रहै जब तक जगत में तन रहो हरि नाम को बोती।
अन्त तन त्यागि निजपुर लो वृथा हा बैस क्यों खोती।६।

५३६ ।। श्री हबीबा जी रण्डी ।।

पदः- हरि सुमिरन करि लेहु मजे में।
सतगुरु करि जप की विधि जानो सूरति शब्द पै देहु मजे में।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन सुनि लेहु मजे में।
सुर मुनि आवैं हंसि उर लावैं अनुपम अमृत पिअहु मजे में।
अनहद सुनौ बजै घट हरदम सन्मुख सिय प्रभू लेहु मजे में।
अन्त त्यागि तन कहैं हबीबा चलि लीजै निज गेहु मजे में।६।

(२)

पदः- सतगुरु करि सुख लेहु मजे से।
सूरति शब्द की जाप है अजपा तन मन प्रेम में देहु मजे से।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय पावो पासे भेव मजे से।
अमृत चखौ देव मुनि दर्शें अनहद घट सुनि लेहु मजे से।
सन्मुख हर दम सिय प्रभू निरखौ भागैं असुर औ मेव मजे से।
अन्त छोड़ि तन कहैं हबीबा निज पुर बैठक लेहु मजे से।६।

५३७ ।। श्री हल्ला शाह जी ।।

पदः- शार्दूल का बच्चा ह्वै कर भूल से बना सियार।
सतगुरु करि निज को पहिचान ले असुरन पकरि पछार।
ध्यान समाधि नाम धुनि होवै छाय जाय उजियार।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद करें देव मुनि प्यार।
सन्मुख राम सिया की झांकी शोभा अजब सिंगार।
हल्ला कहैं त्यागि तन बैठो चलि साकेत मंझार।६।

५३८ ।। श्री मधु मंगल जी ।।

पदः- श्याम श्यामा लखौ खड़े सामने।

सतगुरु करो भजन विधि जानो लूटा तुमको काम ने।
अगणित पापी निज पुर राजत भेजि दीन हरि नाम ने।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय जाना है नर वाम ने।४।

अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि के कर थामने।
घट ही में सब लोक तीर्थ क्या रचना की सुखधाम ने।
मधु मंगल कहैं गर्भ में वादा सुमिरन का कियो चाम ने।
सो तो करत नहीं हा पापी वयस लियो वसु याम ने।८।

(२)

श्याम श्यामा सखा सखी खेलते।
कर से कर पकरैं चट बैठें हंसि सब संघै लेटते।
उठि के फिर कूदैं ऊपर को निज निज जुट को भेटते।
श्याम अनन्त रूप बनि सब को बांधत अपनी फेंट ते।
यमुना रज को लाय श्याम तर करैं सुगन्धित तेल ते।
सब को बशी भूत करि पल में मुख में ता को ठेलते।६।

राधे हंस लखि बैठि जाँय चट मुख मूँदैं निज चैलते।
सुर मुनि चढ़े विमानन निरखैं प्रेम में गद्गद भैल ते।
सतगुरु करै भजन विधि जानै छूटै भव के जेल ते।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय जियत घर पेलते।
सुर मुनि मिलैं गहै दूनों कर प्रेम के रेला रेल ते।
मधु मंगल कहैं जे न भजैं हरि ते चौरासी झेलते।१२।

५३९ ।। श्री मंगला मुखी जी ।।

पदः- कन्हैया प्यारो है मेरी जान।

सिर पर मुकुट श्रवण दोऊ कुँडल भाल तिलक चमकान।
नासा अधर चिबुक छवि सुन्दर गालन मारयो मान।
धनुष समान बनी है भृकुटी नैन सैन भरे बान।४।

भूषन वसन बनत हैं निरखत कहत में रुकत ज़वान।
मुरली देत बजाय सुरीली छूटत खान औ पान।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सब सुख की हैं खान।७।

५४० ।। श्री धोका शाह जी ।।

पदः- सर्व धर्म को त्यागि कै अब हरि शरण चल दीजिये।
सतगुरु से मारग जानकर जियतै में करतल कीजिये।
धुनि ध्यान लय परकाश हो अनुपम अमी रस पीजिये।
अनहद सुनो सुर मुनि मिलैं हरि यश कहैं सुन लीजिये।४।

सनमुख में राधे श्याम की अदभुत छटा लखि लीजिये।
सत्य शान्ति औ दीनता गहि प्रेम अविरल कीजिये।
तन मन निछावर करिके बस उस रंग ही में भीजिये।
अन्त तन को छोड़ि के साकेत को चलि दीजिये।८।

(२)

सतगुरु से जप विधि जानि ले सो जियत सब सुख पायगा।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सुर मुनि के संग बतलायगा।
अनहद सुनै अमृत चखै तन मन सदा हरखायगा।
राम सीता की छटा छवि सामने में छायगा।
जब तक रहे जग में विमल हरि चरित नित प्रित गायगा।
सन्मुख हुआ सो जानिये तन त्यागि गर्भ न आयगा।६।

(३)

प्रेम भाव सतगुरु में जाको जियतै सो भव तरि जावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सो सुनि पावै।
अनहद सुनै अमी रस चाखै सुर मुनि संग नित बतलावै।
नागिन जगै चक्र सब वेधैं कमल सात खिलि दरसावै।४।

उसी क प्रेम भाव वनि सतगुरु जो चाहैं सो समझावैं।
राम सिया की झांकी सन्मुख सदा रहै नहिं विलगावै।
यहां वहां ताकी साका का झण्डा हर दम फहरावै।
निर्भय औ निर्वैर दीनता शान्ति से हरि के गुन गावै।८।

(४)

समझ मन जल औ काठ की प्रीति।

अपना सींचा जानि न बोरत क्या है बड़ेन की रीति।

तू तो जीव क नायब बनि कै करत सदा अनरीति।

चिन्ता बिषय की छोड़त नाहीं कौन करै परतीत।४।

सतगुरु बिन तू सुधरै नाहीं ऐसा भया पलीत।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि जानि लेहु तोहि जीति।

अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि सिखवैं नीति।

सन्मुख राम सिया छवि छावैं गिरै द्वैत की भीति।८।

(५)

प्रेम प्रीति बिन होय नहिं नीति सदा की रीति।

जीति मनै अनरीति तजि बनौ वज्र की भीति।१।

धोका कह हरि भजन बिन ढोवत फिरत पलीति।

सतगुरु करि निज मार्ग गहु तब होवै परतीति।२।

राम नाम में शक्ति है अकह अलेख अपार।

धोका कह सतगुरु वचन मान जियो निश बार।३।

ध्यान प्रकाश समाधि हो नाम खुलै रंकार।

हर दम सन्मुख राम सिया निरखौ अजब सिंगार।४।

५४१ ।। श्री बाली खल्ल जी ।।

पदः- भूठे वचन कभी मत बोलो।

सतगुरु करि श्रुति नयनन खोलो।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय जियति सुख सोलो।

अनहद सुनौ देव मुनि दर्शै अमृत पिओ अतोलो।

राम सिया प्रिय श्याम रमा हरि निरखौ रूप अमोलो।

अन्त त्यागि तन अचल धाम लो फिर जग में नहिं डोलो।६।

५४२ ।। श्री रबाबी अबदुल गफ्फ़ार जी ।।

पदः- सिय राम श्याम प्रिय विष्णु रमा शिव गिरिजा तन मन भावन जी।
शारद बिधि गणपति औ सरस्वति श्री सुरपति शची सोहावन जी।

श्री शेष कमठ. दिग्गज बराह पृथ्वी को भार उठावन जी।
वाराह नृसिंह औ मच्छ कच्छ हय ग्रीव रूप क्या बावन जी।
बजरंग खड़ानन श्री भैरव क्या बीरभद्र भय खावन जी।५।

काली दुर्गा ज्बाला अनन्त शक्ती बन दुःख हटावन जी।
रामा नन्द बुद्ध गौराङ्ग लक्षमणा चार्य्य जक्त सुख छावन जी।
शंकरा चार्य्य औ ज्ञानेश्वर नानक तुलसी सूर समर्थ कहावन जी।
अश्वनी कुमार औ धनवन्तरि लुकमान अरस्तू पावन जी।
श्री ईसा और मोहम्मद क्या हरि प्रेम में तन मन तावन जी।१०।

रैदास कबीर और दादू सुन्दर क्या हर्ष बढ़ावन जी।
श्री श्वपच सदन रंका बंका पीपा सीता सुख दावन जी।
सेवरी करमा कुबजा मीरा नित प्रेम अमी बरसावन जी।
श्री तुकाराम और एकनाथ नरसी हुंडी लिखवावन जी।
केवट गोरख श्री धना भक्त वे बीज खेत उपजावन जी।१५।

जगजीवन जग में भेजा हरि अभरन जल दूध वनावन जी।
औलिया पैगम्बर पीर कुतुब दरवेश गदा कहवावन जी।
आलिम फकीर मुल्ला मोमिन हाफिज कारी बतलावन जी।
सव विश्व विराट रूप में है सुर मुनि बनि खेल मचावन जी।
सतगुरु करि जियतै जो जानै तब छूटै आवन जावन जी।२०।

(२)

मति कीजै पर दारा से प्रीति दाग तन लागि जैहैं रे।
यह संग करत अनरीति काम मन जागि जैहैं रे।
सतगुरु करि जप की रीति जानि जे पागि जैहैं रे।
ते जग में पावें जीति असुर सब भागि जैहैं रे।४।

मिलै निज कुल की क्या नीति सन्मुख हरि तागि जैहैं रे।
लय ध्यान प्रकाश में बीति समय दिन भागि जैहैं रे।
मम बचन वज्र की भीति गहैं नहि टांगि जैहैं रे।
जिनको नहि नाम में धीति पकड़ ते नांगि जैहैं रे।८।

सब कौतुक है धनु धारी का मुरली धारी का चक्रधारी का।
जप जानै जो त्रिपुरारी का सो निरखै सब सुखकारी का।
लय ध्यान नूर लय जारी का अनहद घट बजत करारी का।
हरि यश मुनि देव उचारी का पीवै अमृत भरि क्यारी का।४।

यह पद है दीन भिखारी का सतगुरु करि तन मन मारी का।
मम वचन गहै भव पारी का जो कहा श्री उर गारी का।
निर्भय निर्वैर सम्हारी का सो बाजी पितु महतारी का।
सन्मुख षट रूप संवारी का तन त्यागत तौन पुकारी का।८।

कीर्तन १:- बिश्व के माता सब सुख दाता निशि बासर नर नारी जपो।
सीता सिया जानकी जी कहि निशि बासर नर नारी जपो।
वैदेही जनकात्मजा कहि निशि बासर नर नारी जपो।
जनक कुमारी जनक दुलारी निशि बासर नर नारी जपो।४।

जनक किशोरी जनक लली कहि निशि बासर नर नारी जपो।
जनक की पुत्री भूमि सुता कहि निशि बासर नर नारी जपो।
जनक की बेटी जनक लाड़िली निशि बासर नर नारी जपो।७।

कीर्तन २:- बिश्व की माता सब सुख दाता निशि बासर नर नारी भजौ।
श्री लक्षमी रमा और कमला निशि बासर नर नारी भजौ।।

कीर्तन ३:- बिश्व की माता सब सुख दाता निशि बासर नर नारी रटौ।
राधे राधा प्रिय राधिका निशि बासर नर नारी रटौ।
श्यामा कृष्णा और लाड़िली निशि बासर नर नारी रटौ।
बृष भानु लली बृष भानु सुता कहि निशि बासर नर नारी रटौ।
बृष भानु नन्दनी बृष भानु कुंवरि कहि निशि बासर नर नारी रटौ।
वृषभानु दुलारी वृषभानु किशोरी निशि बासर नर नारी रटौ।६।

कीर्तन ४:- बिश्व की माता सब सुख दाता निशि वासर नर नारी ररौ।
उमा शिवा गिरिजा महरानी निशि वासर नर नारी ररौ।
शैल सुता गिरिराज कुमारी निशि वासर नर नारी ररौ।
दक्ष सुता हेमाचल पुत्री निशि वासर नर नारी ररौ।४।

दक्ष किशोरी दक्ष कुमारी निशि वासर नर नारी ररौ।
शैल नन्दनी दक्ष नन्दनी निशि वासर नर नारी ररौ।
पारवती जगदम्बा अम्बा निशि वासर नर नारी ररौ।
देवी चन्डी शिव की रानी निशि वासर नर नारी ररौ।८।

५४३ ।। श्री बिधु मंगल जी ।।

पदः- श्री कृष्ण भगवान दयानिधि गोरखपुर सुख छाया है जी।
श्री हनुमान प्रसाद बैश्य से गीता प्रेस खोलवाया है जी।
कल्याण धर्म के ग्रन्थ छपा कर देश विदेश पठाया है जी।
पढ़ि पढ़ि नर नारी बहु सुधरैं धर्म ध्वजा फहराया है जी।
त्याग विराग भीतरी जा में बिरलै कोई लखि पाया है जी।
सब देवन में समता जाकी दीनन पर अति दाया है जी।६।

शान मान को दीन तिलाञ्जुलि संत कृपा जग आया है जी।
या से वृध्द तरुण और बालक सब के मन में भाया है जी।
जो जैसा वैसे दे भोजन धन पट पात्र बँटाया है जी।
ऐसा पुरुष कोई मुश्किल से मिलिहै सत्य सुनाया है जी।
प्रेस भी ऐसा और कहीं पर हमैं नहिं दिखलाया है जी।
बिधु मंगल कहैं पूरन दया क समय आय नकचाया है जी।१२।

दोहाः- श्री हनुमान प्रसाद को श्याम लेंय अपनाय।
बिधु मंगल कहैं हम तुम्हैं ठीक दीन लिखवाय।।

५४४ ।। श्री कोतवाल शाह जी ।।

पदः- जिस नाम से हो प्रेम जिसका उस से वह भव पार हो।
सतगुरु से जप बिधि जानि लेवै जियति ही उद्धार हो।
धुनि ध्यान लय परकाश पावै रूप का दीदार हो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनै अमृत पियै मतवार हो।४।

निर्वैर निर्भय जब चहै चलि जाय नित दरबार हो।
एक रस हर दम रहै नेकौ न फिर फलकार हो।
त्यागि तन चढ़ि जाय निजपुर चलैं तहं अति प्यार हो।
कोतवाल कह यह तन भजन बिन मान लो बेकार हो।८।

५४५ ।। श्री प्रेमदास जी ।।

पदः- निरखौ श्याम संग में राधे।

सतगुरु करौ लखौ यह लीला हौ तुम द्वैत में बांधे।
सखा सखी सब खेल करैं संग कर धरि धरि दोउ कांधे।
सुर मुनि आवैं हिये लगावैं जे हरि नाम को साधे।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होवै प्रभु आराधे।
प्रेम दास कहैं अन्त लेहु घर छूटै सकल उपाधे।६।

५४६ ।। श्री प्रेम शाह जी ।।

पदः- प्रेम प्रेमी को मिलता प्रेम से।

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानौ लागौ तन मन प्रेम से।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि करतल होवै प्रेम से।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद पिओ अमी रस प्रेम से।
सन्मुख श्यामा श्याम बिराजैं निरखौ हर दम प्रेम से।
प्रेम शाह कहैं अन्त त्यागि तन निज पुर बैठो प्रेम से।६।

५४७ ।। श्री उमंग शाह जी ।।

पदः- हरि नाम के भजे बिन जग में बहार नाहीं।

दिन चार यहं पै रहना सोचत हो यार नाहीं।
सतगुरु करौ गहौ मग नेकौ अबार नाहीं।
धुनि ध्यान नूर लय हो जहं पर विचार नाहीं।४।
सुर मुनि औ शक्ती दर्शें जिनका शुमार नाहीं।
सनमुख में श्याम श्यामा सुख का सम्हार नाहीं।
तन त्यागि लो अचलपुर जहं पर पुकार नाहीं।
हो रूप रंग हरि सा तब तो निसार नाहीं।८।

दोहाः- हरि सुमिरन बिन जगत में स्वल्प सुक्ख नहिं होय।
कह उमंग मानो सही निशि दिन पीटत दोय।।

५४८ ।। श्री गोलन्दाज शाह जी ।।

पदः- अजा छछूंदर के संग रहते पांच बिलौटा दुष्ट।

सारी फौज कहे में उनके घूमि रहे एक मुष्ट।

मन को अपने गोल में राखैं तन में कीन्हिन कुष्ट।
जीव अकेल उपाय चलै नहि हरदम रहते रुष्ट।४।

सतगुरु करौ नाम धन पाओ काहे बने हो चुष्ट।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि मिलै होहु सन्तुष्ट।
सुर मुनि आवैं हिये लगावैं करैं ज्ञान की गुष्ट।
सन्मुख राम सिया छबि छावैं जिनके सम को पुष्ट।८।

सोरठाः- लेहु निशाना सीख, गोलन्दाज कह जियत ही।
या बिन मिलै न भीख, यहां वहां मानो सही।।

चौपाईः- तन है तोप औ मन है गोला। दागि उड़ा दो भर्म फफोला।
सतगुरु से लो जान उपाई। निर्भय राज्य करो हर्षाई।।
ध्यान प्रकाश समाधि हो भाई। नाम की धुनि एकतार सुनाई।
राम सिया जो जग पितु माई। सन्मुख में देवैं छबि छाई।४।

५४९ ।। श्री हलचल शाह जी ।।

पदः- हरि नाम धन न पाया साधू नहीं वह लोलो।
विरथा जन्म गंवाया चौरासी परिकै छोलो।
मुरशिद से चाभी लेकर चट अपना ताला खोलो।
धुनि ध्यान नूर लय हो सुर मुनि के संग बोलो।४।

अनहद बजै सुनो घट अमृत पिओ अतोलो।
सारे असुर बिदा हों बांधे जो तन में गोलो।
सिया राम सामने हों जियतै बनो अमोलो।
तन त्यागि अन्त निजपुर हल चल कहैं सुख सोलो।८।

५५० ।। श्री तरंग शाह जी ।।

पदः- चलत टेढ़े टेढ़े धन बल मद ते।
अन्त समय यम दूत उन्है गहि पटकैं महिते भदते।
तन से पकरि निकारि चलैं रोवैं पर पर पद ते।
अबहीं तो चित चेतत नाहीं पाप भार शिर लदते।
तब फिर कवन बचावै उनको परै सामना बद ते।५।

भूख प्यास की बात कहैं जहं मारै मुक्का गद ते।
लै इजलास पै हाजिर कर दें पेशी हो हो रहते।
ग्वाला लाठी डारि टांगि दें नर्क मे दुख बेहद ते।
सतगुरु करै जियत हो करतल राम नाम के रद ते।
नाहीं तो उबरे कोई कैसे वाह वाह के नद ते।१०।

चौपाईः- जीव पान औ पाप है पाला। या से मन का फिरत न माला।
कहैं तरंग शाह नर बाला। तन के भय अति बुरे हवाला।।

दोहाः- राम नाम के रंग बिन कह तरंग सब भंग।
सतगुरु करि सुमिरन करौ जीतौ जग की जंग।।

५५१ ।। श्री अनूठी माई खोंची जी ।।

पदः- दाढ़ी वाह वाह में नोची।
सतगुरु किहेव न धर्म कमायो अन्त बात भई पोची।
नर्क में दुख हर दम यम देवैं भालन ते तन कोंची।
हाय हाय की बानी बोलैं रहै मनै मन सोची।
कलपन भोग भोगिकै आवैं फिर पावैं तन मोची।
काठी जूता सियें औ बेचैं कहैं अनूठी खोंची।६।

५५२ ।। श्री शिव राम रैदास जी ।।

पदः- क्या राम कृष्ण नारायण के उर श्री भृगु चरण चिन्ह ताता।
मारयो मुनि ने नारायण उर क्षीर समुद्र जाय लाता।
सुर मुनि बेद शास्त्र सब गावत या से जग में विख्याता।
राम कृष्ण भी निज उर धारयो गुनिये भक्तों यह बाता।
तीनौ प्रभु एकै नहि अन्तर सत्य भेद मैं बतलाता।
दीन दयाल भक्त दुख भंजन पूरन सुख के हैं दाता।६।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै सो निज सन्मुख कर पाता।
ध्यान प्रकाश समाधि होय जब सुधि बुधि तहं चलि विसराता।
ररंकार धुनि रग रोवन हो तन मन प्रेम रहे माता।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि संग प्रभु यश गाता।
नागिन जगै चक्र षट वेधैं कमल खिलैं सातौं भ्राता।
मुक्ति भक्ति जियतै हो करतल छूट जाय जग से नाता।१२।

५५३ ।। श्री हनुमान देई माई रैदासिन जी ।।

पदः- संसकारो की क्रिया जिसने नहीं जियते करी।
वह हो नहीं सकता जहां से मान लो यारों बरी।
चक्करों से खुश्क है मिलती नहीं उसको तरी।
सतगुरु जिसे मिलता नहीं कैसे बनै वह जौहरी।
नातवां है भूख से पासै में है वस्तू भरी।५।

तन मन औ प्रेम लगाय सूरति शब्द पै जिन नहि धरी।
धुनि ध्यान नूर समाधि में तब तक भला कैसे परी।
अनहद न घट में सुन सकै पावै न अमृत की झरी।
सुर मुनि के संग में बैठि के किमि सुनै भाखै हरि हरी।
प्रिय श्याम जग पितु मातु की किमि लखि सकै जोड़ी खड़ी।१०।

(२)

पदः- हरि से हरि का नाम बड़ा है।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो परदा हटै पड़ा है।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख श्याम खड़ा है।
मन्द हंसन खुब चितवन प्यारी तन मन माहि गड़ा है।४।

अमृत पिओ गगन ते टपकै चुकै न ऐस घड़ा है।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै कैसा योग जड़ा है।
जो मम बचन पै तन मन देवै सो साकेत अड़ा है।
नाहीं तो तन त्यागि नर्क में कल्पन जाय सड़ा है।८।

५५४ ।। श्री कुकरूँ कूँ शाह जी ।।

पदः- निज को निज में नहि पहिचाना, धरा क्यों सन्त का वाना।
सतगुरु मिलैं सयाना, खुलि जायं चशम काना।
लय नूर धुनि औ ध्याना, अनहद की सुनिये ताना।
अमृत भी कर लो पाना, सुर मुनि के संग हो खाना।४।

नागिन को जागि जाना, षट चक्र को घुमाना।
सातों कमल फुलाना, दोउ स्वर महक उड़ाना।

सिय राम छवि महाना, सन्मुख में आय छाना।
कर्मों को हो जलाना, तन तजि मिलै ठिकाना।८।

दोहा:- कुकरूँ कूँ कह हरि भजौ मानौ बचन हमार।
नाहीं तो तन त्यागि के परिहौ नर्क मंझार।।

(२)

पद:- हरि नाम धन निज धाम को बसुयाम मनीआर्डर करो।
सतगुरु से सीखो जब कमाना तब तो खुद पैदा करो।
तन मन औ प्रेम लगाय के जब शब्द पै सूरति धरो।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सुर मुनि मिलैं चरनन परो।
अनहद सुनो अमृत पिओ छूटै भरम सुख में भरो।५।
राम सीता की छटा सन्मुख रहै जियतै तरो।
यह पद मिलै तब भाइयों दुख पड़ै सह लो मति टरौ।
निर्वैर निर्भय हर समय यम काल मृत्यु से नहिं डरो।
युग युग रहै साका बनी तन दो बदल तुम नहिं मरो।
चेतो कहा मानो नहीं तो भव की अग्नी में जरो।१०।

दोहा:- खोंटा खरा बनि जात है जानि राम का नाम।
भजन में जो अलसात है ताको सरै न काम।।

पद:- हरि नाम जप करतल करो धुनि ध्यान लय परकाश जी।
सुर मुनि मिलैं अमृत पिऔ जो झरत बारह मास जी।
अनहद सुनो घट में बजै सिय राम सन्मुख खास जी।
नागिन जगै चक्कर चलैं कमलन क होय बिकास जी।
निर्वैर औ निर्भय रहौ हों कर्म दोनों नाश जी।
अन्त तन तजि लेहु निजपुर त्यागि जग की आस जी।६।

दोहा:- कुकरूँ कूँ कह मम बचन मानै नहिं जो भाय।
सो कैसे पावै रतन जग में चक्कर खाय।।

५५५ ।। श्री ख्याल शाह जी ।।
(माघ सुदी पंचमी दिन सोमवार सम्वत् १९९३ बिक्रमी)

पद:- सतगुरु से मारग जानकर दो बीज शब्द पै ख्याल हो।
धुनि ध्यान लय परकाश क्या अनहद की मधुरी ताल हो।

सुर मुनि मिलैं अमृत पिओ मेटो लिखा विधि भाल हो।
सन्मुख लखौ जनकात्मजा संग सोहैं दशरथ लाल हो।४।

निर्वैर निर्भय एक रस जियतै में माला माल हो।
तन त्यागि चल साकेत लो छूटै गर्भ जंजाल हो।
मानै बचन मेरा नहीं उनका बुरा फिर हाल हो।
चोर सारे मृत्यु माया देंय दुख यम काल हो।८।

(२)

सतगुरु से जप विधि जान लो उस ख्याल में मतवाल हो।
लय ध्यान धुनि परकाश क्या अनहद की सुनिये ताल हो।
अमृत पिओ सुर मुनि मिलैं मेटो करम गति भाल हो।
हर दम लखौ सन्मुख में राधे सहित यशुदा लाल हो।४।

जियतै में करतल होय सब तब तो तुम माला माल हो।
तन छोड़ि के साकेत बैठो छोड़ि जग जंजाल हो।
मानो बिनय मेरी नहीं तो फिर वृथा नर खाल हो।
आने जाने का लगा चक्कर रहे दुख जाल हो।८।

(३)

सतगुरु से बीज रेफ विन्दु नाम जान लो।
धुनि ध्यान नूर लय मधुर अनहद की तान लो।
सुर मुनि मिलैं अमृत चखौ निज कुल की कान लो।
सन्मुख में राम सीता सब सुख की खान लो।४।

तन त्यागि चढ़ि सिंहासन साकेत थान लो।
मम बैन भाई बहिनों तन मन से मान लो।
अनमोल समय जात नेम टेम ठान लो।
निज ख्याल से निज पास में निज ताना तान लो।८।

(४)

सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो तन से असुर निसरि सब भाजैं।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि अनहद सुनो मधुर घट बाजैं।
अमृत पिओ देव मुनि आवैं हरि यश कहैं हर्ष के गाजैं।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि गिरिजा शिव सन्मुख में राजैं।
शान्ति शील सन्तोष दीनता सरधा क्षिमा सत्य मन माजैं।
दया धर्म विश्वास प्रेम ते मुक्त भक्त साकेत विराजैं।६।

५५६ ।। श्री अड़ँग शाह जी ।।

पदः- मुक्ति भुक्ति और भक्ति चहै सो हर हनुमान को ध्यावै जी।
राम नाम के बांटनहारे सुर मुनि सब बतलावैं जी।
बड़ी कृपा भक्तन पर राखत सतगुरु ढिग पहुँचावैं जी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुर मुनि दरश करावैं जी।४।

अमृत पिओ सुनो घट अनहद करम रेख कटवावैं जी।
राम सिया प्रिया श्याम रमा हरि आप सामने छावैं जी।
जब तक तन इस जग में डोलै संघै संघ सिधावैं जी।
अन्त समय साकेत धाम को यान चढ़ाय पठावैं जी।८।

(२)

सतगुरु से मारग जानो जी। निज में निज को पहिचानो जी।
धुनि ध्यान प्रकाश महानो जी। चलि लय में सुधि बिसरानो जी।
सुर मुनि के संग बतलानो जी। अनहद सुनि अमृत पानो जी।
कुण्डलिनी शक्ति जगानो जी। षट चक्कर बेधि घुमानो जी।
सातों क्या कमल फुलानो जी। दोउ स्वरन से महक उड़ानो जी।
सिय राम सामने छानो जी। तन त्यागि न जग में आनो जी।६।

५५७ ।। श्री धड़ड़्ग शाह जी ।।

पदः- भक्त के रक्षक शिव बजरंग।
सतगुरु करि हरि नाम जपैं जे सदा रहत तिन संग।
पांचौं चोर अजा फिर उनको नेक करैं नहि तंग।
निर्भय औ निर्वैर जियति हो जीति लेंय जग जंग।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय जो निज कुल का ढंग।५।

सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमी पाय हो चंग।
नागिन जगै चक्र हों चालू कमलन उड़ै तरंग।
राम सिया सन्मुख छबि छावैं श्याम गौर क्या अंग।

साका तिनकी चलै युगै युग होय न नेकौ भंग।
जानि के कोई अनजान बने हैं कोई रहते नंग।१०।
अट्ट सट्ट कोई बातैं करते कोई करैं खड़ङ्ग।
कोई मौन कोई मीठे स्वर कोई बोलत व्यंग।
कोई सटर पटर लै धरते तन सब धूरि धुरंग।
कोई सरपट ऐसे भागैं जैसे भगत तुरंग।
कोई फटे पुराने कपड़े पहिने लूले लंग।१५।
कोई सूर बहिर औ कोढ़ी बैठे पड़े अपंग।
कोई मोटे ताजे रहते कोई रहत झुरंग।
झोंपड़ी कोठरी तरुतर कोई कोइ मैदान सुरंग।
यह लीला उनकी लखि करके लोग कहैं बेढंग।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठें कहते सत्य धड़ङ्ग।२०।

दोहाः- मीठा मेवा अन्न फल जो पावैं सो खांय।
सूरति हरि के नाम पर कहैं धड़ंग सुनाय।१।
भक्तन की महिमा अगम कौन सकै बतलाय।
कह धड़ंग मिलि जांय जहं परै पगन पर धाय।२।

५५८ ।। श्री लड़ङ्ग शाह जी ।।

पदः- राम कृष्ण नारायण के उर चरन चिन्ह भृगु के सोहैं।
तीनों प्रभु एकै हैं मानो देखत ही तन मन सोहै।
राम के कर में धनुष बाण औ श्याम के कर मुरली तो है।
शंख चक्र गदा पद्म बिष्णु कर शोभा बरनि सकत को है।
तीनो प्रभु दाया के सागर हर दम भक्तन मुख जोहैं।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो आय प्रेम में तव पोहैं।६।

५५९ ।। श्री पुकार शाह जी ।।

पदः- जनक नगर में नर नारिन जो भाव हृदय में आया जी।
कोइ पती चहा कोइ सखा चहा सो द्वापर में दिखलाया जी।
सब सखा सखी बन कर आये हरि संग में खेल मचाया जी।
इच्छा पूरी प्रभु ने कर दी क्या प्रेम में उन्है पगाया जी।
ध्यान प्रकाश औ नाम धुनी घट में अनहद सुनवाया जी।५।

प्रिय संग अधर पर धर मुरली सब के सन्मुख छबि छाया जी।
नाना बिधि की लीला कीन्ही लखि शारद शेष चुपाया जी।
सतगुरु करि के हरि नाम गहै सो देखै सत्य बताया जी।
जियतै में सब होवै करतल तब छूटै गर्भ बकाया जी।
नाहीं तो भाई बहिनों गुनिये चौरासी चकराया जी।१०।

५६० ।। श्री शखरा शाह जी ।।

पदः- हलधर श्याम सखन को लै संग खेलैं क्या चंदि भभरा जी।
पहिले चोर बनैं हरि आपै मूंदैं शिर मुख कपड़ा जी।
हलधर सखा सबै हंसि हरि के सिर पर मारैं थपरा जी।
पूछैं सब पहिले को मारिस झूंठ किह्यो मति झगरा जी।
हरि तब कहैं मनसुखा सारो पहिले मारि के पछरा जी।५।

तब सब कहैं सत्य हरि भाख्यो यह चलाक का गठरा जी।
पकरि के सबहुन चोर बनायो नैन न मूंदै अकरा जी।
तब खम्भा के बल ठढ़ि आयो कटि कस रेशम रसरा जी।
ढीला सब ने खेल करन हित बांधा जाय न टकरा जी।
तब हूँ कर पग दहिन चलावैं थूंकै सब पर बिगरा जी।१०।

तब हलधर लै काली कमरी शिर पग तक दियो झवरा जी।
तब चट बैठि कै रोदन मचायो खूब दिखायो नखरा जी।
स्वांसा साधि के शान्ति बैठिगा जैसे बनिगा लकरा जी।
तब हरि कह्यो चलौ निज निज घर यह तो बड़ा मसखरा जी।
दांव न देहै मक्कर कीन्हें बिना खवाये खतरा जी।१५।

परा रहन देव छेरयो मति कोई कब तक करिहै टसरा जी।
सुनि हरि बैन गये सब गृह गृह कमरी उलटि के सपरा जी।
रसरा छोरि कमर से लीन्ह्यौ लै कमरी गृह डगरा जी।
सच्चे प्रेमी सब श्री हरि के खान पान में वखरा जी।
सतगुरु करौ लखौ यह लीला टूटै द्वैत का पटरा जी।२०।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सुनो भगैं सब झगरा जी।
सुर मुनि मिलैं बजै घट अनहद पिओ अमी भरे गगरा जी।

सन्मुख हलधर श्याम सखा सब रहैं न होवै अतरा जी।
अन्त त्यागि तन निजपुर बैठो जग छूटै जिमि कतरा जी।
नर तन पाय जियति सुख लूटौ बिनय करैं यह शखरा जी।२५।

५६१ ।। श्री दुखिया माई जी ।।

पदः- सतगुरु करि लो नाम की बल्ली। तन किस्ती तब पावै गल्ली।
खेय जाव निज पुर में हल्ली। तब तो बहिनो होय तसल्ली।
ध्यान नूर लय धुनि में चल्ली। तब टूटी द्वैत की पल्ली।
सन्मुख श्यामा श्याम अड़ल्ली। सुर मुनि हरि यश कहैं सुनल्ली।
निर्भय औ निर्वैर रहल्ली। तन मन प्रेम के रंग रँगल्ली।
मान अपमान औ ऊँचा खल्ली। सम समझै सो दोउ दिशि भल्ली।६।

५६२ ।। श्री पंडित राघव जी ।।

पदः- चेटुवा पियैं घुनघुना खेलैं बाल रूप में चारों भाई।
वैयां चलैं पेट भल सरकैं आंगन में सुन्दर सुखदाई।
कौशिल्या कैकेयी सुमित्रा नृप दशरथ तन मन हुलसाई।
सातौं सै रानी दशरथ की चूमैं मुख उर लेंय लगाई।
अरुन्धती श्री वशिष्ठ नित प्रति आवैं अशिष देंय खेलाई।५।

पुर के नर नारी सुख लूटैं प्रेम में पगे रहैं हर्षाई।
सुर शक्ती निज रूप बदलि कै आवैं दर्शन हित नित धाई।
कर देखैं सब अंग निहारैं विहँसि के गोद में लेंय उठाई।
सतगुरु करो लखो यह लीला सब घट भीतर परै देखाई।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन से देय सुनाई।१०।

अनहद सुनो देव मुनि दर्शै पिओ अमी रस आह बुताई।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं सातौं कमल उलटि खिलि जाई।
उड़ै सुगन्ध स्वरन ते जानो मस्त होहु मुख बोल न आई।
पृथ्वी पवन अकाश अगिन जल रंग पाँच तन शोधै भाई।
सन्मुख चारों भाइन की छबि हर दम रहै न फिर बिलगाई।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ छूटि जाय जग की औंघाई।१६।

५६३ ।। श्री दुखी श्याम जी रसिक ।।

(श्री जगदीश पुरी)

पदः- श्रृंगार रस का सुक्ख लेना हो तो सतगुरु कीजिये।
सूरति लगा कर शब्द पर तन मन से प्रेम में भीजिये।
धुनि ध्यान लय परकाश हो अमृत टपकता पीजिये।
सुर मुनि मिलै अनहद सुनो सारे असुर गहि भीजिये।
सन्मुख में श्यामा श्याम की झाँकी मनोहर लीजिये।
दुखी श्याम कह बनि रसिक तन तजि अचल पुर चल दीजिये।६।

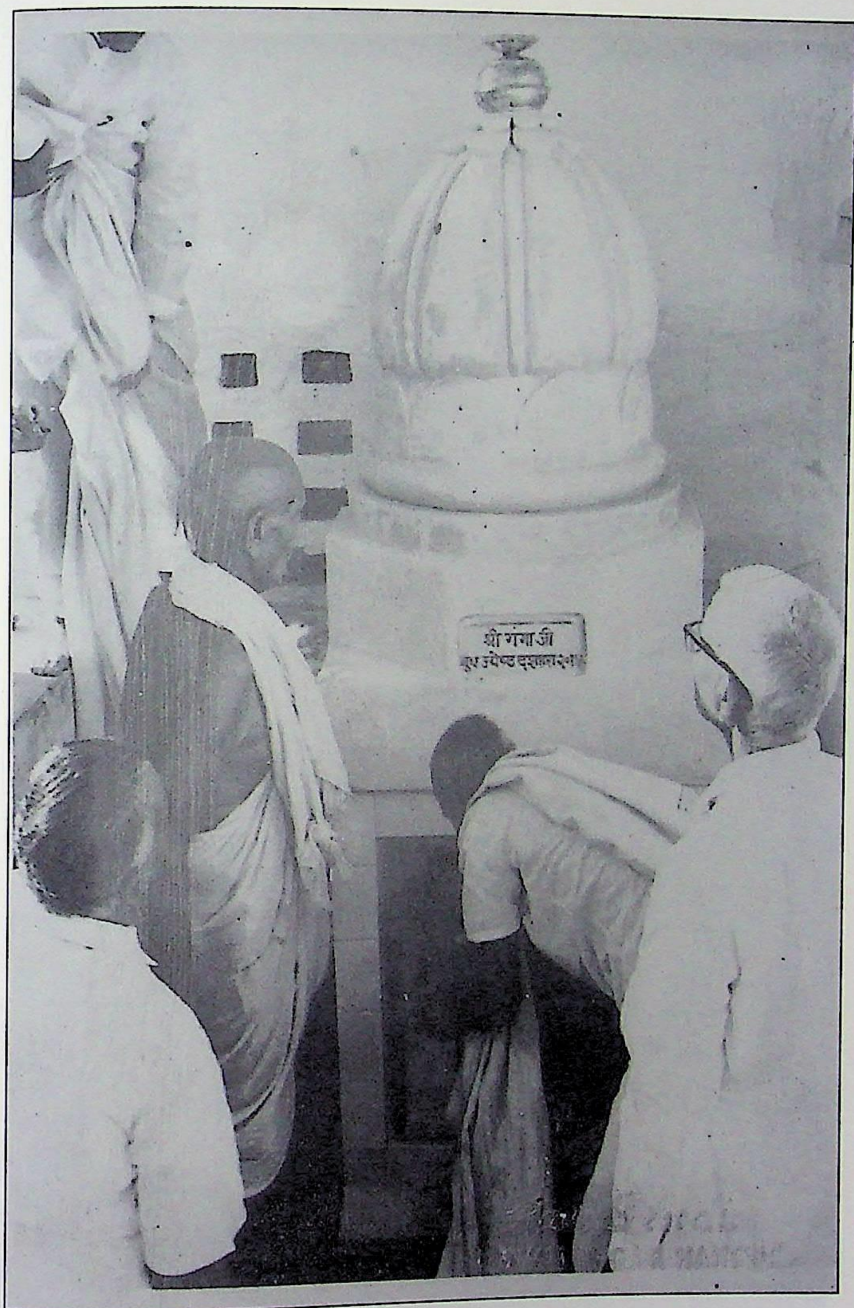
चौपाईः- उपासना में रहो उपासा। ताको भयो नर्क में वासा।
जियतै जो करतल करि पावै। सो साकेत जाय हर्षावै।
झूठै गाल बजाउब छोड़ौ। सतगुरु करि जग से मुख मोड़ौ।
सूरति शब्द में देहु लगाई। ध्यान समाधि प्रकाश देखाई।४।

राम नाम धुनि परै सुनाई। सन्मुख राम सिया छबि छाई।
सुर मुनि शक्ती नित प्रति आवैं। हरि यश कहैं विहंसि उर लावैं।
अनहद सुनो अमी रस पाओ। मस्त रहो क्या कहि समुझावो।
जियतै रसिक जाव बनि भाई। दुखी श्याम कह सत्य सुनाई।८।

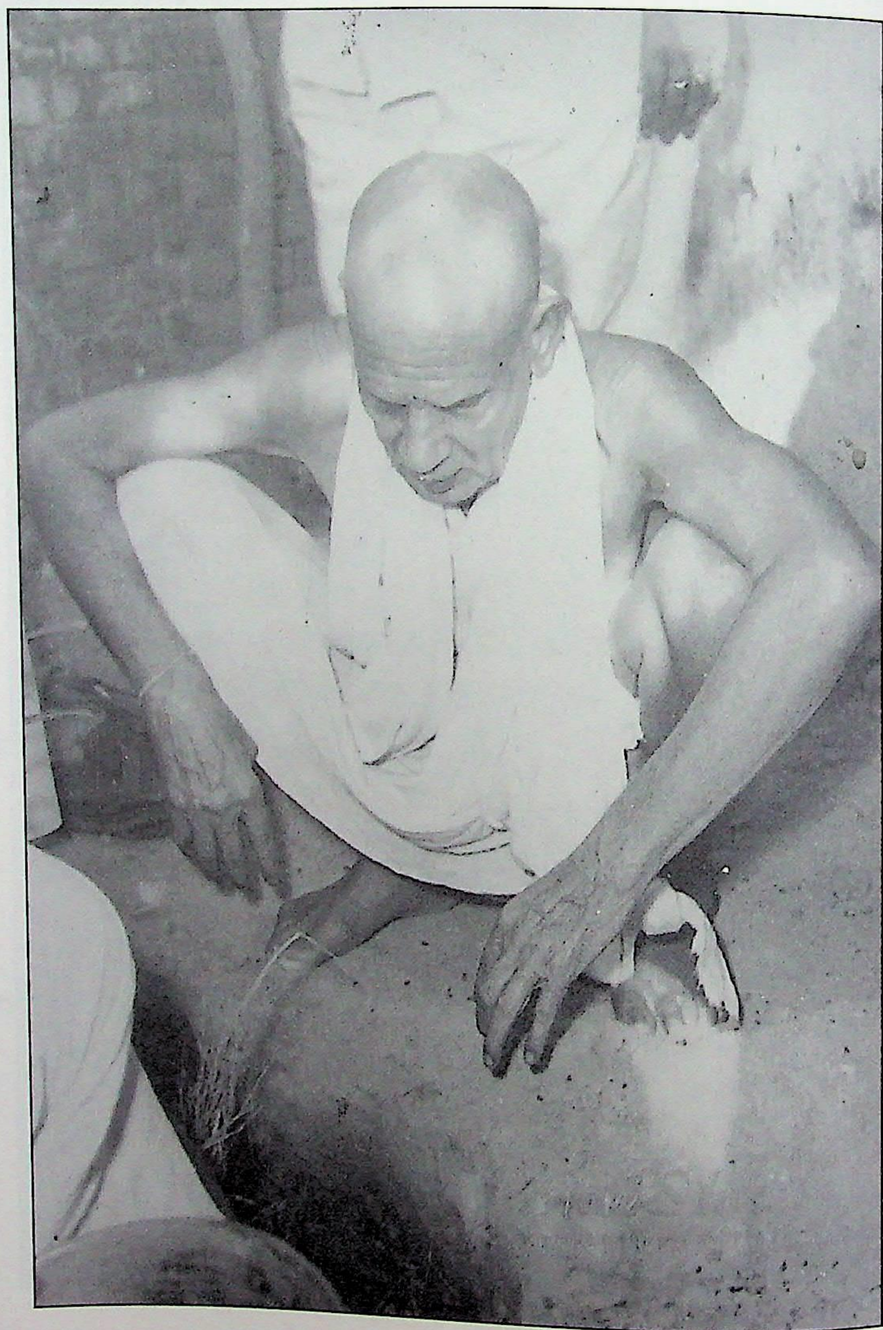
दोहाः- सब में अपने इष्ट को देखै वसु औ याम।
दुखी श्याम कह रसिक सो ताको कर प्रणाम।१।
सिया राम के अंश सब जीव चराचर जान।
दुखी श्याम कह द्वैत को त्यागो हो कल्यान।२।

५६४ ।। श्री प्रकाशानन्द जी ।।

पदः- विद्या बिनोद में पड़ि जिसने जन्म गँवाया।
उसकी तो नाव डूबी नहिं ठीक ठौर पाया।
सतगुरु किया न तन मन हरि नाम रंग पै लाया।
धुनि ध्यान नूर लय में जाकर नहीं समाया।
सुर मुनि के कर से कर गहि उर में नहीं लगाया।
अमृत पिया न अनहद की तान में लुभाया।६।
प्रिय श्याम की छटा छबि निज सामने न छाया।
करि कीर्तन जनों को प्रेमी नहीं बनाया।



कानपुर में श्री गुरुदेव द्वारा गंगा पूजन।



कानपुर में श्री गुरुदेव द्वारा गंगा पूजन।



कानपुर में श्री गुरुदेव द्वारा गंगा पूजन।



श्री कोटेश्वर महादेव, अयोध्या, के मन्दिर में परमहंस राममंगल दास जी।
गुरुदेव कहते थे कि यह वही शंकर जी की मूर्ति है जिसकी पूजा करने
श्री दशरथजी, रामजी, लक्ष्मणजी, भरतजी व शत्रुघ्नजी आते थे।

दया शान्ति दीनता को उर में नहीं बसाया।
इन्द्रिन को स्वल्प भोजन दै कर नहीं बचाया।
दुख सुख को मानि कर सम असुरन नहीं दबाया।
परकाशानन्द कह सो कपड़े वृथा रंगाया।१२।

५६५ ।। श्री राजा प्रताप रुद्र सिंह जी ।।

पदः- वृथा है राज का मद जिसने न हरि को जाना।
चक्कर में उसके हर दम करता रहा मनमाना।
होवैगी अन्त ख्वारी जब नर्क हो रवाना।
सतगुरु बिना ए भाई मिलता न निज ठेकाना।४।

धुनि ध्यान नूर लै औ अनहद कि मधुर ताना।
सुर मुनि से हरि की चर्चा अनुपम अमी को पाना।
प्रिय श्याम की छटा छबि सन्मुख में आय छाना।
प्रताप रुद्र कह तब होता न गर्भ आना।८।

५६६ ।। श्री सुखी राम जी रसिक ।।
(मिथिलाबासी, शिष्य श्री स्वामी रामानन्द जी)

पदः- सतगुरु करो पावो पता किसको रसिक कहते हैं जी।
परकाश ध्यान समाधि पा जे नाम धुनि सुनते हैं जी।
अनहद मधुर घट में बजै अमृत सदा चखते हैं जी।
सुर मुनि मिलैं हरि यश कहैं कर प्यार उर लसते हैं जी।४।

मान औ अपमान त्यागा दीन बनि रहते हैं जी।
भाव समता का हमेशा अपने मन रखते हैं जी।
राम सीता की छटा सन्मुख लखा करते हैं जी।
सुखी राम कह तन छोड़ि चलि साकेत में बसते हैं जी।८।

५६७ ।। श्री जल्लाद शाह जी ।।

पदः- मंजिले मकसूद तक जाना चहै सो जा सके।
मुरशिद से कूचा जान कर मन को जहाँ ठहरा सके।
धुनि ध्यान लय परकाश पाकर रूप सन्मुख छा सके।
अमृत चखै अनहद सुनै सुर मुनि मिलैं बतला सके।

जियतै में तै कर लेय जो सो और को सिखला सके।
छोड़ि तन चलि प्रेम पुर बैठै न जग चकरा सके।६।

५६८ ।। श्री च्याता माई जी ।।

पदः- भजो नित सिय हरि प्रिय हरि को।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानो साधो सुख लरिको।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय मिलै सकै चरि को।
अमृत पिओ भरा घट भीतर को बरनै दरिको।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै कौन करै सरिको।
सन्मुख चारों रूप बिराजैं फिर जग दुख अरि को।६।

५६९ ।। श्री जहूर शाह जी ।।

पदः- रमा है सब में संवलिया प्यारा बिचार देखो बिचार देखो।
मुरशिद से जप विधि का लो इशारा बिचार देखो बिचार देखो।
खुलै त्रिगुन के जहां किवाँरा बिचार देखो बिचार देखो।
धुनि ध्यान लय नूर घट अपारा बिचार देखो बिचार देखो।
तभी तो सन्मुख में हो दिदारा बिचार देखो बिचार देखो।५।
सुर मुनि मिलैं नित करैं दुलारा बिचार देखो बिचार देखो।
अनहद बजै साज सुनिये सारा बिचार देखो बिचार देखो।
चखौ अमी बहता गगन ते धारा बिचार देखो बिचार देखो।
निर्भय जगत में करो गुजारा बिचार देखो बिचार देखो।
तन त्याग बैठो भवन मंझारा बिचार देखो बिचार देखो।१०।

५७० ।। श्री अगने शाह जी ।।

पदः- कचेहरी कच तक हरि लेती।
सौ झूठी दस सांची जहं पर ता पर दम देती।
कर्म धर्म तहं टिक नहिं सकते बिगड़ जात नेती।
पाप मकान बन्यो शुभ महि पर बुद्धि को गहि रेती।
जियते नर्क में ठेठर मानो अंत वही खेती।
धन गृह कुटुम्ब स्वपन का स्वपना हरि सुमिरो चेती।६।

नाम सिंह औ माया लोखरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम गयंद औ माया छगरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम मगर औ माया मछरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम भुजंग औ माया मुसरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम समुन्दर औ माया गगरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।५।

नाम बाज औ माया कंड़री, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम महल औ माया बखरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम बरेत औ माया रसरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम पवित्र औ माया सखरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम राशि औ माया गठरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।१०।

नाम तुरंग औ माया कुकरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम कृपान औ माया लकरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम तोप औ माया पटरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
नाम अग्नि औ माया लुकूरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।
सतगुरु करि अब जावो सुधरी, का करि सकै तुम्हारा ससुरी।१५।

५७१ ।। श्री जगदानन्द जी ।।

पदः- श्याम श्यामा सामने हर दम लखौ सुमिरन करो।
सतगुरु से जप बिधि जानि कै जब शब्द पै सूरति धरो।
धुनि ध्यान लय परकाश हो तब जियत ही भवनिधि तरो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत पिओ घट में भरो।
दीनता औ शान्ति गहि फिर प्रेम तन मन में ठरो।
तन त्यागि जगदानन्द कह निज धाम लो फिर नहिं टरो।६।

५७२ ।। श्री पंडित बासुदेव रक्षक जी ।।

पदः- सुमिरन करो प्रिय श्याम सन्मुख हर समय छाये रहैं।
सतगुरु से जप विधि जानि करके दुःख सुख जे सम सहैं।
ध्यान धुनि लय परकाश पा फिर देख लें चौदह तहैं।
अमृत पियें अनहद सुनैं सुर मुनि उन्हें प्रेमी कहैं।

बासदेव कह जे दीन बनि सूरति शब्द मारग गहैं।
तन छोड़ि लेवैं अचल पुर जग को न तन मन से चहैं।६।

५७३ ।। श्री आकूती जी ।।

पदः- श्री राम कृष्ण विष्णु को सन्मुख लखा चहैं।
सतगुरु से जप क भेद लै उस ख्याल में रहैं।
धुनि ध्यान नूर लय मिलै तन से न मन बहै।
अनहद सुनैं अमृत पियैं लखैं चौदहों तहैं।
हरि चरित देव मुनि के संग सुनैं औ कहैं।
तन त्यागि जांय निजपुर जग में न फिर ढहैं।६।

५७४ ।। श्री प्रसूती जी ।।

पदः- निजपुर को चलने के लिये तय्यार ह्वै रहौ।
सतगुरु से मार्ग जानि कै तन मन से जब गहौ।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सन्मुख में हरि लहौ।
अमृत पिओ अनहद सुनो सुर मुनि के पग गहौ।
बनि दीन शान्ति चित्त से दुख सुख को सम सहौ।
तन छोड़ि जग में तब तुम काहे को फिर बहौ।६।

५७५ ।। श्री नौरोजी जी डाकू ।।
(शिष्य श्री गौराङ्ग महाप्रभू)

पदः- सतगुरु करो हरि नाम लो हर दम लखौ प्रिय श्याम जी।
धुनि ध्यान लय परकाश हो सुर मुनि मिलैं बसुयाम जी।
अनहद सुनो अमृत पियो करि जाप भव की थाम जी।
नौरोजी कहें तन त्यागि फिर बैठिये निज धाम जी।४।

५७६ ।। श्री डाकू त्योकर खाँ जी ।।
(शिष्य श्री गौराङ्ग महाप्रभू)

पदः- सतगुरु करो हरि नाम लो हों पाप सारे नाश जी।
धुनि ध्यान लय परकाश पाकर होहु जियतै पास जी।
अमृत पिओ अनहद सुनो सुर मुनि मिलैं नित गांस जी।
सन्मुख में श्यामा श्याम राजैं जौन सुख की रास जी।

निर्वैर निर्भय एक रस भगि जाय जग की आस जी।
त्योंकर कहैं तन छोड़ि कर चलि लो अचलपुर बास जी।६।

५७७ ।। श्री बार मुखी रङ्गी जी ।।

(शिष्य श्री गौराङ्ग महाप्रभू)

पदः- श्याम श्यामा को सन्मुख लखि लीजै।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो तन मन प्रेम एक कीजै।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय चल सुधि बुधि को धरि दीजै।
सुर मुनि मिलैं सुनो घट अनहद अमृत रस सुख से पीजै।
जियतै असुर बिदा हों सारे हो निर्भय फिर को मींजै।
बार मुखी कह हरि सुमिरन बिन तन मन पाप से नित भीजै।६।

५७८ ।। श्री स्वामी प्रेमानन्द जी ।।

पदः- प्रेम की गति सब से ऊंची प्रेम सतगुरु से करो।
प्रेम से प्रिय श्याम मिलते प्रेम तन मन में भरो।
प्रेम से धुनि ध्यान लय हो प्रेम करि जियतै तरो।
प्रेम से सुर मुनि दर्श दें प्रेम के मग पर परो।
प्रेम बिन धिक चाम नर का प्रेम बिन जन्मो मरो।
प्रेम ही सर्वस्व है तुम प्रेम अग्नी में जरो।६।

५७९ ।। श्री ठाकुर सुख सिंह जी ।।

पदः- भगवान ने चेतन्ह कीन्ह तुम्हें अब तुम निज को क्यों जड़ करते।
प्रेम भक्ती बिना गति होगी नहीं हठ योग में विरथा क्यों परते।
या से जग मान बड़ाई मिलै औ आयु बढ़ै नीचे गिरते।
सिद्धी बहु घेरि के लेंय जकड़ि हा जियतै में उनसे हरते।
संकल्प समाधि है यह भाई जब उतरे बहु दुख में बरते।५।

मन स्थिर हर दम नहिं रहता सत संग परै तहं पर टरते।
सतगुरु करि सूरति शब्द पै दें ते मानो भव से हैं तरते।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि लहैं सन्मुख सिया राम छटा करते।
अमृत चाखैं घट साज सुनैं सुर मुनि दर्शै नित पग धरते।
तन त्यागि चलै निज धाम डटै फिर चौरासी में नहिं परते।१०।

चौपाईः- संसकार अच्छे नहिं जाके। सो बूरा तजि बालू फांके।।
संसकार नीके हैं जाके। सो बारू की ओर न ताके।।
निन्दा की कोई नहिं बाता। जीव फँसे देखा नहिं जाता।।
या से कहेन सत्य हम भाई। सुर मुनि बेद शास्त्र जो गाई।।
या में दुख मानै जो कोई। ताकी बुद्धि ठीक नहि होई।।
प्रेम बिना भव होहु न पारा। पढ़ि सुनि गुनि लीजै नर दारा।६।

५८० ।। श्री अलोपी जी ।।

पदः- त्यागो वाह वाह की टोपी।
या से तुम्हरा भला होहि नहिं देवै नर्क में रोपी।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो छूटै भव की चोपी।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय जहं सुधि जावै छोपी।४।

अनहद सुनौ पियो घट अमृत असुर सकैं नहिं कोपी।
श्यामा श्याम देव मुनि दर्शैं सखा संग सब गोपी।
सूरति शब्द की जाप है अजपा कर्म देत दोउ तोपी।
अंत समय साकेत पठावै कहते सत्य अलोपी।८।

५८१ ।। श्री श्याम सिंह जी ।।

पदः- मान बड़ाई करिखा कूट, ताना कपट त्यागिये फूट।
चानक बचन तिखारि क कहना, तन तजि नर्क में पड़िहै रहना।
भूषन वसन पाप के ऐहैं, सुक्ख तुम्हैं कबहुँ नहिं देहैं।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो, निज को चीन्ह लेव निज थानो।४।

दोहाः- कहैं श्याम सिंह भजन बिन मिलै न अपनी गेह।
या से सतगुरु करि भजो मिली सुगम नर देह।।

५८२ ।। श्री ठाकुर बड़कऊ सिंह जी ।।

पदः- मान बड़ाई नाक कटावै।
या के मारे भजन होय नहिं बिरथा चाट चटावै।
अंत समय यम करैं कुटम्मस तब कोउ नहीं हटावै।
प्राण निकारि छोड़ि देंय जड़ तन लै इजलास अटावैं।
कर्म अनुसार सजा दै देवैं एक मिनट न घटावैं।५।

सतगुरु बिना पाप का भारा को जग और मिटावै।
राम नाम सुमिरन की विधि दे तन मन प्रेम सटावैं।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय सारे असुर लटावैं।
सीता राम सामने राजैं जे भव तुरत पटावैं।९।

५८३ ।। श्री मझिलकू सिंह जी ।।

पदः- मान बड़ाई त्यागन कीजै।
या से भजन में विघ्न होत अति बिरथा आयू छीजै।
अन्त समय यम आय पकड़ि कै सब तन कर से मीजै।
प्राण शरीर भरे में दौरे मांगै पानी दीजै।
मुख से बोलि न पाओ तब तुम लखौ धरी सब चीजैं।५।

तन छोड़ाय लै नर्क में डारैं बोयौ जहां क वीजै।
या से चेत करो अब सतगुरु काहे गुदरी भीजै।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय सन्मुख राम सिया लखि लीजै।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शैं अनुपम अमृत पीजै।
अंत त्यागि तन निजपुर राजौ छूटि जाय जग तीजै।१०।

५८४ ।। श्री छोटकऊ सिंह जी ।।

पदः- मान बड़ाई नर्क निशानी।
तन मन की नहिं होय एकता होती ऐंचा तानी।
अन्त समय यम करैं मरम्मत निकसै हाय की बानी।
प्राण निकारि चलैं लै पटकत कौन छुड़ावै प्रानी।४।

निज पुर में फिर भोग भोगावैं तन मल मूत्र में सानी।
या से सतगुरु करि हरि सुमिरौ बनि जाव पूरे ज्ञानी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख हरि महरानी।
अन्त त्यागि तन अचल धाम लो जहं अति सुख की खानी।८।

५८५ ।। श्री ठाकुर गमखोर सिंह जी ।।

पदः- प्राण में जीव जीव में आतम आतम में परमातम भाई।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै ता के सब करतल ह्वै जाई।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख राम सिया छबि छाई।
अमृत चखै सुनै घट अनहद सुर मुनि मिलैं बिहंसि उर लाई।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल खिलैं हर्षाई।५।

दहिन बाम स्वर एक में होवै तब सुखमन नाड़ी में आई।
सुखमन से चित्रिणी में जावै चित्रिणी ते बज्रणी में धाई।
बज्रणी ते चलि ब्रह्म नाड़ि में धूम रूप बनि जाय लुभाई।
रं रं रं रं शब्द होत तहं सुर मुनि चलि तहं जात समाई।
सूरति शब्द की जाप है अजपा जो कोई तन मन प्रेम लगाई।१०।

सो पच्छिम दिशि खोलि किंवारी जियतै निज गृह को लखि पाई।
सुख आसन ते बैठक कीजै सिद्धि होय तब देव हटाई।
प्रथम एकान्त जगह जहं होवै तहं पर जाय त्यागि भय काई।
आंखै दुनों लेय बन्द करि ध्यान करै सतगुरु सुखदाई।
शान्ति दीनता की गोदी में निर्विकल्प बैठे चुपकाई।
जैसी प्रभू की इच्छा होवै वैसे लीला परै दिखाई।१६।

५८६ ।। श्री रघुनन्दन सिंह जी ।।

पदः- बनिये राम सिया के नौकर।
सतगुरु करि जप भेद जानि लो गाफ़िल घूमत क्योंकर।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि लेहु जियति में सौकर।
माया असुर भागि जाँय तन से जवन कहावत त्योंकर।
मातु पिता सन्मुख छबि छावैं कौन सकै तब भौकर।
अन्त त्यागि तन अचल धाम ले जो मम बिनय को गौंकर।६।

५८७ ।। श्री यदुनन्दन सिंह जी ।।

पदः- बनिये श्यामा श्याम के चाकर।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानौ फेरौ नाम की सांकर।
अजा असुर तन से सब भागैं करते नित जे खांकर।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय पाय जीत भव्र कांकर।
सनमुख मातु पिता रहैं हर दम जियतै बनो उजागर।
अन्त छोड़ि तन निज पुर बैठो गर्भ न झूलौ आकर।६।

५८८ ।। श्री अधीन सिंह जी ।।

वार्तिकः- अन्त समय यमदूत आकर प्राणी को बहुत दण्ड देते हैं और किरिया तिलाक, चुनौती, कसम, सौगन्ध, सौहं, सपथ, कलाम, जिस देश में जिस भाषा में इन शब्दों को बोलते हैं, इन सब का अर्थ एक ही है। उसी प्रकार दूत कह कर अस्त्र दिखाते हैं, कि जो कोई तेरा मददगार हो आवै तुझे बचा ले परन्तु उस समय कौन मदद कर सकता है, न तो तुमने किसी देवता का आराधन किया, न संत सेवा किया, न तीर्थाटन किया, न गरीबों को भोजन वस्त्र दिया, न दुखियों पर दया किया जो प्राण बचावै अब चल कर नर्क में कल्पों भोगो। जो यहां पर कमाया है उसी क फल आगे आया है।

शेरः- हरि नाम की अमानत जिसने जमा न कीन्हा।
उसकी भला जमानत कोई कहीं पै लीन्हा।।

५८९ ।। श्री जनमेजय जी ।।

चौपाईः- नित्य क्रिया से छुट्टी पावै। मघुतर के दुई पात्र चवावै।
नेत्र रोग शिर रोग नशावै। तन मन प्रेम से हरि गुण गावै।
क्षुधा लगै तस करै अहारा। लखै न निज नैनन पर दारा।
अतिथि जवन कोई दुआरे आवै। यथा शक्ति जल पान करावै।
नात कुटुम्ब उपरोहित परजा। नौकर से मति लेवै करजा।
सत्य धर्म से समय बितावै। सो गृहस्थ हरि धाम सिधावै।६।

दोहाः- जनमेजय कह मम बचन मानि चलै यह चाल।
वाकौ दुख दरिद्र एक नोचि सकै नहिं बाल।।

५९० ।। श्री रंगीली जान जी ।।

पदः- क्या अद्भुद रूप रंग हरि का हम कवन भांति वाको भाखैं।
कहती है जबां सुनते हैं श्रवण औ शोभा निरखि रही आंखै।
मुरशिद करि नाम ते जे वाकिफ़ ते दुनियां में फिर नहि काखैं।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि लिया औ रूप सदा सन्मुख राखैं।
सुर मुनि आते संघ बतलाते गहि द्वैत उठाय धरयौ ताखैं।५।

हैं सुनते अनहद घट बाजै अरु अमृत भी अनुपम चाखैं।
नागिन जागी औ चक्र सुधे सब कमल खिलै उलटी साखैं।
जे दीन भये ते पहुँचि गये सब त्यागि किया मन की माखैं।
कहती है रंगीली जान सुनो सूरति को शब्द में जे लाखैं।
ते जियतै सब तै करि लेवैं यह सत्य बचन तुमसे भाखैं।१०।

५९१ ।। श्री छबीली जान जी ।।

पदः- मनसिज के तन स्थूल को हर ने जारा सूक्षम छोड़ि दिया।
उस सूक्षम ते वह बल धारी जीवन के तन मन मोड़ दिया।
जे ब्रह्म बने नहिं ब्रह्म लखा उनका सारा मद तोड़ दिया।
मुरशिद करिके जे दीन रहे उनको आशिष दै छोड़ि दिया।४।

धुनि ध्यान प्रकाश समाधी को लय उन रूप सामने ओड़ लिया।
यह अजपा सूरति शब्द का है जिन तन मन प्रेम से जोड़ लिया।
सब जियतै में हासिल करिके निज भर्म का भांड़ा फोड़ लिया।
तन छोड़ि छबीली कह भाई फिर दुनियां में नहिं गोड़ दिया।८।

५९२ ।। श्री कटीली जान जी ।।

पदः- अरे मन बासनाओं में परे झूठे हो क्या सहते।
हमारे संग में आकर कार्य्य निज घर का नहिं गहते।
करैं मुरशिद भजै हम तुम लखैं हरि सामने रहते।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर रहैं निर्भय न कोई दहते।४।

देव मुनि आय कर भेटैं मधुर स्वर हरि का यश कहते।
सुनैं अनहद बजै घट में सुधा अनुपम सदा लहते।
जगत में तन रहै जब तक मान अपमान को सहते।
कटीली जान कह तन तजि चलो आना नहीं जहं ते।८।

५९३ ।। श्री रसीली जान जी ।।

पदः- मुरशिद बचन पर जाय तुल जियतै में वह सब पायगा।
धुनि ध्यान लय परकाश पाकर रूप सन्मुख छायगा।
अनहद सुनै घट में बजै सुर मुनि के संग बतलायगा।
दुख सुख सहै मन नहिं बहै हरि यश बिमल नित गायगा।

बानी मधुर मुख से कहै जो सुनि हिय हर्षायगा।
कहती रसीली जान तन तजि कै अचल पुर जायगा।६।

५९४ ।। श्री नुकीली जान जी ।।

पदः- लखि लखि हम तो हर्षित होतीं भगवान आप की क्या माया।
कहीं शिर ही के होते दर्शन कहिं दुई भुज आठ चार आया।
कहिं सौ औ सहस भुजा धारे कहिं अगणित भुज करि दिखलाया।
कहिं नूरै नूर देखाय पड़े कहिं रूप रंग कछु नहिं पाया।
कहिं अनहद बाजा बाजि रहे कहिं लागि सभा आनन्द छाया।५।

कहिं मुरली कर में राजि रही कहिं धनुष बान कर चमकाया।
कहिं शंख चक्र गदा पद्म लिये कहिं नैन बन्द करि मुसक्याया।
कहिं नाचि रहे कहिं गाय रहे कहिं दूध दही लूटा खाया।
कहिं दौड़ रहे कहिं कूदि रहे कहिं ग्वालन कांधे छबि छाया।
कहिं चोर बने कहिं साह बने कहिं सोय गये जो मन भाया।१०।

कहिं खेलि रहे कहिं ठेलि रहे कहिं पीटि रहे कहिं चुपवाया।
कहिं मारि रहे कहिं जारि रहे कहिं तारि रहे कहिं बंधवाया।
कहिं पठवाते कहिं बोलवाते कहिं पकड़ाते कहिं भोगवाया।
कहिं हंसवाते कहिं चिलवाते कहिं मुख मल मूत्र को भरवाया।
सतगुरु करिये जियतै तरिये तब हर दम हरि की ही दाया।
कहती है नुकीली जान सुनो धुनि ध्यान बिना सुख नहिं पाया।१६।

५९५ ।। श्री चोखली जान जी ।।

पदः- हर दम रं रं रं धुनि होती घट में रेफ़ बिन्दु की यार।
सतगुरु बिना भेद नहिं पैहौ है त्रिगुन से न्यार।
महा मन्त्र् यह सत्य जानिये मेटत लिखा लिलार।
सब में पूरन सब से न्यारो जानत जानन हार।
शान्ति दीनता प्रेम सत्यता ले जो उर में धार।
सो प्रानी या को गहि लेवै देखै अजब बहार।६।

चढ़ै अमल रग रोवन निसरै हर शै से झनकार।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहं मिट जात बिचार।

अनहद सुनैं देव मुनि भेटैं मित्र भाव करि प्यार।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं फूलैं कमल निहार।
सिया राम प्रिय श्याम सामने निरखै अजब सिंगार।
कहैं चोखली जान त्यागि तन निज घर जाय सिधार।१२।

५९६ ।। श्री गुरु दत्त दास जी ।।

पदः- सतगुरु करि जप की विधि जानै सुमिरै तन मन प्रेम लगाई।
ना कर चलै न जिह्वा डोलै नाम की धुनि एक तार सुनाई।
अजपा जाप कहत यहि सुर मुनि बड़ी भाग्य हो सो यह पाई।
ध्यान प्रकाश समाधि इसी में कर्म शुभा शुभ देत जराई।४।

हर दम सीता राम की झांकी सन्मुख रहे छटा छबि छाई।
वरनि श्रृंगार सकै को जग में शारद शेष गणेश चुपाई।
सुर मुनि सब के दर्शन होवैं अनहद नाद सुनै सुखदाई।
कहैं गुरुदत्त दास सुनि लीजै तन तजि सो साकेत को जाई।८।

५९७ ।। श्री हरी दास जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि लेवै ध्यावै प्रेम से तन मन लाई।
जीभि हिलै नहिं गाल चलै नहिं रोम रोम धुनि नाम सुनाई।
अजपा यह है ब्रह्म की बानी सब में ब्यापक सबहिं बनाई।
या से ध्यान प्रकाश होत लय सुधि बुधि जहां न नेको आई।४।

सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद क्या बरनै मुख बोल न जाई।
हर दम राम सिया की झांकी सन्मुख तेज के मध्य में छाई।
शान्ति दीनता दृढ़ विश्वास से सूरति शब्द में जबन लगाई।
हरी दास कहैं जियति जानि सो तन तजि कै साकेत सिधाई।८।

५९८ ।। श्री सदा सोहागिन जी ।।

पदः- हर दम श्याम पिया को निरखैं सदा सोहागिन सो हैं।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सुर मुनि के मन मोहैं।
तन तजि चलि ससुरे में बैठै पासै में फिर सोहै।
लौटि के नैहर फिरि नहिं आवै सुधि बुधि पति छबि मोहै।४।

दोहाः- सदा सोहागिन कहैं जब, सतगुरु जांय भेटाय।
तब सैंया संग ब्याह हो, सत्य कहौं मैं भाय।।

५९९ ।। श्री पंडित सत्य देव जी ।।

पदः- रज तम सत का त्रिफला भाई कूट कपड़ छन कीजै।
काम क्रोध मद लोभ मोह यह नमक पांच घिस लीजै।
इस चूरन को खाय हजम कर तन मन शोधन कीजै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने लीजै।४।

अनहद सुनो देव मुनि आवैं लिपटि प्रेम नित कीजै।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन अचल धाम चलि लीजै।
सतगुरु करि चूरन बिधि सीखो अब मति देरी कीजै।
सत्यदेव कहैं पार होहु तब बिनय मानि मम लीजै।८।

दोहाः- हरि सुमिरन में अस जुटै जिमि त्रिसठि का अंक।
सत्य देव कह जियति ही सो ह्वै जाय निशंक।।

६०० ।। श्री लैमर जी ।।

पदः- राखो राम नाम की आशा।
सतगुरु करि सुमिरन विधि लीजै छूटै भव का लाशा।
कर जिह्वा नेकौ नहिं डोलै सूरति शब्द में ठांसा।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी हो रूप सामने खासा।
सुर मुनि आय आय कर भाई बैठें नित प्रति पासा।
अनहद हर दम घट में बाजै सुनि सुनि होहु हुलासा।६।

नागिन जगै चक्र सब घूमैं कमलन होय बिकासा।
इड़ा पिंगला एक में होय जांय सुखमन ह्वै जाय स्वांसा।
विहंग मार्ग से निज गृह जावो निर्भय करो निवासा।
शान्ति दीनता जिन गहि लीन्हो तन मन प्रेम में फांसा।
या पद के ते भे अधिकारी कर्म शुभाशुभ नासा।
लैमर कहैं चेत हरि सुमिरो तन है बारि बतासा।१२।

६०१ ।। श्री लय छुट जी ।।

पदः- सुनिये राम नाम का तार।
सतगुरु से सुमिरन विधि जानो खुलि जावै एकतार।
हर दम रं रं रं रं बाजै जियति मिटै भव जार।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै करैं देव मुनि प्यार।
अनहद की धुनि मधुर मधुर हो पिओ अमी की धार।
सन्मुख में झांकी हो बांकी सीता संग सरकार।६।

कमल खिलैं चक्कर हों चालू नागिन करै संभार।
चन्द्र सूरज एकै गृह में हों सुखमन स्वांसा डार।
मारग विहंग जाय ले निजपुर तिरगुन से हो न्यार।
यह पद ऊंच नीच बनि लीजै काहे बने गंवार।
माटी का पुतला है यह तन एक दिन ह्वै है छार।
लयछुट कहैं भजौ तन मन ते प्रेम में हो मतवर।१२।

६०२ ।। श्री दिलदार खाँ जी ।।

शेरः- कन्दुम वही होंगे जहां से जिन जपा हरि नाम को।
ध्यान धुनि परकाश लय पा लखि रहे प्रिय श्याम को।
सुर मुनि लिपटि मिलते उन्हें कीन्हा सुफल नर चाम को।
सतगुरु की सेवा करि सुलभ है मार्ग यह नर बाम को।४।

६०३ ।। श्री ठाकुर रघुबर सिंह जी चंदेल।।

दोहाः- तन मन ते सतगुरु बचन जे न करैं विश्वास।
ते तन तजि रव रव परैं सहैं हर समय त्रास।।

पदः- सिया राम नाम जप विधि सतगुरु जिसे बता दें।
विश्वास प्रेम तन मन ते शिष्य गर लगा दें।
धुनि ध्यान नूर लय हो सुधि बुधि तहां भुला दें।
अनहद सुनै बजै घट सारे असुर भगा दें।४।
सुर मुनि के होंय दर्शन बिधि का लिखा मिटा दें।
पितु मातु सामने में अद्‌भुत छटा को छा दें।

निर्वैर और निर्भय तब किसको वह दगा दें।
तन त्यागि जांय निजपुर हरि अपने रंग बना दें।८।

६०४ ।। श्री ठाकुर हरनाम सिंह जी गौर ।।

पदः- शान्ति की शमशेर के संग दीनता की ढाल हो।
सारे जहां में हो दखल तेरा न बांका बाल हो।
सतगुरु करो पावो पता बनि जावो माला माल हो।
धुनि ध्यान लय परकाश पाओ कटै लिखा जो भाल हो।४।

देव मुनि के दर्श होवैं सुनौ अनहद ताल हो।
सनमुख रहैं हर समय राधे सहित नन्द के लाल हो।
असुर माया मृत्यु यम गण क्या करै तब काल हो।
त्यागि तन निज पुर हो दाखिल जाव बनि मतवाल हो।८।

६०५ ।। श्री झरोखे दास जी ।।

दोहाः- वैकुण्ठी पालौ नहीं जो चट लेवै पाय।
राम नाम तब सिद्धि हो जब दुविधा हटि जाय।।

सोरठाः- जियत जाव ह्वै पास तब काहे जन्मो मरौ।
घूमत बने उदास तन मन हरि रंग में भरौ।१।
कहैं झरोखे दास सतगुरु करि सुमिरन करो।
लय धुनि ध्यान प्रकाश रूप सामने हो खरो।२।

६०६ ।। श्री पंगुली माई जी ।।

पदः- चारों ललुवा बजावै बंसुरिया।
राम भरत औ लखन शत्रुहन पहिने पीत झंगुलिया।
पग पौटा कटि किंकणी राजत उर बघनखा कठुलिया।
नयनन काजल भाल में अनखा शिर पर केश झुवलिया।
हेम की वन्शी प्रेम मनोहर ता में सात छिदुलिया।५।

अधर पै धरि फिरि फूँकि बजावत फेरत सुभग अंगुलिया।
पुर बासी गुरु मातु पिता लखि तन मन प्रेम बढ़ुलिया।
सुर मुनि नभ ते जै जै बोलैं छबि उर मांहि भरुलिया।

सतगुरु करौ लखौ तब लीला करती बिनय पंगुलिया।
नाम में सूरति जाकी लागै सो यह रंग रंगुलिया।१०।

६०७ ।। श्री ठाकुर पशकरन सिंह जी ।।

पदः- खेलैं खेल बहुत बिधि रघुवर।
भरत लखन शत्रुहन सखन को सिखलावैं दें मन भर।
पट्टा बांक बिन्नौट औ बाना फेरैं लेजिम मुगदर।
ढाल कृपान फरी औ गत्तका बैठक दौड़ कूदि जांय फर फर।
रस्सी खींचब गिरह लगाउब कुश्ती पेंच पकड़ि चप पट धर।
बैठि उठाय खड़े पर बांधव थपकी दै फिर चितकर।६।

गज रथ अश्व दौर क्या बांकी देखत बनै कहत नहिं हम पर।
साज राग धुनि ताल ग्राम स्वर गाय बजाय बताय ख्याल तर।
भरत अलाप उतारत क्रमशः आय जात फिर सम पर।
सुर मुनि नभ ते जै जै बोलैं फेकैं सुमन शब्द हों झर झर।
सतगुरु करौ लखौ यह लीला नाम क रंग चढ़ै तन मन पर।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय पाय चलो फिर निज घर।१२।

६०८ ।। श्री ठाकुर करन सिंह जी ।।

पदः- सतगुरु करो भेद सब जानो नर तन का फल लेव जियत भर।
सन्मुख राम सिया प्रिय मोहन कमला बिष्णु लखौ गिरिजा हर।
लय परकाश ध्यान धुनि होवै सुर मुनि मिलैं प्रेम से हंस कर।
अनहद नाद सुनो निशि बासर तन तजि पहुँच जाव अपने घर।४।

६०९ ।। श्री छैल बिहारी जी खत्री ।।

पदः- हरि श्याम रंग गभुवारे बाल, हंसि ठुमुक ठुमुक के चलत चाल।
नयनन काजल अनखा है भाल, उर में कठुला बघनखा आल।
पहिने झिंगुली हैं अति विशाल, कटि में किंकिणी पग पौटा डाल।
कर राजत मुरली सात साल, फूंकैं जब सुर मुनि हों निहाल।
संग लला लली करते उछाल, क्या झुण्ड झुण्ड दै तारी ताल।
सतगुरु करि निरखौ कटै जाल, सूरति धरि नाम पै करो ख्याल।६।

६१० ।। श्री विपिन बिहारी जी खत्री ।।

पदः- हरि अपने हाथ खिलाते, जे भक्त नाम रंग माते।
छिन छिन में उन्हैं हंसाते, मुख चूमि चूमि बतलाते।
मुरली की तान सुनाते, कर तन पर फेरि सुलाते।
बहु लीला नाथ दिखाते, हम सत्य बचन यह गाते।
सतगुरु करि तन मन लाते, सो इस रहस्य को पाते।
तन त्यागि अचलपुर जाते, फिर घूमि न जग चकराते।६।

६११ ।। श्री मल्हना रानी जी ।।

पदः- शंकर का सुमिरन ओ पूजन, कीन्ह सदा तन मन कर अर्पन।
जिनकी कृपा से दुख सब नाशा, अन्त में वास दीन कैलाशा।
वहां का सुक्ख बरनि को पावै, हर दम नर नारी हर्षावै।
मल्हना कह शिव को भजि लीजै, विनय मानि मेरी सुख कीजै।४।

६१२ ।। श्री इब्राहीम जी ।।

पदः- मन्दिर बनावो मसजिद पूजन नमाज कीजै।
कहता है इब्राहीम छोड़ तन को भिश्त दीजै।
तन मन से प्रेम जिस पर सो काम नहिं अड़ै।
कहता है इब्राहीम यश कर ले जो बन पड़ै।४।

६१३ ।। श्री शिव दीन कुम्हार जी ।।

दोहाः- खोटी मति मन की भई जीव होय किमि पार।
संतगुरु बिन उबरै नहीं कह शिवदीन कुम्हार।।

६१४ ।। श्री नरिन्द चमार जी ।।

दोहाः रार मति मन की भई जीव होय किमि पार।
सतगुरु बिन सुधरै नहीं कहै नरिन्द चमार।।

६१५ ।। श्री गनेश सोनार जी ।।

दोहाः- मन की मति टेढ़ी भई जीव फंस्यौ भव धार।
सतगुरु बिन उबरै नहीं कहैं गनेश सोनार।।

६१६ ।। श्री पराग कलवार जी ।।

दोहाः- मन मति पाप में बझि गई जीव गयो हिय हार।
सतगुरु बिन सुधरै नही, कहैं पराग कल्वार।।

६१७ ।। श्री औतार कहार जी ।।

दोहाः- निर्भय औ निर्वैर हो जानि जपो ॐ कार।
नाम सत्य कर्ता वही सर्व खानि सुखसार।१।
है अकाल मुरति प्रभू रूप अनूप अपार।
सतगुरु करि हर दम लखौ कह औतार कहार।२।

६१८ ।। श्री गान्धारी जी ।।

पदः- हिंडोला झूलैं श्यामा श्याम।
सखा सखी हिल मिल दे ढारैं जय जय कहि दोउ नाम।
वृक्ष कदम्ब हिंडोला सोहत यमुना तट सुख धाम।
छबि श्रृंगार छटा की शोभा लखि भागै रति काम।
मुरली फूकि नयन दोऊ मूंदत मन्द हंसत गुण धाम।५।
प्यारी बांह गले में डारे गावैं कजरी आम।
सावन मन भावन है सुहावन लागि झरी हर ठाम।
सखा सखी प्रिय प्रीतम झूला वृक्ष कदम्ब पै आम।
नेको बूंद न आवत नेरै हरि किरपा बसुयाम।
सुर मुनि चढ़े बिमानन ताकैं फेकैं सुमन तमाम।१०।
सतगुरु करो लखौ यह लीला होय सुफल नर चाम।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय पाय करो बिश्राम।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शै पाप होंय सब खाम।
नागिन चक्र कमल सब जानो जियति लहौ आराम।
सूरति शब्द क मारग यह है बिन रसना जपु राम।
गन्धारी कह जे नहिं जानैं ते युग युग बदनाम।१६।

६१९ ।। श्री हरि सिंह जी ।।

पदः- धर्म के ग्रन्थ भारत से अर्व चौदह बिगाड़ेंगे।
बहुत दिन लागि लिखने में देखि कर फिर सुधारेंगे।

जले अग्नी में कछु जानो कछू धरनी में गाड़ेंगे।
बांधि कपड़ों में धरि कंकड़ बहुत सरितों में डारेंगे।४।
रहे जो कुछ सो धन लेकर बिदेशों में पवारेंगे।
बीज बोने भरे को हैं बचे क्या सब हमारे गे।
बदौलत उनकी सज्जन जन देश को फिर संभारेंगे।
कहैं हरि सिंह नर नारी एकता उर में धारेंगे।८।

६२० ।। श्री जय सिंह जी ।।

दोहाः- छोटन को आदर करैं बड़ेन को है यह काम।
जा से सब कारज सरैं चलै युगै युग नाम।१।
महीपति और भूसुर जन और वर्नों को कम माना।
बड़ों को यह नहीं चाही करैं जो चाह मन माना।२।
राम औ कृष्ण लै अवतार कैसा ठान था ठाना।
अधम औ नीच अपनाया हुआ जय कार जग जाना।३।

६२१ ।। श्री बहादुर सिंह जी ।।

पदः- शिष्य भये सोरह सहस्त्र क्या यमन जाति के नर नारी।
स्वामी रामानन्द दया निधि जियति उन्है भव से तारी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रग रोवन हो हर वारी।
राम सिया घनश्याम प्रिया वो रमा विष्णु की छबि प्यारी।
हर दम सन्मुख में सब देखैं संसकार के अनुसारी।
अनहद सुनैं देव मुनि दर्शै कर निज निज शिर पर धारी।६।
नागिन जगी चक्र सब बेधे कमल खिले खुशबू न्यारी।
सूरति शब्द क जाप बतायो विहंग मार्ग क्या सुखकारी।
ब्रह्म अग्नि या से भइ प्रगट कर्म शुभा शुभ भे जरि छारी।
सत रज तम औ अजा असुर दल सब की हिम्मत गई हारी।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र वो एक करोड़ कीन पारी।
कहैं बहादुर सिंह कहौ श्री स्वामी जी की बलिहारी।१२।

६२२ ।। श्री भोला सिंह जी ।।

पदः- धागा सत्य नाम का धारो।
सतगुरु से बांधन विधि जानो असुरन पकड़ि पछारो।

ध्यान धुनी परकाश दसा लय सन्मुख रूप निहारो।
सुर मुनि संग उमंग से बैठें हरि यश सुनो उचारो।
अनहद नाद सुनो घट बाजै हर दम हा हा कारो।५।
अमृत पिओ गगन से टपकैं कटु खट्टा नहीं खारो।
स्वाद बताय सकै को वाको खट रस ते वह न्यारो।
नागिन जगैं चक्र सब घूमैं फूलैं कमल निहारो।
ब्रह्म अग्नि से कर्म शुभाशुभ जियत मुक्त ह्वै जारो।
तब से दास राम सीता के जग से जीव निसारो।१०।
कोमल बचन सुनत सब हर्षैं सब के तन मन ढारो।
सूरति शब्द क मारग यह है जानत जानन हारो।
अजपा जाप होत निशि बासर रं रं रं सुख सारो।
मार्ग पिपील मीन के आगे विहंग कहावत प्यारो।
या में ह्वै कर चलै जवन कोई सो निज घर पगु धारो।
शान्ति दीनता प्रेम गहे सो भोला कहि नहिं हारो।१६।

६२३ ।। श्री गहनी नाथ जी ।।

पदः- पहिनो सुख मुद्रा नाम को।
सतगुरु करि पहिरन बिधि जानो करो सुफल नर चाम को।
श्रवण ते रं रं रं धुनि हो निरखो राधे श्याम को।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै पहुँचि जाव निज धाम को।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शें यश गावैं गुण ग्राम को।
अमृत छकौ कहौ क्या मुख से मगन रहौ बसु याम को।६।
नागिन जगै चक्र सब बेधै कमल खिलैं फिर थाम को।
सूरति शब्द की जाप है अजपा सुगम बड़ी नर बाम को।
सुखमन स्वांस विहंग मारग में पहुँचि लियो विश्राम को।
रवि शसि वारि बतासि जाप नहिं ऐसो विमल मुकाम को।
अगणित सन्त बैठ यानन पर रूप रंग बनि राम को।
गहनी नाथ कहैं मम बानी गहै सो ले आराम को।१२।

शेरः- पासै अमी पाते नहीं नित तोय खारी पा रहे।
सतगुरु बिना गहनी कहैं, दिन मोह नींद में जा रहे।।

६२४ ।। श्री ठाकुर वघेल जानकी सिंह जी ।।

पदः- राम नाम कोई बिरलै पावै।
सतगुरु बिन यह पद है दुर्लभ पढ़ि सुनि हाथ न आवै।
शान्ति दीनता से जो प्राणी सूरति नाम पै लावै।
खुलै अखण्डित धुनि तब वाकी रग रोवन धुनि छावै।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि जहां भुलावै।५।

अनहद सुनै देव मुनि दर्शैं शुभ औ अशुभ जरावै।
अमृत चखै कहै का मुख से आनन्द उर न समावै।
राधा माधव हर दम सन्मुख निरखि निरखि मुसक्यावै।
जियतै में जो करतल करले सोई सूर कहावै।
कहैं जानकी सिंह त्यागि तन अचल धाम सो जावै।१०।

६२५ ।। श्री ठाकुर चन्द्र शेखर सिंह जी ।।

पदः- सतगुरु बिन कोई नाम न जानै।
कोटिन में कोई शूर बीर जन तन मन प्रेम में सानै।
राम नाम धुनि तब खुलि जावै रोम रोम सुख मानै।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै करै अमी नित पानै।४।

अनहद सुनै देव मुनि भेटै सब में समता आनै।
हर दम राम सिया की झांकी सन्मुख छवि छहरानै।
मुद मंगल ता को भा सब दिशि या सम और न ज्ञानै।
कहैं चन्द्रशेखर सिंह तन तजि अचल धाम लै ठानै।८।

६२६ ।। श्री बिश्वनाथ सिंह जी ।।

दोहाः- सतगुरु बचन को त्यागि कै गहे और को ज्ञान।
वा सम पापी और को यम के हाथ बिकान।।

चौपाईः- मंदिर बाग़ कूप फुलवारी, पोखर दान यज्ञ करै सारी।
इन सब से नहिं होय उबारा, सतगुरु द्रोह अथाह अपारा।
जे जन मान बड़ाई त्यागैं, सतगुरु बचन में तन मन पागैं।
ते जियतै मुद मंगल पावैं, ध्यान प्रकाश समाधी में जावैं।

सुर मुनि मिलैं बिहंसि बतलावैं, राम सिया सन्मुख छबि छावैं।
अनहद नाद सुनै वसुयामा, खुलै अखण्डित राम को नामा।६।

दोहाः- विश्वनाथ सिंह की विनय, सुनौ गुनौ नर नारि।
सतगुरु बिन भव जाल से, कौन सकै निस्तार।।

६२७ ।। श्री राजेन्द्र सिंह जी राठौर ।।

पदः- कहाते साधु हैं स्वाद किया बश में नहीं मन को।
तरा तर माल खा खा के बनाया खूब निज तन को।
बसन बढ़िया करैं धारन भजन हर वक्त है धन को।
बुद्धि ते हीन खल पापी नहीं भय नेक यम गन को।
बिना सुमिरन चलैं नरकै न मिलती कल जहां छन को।
कहैं राजेन्द्र तन बिरथा किया जग आय कर जन को।६।

दोहाः- आ. ऊ. म. परसन्न हों, सुर मुनि शक्ती जान।
राम नाम जे जन जपैं, करैं बड़ा सन्मान।।

(२)

सिया राम राधे श्याम रमा बिष्णु कहौ जी।
सतगुरु की बानि मानि कै जब मार्ग गहौ जी।
तन मन से प्रेम होय नित दर्श लहौ जी।
धुनि ध्यान नूर लय मिलै दुख सुक्ख सहौ जी।४।

सुर मुनि के होंय दर्शन शान्ति दीन रहौ जी।
शरम भरम छोड़ि देव अब न बहौ जी।
उर में बचन यह धारि लो गर मुक्त चहौ जी।
राजेन्द्र कहैं तन को त्यागि फिर न ढहौ जी।८।

दोहाः- भक्त शिरोमणि होहु तब, कह राजेन्द्र सुनाय।
सतगुरु करि जियतै लखौ, आवागमन नशाय।१।
राजेन्द्र कहैं हर दम भजौ, भव दुख होवै नास।
सतगुरु से विधि जानि लो, सब समान है पास।२।

६२८ ।। श्री वैधी माई जी ।।

पदः- मन क्यों निज मति कीन्हे भद्दी।
झूठ कपट औ बिषय में लागे भई बात सब भद्दी।
पल भर सुख नहिं मिलै चेत करु है यह पाप की गद्दी।
सतगुरु करि हम तुम हरि सुमिरैं जाय बयस क्यों रद्दी।४।

६२९ ।। श्री कलुई माई जी ।।

पदः- सूरति शब्द में जाकी लागै तब वह गगन में खेलै खेल।
ध्यान प्रकाश नाम धुनि लय हो जियत गई भव झेल।
अनहद सुनै देव मुनि दर्शै सब से होवै मेल।
सन्मुख राम सिया की झांकी तन तजि निज पुर पेल।४।

६३० ।। श्री झवुली माई जी ।।

पदः- जो कोइ सतगुरु करि जप विधि ले सो चलि गगन में खेले फाग।
ध्यान प्रकाश नाम लय पावै मेटै भव की आग।
अनहद सुनै देव मुनि भेंटैं गावैं मधुरे राग।
राधेश्याम को सन्मुख निरखै तन मन प्रेम में पाग।४।

सूरति शब्द का मारग यह है रहै न नेको दाग।
अजपा एक तार रहे जारी टूटि सकै नहिं ताग।
नर नारी सब बिनय मानि मम जियति जाव अब जाग।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन राम धाम जाव भाग।८।

६३१ ।। श्री ठाकुर शिव दयाल सिंह जी ।।

पदः- सुमिरन बिन जीव नरक परत होखे।
भेद बिना पाये कभी कोई न सरत होखे।
सतगुरु करि भजि जियत तरत होखे।
ध्यान परकाश धुनि लय में ठरत होखे।४।

सुर मुनि आय आय जय जय करत होखे।
राधे श्याम झांकी सन्मुख नेक न टरत होखे।
दीन बनि मानि बयन धीर जे धरत होखे।
अन्त तन त्यागि फेरि जग न गिरत होखे।८।

६३२ ।। श्री देवी सिंह जी ।।

पदः- सतगुरु करि हरि भजु त्याग कपट।
छूटै तब जियतै भव की लपट।
धुनि ध्यान प्रकाश औ लय में छपट।
अनहद सुनु सुर मुनि मिलैं चपट।४।
सन्मुख सिय राम सकै को उपट।
सुमिरन बिन तुम से नीक खपट।
करिहैं चित चेत के जवन रपट।
सो तन तजि निज पुर जांय झपट।८।

६३३ ।। श्री लोने सिंह जी ।।

पदः- जानो गुप्त भजन सुखदाई।
सतगुरु से लै करके कुंजी खोलो ताला भाई।
जिह्वा कर औ नयन न डोलै हर दम परै सुनाई।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै अनहद बजै बधाई।
सुर मुनि मिलैं सुनावैं हरि यश प्रेम करैं उर लाई।५।
राम सिया की झांकी वांकी सन्मुख में छबि छाई।
सारद शेष महेश गणेश औ लोमश हनुमत गाई।
अजपा रेफ बिन्दु की बानी जो हम तुम्हैं बताई।
जियत जानि के अन्त त्यागि तन सो साकेत सिधाई।९।

६३४ ।। श्री देवानी सिंह जी ।।

पदः- कीजै राम नाम की जाप।
सतगुरु से बिधि जानि के भाई मेटौ भव की ताप।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै जहां जात मिटि आप।
धुनी नाम की खुलै अखण्डित जो सब की है नाप।४।
सन्मुख सीता राम बिराजैं विश्व के माई बाप।
सुर मुनि मिलैं सुनो नित अनहद उघरै हिय की झांप।
तन से असुरन होय बिदाई काल मृत्यु जांय कांप।
अन्त त्यागि तन निज पुर जावो बैठि जाव चुप चाप।८।

६३५ ।। श्री ठाकुर मथुरा सिंह जी ।।

पदः- पहिनो राम नाम की माला।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो मथुरा कह तजि गाला।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि पाय ठोंकिये ताला।
अनहद सुनो देव मुनि दर्शें डरैं असुर यम काला।४।

हर दम नयनन सन्मुख निरखौ श्री राधे नन्द लाला।
सूरति शब्द क मारग यह है होय विहंग की चाला।
अजपा या को सुर मुनि भाख्यो कर जिह्वा नहिं हाला।
अन्त त्यागि तन लेहु अचल पुर सुनो बिनय नर बाला।८।

६३६ ।। श्री भारत सिंह जी ।।

पदः- पहिनो राम नाम की सेल्ही।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो अजा जाय ह्वौ चेली।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय में सुधि बुधि जाय बेली।
सुर मुनि मिलैं सुनो नित अनहद कौन सकै तब ठेली।४।

सीता राम सामने निरखौ चारौं मुक्ति सकेली।
सूरति शब्द का मारग यह है जो जानी सो खेली।
अन्त समय साकेत को जाई फिर भव दुख नहिं झेली।
भारत कहैं भक्त सो सांचा जो यहि मारग पेली।८।

६३७ ।। श्री हसीन जान जी ।।

चौपाईः- नाचेन गायन कसब करायन। धन कमाय परिवार जिआयन।।
भूषन बसन असन मन भावा। पहिरेन पायन समय बितावा।।
नई जवानी धर्म न जाना। बन्द रहे तब आंखी काना।।
चौथे पन में पलटा ज्ञाना। तब श्री काशी कीन पयाना।।
पहुँचि पुरी गंगा तट जाई। हाथ जोरि के शीश नवाई।५।

तब स्नान कीन्ह हर्षाई। बसन बदलि फिर धोय सुखाई।।
चली वहां से फिर मैं भाई। विश्वनाथ मन्दिर ढिग आई।
दूर ते बिनय कीन कर जोरे। माफ़ करो शिव अवगुन मोरे।

अन्न पूरणा के दरबारा। दीन हाजिरी शिर धरि द्वारा।
दण्ड पाण्ड़ि भैरव ढिग आई। कीन प्रार्थना तन मन लाई।१०।
स्वामी रामानन्द जहां पर। पूंछत पहुँची जाय तहां पर।
शान्ति दीनता उर धरि लीन्हा। फेरी पांच कुटी कर कीन्हा।
चौखट पर फिर शिर धरि दीन्हा। सात बार जय घोष को कीन्हा।
शिष्य मण्डली परम प्रवीना। सब के दूर ते पग धरि लीन्हा।
तीस कदम हटि बैठेन जाई। परदा हटा श्याम द्युति छाई।१५।
दर्शन भये बरनि नहिं जाई। शोभा उर में जाय समाई।
स्वामी जी मन की सब जाना। शंख फूंकि दियो नाम क दाना।
ध्यान समाधि प्रकाश महाना। अनहद नाद की खुलि गई ताना।
नाम कि धुनि रग रोवन छाई। राम सिया समुहे भये आई।
नागिन चक्र कमल दर्शाने। सुर देखा निज निज जो थाने।२०।
शक्ती सुर मुनि आवन लागे। एक ते एक प्रेम रस पागे।
जियतै पाप ताप सब नाशे। छिनही में जिमि बारि बताशे।
बीस वरष काशी करि बासा। कीन्ही पूरी तहं सब स्वांसा।
तन तजि राम धाम हम पावा। सत्य भेद तुम से बतलावा।२४।

दोहाः- सिन्धु हैदराबाद थी, जन्म भूमि मम जान।
हसीन जान मम नाम था, मानो बचन प्रमान।१।
हसीन जान हंसि कहत हैं, सुमिरन बिन धृग चर्म।
सतगुरु बिन नहिं मिलि सकै, किसी को याको मर्म।२।

६३८ ।। श्री पंडित सोहन लाल जी ।।

पदः- हौ हौ हौ हौ करै बचावै किसी को जब कोइ मारै जी।
ना मानै तब चरण पकड़ि ले तब दाया उर धारै जी।
शान्ति दीनता गहै जवन कोइ पग पीछे नहि टारै जी।
सोइ सूर समर यह जीतै तन के असुर पछारै जी।४।
घूमि घूमि कै जग के जीवन दै उपदेश सुधारै जी।
हर्ष शोक ताको नहि ब्यापै तन मन धर्म में बारै जी।
श्री गुरु मोको यही बतायो किसी क दिल मति बारै जी।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन सो बैकुण्ठ पधारै जी।८।

६३९ ।। श्री खबरदार शाह जी ।।

पदः- लीजै राम नाम की ओट।
नर तन पाय चेतिये भाई बने फिरत क्यों बोट।
सतगुरु करि जप भेद जानिये नित चरनन पर लोट।
सारे असुर पकड़ि के बांधो दखल करो निज कोट।
निर्भय चहै तहाँ फिर घूमौ सकै कबन करि चोट।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि मिलै बनो सब छोट।६।

दर्शन देन देव मुनि आवैं कहैं राम यश पोट।
सिया राम की झांकी सन्मुख कौन कहै फिर खोट।
पवन तनय नित लाय लाय कर खूब खिलावैं रोट।
सूरति शब्द क मारग यह है चढ़ि जावै मन घोट।
जियतै तै सब करो इहाँ पर छूटै पाप की मोट।
तन तजि अचल धाम हो दाखिल जाय नाम ह्वै नोट।१२।

दोहाः- तन मन प्रेम में सोंटि ले, सो पावै निज धाम।
दुर्लभ तन को पाय कर, चेत करो नर बाम।।

६४० ।। श्री हाजी साहब वारिस अली देवैं शरीफ़ जी ।।

पदः- सिया राम राधे श्याम लक्ष्मी बिष्णु एकै जान लो।
वारिस अली हाजी कहैं यह सखुन मेरा मान लो।
मुरशिद करो पाओ पता परकाश लय धुनि ध्यान लो।
सुर मुनि मिलैं तन में लिपट अनहद कि मधुरी तान लो।
हर समय झांकी षट लखो तन मन को प्रेम में सान लो।
दीनता औ शान्ति से खुद आप को पहिचान लो।६।

सब पर रहम करते रहो यह जहाँ में नित दान लो।
जगै नागिन चक्र बेधैं कमल फूल फूलान लो।
श्वांस सुखमन विहँग मारग ह्वै चलै सुख खान लो।
गंगा औ यमुना सरस्वती की बिमल जल स्नान लो।
झरै अमृत गगन ते जब चहै तब करि पान लो।
अन्त तन तजि यान चढ़ि हरि धाम चलि के थान लो।१२।

शेरः- सूरति शब्द में जब लगै तब जियति ही सब सुख लहै।
अजपा यही है जानिये वारिस अली हाजी कहै।।

६४१ ।। श्री फ़िदा रसूल जी ।।

पदः- कहता फ़िदा रसूल है हरि नाम का सुमिरन करो।
तन मन से मुरशिद का भरोसा प्रेम में तब तो भरो।
धुनि ध्यान लय परकाश होवै जियत में तब तो मरौ।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनौ निर्वैर फिर किस से डरौ।४।

सन्मुख संवलिया लाड़िली हर दम रहैं धीरज धरौ।
ह्वै दीन सूरति शब्द पै धरि कै अगर मानो ठरौ।
दुनों जहां में नाम हो अभ्यास करि फूलो फरौ।
तन त्यागि कै हरि पुर चलौ जग में न फिर प्यारे परौ।८।

६४२ ।। श्री लचपच शाह जी ।।

पदः- लचपच कहैं हरि को भजौ अब डगमगाना छोड़ दो।
सतगुरु करो पाओ पता चट भर्म भांड़ा फोड़ दो।
धुनि ध्यान लय परकाश हो असुरन के गहि मुख मोड़ दो।
सन्मुख में सीता राम हों भव फांस जियतै तोड़ दो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनौ इस मार्ग पर तो गोड़ दो।
तन छोड़ जावो अचल पुर जब प्रेम सांचा जोड़ दो।६।

६४३ ।। श्री निर्बल शाह जी ।।

पदः- दीन बन्धु दयाल हैं प्रभु पामरन को तारते।
जे नाम में मतवार हैं तिनके करम दोउ जारते।
धुनि ध्यान लय परकाश दें सन्मुख में रोज निहारते।
गर भक्त खेल में रूठते तो हंसि उन्हें चुपकारते।४।

गोदी उठा मुख चूम कर ऊपर को नाथ उलारते।
अनहद सुनो सुर मुनि मिलैं हरि यश भनैं सुख सारते।
सतगुरु करो पाओ पता छूटो जगत के भार ते।
निर्बल कहैं बलवान सो जो नहीं हिम्मत हारते।८।

६४४ ।। श्री निर्मल शाह जी ।।

पदः- सेवा सतगुरु कि की क्या खुली नाम धुनि
ध्यान परकाश लय में समाई हुई।
देव मुनि सब मिले साज अनहद सुना
सारे असुरों की तन से बिदाई हुई।
हर समय राधिका श्याम सन्मुख लखौं
छटा श्रंगार छबि अद्‌भुत छाई हुई।
गर्भ का कौल इहां पर चुकालो सुनो
तब तो जानो हमारी रिहाई हुई।४।
चेतो चक्कर बड़ा है कठिन मान लो
नाना योनिन में फिर फिर झुलाई हुई।
नर्क का दुख बयां कवन यारों करै
दुःख की खानि हर दम रुलाई हुई।
जिसका हरि नाम पर प्रेम तन मन लगा
उसके पापों की छिन में धुलाई हुई।
अन्त तन त्यागि निर्मल कहैं यान चढ़ि
राम पुर को गया जग बिदाई हुई।८।

६४५ ।। श्री शँखुली शाह जी ।।

पदः- पढ़त पढ़त तन जाय बुढ़ाय, सुनत सुनत जावै अकुलाय।
लिखत लिखत जावै अंधराय, सतगुरु बिन जप भेद न पाय।
या से जीव परा चकराय, केहि बिधि निकसि वतन को जाय।
कहैं शंखुली बचन सुनाय, मानौ चहै न मानौ भाय।४।

६४६ ।। श्री ठाकुर बिजय बहादुर सिंह जी ।।

पदः- बाबा साधू सन्त महात्मा स्वामी बाजैं गुरु महाराज।
मूड़ मुड़ाये जटा रखाये कोइ तन राखत साज।
जगत सुधारन के हित आये घूमत करत अकाज।
तन के असुर जीत नहिं पायो नेक न आवत लाज।४।
तत्व की बात अगर कोइ पूछै कड़के जैसे गाज।
जो न हटै तो झपटि के पकड़ैं जैसे लवा को बाज।

सारी आयू इसी में बीती सारयों नहिं निज काज।
अन्त त्यागि तन नर्क को जावैं पापिन में सिरताज।८।

दोहाः- सतगुरु बिन नहिं भव तरै, सत्य बचन प्रमान।
बिजय बहादुर सिंह कह, खुलै न आंखी कान।।

६४७ ।। श्री ठाकुर फतेह बहादुर सिंह जी ।।

दोहाः- बाबा साधू सन्त महात्मा स्वामी कहते सेवक लोग।
कोमल बचन सुनाय शिष्य कर फैलायो खुब ढोंग।
नाक कान मुख आंखै मूंदै गुदा त्वचा धरि पोंग।
चाह चमारिन संग न छोड़ै करत रात दिन भोग।४।

जैसे गुरु वैस ही चेला करत फिरत क्या सोंग।
तत्व यथारथ जानि न पायो औढ्यौ पाप क रोग।
अन्त त्यागि तन नर्क में जावैं पावैं दुख संयोग।
हरदम फटकि फटकि चिल्लावैं तन सब मल में ओंग।८।

६४८ ।। श्री रंगी माई जी ।।

पदः- करिये निज काया में फेरी।
सतगुरु करि जप भेद जान लो तब हो जय जय तेरी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि खुलै न लागै देरी।
सुर मुनि आवैं हरि यश गावैं बिहंसि सुख लेरी।
अनहद बाजा मधुर अवाजैं सुनत कटै दुख वेरी।५।

सीता राम की झांकी सन्मुख हर दम टरै न हेरी।
माया चोर काल यम मृत्यु सकै न तब फिर टेरी।
शान्ति दीनता प्रेम से तन मन जो कोइ एक में गेरी।
सोई नाम कमाय कै जानो धरि लेहैं खुब ढेरी।
रंगी कहैं अन्त निज पुर ले फिर न होय जग चेरी।१०।

सोरठाः- मानि बिनय नर नारि, सतगुरु करि हरि लेव भजि।
रंगी कहैं पुकारि, जियत जानि जग देव तजि।।

६४९ ।। श्री ढङ्गी माई जी ।।

पदः- बैठो राम नाम की किश्ती।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जीतो जियतै कुश्ती।
तन के असुर भागि सब जावैं रहै न तनिको हस्ती।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय होय जाय चढ़ि मस्ती।४।
श्यामा श्याम की झांकी सन्मुख हर दम निरखौ हंसती।
सुर मुनि की टोली नित आवै हंसि हंसि उर में लसती।
कमल चक्र कुंडलनी जानो अनहद धुनि क्या सस्ती।
ढङ्गी कहैं अन्त तन तजि के बैठो चलि निज बस्ती।८।

६५० ।। श्री ठाकुर गम्भीर सिंह जी ।।

पदः- बैठो राम नाम की नौका।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो मिलै न ऐसा मौका।
जियतै तन के असुर जीति लो गुनौ बचन तब गौंका।
ध्यान धुनी परकाश दसा लय मिलै मिटै जग घौंका।४।
सन्मुख राम सिया की झांकी हर दम फरक न जौका।
शान्ति दीनता प्रेम से भाई फैलत नाम का बौंका।
बृक्ष बिशाल फूल फल देवै लागै फिर नहिं हौका।
अन्त त्यागि तन निजपुर लीजै जहाँ न पहुँचत रौंका।८।

६५१ ।। श्री खबूचड़ शाह जी ।।

पदः- चुहिये राम नाम की गेंड़ी।
सतगुरु करि जप भेद जान लो दखल करौ सब मेड़ी।
सारे असुर शान्त ह्वै जावैं शाखा बिन जिमि पेंड़ी।
ध्यान धुनी लय रूप लखि काटो भव की बेंड़ी।
जो न भजौ तो फिर नर तन तजि होहू आय जग भेड़ी।
कहैं खबूचड़ शाह बचन मम गुनौ वृथा नहिं छेड़ी।६।

६५२ ।। श्री शिव लाल जी ।।

पदः- करो सतगुरु भजन जानो लखौ गोपाल सुखदाई।
छटा श्रृंगार छबि अनुपम रहे सन्मुख सदा छाई।

ध्यान परकाश लय दोनों जहां सुधि बुधि न कछु जाई।
नाम की धुनि रगन रोवन सुनो हर शय में भन्नाई।
बजे अनहद बिमल घट में चखो अमृत को हरषाई।५।
मिलें सुर मुनि कहैं हरि यश बिहंसि लिपटैं गले लाई।
चन्द्र औ सूर्य्य सुखमन हों मार्ग तब हो विहंग भाई।
जगे नागिन चलै चक्कर खिलैं सब कमल फर्राई।
महक जो स्वरन से निकले बरनने में नहीं आई।९।

पदः- लिखा बिधि का मिटै जियतै लेव तन मन को अबताई।
कहैं शिव लाल तन छूटे चलो निज धाम को धाई।।

पदः- सतगुरु करि चलो प्रेम नगर को।
अब न तजो निज कुल की डगर को।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ चेति बिलग मत टरको।
ध्यान धुनी परकाश समाधि में चलो एक दम गरको।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद क्या बरनो नित परको।५।
सुर मुनि आप कीर्तन ठानैं बिहँसि संग में छरको।
हर दम श्याम प्रिया रहें सन्मुख जिन से और सुघर को।
अजपा सूरति शब्द क यह है सुर मुनि बिधि हरि हर को।
निर्भय औ निर्वैर रहो तब मारि लात भव डर को।
कहैं शिव लाल त्यागि तन निज पुर चढ़ि बिमान पर सरको।१०।

६५३ ।। श्री बना दास जी ।।

पदः- बनिये राम नाम अधिकारी।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय अनहद बाजै प्यारी।
सुर मुनि मिलैं छको घट अमृत सन्मुख सिय धनुधारी।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं कमल खिले सुखकारी।
सतगुरु करो मिले तब मारग जियते लेव सँभारी।
बना दास कहैं अन्त त्यागि तन बैठो भवन मँझारी।६।

६५४ ।। श्री पं. अविनाश चन्द्र जी अमरावती ।।

पदः- मिलता नहीं पर है मिला सुमिरन करो सब में लखौ।
धुनि ध्यान लय परकाश हो अनहद सुनो अमृत चखौ।

सुर मुनि मिलें छाती लगा वह सुःख किमि मुख से भखौ।
नागिन जगै चक्कर चलें कमलन के फूलैं सब पखौ।४।

सन्मुख में राधे कृष्ण हों संग सब सखी औ सब सखौ।
यह मार्ग सूरति शब्द का सतगुरु को तन मन दे सिखौ।
जियतै में सब तै जाय ह्वै मेटो विधाता का लिखौ।
अविनाश कह तन छोड़ि के फिर गर्भ में काहे कखौ।८।

६५५ ।। श्री काने शाह जी ।।

(स्वामी सुखानन्द जी के शिष्य,
स्वामी सुखानन्द जी श्री स्वामी रामानन्द जी के शिष्य
यह पद संवत १९९६ में लिखाए गए।)

पदः- कथा औ कीर्तन पूजन पाठ सुमिरन बिना फट फट।
करौ मुरशिद मिलै मारग सँभरि कर तब चलो चट चट।
चोर तन से निकरि भागैं मचाये जौन हैं खट खट।
नाम की धुनि सुनौ रं रं लगी हर शय से है रट रट।
ध्यान परकाश लय पाओ जाय बिधि का लिखा कट कट।५।

सुनौ अनहद चखौ अमृत गगन ते चुइ रहा पट पट।
जगै नागिन नचैं चक्कर कमल सातों खिलैं झट झट।
सभी सुर मुनि मिलैं प्रति दिन बिहँसि फिर जाँय तन सट सट।
सामने राधिका मोहन रहैं जो हैं बसे घट घट।
इड़ा औ पिंगला नाड़ी मिलैं सुषमन में जब डट डट।१०।

खुलै तब विहँग का कूचा जहां कूचा न कोइ तट तट।
तत्व पांचों सुधैं दरशैं होइ अन्तर लखौ हट हट।
जियत निर्वैर निर्भय हो भरम भाँड़ा फुटै भट भट।
मार्ग यह है निवृत्ती का जाय बिरलै कोई छँट छँट।
दीनता शान्ति धारन कर कमर कसि कै बनौ नट नट।१५।

लोक सब घूमि लख आओ लेहु गहि शब्द की लट लट।
महक क्या स्वरन ते निकसै बिबिधि परकार की वँट वँट।
तामसी राजसी भोजन त्याग दो खाव मत गट गट।

बिना इन्द्रिन दमन कीन्हे नहीं मन मानता फट फट।
कहैं काने छुटै तन जब लेउ अपना वतन अँट अँट।२०।

पदः- काने काने काने हम तो जन्म के काने काने।
मुरशिद किया भजन बिधि जाना तन मन प्रेम में साने।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शय से भन्नाने।
कौसर पिया सुना घट अनहद सुर मुनि सँग बतलाने।
सन्मुख हर दम राधा माधव रहैं छटा छबि ताने।५।
को बरनै वह झाँकी वाँकी शारद शेष लजाने।
नर तन पाय करें जे सुमिरन ते हैं चतुर सयाने।
नाहीं तो तन त्यागि नर्क पड़ि यम के हाथ बिकाने।
माता पिता भ्राता सुत बनिता धन मकान लपिटाने।
जानत हैं कोइ संग न जाई तन से जहँ अलिगाने।१०।

६५६ ।। श्री ख्वथरे शाह जी ।।

पदः- बिना रसना के जप करिये यही सच्चा भजन सब से।
करौ मुरशिद पता पाओ भटकते फिरते हो कब से।
ध्यान धुनि नूर लय होवै जियत निर्बैर हो सब से।
सुनौ अनहद पियौ कौसर गगन से चुइ रहा कब से।४।
मिलैं सुर मुनि कहैं हरि यश बिहँसि बोलो लिपटि सब से।
हर समय राम सीता की छटा देखौ खड़े कब से।
अन्त तन त्याग निजपुर लो नात जग का हटा सब से।
कहैं ख्वथरे सखुन मानौ अरज हम कर रहे कब से।८।

शेरः- करके अमल सुन लीजिए हर शय से रं रं की धुनी।
ख्वथरे कहैं हम से कह्यो अजपा यही सब सुर मुनी।१।
नाम कमला बिष्णु राधे श्याम सीता राम का।
ख्वथरे कहैं सब में रमा सब से बिलग सब काम का।२।

६५७ ।। श्री गन्दे शाह जी ।।

पदः- जाप अजपा बिना जाने कोई भव पार नहि जाता।
करै मुरशिद, गहै मारग तौन इस रंग पर आता।

ध्यान परकाश लय पावै सुनै अनहद अमी पाता।
देव मुनि संग में खेलैं चरित प्रभु के बिमल गाता।
जगै नागिन चलैं चक्कर कमल सातौं को उलटाता।
महक क्या स्वरन से निकलै बिहँसता रात दिन माता।६।

छटा भगवान कमला की हर समय सामने छाता।
दीनता शान्ति धारन कर करौ अब बीज से नाता।
नाम रंकार सुखदाइ जौन शंकर के मन भाता।
जौन अलसाय के बैठे न मानेगा मेरी बाता।
न टूटै द्वैत का धागा किया तन रद्दी का खाता।
अन्त तन त्यागि कह गन्दे जन्मता फिरता दुख पाता।१२।

शेरः- गन्दे कहैं सुमिरन बिना सब झूँठ जग का खेल है।
जिसने न जाना जियत में सो दोनों दिशि से फेल है।१।
यह तन मिला अनमोल चेतौ नारि नर सुमिरन करो।
गन्दे कहैं मानो बचन अब पग पछारी मत धरो।२।

६५८ ।। श्री खोटे शाह जी ।।
(मुकाम महमदी)

पदः- करम गति करम किहे मिटि जाय।
मुरशिद करै भजन बिधि जानै सो यह आनन्द पाय।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि अनहद साज सुनाय।
कौसर पिये देव मुनि आवें बिहँसि लेइँ उर लाय।४।

नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल फुलाय।
उड़ै तरंग मस्त हो तन मन मुख से बोल न आय।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाय।
खोटे कहैं अन्त निजपुर हो आवागमन नसाय।८।

शेरः- चश्म अन्धे गोश बहिरे क्या लखैं औ क्या सुनैं।
खोटे कहैं मुरशिद बिना जो मन चहै सोई धुनैं।
दीनता औ शान्ति गहि मुरशिद बचन को मान लो।
खोटे कहैं सब पास ही जियतहि में सुख की खान लो।२।

६५९ ।। श्री कुबरे शाह जी ।।

(मुकाम निघासन)

पदः- कुबरे कहैं जे नारि नर मुरशिद को करि जागे नहीं।
ते वृथा जग में हुये टूटे भरम धागे नहीं।
ध्यान धुनि परकाश लय में जाए के पागे नहीं।
कौसर को पी अनहद को सुनि सुर मुनि के सँग लागे नहीं।
शँभु गिरिजा की छटा उनके हुई आगे नहीं।
त्यागि तन दोज़ख पड़े निज धाम को भागे नहीं।६।

६६० ।। श्री खुल्ले शाह जी ।।

पदः- मेरा मन क्या करेगा तू, मेरा मन क्या करैगा तू।
मिले मुरशिद मुझे सच्चे कहां तक अब लड़ैगा तू।
लगाऊँ नाम का कोड़ा तो चट संग में चलैगा तू।
ध्यान धुनि नूर लय पा कर न फिर पीछे हटैगा तू।
राम सीता रहैं सन्मुख प्रेम तन मन भरैगा तू।
सुनै अनहद मधुर बाजा कहैगा क्या गुनैगा तू।६।

देव मुनि आय दें दर्शन लिपटि सब से मिलैगा तू।
दुई छूटै मेरी तेरी एक में मिलि रहैगा तू।
छन रहा गगन से अमृत सदा उसको पियेगा तू।
चक्र षट बेधि जब जावै कमल सातौं लखैगा तू।
नागिनी मातु जब जागी सभी लोकन फिरैगा तू।
कहैं खुल्ले चलैं तन तजि न फिर जग में गिरैगा तू।१२।

६६१ ।। श्री हकूमत शाह जी ।।

पदः- अरे बेहोश मुरशिद कर सखुन ये मान ले मेरे।
होश हो जायगा तुझको देव मुनि तन में हैं तेरे।
बेद औ शास्त्र तन धरि धरि कदम चूमैंगे आ तेरे।
तीर्थ सब रूप धरि गौवन क तन चाटैं रहैं घेरे।४।

ध्यान धुनि नूर लय होवै कटैं भव जाल के फेरे।
सामने राधिका मोहन खुले नैनन तुझे हेरें।

सुरति को नाम पर धरि कर खोलि ताला अपन ले रे।
हकूमत शाह कह चेतो तुम्हैं निज मानि हम टेरें।८।

६६२ ।। श्री हठी राम जी ।।

पदः- चारिउँ कुँवर चारि कुँवरिन बरि मिथिला पुर से अवध को आये।
बिबिध भांति मातन कियो परछनि धन-पट-भूषन रतन लुटाये।
त्रण उघारि के मुख जब निरख्यो प्रेम से तन फूले न समाये।
पुलकावली कण्ठ से गद्गद हर्ष के उदधि मानहुँ उमड़ाये।
छबि श्रृंगार छटा को बरनै शारद गणपति शेष चुपाये।
सुर शक्ती नर नारिन तन धरि आय आय कर मंगल गये।६।

गृह गृह उत्सव हाट बाट सब साजे इतर सुगन्ध सिंचाये।
नगर सुघरता लखि शिवपुर औ विधि पुर हरिपुर होश उड़ाये।
इन्द्रपुरी पाताल पुरी को मूर्छा भइ नहिं उठत उठाये।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै तब सब देखै हिय हुलसाये।
हठी राम कहैं शान्ति दीनता प्रेम आय आपै लपटाये।
ध्यान प्रकाश नाम धुनि लय हो अनुपम रूप सामने छाये।१२।

६६३ ।। श्री जगदँबिका कुँवरि जी ।।

पदः- नित करै मो से रारि माई यह तेरो ललनुवाँ।
मैं गृह से दधि बेचन निकसौं चट लकुटी देवै मारि मटकी में
ये तेरो ललनुवाँ।

कबहूँ पकरि पीछे से चट लेवै बैठार प्यारी ये तेरो ललनुवाँ।
कबहुँ कहै ग्वालनि से घेरि लूटौ दधि झारि सुंदर ये तेरो ललनुवाँ।
कबहुँ उतारि के साढ़ी आपै लेवै मुख डारि हँसना ये तेरो ललनुवाँ ।५।

कबहूँ खाय औ छीपै बोलै सारी देवै फारि लबरा ये तेरो ललनुवाँ
कबहूँ भिजाय के कपड़ा देवै गलिया में गारि चंचल ये तेरो ललनुवाँ।
मुरली में जादू या के क्या करैं ब्रजनारि तन मन ये तेरो ललनुवाँ।
जगदम्बिका कुँवरि कहैं प्रेम में सब ब्रजबासी गे हारि धन धन
ये तेरो ललनुवाँ।
मूरति सांवरी वीकी लीन्हो सब उर धारि जग धन ये तेरो ललनुवाँ।१०।

६६४ ।। श्री जगदम्बा दीन जी ।।

पदः- मैं नहिं सखिन सताई सुनु मेरी माई।
भोर होत माखन रोटी लै गौवन संघ बन जाई। सुनु मेरी माई।।
ग्वाल बाल बुलवाए के पूछौ काहे मो पै रिसाई। सुनु मेरी माई।।
दिन भर गौवन के संग डोलैं साँझ होत डगराई। सुनु मेरी माई।।
जमुना जी में नीर पियाए के बाड़न पहनौ लाई। सुनु मेरी माई।५।

निज निज खूंटन रसरिन में फिरि बाँधै दौर लगाई। सुनु मेरी माई।।
तब फिर गृह को आवैं बैठें संगै दोनों भाई। सुनु मेरी माई।।
गोदोहन फिरि चलैं यहां से लै कर ल्यटुरा धाई। सुनु मेरी माई।।
दूध गारि कै गृह में लावैं आप को देंय थमाई। सुनु मेरी माई।।
पिता संग दोउ भ्राता भोजन करि फिरि पौढ़ैं जाई। सुनु मेरी माई।१०।

राति को होश रहै नहि नेकौं ऐसी चढ़त थकाई। सुनु मेरी माई।।
चारि बजै आपै हो जगौती तबहूँ न नींद सेराई। सुनु मेरी माई।।
आँखी मुख तब आप धोय के कनियां लेत उठाई। सुनु मेरी माई।।
कौनै समय सखिन से बोलैं आपै देहु बताई। सुनु मेरी माई।।
माता तुम तो भोली भाली व्रज की चतुर लुगाई। सुनु मेरी माई।१५।

हम को देखन के हित ओरहन झूठै सब लै आई। सुनु मेरी माई।।
फाटक बंद कराय के माता इनको देहु पिटाई। सुनु मेरी माई।।
तब इन सब की झूठी बातैं छूटि जांय दुखदाई। सुनु मेरी माई।।
नाहिं तो हम लैकर सांटी पीटब आह बुताई। सुनु मेरी माई।।
या तो कसम खाँय तब जावैं अब न कहब कछु आई। सुनु मेरी माई।२०।

शांति प्रेम से आवैं जावैं तब तो भली भलाई। सुनु मेरी माई।।
झगड़े का इन्साफ़ जाय ह्वै तब सब पावैं जाई। सुनु मेरी माई।।
नाहीं तो हम तुम्हरे घर में रहब न सुनिये माई। सुनु मेरी माई।।
इन सब के हैं बालक गोरे हम में कौन लुनाई। सुनु मेरी माई।।
मैं कारो सब जग से न्यारो बिधि मोहि ऐस बनाई। सुनु मेरी माई।२५।

आय आय सब लाय बहाना टोना देंय लगाई। सुनु मेरी माई।।
राई लोन उतारि के माता अगिनि में देहु ढिलाई। सुनु मेरी माई।।
मृदुल बचन हरि के सुनि सखियाँ कर जोरैं मुसक्याई। सुनु मेरी माई।।

भाग्य सराहैं अपनी अपनी नैन नीर झरि लाई। सुनु मेरी माई।।
शीश नवाय चलैं निज निज घर हरि उर गये समाई। सुनु मेरी माई।३०।

जसुमति हरि को प्रेम बिबस ह्वै उर में लीन लगाई। सुनु मेरी माई।।
यह पद प्रेम से पढ़ै सुनै जो ता को सुख हो भाई। सुनु मेरी माई।।
श्री जगदम्बा दीन कहैं हरि मिलिहैं सत्य सुनाई। सुनु मेरी माई।३३।

६६५ ।। श्री मोहाना माई जी ।।

पदः- झूठे ओरहन लातीं हमारे गृह आतीं।
काको बरजैं हरि मेरो बारो तुम सब हौ मदमाती। हमारे गृह आतीं।।
अब ही हमरे कुच नित पीवत गिरी न दूध की दाँती। हमारे गृह आतीं।।
तुम सब अपने पतिन के सङ्ग में काहे नहिं अठिलातीं। हमारे गृह आतीं।।
नेकौ लाज नहीं तुम सब के और न बात सोहाती। हमारे गृह आतीं।५।

चाल चलन तुम सब का बिगड़ो कौन अन्न हो खाती। हमारे गृह आतीं।।
रुकत ज़बान नहीं बोलत में जिमि बकरी चरै पाती। हमारे गृह आतीं।।
इन बातन का कहां ठिकाना अंत में होइ है तांती। हमारे गृह आतीं।।
निज निज कुल की कानि छोड़ि क्यों पाप कि बांधौ गांती। हमारे गृह आतीं।।
जैसे दिया में तेल नहीं है जलिहै केहि बिधि बाती। हमारे गृह आतीं।१०।

हाय दई ओरहनि नित सुनि सुनि बज्र भई यह छाती। हमारे गृह आतीं।।
हरि तो इनके ऐस लगत हैं जैसे पोता नाती। हमारे गृह आतीं।।
अब जनि कोई ओरहन लायो नाहिं तो मारब कांती। हमारे गृह आतीं।।
किरिया खाय कहौ ये बातैं मम उर नहीं समाती। हमारे गृह आतीं।।
या से तुम सब शांति चित्त हो समुझायन बहु भांती। हमारे गृह आतीं।।
कहै मोहाना सखि सब हंसि हंसि निज निज गृह उठि जाती।
हमारे गृह आतीं।१६।

दोहाः- प्रेम में हरि के सब सखी सकैं न जसुमति जान।
कहै मोहाना हरि लखैं भीतर बाहेर मान।।

६६६ ।। श्री लुक्कन शाह जी ।।

पदः- नन्द का लाला कन्हैया सब के सिर का ताज है।
प्रेम से सुमिरन करो सन्मुख में आप बिराज है।

दीन दुखियों के हरै दुख क्या गरीब निवाज है।
हति दुष्ट फिरि बैकुण्ठ दें निज नाम की खुद लाज है।४।

मुरशिद करो पावो पता घट ही में तो व्रज राज है।
धुनि ध्यान लय परकाश हो बाजत मधुर क्या साज है।
सुर मुनि मिलैं सत्संग हो कहैं नाम ही का राज्य है।
लुक्कन कहैं तन मन लगै ताको सुफल सब काज है।८।

६६७ ।। श्री फुसलावन शाह जी ।।

पदः- मीन पानी में पियासी रह नहीं सकती कभी।
नाम हासिल हो तो माया गह नहीं सकती कभी।
खेत में टाटी लगी पर चर नहीं सकती कभी।
दिमक में माटी लगी पर मर नहीं सकती कभी।४।

कहते फुसलावन फिसलना छूटिगा।
मिल गये मुरशिद भरम घट फूटिगा।
नाम को जाना वही भव कूटिगा।
जो रहा गाफिल वही यहँ लूटिगा।८।

६६८ ।। श्री लंठ शाह जी ।।

पदः- मेरा दीवान हो कर मन मुझे जग में लुभाता क्यों।
कमा ले धर्म धन सँग में उसे यहँ पर लुटाता क्यों।
भजन करने को गर बैठें तो तू आकर बकाता क्यों।
नहीं चालाक कोइ तुझ सा जाय कर घूमि आता क्यों।
बे-धरम बे-शरम है तू मुझे अब मुख दिखाता क्यों।
करूँ मुरशिद तुझे मारूँ मुझे बाग़ी बनाता क्यों।६।

६६९ ।। श्री संठ शाह जी ।।

पदः- मेरा दीवान हो कर मन मुझे जग में फंसाया क्यों।
भरा संग गर्भ में हामी करूं सुमिरन भुलाया क्यों।
मेल चोरों से करके तू मेरा सब धन ठगाया क्यों।
किया चोला मेरा दागी जियति दोज़ख दिखाया क्यों।

सामने आ दिखा मुख तो कहां बैठा लुकाया क्यों।
करूँ मुरशिद तुझे पकड़ूँ मेरा पट्टा छिपाया क्यों।६।

६७० ।। श्री अल्हर शाह जी ।।

पदः- तुम कौन रहौ हम कौन रहै अब आये कहां औ जैहो कहां।
नहिं पावो पता तो खाव खता लो ठीक मता मुरशिद से यहां।
धुनि हो हर दम मिटि जावै गम चमकै चम चम क्या नूर महां।
लै ध्यान भि हो क्या गान भि हो सुख तान भि हो पगि जाव वहां।
दर्शै सुर मुनि तहं लीजै गुनि बोलैं पुनि पुनि सुनि मस्त अहा।५।
सन्मुख में सीता राम लखौ तब मुख से यारों काह भखौ।
हर दम कौसर का जाम चखौ यह मानो सब हम खोलि कहा।
तन छोड़ि चलो निज धाम खिलो फिर काहे मिलो यहँ कौन रहा।
जो शब्द गहै सो जियति लहै बनि दीन रहै नहिं लौटि ढहा।९।

६७१ ।। श्री करामत शाह जी ।।

पदः- सरिता में जिमि मीन है वैसे जग में दीन।
बिन जाने जावैं गटकि रहते सदा मलीन।१।
बिन मुरशिद दोजख पड़ैं छूटें नहिं गुण तीन।
कहैं करामत शाह भजि खोदा को लीजै चीन्ह।२।

गज़लः- तरज़ ख्याले बहर शिकस्त

क्या सानमान का है चसका मज़हब को मज़हब खाय रहे।
त्यागे सब बैन बुज़ुर्गों के बस मन मानी खुद गाय रहे।
दस झूँठी सांची एक कहैं ते जग हुशियार कहाय रहे।
पढ़ि सुनि के कोरा ज्ञान कथैं मुरशिद बनि पाँय पुजाय रहे।
धन ठगने हित चेला करते क्या कान में मंत्र बताय रहे।५।
पत्थर की नाव बने बैठे औरों को संग डुबाय रहे।
माया के चक्कर में परि के अपना परिवार बढ़ाय रहे।
तन छोड़ि पड़ैं जब दोज़ख में सब के सब हाय मचाय रहे।
झूँठे मुरशिद चेला झूँठे कहि मारैं जम दुख पाय रहे।
अब ही तो ख्याल नहीं करते धोखे में उमिरि बिताय रहे।१०।

मुरशिद करि जियतै लखि लीजै घट ही में सुर मुनि छाय रहे।
अससनान करो सब तीर्थ भरे अनहद धुनि मधुर सुनाय रहे।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सन्मुख सिय राम दिखाय रहे।
सब में हैं रमें नहिं भेद कोई सब को जल अन्न कराय रहे।
नागिन षट चक्कर ठीक होंय सातौं क्या कमल फुलाय रहे।१५।
अजपा की जाप को जिन जाना सुखमन परि मौज उड़ाय रहे।
नहिं जीभ हिलै कर माल नहीं बस शब्द पै सूरति लाय रहे।
जब नाम खुला तब क्या कहना अपनै अपनै को ध्याय रहे।
तुम को अब कुछ नहिं है करना आपै को आप रिझाय रहे।
तन छोड़ि वतन को हो रुख़सत जहँ अगणित संत दिखाय रहे।२०।
सब श्याम रूप औ चारि भुजा तन भूषन बसन सुहाय रहे।
अनइच्छित बोलि नहीं सकते तहँ याँनन बैठक पाय रहे।
छबि यानन की को बरनि सकै क्या लहर लहर लहराय रहे।
पृथ्वी मणियों की भाँति भाँति क्या वृक्ष बिचित्र दिखाय रहे।
हैं रंग रंग के फूल खिले तहँ मन्द सुगंधि उड़ाय रहे।२५।
अंतर्गत प्रभु के महरानी लखि कोटिन मदन लजाय रहे।
ऊँचा सिंहासन है सब से पितु मातु उसी पर छाय रहे।
कहते हैं करामत शाह सुनो सब के हित हम समुझाय रहे।२८।

शेरः- अभिमान जिस बशर के तन से घट नहीं सकता।
वह राम ब्रह्म के करीब अँट नहीं सकता।१।
जैसे कि शालिग राम हों पय फट नहीं सकता।
वैसे ही सच्चा भक्त कभी हट नहीं सकता।२।
कहता है करामत शाह करामात नाम की।
बेकार सिद्धियाँ हैं और कौन काम की।३।
देंगी फँसाय जग में जाने न दें उधर।
कहते करामत शाह बस आशा लगी इधर।४।

६७२ ।। श्री खुदा बख्श जी ।।

(मोहल्ला मुबारकपुर, उन्नाव)

दोहाः- मन से हो महबूब की तकरीमो ताज़ीम।
तब तो वह कर दे तुरत नज़रे करम करीम।१।

होय इबादत ठीक, आय के गले लगा लेवेगा।
बन जाओ तब नीक, तुम्हें सब कुछ देवेगा।२।

(१)

पदः- इबादत लौ लगा करिये तो चट घनश्याम मिल जाँये।
करौ मुरशिद पता पाओ वही यह मार्ग बतलायें।
छटा श्रृंगार छबि अनुपम हर समय सामने छाँये।
अधर पर क्या हरी मुरली बाम दिशि राधे मुसक्याये।४।

ध्यान धुनि नूर लय होवै देव मुनि बिहँसि उर लायें।
सुनौ अनहद पियौ कौसर चोर तब फिर न धमकायें।
जगै नागिन नचैं चक्कर कमल सातौं भी गमकायें।
कहैं खुदा बख्श तन छूटै खलक में फिर न चकरायें।८।

(२)

रोज़ी दे रज़्ज़ाक उसी का शुक्र करौ हर दम सब जन।
मुरशिद से सब भेद जानि कुर्बान करौ अपना तन मन।
ध्यान प्रकाश समाधी हो जरि जाँय करम दोनों ततछन।
सुर मुनि भेटैं कौसर छाको अनहद घट सुनि सुनि होहु मगन।
सन्मुख में प्यारे का चेहरा जो सब का मानो जीवन धन।
कहैं खुदा बख्श अब मत चूकौ जियतै में जावे बिगरी बन।६।

(३)

बँसुरिया मधुर बजाई, तुम्हें कौने बतलाई त्रिभुवन-भुवाल रसिया। हाँ।
देखत में हरी हरी, अजब कौतुक की भरी डाल गई गले फँसिया। हाँ।
जब से कूक पड़ी कानन में, छिन पल कल नहिं घर आँगन मे
सब के उर बसिया। हाँ।
सूरति शब्द कि जाप को पकड़ो, खुदा बख्श कहैं प्रेम में जकड़ो,
तब सन्मुख लसिया। हाँ।४।

(४)

क्या अजब कौतुकी मौला है कैसा यह खेल पसारा है।
मुरशिद करके कछु जानि लेहु वरना वह अगम अपारा है।

आपै सब में परिपूरन है औ आपै सब से न्यारा है।
आपै बना खिलाड़ी है औ आपै करत दिदारा है।
खुदा बख्श कहैं जियतै न लखै सो कभी न उसका प्यारा है।
लो नगद नशा नर-नारि सुनौ क्या दाम मिला हथकारा है।६।

शेरः- दुआ करते हैं सलामत रहैं सब मेरी तरह।
ज़िक्र मौला क करैं, मस्त रहैं मेरी तरह।।

६७३ ।। श्री अला हुसेन जी ।।

(मुकाम मूल गंज, कानपुर)

शेरः- शुक्र करते हैं किसी का न बुरा चहते हैं।
सब में लखते हैं सदा मस्त बने रहते है।।

(१)

दीन बनि मेहनत करौ हरि को भजो तब ठीक हो।
मुरशिद करौ मारग मिलै काहे को बैठे फीक हो।१।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख श्याम राधे नीक हों।
यह सखुन मेरा मानिए नर नारि पत्थर लीक हो।२।

(२)

श्याम-प्रिया सन्मुख छबि छावैं, सतगुरु करि भजौ तन मन लाइकै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि, सुर मुनि बिहँसि मिलैं उर लाइकै।
अमृत पियौ सुनौ घट अनहद विधि गति भाल से जियत कटाय कै।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल खिलैं फर्राय कै।
भांति भांति की खुशबू आवै क्या बरनौं यह आनन्द पाय कै।
अन्त समय चलि-चढ़ि सिंहासन निजपुर राजौ जग यश छायकै।६।

(३)

नाचत हँसत यशुदालाल, संग लीन्हें गोपी ग्वाल।
बाजत बाजा बिशाल उछरि उछरि देत ताल।
गावत क्या ध्रुपद आल, बाँधत ता में पराल।
नभ ते सुर लखत हाल, फेंकत बहु सुमन माल।
सन्मुख राजत कृपाल, जय जय कहि कहि निहाल।
भजिए तजि कपट चाल, छूटै तब दुख की जाल।६।

शेरः- मतवाल जो हरि नाम का रोज़ा नमाज़ से काम क्या।
जब तक नहीं मिलता वतन, तब तक करो यारों जतन।।

६७४ ।। श्री अला हुसेन जी ।।

पदः- भजु मन खोदा अल्ला मियां।
जाप बिधि मुरशिद से सीखो हटे परदा सिया।
ध्यान लय परकाश धुनि हो जौन सब का बिया।
सुनौ अनहद चखौ कौसर होय निर्मल हिया।४।
देव मुनि संघ खाँय खेलैं, कहैं तन फल लिया।
छटा छबि श्रृंगार झाँकी सामने में किया।
जानि करतल करै जियतै तौन जुग जुग जिया।
छोड़ि तन निज घर सिधारै, बास पास में दिया।८।

६७५ ।। श्री सहिंदा जान जी रंडी ।।
(मुकाम बरेली, श्री स्वामी रामानन्द जी की चेली)

पदः- लखि छबि बिहँसि परी, श्याम मेरी ठाढ़ो बगल में।
भूषन बसन मनोहर साजे मुरली अधर धरी,
श्याम मेरी ठाढ़ो बगल में।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै तिरगुन टूटै लरी,
श्याम मेरी ठाढ़ो बगल में।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि, हर दम उठत हरी,
श्याम मेरी ठाढ़ो बगल में।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमृत झरत झरी,
श्याम मेरी ठाढ़ो बगल में।
अंत त्यागि तन निज पुर राजौ जग से होहु बरी,
श्याम मेरी ठाढ़ो बगल में।६।

६७६ ।। श्री राम लाल भाट जी ।।
(मुकाम बरेली, श्री स्वामी रामानन्द जी के शिष्य)

पदः- ठुमुकि ठुमुकि चलत चाल कृष्ण चन्द्र जसुदा लाल।
अद्भुत घुँघराले बाल, लटकत छबि देत गाल,
निरखत सुर मुनि निहाल।

भूषन औ बसन आल, केशरि को तिलक भाल, उर में भृगु पद बिशाल।
वंशी में सुभग शाल, कूकत फिर देत ताल, प्रगटत सब गोपी ग्वाल।
नाचत करि करि उछाल, दौरत हँसि हाल हाल, गोफा गले डाल डाल।
भाषै यह राम लाल, सतगुरु करि करौ ख्याल, जियतै हो मालामाल।६।

६७७ ।। श्री बैयाँ शाह जी ।।

पदः- बिहँसौ अबिनाशी की गोद में सतगुरु करि जग जीवन थोर।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो शोर।
सुर मुनि मिलैं लिपटि मुख चूमैं प्रेम में ह्वै सर बोर।
अनहद सुनौ चखौ नित अमृत बिधि गति भाल से तोर।
बैयाँ शाह कहैं यह मारग मिलै बनै जब चोर।
अन्त त्यागि तन निजपुर राजै टूटै जग से डोर।६।

६७८ ।। श्री बाबा मौजी राम जी ।।
(मुकाम सागर)

पदः- भक्तों खोलो आखैं हिय की।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जरनि जाय तब जिय की।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि सन्मुख छबि सिय-पिय की।
सुर मुनि आय स्वहारी दें नित कामधेनु के घिय की।
हरि सुमिरन बिन संगति झूठी मात पिता भ्राता सुत तिय की।
धन मकान जग मान बड़ाई जानो दुख के विय की।६।

६७९ ।। श्री रंक जी ।।
(मुकाम दानापुर)

पदः- सुनो लोग लुगाई घट साज सुनाई।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो तब सुनने में आई।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहँ सुधि जात भुलाई।
सुर मुनि मिलैं बिहँसि संग बैठें खाँय सदा हर्षाई।
अमृत पिऔ कहौ क्या मुख से सागर भरा दिखाई।५।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाई।
खुशबू उड़ै मगन हो तन मन रोम रोम पुलकाई।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाई।
हर दम रहे न अन्तर होवै मुक्ति भक्ति के साईं।
कहैं रंक तन त्यागि चलो घर छूटै गर्भ झुलाई।१०।

६८० ।। श्री महात्मा फर्रुख शाह जी ।।

(बांस मंडी, कानपुर)

(क्वार बदी १० इतवार, समय ३ बजे रात, संवत १९९६)

पदः- सहज सनेह राम सीता पद मुरशिद बिन नहिं कोई पावै।
बार बार बर मांगत काहे सूरति शब्द पै क्यों नहि लावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर दम हर शै से भन्नावै।
कौसर पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि मिलैं लिपटि उर लावै।४।
नागिन जगै चक्र षट घूमैं सातौं कमल खिलैं लहरावै।
खुशबू उड़ै मुअत्तर तन मन क्या बरनै मुख बोल न आवै।
छबि सिंगार छटा अति बांकी झांकी जुगुल सामने छावै।
कहैं फर्रुखशाह तन छूटै जाय वतन नहिं खलक पै आवै।८।

६८१ ।। श्री अच्छन मियां तेली जी ।।

(मुकाम हमीरपुर)

शेरः- उसे ताबे हसर न लगेगी हवा
जिसने मुरशिद के कदमौं पै शिर को धरा।
ध्यान धुनि नूर लय रूप सन्मुख किया
जान लो बस वही है जियत में तरा।
देव मुनि सब मिलैं साज अनहद सुनै
जाम कौसर पियै रोज घट में भरा।
कहता अच्छन रहे बे धड़क हर समय
जाय तन छोड़ि रव का है प्यारा खरा।४।

शेरः- रव की तरफ़ जिसे जरा भी चाह नही है।
अच्छन कहैं तब तो उसे परवाह नहीं है।।

(२)

बजती दोनो हाथ हथेली।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो इस मार्ग में पेली।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म शुभाशुभ बेली।
अनहद सुनै पियै घट अमृत सुर मुनि के संग खेली।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि शिव गिरिजा अलबेली।५।

हर दम सन्मुख दर्शन देवें माया बन गई चेली।
निर्भय औ निर्बैर रहै जग कौन सकै तब ठेली।
राम श्याम के सखा मनोहर सँग में लिये सहेली।
बिबिधि भांति के हार सुगंधित गले में देवै मेली।
तन मन मस्त बरनि किमि पावै आनन्द लेइ सकेली।१०।

जो जानै सोई सुख मानै है यह कठिन पहेली।
गूंगे को जैसे दे दीजै खावै गुड़ की भेली।
स्वाद बताय सकै नहिं नेकौ सूरति भई अकेली।
अन्त त्याग तन निजपुर बैठे कहता अच्छन तेली।१४।

६८२ ।। श्री फुरसत शाह जी ।।
(मुकाम रसूलाबाद)

पदः- खजाना नाम का भक्तों कमालो जिसका जी चाहे।
जानि मारग को सतगुरु से गिना लो जिसका जी चाहे।
गया धन चोरों से अपना छिना लो जिसका जी चाहे।
दीनता शान्ति का बीड़ा चबालो जिसका जी चाहे।
जियत ही गर्भ के रिन को चुकालो जिसका जी चाहे।५।

निज को निर्बैर औ निर्भय बना लो जिसका जी चाहे।
बिधाता के लिखे अक्षर कटा लो जिसका जी चाहे।
ध्यान धुनि नूर औ लय में समालो जिसका जी चाहे।
साज अनहद को सुन अमृत को पा लो जिसका जी चाहे।
देव मुनि संग कर बैठक बतला लो जिसका जी चाहे।१०।

गान औ कीर्तन सब से करा लो जिसका जी चाहे।
ताल दै दोनों हाथों पर कुदा लो जिसका जी चाहे।
प्रेम में मस्त लखि आँसू बहा लो जिसका जी चाहे।
नागिनी को जगा चक्कर चला लो जिसका जी चाहे।
कमल सातों उलटि सुन्दर खिला लो जिसका जी चाहे।१५।

छटा सिया राम की सन्मुख में छा लो जिसका जी चाहे।
काल औ मृत्यु को गह कर रुला लो जिसका जी चाहे।
लगा थप्पड़ उन्हें नीचे दबा लो जिसका जी चाहे।
तब तो दुनियां के जीवों को सम्हालो जिसका जी चाहे।
कहैं फुरसत बचन सांचे गुना लो जिसका जी चाहे।२०।

(२)

पताका कीर्ति का अपने घुमालो जिसका जी चाहे।
पाय धन धर्म में सारा लुटा लो जिसका जी चाहे।
दीन दुखियों को जल भोजन करा लो जिसका जी चाहे।
सर्दी औ गर्मी के कपड़े पिन्हालो जिसका जी चाहे।४।

कराहते लखि उन्हें दारू पिला लो जिसका जी चाहे।
मूत्र मल साफ़ कर उनका परा लो जिसका जी चाहे।
अन्त बैकुण्ठ अपने को बिठालो जिसका जी चाहे।
कहैं फुरसत बचन सुनि मन बसा लो जिसका जी चाहे।८।

६८३ ।। श्री मेहनत शाह जी ।।
(मुकाम शफ़ीपुर)

पदः- मेहनत कह सतगुरु करो, जानौ नाम अखण्ड।
सारे दुख की नाश हो, फूटि जाय भ्रम भण्ड।१।
मेहनत कह जियतै मरै, मुक्ति भक्ति तेहि हाथ।
सतगुरु बिन नहिं मिल सकै, कितनौ कूटै माथ।२।

पदः- मेहनत कहैं सतगुरु करौ बनि दीन सब दुख नाश हो।
तन का ठेकाना है नहीं बसुयाम की यह सांस हो।
सिय राम सन्मुख में रहैं धुनि ध्यान लय परकाश हो।
बस जान लो यह शरन है तन त्यागि निजपुर बास हो।४।

६८४ ।। श्री रुखसत शाह जी ।।
(मुकाम शहादत नगर)

पदः- त्रिभुवन में या को शोर राधा पति खरो चोर।
मन को चोर, थन को चोर, चित को चोर, हित को चोर।
निशि को चोर, दिन को चोर, अहि को चोर, बिष को चोर।

पाप चोर श्राप चोर नाप चोर चाप चोर।
पीर चोर चीर चोर छीर चोर भीर चोर।५।
दही चोर मही चोर माखन औ सिता चोर।
जल को चोर थल को चोर छल को चोर बल को चोर।
भोग चोर ढोंग चोर पावक औ अस्त्र चोर।
काम चोर क्रोध चोर लोभ चोर मोह चोर।
मद को चोर कद को चोर पद को चोर हद को चोर।१०।
हाट चोर वाट चोर घाट चोर खाट चोर।
घात चोर बात चोर लात चोर जात चोर।
रोटी चोर लंगोटी चोर सोंटी चोर चोटी चोर।
भूख चोर प्यास चोर नींद चोर अजा चोर।
सान चोर ध्यान चोर गान चोर भान चोर।१५।
तन को चोर पन को चोर बन को चोर गन को चोर।
क्षय को चोर भय को चोर शय को चोर लय को चोर।
चटक चोर मटक चोर खटक चोर लटक चोर।
हटक चोर भटक चोर पटक चोर सटक चोर।
चमक चोर गमक चोर छमक चोर धमक चोर।२०।
शरद चोर गरम चोर नरम चोर परम चोर।
अगम चोर अपार चोर अकथ चोर अलेष चोर।
अकह चोर अटूट चोर अतौल चोर अमोल चोर।
अचल चोर अलष चोर अमर चोर अथाह चोर।
अजर चोर मगन चोर ढगन चोर नगन चोर।२५।
झटक चोर घटक चोर गटक चोर अटक चोर।
सतगुरु की नयन कोर रुखसत कह शब्द डोर।
नाशै भव ताप घोर छूटै तब प्रेम लोर।
सन्मुख छबि श्याम गौर सुर मुनि लखि दौर दौर लिपटैं कर जोर जोर।२९।

६८५ ।। श्री रागी दास बाबा जी ।।

पदः- नाम धुनि जागी धीरे धीरे।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब आपै मन लागी धीरे धीरे।

ध्यान प्रकाश समाधी होवै चोर जांय सब भागि धीरे धीरे।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत तब चारज को मांगी धीरे धीरे।४।

सुर मुनि मिलैं देंय नित आशिष होहु न कबहूँ दागी धीरे धीरे।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख जावैं तागी।
नर तन पाय जियत सुख लूटौ बनि बैठे क्यों बागी।
अन्त त्याग तन निजपुर बैठो सत्य कहत पद रागी।८।

६८६ ।। श्री बाबा अनुरागी दास जी ।।

(चुनारगढ़)

पदः- गुरु के चरन जाकी लागी लगन है। लागी लगन सोई रहत मगन है।।
रहत मगन सोई जियत मरन है। जियत मरन सोई जियत तरन है।।
जियत तरन सोई जियत शरन है। जियत शरन छबि लखत दृगन है।।
लखत दृगन धुनि उठत रगन है। उठत रगन यह शिव का भजन है।।
शिव का भजन यह मुख्य जतन है। मुख्य जतन अनमोल रतन है।१०।

६८७ ।। श्री बाबा अपढ़ दास जी ।।

(मुकाम पीर नगर, जिला सीतापुर)

वार्तिकः- कुमनई, कुवृक्ष के नीचे रहने वाला, कुपशु को खाने व पालने वाला, कुनाज को खाने वाला। कुमनई पासी को कहते हैं कुवृक्ष बबूल को कहते हैं; कुपशु सुअर को कहते हैं; कुनाज मेडुआ (मकरा) को कहते हैं।

पदः- अवध धनुधारी बनो, शंकर धनुटारी बनो, सीता सुखकारी बनो,
सुर मुनि भय हारी बनो वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
बृज को बिहारी बनो, बिष को अहारी बनो, द्रुपदी की सारी बनो,
सखिन में प्यारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
बिसातिन लिलहारी बनो, नाउनि मनिहारी बनो, बैद्य बनवारी बनो,
वंशी गिरधारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
शूकर भयकारी बनो, नर हरि खम्भ फारी बनो, कच्छ मच्छ भारी बनो,
बावन ब्रह्मचारी बनो वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
गिरिजा त्रिपुरारी बनो, ब्रह्मा मुखचारी बनो, बिष्णु चक्रधारी बनो,
शेष महिबारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।५।

मदन मुरारी बनो, दुष्टन संघारी बनो, पिता महतारी बनो,
गगन पहारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
धर्म को प्रचारी बनो, कर्मन को ढारी बनो, छूरी कटारी बनो,
तोप तलवारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
सतगुरु हितकारी बनो, शब्द रंकारी बनो, ध्यान उजियाली बनो,
चौबिस औतारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
अनहद धुनि झारी बनो, अमृत पय धारी बनो, छटा छवि न्यारी बनो,
पाप क्षयकारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।
निशि हित शशि भारी बनो, दिन हित तमारी बनो, आपै कुलुफ़ तारी बनो
आपै सृष्टि सारी बनो, वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह।१०।

पदः- मन तुम बड़े भवन व्योपारी।
अस व्योपार करत निशि बासर जासे जीव दुखारी।
पाप ताप से निकसि सकै किमि जग के नर औ नारी।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानो बनि जाव ठीक पुजारी।४।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रोम रोम झनकारी।
अनहद सुनो पिओ घट अमृत सुर मुनि देंय स्वाहारी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम सकौ निहारी।
अन्त त्याग तन निजपुर राजौ दोनों दिशि बलिहारी।८।

६८८ ।। श्री गनी मियां जी ।।

पदः- करो सतगुरु लखो अलखै ध्यान धुनि नूर लय होवै।
सुनो अनहद चखौ अमृत बासनाओं की कै होवै।
मिलैं सुर मुनि देंय आशिष न मन में नेक भय होवै।
जगै नागिन चलैं चक्कर कमल सातौं भि तै होवैं।४।

हर समय श्याम श्यामा की सामने झांकी बै होवैं।
यह धन दीजै गरीबों को न चुकिहै और शै होवै।
करो भोजन सतौगुण का तो गिरने का न भय होवै।
गनी कह अन्त निजपुर लो आने जाने की छै होवै।८।

दोहाः- मन दुशमन काबू करो गनी कहैं दुख जाय।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनि रूप सामने छाय।१।

सतगुरु से जप भेद लो सब पदार्थ है पास।
गनी कहैं नहिं अंत चल ह्वै हौ सत्यनाश।२।

६८९ ।। श्री फेरी शाह जी ।।

(मुकाम पाटानाला, लखनऊ)

पदः- पढ़ना लिखना सुनना न फलै जब अमल नहीं उन बातौं पर।
जब तन छूटी तब जान पड़ी पिसि जैहो जमन के जातौं पर।
तब कौन सहायक हो वहं पर फूले हो झूठे नातौं पर।
मुरशिद करि के हरि नाम जपौ आवौ अब घर की घातौं पर।
भोजन हो हलका जल थोड़ा चरबी न चढ़ै तब आंतौं पर।५।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सुर मुनि लिपटैं हंसि गातौं पर।
कौसर चाखौ घट साज सुनो प्रिय हरि सन्मुख दिन रातौं पर।
नागिन जागै षट चक्र चलै क्या कमल महक लो सातौं पर।
दूरहि ते माया मृत्यु काल कर जोरि गिरैं चट लातौं पर।
फेरी कह जियतै भव तरिये यह अर्ज मेरी पितु मातों पर।१०।

पदः- बनो मंसूर औ ईसा करौ मुरशिद न हो देरी।
मिलैं सुर मुनि लिपटि कर के करैं खिदमत सभी तेरी।
जगै नागिन नचैं चक्कर कमल सातौं सकौ हेरी।
सुनो बाजा चखौ कौसर मृत्यु माया बने चेरी।
ध्यान धुनि नूर लै होवै रूप सन्मुख कहै फेरी।
अंत तन छोड़ि निज पुर लो कटै भव जाल की बेड़ी।६।

६९० ।। श्री नैमिसारन्य जी ।।

पदः- जे कोइ रहैं मम ढिग आय।
जाप बिधि सतगुरु से जानै भजै प्रेम लगाय।
ध्यान धुनि परकाश लै हो मिलैं सुर मुनि जाय।
चखै अमृत सुनै अनहद बजत बिमल बधाय।
नागिन जगि होय सीधी चक्र षट घुमरांय।
खिलैं सातों कमल सुंदर अजब महक उड़ाय।६।

राम सीता कृष्ण राधे बिष्णु कमला माय।
छटा छबि शिंगार सन्मुख हर समय दें छाय।

गोमती नित पय पियावैं अर्ध निशि में लाय।
दीनता औ शांति पद गहि त्यागि मान बड़ाय।
अंत तन तजि लेहिं निजपुर आवा गमन नशाय।
कहैं नैमिष मम बचन सुनि चेतो भक्तों भाय।१२।

६९१ ।। श्री मंजारी माई जी ।।

कीर्तनः- गुरुदेव हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
सिया राम हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
प्रिय श्याम हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
श्री बिष्णु हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
उमा शम्भु हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।५।

बक्र तुण्ड हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।।
स्वामि कार्तिक हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
श्री भैरव हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
बीर भद्र हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
बजरंग हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।१०।

श्री काली हमारी रक्षक हैं जो सारे दुख की भक्षक हैं।
श्री दुर्गा हमारी रक्षक हैं जो सारे दुख की भक्षक हैं।
सब औतार हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
श्री शेष हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
श्री चक्र हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।१५।

सब सुर मुनि हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
सब शक्ति हमारी रक्षक हैं जो सारे दुख की भक्षक हैं।
सब भक्त हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
बलिराम हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।
श्री गरुड़ हमारे रक्षक हैं जो सारे दुख के भक्षक हैं।२०।

६९२ ।। श्री हनुमान जी की बन्दना ।।

पदः- बन्दौं श्री पवन पूत राम दूत बांको।
बज्र अंग गदा संग नाम रंग छाको।

महाबीर समर धीर भव की पीर हांको।
भजिये तजि कपट ख्याल पल में कर दें निहाल,
भागै लखि मृत्यु काल बिधि की लेख आंको।४।

सन्मुख श्री सीता राम निरखौ तब अष्टयाम,
जारी धुनि बीज नाम ऐसो पितु माँ को।
सुर मुनि नित मिलैं आय बिहँसैं उर लें लगाय,
शिर पर कर दें फिराय बोलौ किमि ताको।
बाजा घट बजै खास सुनि सुनि मन हो हुलास,
अमृत से बुझै प्यास प्रेम भाव पाको।
सुनिये नर नारी बैन सुमिरन में रहौ पैन,
तन तजि निज धाम शयन छूटै जग चाको।८।

६९३ ।। श्री मंजारी माई जी ।।

पदः- गैल मेरी रोकत काहे श्याम।
मैं यमुना जल भरन जात हौं घर की अकेली बाम।
बोलैं तो चट देते गाली, पकड़ैं तो वंशी पट मारी
रोज क है यह काम।
हैं हैरान सबै बृज बाला, नन्द यशोमति या हित पाला
छोड़ जांय सब ग्राम।
सतगुरु करै निरखि सो पावै, सूरति शब्द पै अपनी लावै
सुफ़ल होय नर चाम।
सन्मुख श्याम सखा सखि राधा, जिन सुमिरे छूटत सब बाधा
अन्त अचल पुर धाम।६।

(२)

पदः- लचकि छमकि नाचि नाचि कूदत दै तारी।
गोपी ग्वाल संग राजैं छम छम पग घँघरू बाजैं ब्रज में सुख भारी।
सुभग बसन अंग डारे, कानन कुण्डल संवारे,
केशरि को तिलक भाल, मोर मुकुट धारी।
वंशी की अजब तान, निरखत सुर चढ़ि बिमान, बोलत बलिहारी।

राधे तहं बाम भाग, गावैं क्या ध्रुपद राग,
छूटत सुनि कलुष दाग, त्रिभुवन सुख कारी।
सतगुरु करि जपै नाम, निरखैं ते अष्ट याम,
तन तजि ले अचल धाम छूटै जग पारी।६।

(३)

पदः- छमा छम पगन में नूपुर बाजैं मनोहर रहस बिहारी के।
फेंटा में मुरली तहं राजत सब सुख कारी के।
कर से कर पकड़ैं झुक झूमत राधा प्यारी के।
संग में सखा सखी सब नाचत तन मन बारी के।
दौरत बैठि-लेटि उठि कूदत बारी बारी के।५।

नैन सैन से भाव ताल दै दोउ कर तारी के।
गति के संग में गान होत नहिं मौन पुकारी के।
भांति भांति के साज बजत तहँ पारी पारी के।
चम चम चमकैं रतन घेंघरा चोली सारी के।
इतर फुलेल की गमक काम रति गति दियो मारी के।१०।

जल चर थल चर नभ चर मोहें डारी डारी के।
शारद शेष बताय सकैं नहिं ब्रज सुख भारी के।
या से सतगुरु करि सुख लूटो करमन टारी के।
नागिन जगै चलै रंग बदलै आलस जारी के।
षट चक्कर औ कमल सातहूँ जाय सुधारी के।१५।

अनहद सुनो पिओ घट अमृत बहती क्यारी के।
सुर मुनि मिलैं देंय हंसि आशिष जय जय कारी के।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय सुधि बुधि ढारी के।
है अनमोल समय स्वांसा तन नर औ नारी के।
जियति लखै सो है दोनों दिशि पितु महतारी के।२०।

(४)

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो निरखौ राधा माधव नाचत।
सखा सखी संग में सब सोहत छम छम छम पग नूपुर बाजत।

चमकैं बसन तरंगैं आवैं फहर फहर फहरैं जब भाजत।
सुर मुनि नभ ते फूल गिरावैं कर जोरैं बिहँसै फिर गाजत।४।
मुरली की धुनि त्रिभुवन फैली काम रती बैठे छिपि लाजत।
गान बजान ताल स्वर सम दै को बरनै मुद मंगल छाजत।
शान्त दीन बनि के नर नारी सूरति शब्द पै धरि जे भांजत।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन ते निज धाम में जाय बिराजत।८।

(५)

पदः- जागने वाले क तप धन कौन पाया लूटि के।
सतगुरु किया सुमिरन खुला तन लगाया जूटि के।
नागिन जगी चक्कर चले फूले कमल दल छूटि के।
सुर मुनि मिले अनहद सुना अमृत पिया नित घूंटि के।
परकाश लय धुनि ध्यान जाना चोर सारे कूटि के।
सन्मुख में सीता राम निजपुर को गाय तन छूटि के।६।

(६)

पदः- शिर को झुका के चलना गुरु का न ख्याल छोड़ो।
परस्वार्थ खूब करना बनना पलाल छोड़ो।
निर्भय सदा बिचरना खाना भि माल छोड़ो।
कटु बैन सुनके सहना गिरने की डाल छोड़ो।
परतीति से न टरना दुविधा की झाल छोड़ो।५।
पर धन कभी न हरना पापों का ताल छोड़ो।
बन करके मोम रहना पत्थर कि नाल छोड़ो।
हठ से कभी न बहना दुख की मसाल छोड़ो।
चुप शान्त जग में रहना बातों कि फाल छोड़ो।
सूरति शबद पै रखना ज़ाया न काल छोड़ो।१०।
तप धन सम्हारि धरना सिद्धिन क टाल छोड़ो।
लय ध्यान नूर परना बिधि लेख भाल छोड़ो।
निज इष्ट सब में लखना घर की न चाल छोड़ो।
अनमोल खाल पहना सुख का न पाल छोड़ो।
तन तजि वतन को चलना रिन का न बाल छोड़ो।१५।

(७)

पदः- शरन सतगुरु की चल सुमिरन को सिखने में मज़ा क्या है।
साज अनहद को सुनि अमृत के चखने में मज़ा क्या है।
देव मुनि संग करि बैठक औ खेलने में मज़ा क्या है।
नागिनी को जगा सब दिशि बिचरने में मज़ा क्या है।
चक्र सब सोधि के कमलों के खिलने में मज़ा क्या है।
ध्यान परकाश धुनि औ लय के मिलने में मज़ा क्या है।६।

हर समय राधिका मोहन को लखने में मज़ा क्या है।
बिधाता के लिखे अक्षर के कटने में मज़ा क्या है।
दीनता शान्ति की गोदी में सटने में मज़ा क्या है।
सतोगुण का सदा भोजन ही करने में मज़ा क्या है।
दमन इंद्रिन को करि मन ठीक रखने में मज़ा क्या है।
अन्त तन छोड़ि निजपुर चलि ठहरने में मज़ा क्या है।१२।

(८)

छिमा नारी रहे संग में यही उत्तम भगत जानो।
नहीं तो है बड़ा चक्कर कड़ा फन्दा जगत जानो।१।
पुत्र सन्तोष को भी संग रखने की ज़रूरत है।
सदा माता मगन रहती निरखती उसकी सूरत है।२।

दोहाः- हरि सुमिरन बिन नारि नर, जानौ फूटा संख।
जैसे पक्षी किमि उड़ै, टूटि गये दोउ पंख।।

चौपाईः- सत्य पिता सरधा है माता। शील बहन श्री धर्म है भ्राता।
छिमा नारि सन्तोष है ताता। सतगुरु मुक्ति भक्ति के दाता।
तन के चोर शान्त सब भयऊ। जब से सुमिरन में मन दयऊ।
ध्यान प्रकाश धुनी लय पायो। सन्मुख राम सिया छबि छायो।४।
अनहद सुनो देव मुनि आवैं। मुख चूमैं हंसि हिये लगावैं।
नागिन जगी चक्र सब घूमत। सातौं कमल खिले सब झूमत।
पावो अमी गगन ते आता। ता को स्वाद बरणि नहीं जाता।
प्रेम भाव बिश्वास अटल है। जा से हिये के खुलत पटल है।८।

(९)

पदः- भक्तौं छिमा तुम्हारी नारी।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो मानौ बात हमारी।

हर दम रमन करौ ता के संग पावो तब सुख भारी।

हो सन्तोष पुत्र जब पैदा जियतै देवै तारी।

ता को गोद बिठाय खिलावो मुख चूमौ चुचकारी।५।

ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो जारी।

अमृत पिओ सुनो घट अनहद सुर मुनि मिलैं पुकारी।

नागिन चक्र कमल जगि जावैं महक उड़ै अति प्यारी।

सिया राम की झांकी सन्मुख अद्भुत सकौ निहारी।

तुरिया तीत दशा यह जानो पल भर टरत न टारी।१०।

सहज समाधि इसी को कहते साखी हैं त्रिपुरारी।

बेद पुरान कुरान न जानै रज तम सत से न्यारी।१२।

पदः- पाप पुण्य औ झूठ सांच से भक्त रहत है न्यारे जी।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाना तन मन प्रेम में बारे जी।

ध्यान धुनी परकाश दशा लय कर्म रेख को टारे जी।

अमृत पियै सुनै घट अनहद वंशी शंख सितारे जी।४।

सुर मुनि मिलैं लिपटि मुख चूमैं बिहंसि गोद बैठारे जी।

सन्मुख राम सिया की झांकी निरखै सदा सुखारे जी।

नागिन जगी चक्र सब चालू कमल खिले मतवारे जी।

अन्त त्यागि तन निज पुर राजें हरि के सदा दुलारे जी।८।

६९४ ।। श्री खाकी बाबा जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन सिखौ जियत जाव पाकी।

कर लेव गर्भ रिन अदा पड़ा जो बाकी।

नख पर गिरिवर प्रभु धरै लखौ क्या झांकी।

हर दम सन्मुख तब तुम्हरे जावै टांकी।

सुर मुनि सब जय जय करैं तेरे पितु मां की।५।

अनहद घट में क्या बजै मधुर धुनि वांकी।

अमृत का सागर भरा पिऔ नित छाकी।

बिधि लेख पै मारो मेख सकै को ताकी।
है मन्त्र परम लघु महा मन्त्र की चाकी।
जारी रं रं रं रहै सकत नहिं थाकी।१०।

परकाश ध्यान लय खोलि देय मति बाकी।
फिर कौन सकत करि बन्द गती है काकी।
शिव शक्ती जागि के आलस नींद को हांकी।
सब चलैं चक्र औ खिलैं कमल की फांकी।
यह बिनय करत हैं सब से बाबा खाकी।
सुनि गुनि औ चेति के उर में लीजै आंकी।१६।

६९५ ।। श्री अनारी शाह जी ।।

पदः- लखौ सन्मुख सदा झांकी बिहारी जी बिहारी जी।
करौ सतगुरु मिलै मारग करारी जी करारी जी।
अधर पर हैं धरे वंशी सुखारी जी सुखारी जी।
बजावैं जब चहै सुनिये धुनि प्यारी जी धुनि प्यारी जी।
पगों में राजते घुघुँरू बलिहारी जी बलिहारी जी।५।

हिला दें जिस समय उठती छुनकारी जी छुनकारी जी।
भनै को शेष औ शारद गे हारी जी गे हारी जी।
खुलै जब नाम रग रोवन रंकारी जी रंकारी जी।
ध्यान तब हो तिमिर नाशै उजियारी जी उजियारी जी।
चलौ लय में जहां सुधि बुधि बिसारी जी बिसारी जी।१०।

पिऔ अमृत सुनौ अनहद गुमकारी जी गुमकारी जी।
देव मुनि नित करैं सेवा तिहारी जी तिहारी जी।
बिहँसि कै तन चरन चापैं निहारी जी निहारी जी।
जगै नागिन चलैं चक्कर भनकारी जी भनकारी जी।
कमल फूलैं उड़ै खुशबू क्या प्यारी जी क्या प्यारी जी।१५।

जांय मिटि भाल से बिधि की लिखारी जी लिखारी जी।
दीनता शान्ति गहि बनिहैं भिकारी जी भिकारी जी।
वही इस पद को पावैं हो जयकारी जी जयकारी जी।

गर्भ में क्या कहा प्रभु से चिकारी जी चिकारी जी।
करूं एकतार चलि सुमिरन चुपमारी जी चुपमारी जी।२०।
यहां आकर चढ़ी जग की खुमारी जी खुमारी जी।।
इसी से हर समय रहता दुखारी जी दुखारी जी।
सतोगुण का करो भोजन सम्हारी जी सम्हारी जी।
दमन इन्द्री इसी से हों मन हारी जी मन हारी जी।
भगैं सब असुर दल निद्रा बिलारी जी बिलारी जी।२५।
बताया यह जतन हमको त्रिपुरारी जी त्रिपुरारी जी।
समाधी सहज में तन मय सुख भारी जी सुख भारी जी।
बिनय यह सुनि के उर धरिये नर नारी जी नर नारी जी।
कहूँ कर जोरि के सब से पुकारी जी पुकारी जी।
नाम मेरा कहैं सब जन अनारी जी अनारी जी।३०।

६९६ ।। श्री टेरी शाह जी ।।

पदः- भक्तों सिद्धी बज्र की बेरी।
सान मान अभिमान लेइ गहि देइ नरक में गेरी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छोड़ो हम तुम फेरी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि जियत लेव कर ढेरी।४।
प्रिया श्याम की झांकी सन्मुख तुम्हैं हर समय हेरी।
सुर मुनि आय आय दें आसिष नेक न लागै देरी।
अमृत पियो सुनो घट अनहद बिनय करैं यह टेरी।
अंत त्यागि तन चलो अचल पुर सब दिसि जै जै तेरी।८।

(२)

पदः- हर जगह साकेत उसको जिसने पाया नाम को।
सतगुरु किया मारग मिला कीन्हा सुफ़ल नर चाम को।
परकाश ध्यान समाधि सन्मुख रूप सीता राम को।
सुर मुनि मिले परिचय दिया कर प्रेम निज निज धाम को।
अनहद मधुर की धुनि सुना अमृत पिया बे दाम को।
टेरी कहैं सो भक्त हैं जो कर चुके इस काम को।६।

(३)

पदः- जै जै जै श्री गणेश मुक्ति भक्ति दाता।
पिता जिनके महादेव पारबती माता।
रिध्दि सिध्दि चंवर ढोरे षट मुख लघु भ्राता।
सोरह भुज बल अतौल समर में बिख्याता।४।

होती धुनि राम नाम रोम रोम अष्ट जाम।
सन्मुख श्री सिया राम कोमल मृद बाता।
देवन में पूज्य मान मोदक को करत पान।
बाहन श्री मूष जान अद्‌भुद है गाता।८।

६९७ ।। एक मुसलमान भक्त ।।

(अयोध्या पुरी)

पदः- मुरशिद करो चेतो भजो धुनि नाम पाने के लिये।
तैयार हर दम सामने प्रिय श्याम छाने के लिये।
परकाश ध्यान समाधि हो बिधि गत मिटाने के लिये।
अनहद सुनो सुर मुनि मिलैं उर में लगाने के लिये।
नागिन जगै चक्कर चलैं नीरज खिलाने के लिये।
जियते में करतल कीजिये निज धाम जाने के लिये।६।

६९८ ।। श्री बूढ़ी माई जी ।।

(सिरसागढ़)

पदः- जिसे है चाह भक्ती की नाम पर मन लगाता जा।
जानि मारग को सतगुरु से कदम आगे बढ़ाता जा।
देव मुनि आय दें दर्शन बिहंसि उर में भिड़ाता जा।
बजै अनहद सुघर घट में अमी पी मुसकिराता जा।४।
जगै नागिन चलैं चक्कर कमल सातों खिलाता जा।
ध्यान धुनि नूर लय होवै लिखा बिधि का मिटाता जा।
हर समय राम सीता की छटा सन्मुख में छाता जा।
अन्त निज धाम कह बूढ़ी सिंहासन चढ़ि के जाता जा।८।

शेरः- सुनाता जा बताता जा पढ़ाता जा भगत जन को।
समय आने पर कह बूढ़ी सुफ़ल कर देय तन मन को।।

गवाता जा लिखाता जा हिलाता जा भगत जन को।

समय आने पै कह बूढ़ी सुफ़ल कर देय तन मन को।।

दिखाता जा बुलाता जा धिराता जा भगत जन को।

समय आने पै कह बूढ़ी सुफ़ल कर देय तन मन को।।

सिखाता जा बिठाता जा कसाता जा भगत जन को।

समय आने पै कह बूढ़ी सुफ़ल कर देय तन मन को।४।

६९९ ।। श्री सरदार खां जी ।।

(बनारस,

श्री स्वामी रामानन्द जी के शिष्य)

पदः- सदा श्री स्वामी रामानन्द की जै जै जै मनाता जा।

कृपा जिनकी से निर्मल हो बिमल प्रभु चरित गाता जा।

जानि जप भेद को भाई कदम आगे बढ़ाता जा।

दीनता शांति से मिलकर कोष अपना बचाता जा।

त्यागि रज तम के भोजन को सतो गुण का ही खाता जा।५।

दया औ धर्म जीवन भर करा कर औ कराता जा।

बसन मतलब भरे को रख मिलै ज़्यादा लुटाता जा।

उनमुनी जोग मुद्रा से बैठि आसन जमाता जा।

महूरत ब्रह्म में उठ कर ख्याल अजपा पै लाता जा।

इसी से सिद्धि साधन हो साधकों को सुनाता जा।१०।

होय निर्छल जो अधिकारी उसे रस्ता बताता जा।

एकता होय तन मन की हर जगह सुख उड़ाता जा।

ध्यान धुनि नूर लय होवै लिखा बिधि का मिटाता जा।

देव मुनि आय दें दरशन सबों को सर नवाता जा।

बजै अनहद सुघर घट में अमी पी मुसकिराता जा।१५।

जगै नागिन चलैं चक्कर कमल सातौं खिलाता जा।

दमन इन्द्रिन को करि जियतै समय अपना बिताता जा।

कार्य्य शुभ कर सिताबी से नींद आलस हटाता जा।

हर समय राम सीता की छटा सन्मुख में छाता जा।

कहैं सरदार खां तन तजि सिंहासन चढ़ि के जाता जा।२०।

(२)

जानो राम नाम की ताकत।
सतगुरु करि सुमिरन में लागो काहे बारू फांकत।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि जो बिधि लेख को आँकत।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं कमल खिलैं अति महकत।
सारे दैत्य बिदा हों तन ते हाय हाय करि काँखत।५।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम सन्मुख झाँकत।
है परताप नाम का सब युग अमित पाप को हाँकत।
अंत समय जो श्रवण जाय परि तौ भव ताप को ढांकत।
सुर मुनि बेद भनैं निसि बासर वाको डंका डहंकत।
जे नहिं जानैं ते किमि मानैं नाना जोनिन बहंकत।१०।

(३)

पदः- कमाई अपनी खा कर के भजन जे भक्त करते हैं।
वही हरि के परम प्यारे बहुत जीवन उबरते हैं।
सदा निर्बैर औ निर्भय उन्हें यम काल डरते हैं।
कहैं सरदार खां उनकी देव मुनि जै जै करते हैं।४।

शेरः- पाक बेबाक होने से धुनि रंकार जारी हो।
कहैं सरदार खां भक्तों वहीं तुमको संभारी हो।१।
हर जगह से धुनी सुनना बड़ा आनन्द भारी हो।
कहैं सरदार को बरनै शारदा शेष हारी हो।२।

७०० ।। श्री बूढ़ी माता जी ।।
(मुकाम भदमक, रायबरेली)

पदः- छानो राम नाम की भंग।
सतगुरु करि घोटन बिधि जानो चढ़ि जावै तब रंग।
मन का सोंटा नाम कि कूंड़ी प्रेम प्रतीति उमंग।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी हो जीतो जियतै जंग।
सुर मुनि मिलैं बजै घट अनहद अमी पाय हो चंग।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं कमलन उड़ै तरंग।६।



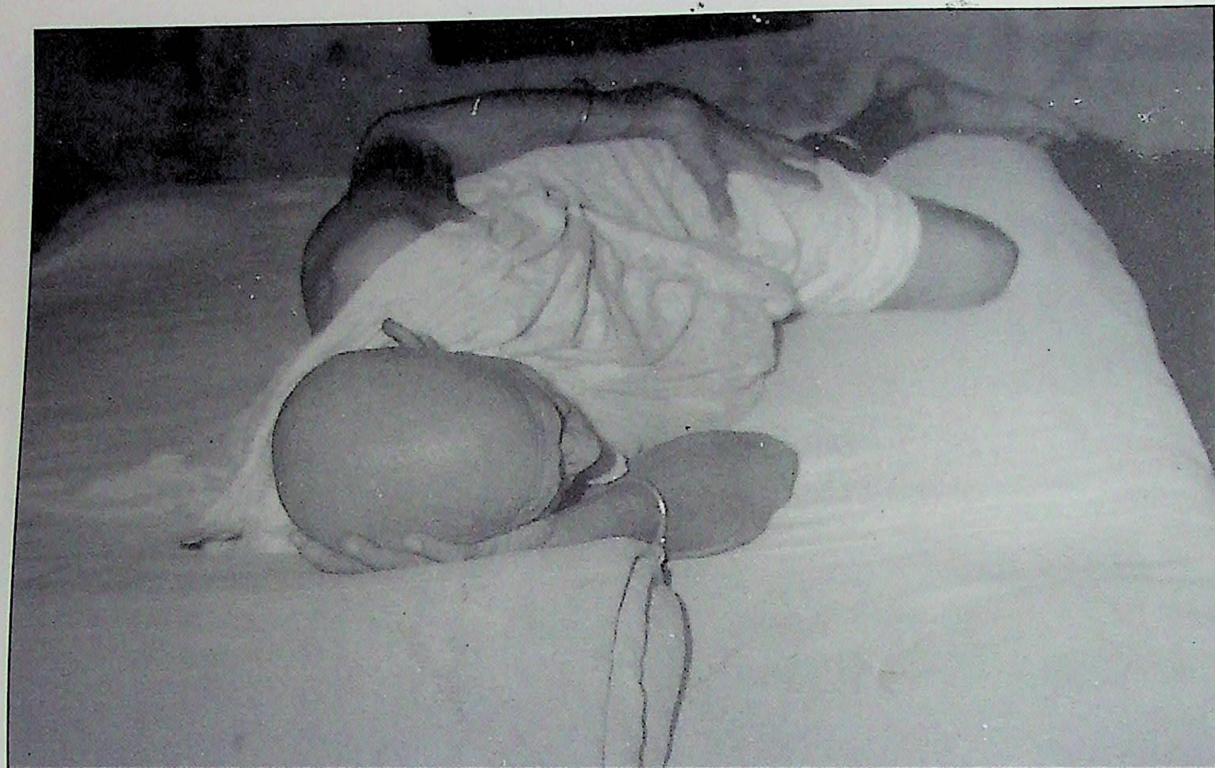
श्री गुरुदेव पूजा-समारोह में।



श्री गुरुदेव पूजा समारोह में।



श्री गुरुदेव आशीर्वाद देते हुये।



श्री गुरुदेव अपने निवास स्थान बजरंग भवन में विश्राम करते हुये। (श्री गुरुदेव लौकिक रूप से लेटते तो थे पर वे सोते नहीं थे। इस समय वे निरन्तर अनहद नाद सुनते हुये ध्यान में रहते थे।)

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख निखौं अंग।
या के पाये बिन न तरत कोई चोर न छोड़त संग।
मूक भये बाचाल इसी से गिरि चढ़ि गये अपंग।
अकथ अलेख अपार नाम जस शारद थके भुजंग।
या को नर नारी जे चाखैं बज्र समान हों अंग।
माया मृत्यु काल जम गण सब लखि लखि होंय हरंग।१२।

७०१ ।। श्री मतमंद शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाने सो इश्वर का बन्दा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम का पाय गयो तब रन्दा।
जियतै बिजय पत्र को पायो छूटा भव का फन्दा।
नागिन जगै चक्र षट बेधै कमल खिलैं जिमि चन्दा।४।

सन्मुख राम सिया रहें हर दम जो सब सुख के कन्दा।
सुर मुनि जै जै कार करैं मिलि कहैं भया निर्द्वन्दा।
अन्त त्यागि तन निजपुर राजै कहैं शाह मतमन्दा।
पढ़ि सुनि गुनि जे भजन न करते वै भक्तों में गन्दा।८।

७०२ ।। श्री गीदड़ शाह जी ।।

पदः- बलायें कृष्ण राधे की भगत लेते तो हैं लेते।
जान मारग को सतगुरु से करम रेते तो हैं रेते।
ध्यान धुनि नूर लय पायो जियति चेते तो हैं चेते।
मिलैं सुर मुनि सुनैं अनहद अमी पेते तो हैं पेते।४।

वही औरों कि नय्या को बिहंसि खेते तो हैं खेते।
मातु पितु हर समय सन्मुख दरश देते तो हैं देते।
देख उपदेश ऋषियों के बचन सेते तो हैं सेते।
अन्त तन त्यागि निजपुर को गये केते तो हैं केते।८।

७०३ ।। श्री बनबीर शाह जी ।।

पदः- सच्चे हैं वही भक्त जो संतोष किये हैं।
सूरति को अपनी शब्द पै एक तार दिये हैं।

सर्वस्व अपना गुरु पै कुर्बान किये हैं।
सन्मुख में राम सीता छटा छबि को किये हैं।
धुनि ध्यान नूर लय मिली हर्षात हिये हैं।
सुर मुनि के साथ खेलते अमृत को पिये हैं।६।

७०४ ।। श्री गुरचरन दास जी ।।

पदः- मन मेरो श्री गुरु चेरो।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शय से हो टेरो।
सुर मुनि मिलैं बिहंसि उर लावैं कहैं भ्रात मैं तेरो।
अनहद सुनै पियै नित अमृत जो है गगन में गेरो।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं सातों कमल उजेरो।५।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम सन्मुख हेरो।
मानुष का तन पाय कौन नहिं निज काया में फेरो।
ते तन त्यागि पड़ैं चौरासी महा घोर अंधेरो।
जम के दूत पकड़ि लै जावैं पीटैं देह दरेरो।
तब फिर कौन सहायक होवै जाय करै भट भेरो।१०।

७०५ ।। श्री फिरंगी शाह जी ।।

पदः- द्वैत की नारि नंगी है बड़ी दुश्मन तरंगी है।
कमाती क्या सरंगी है नचाती जैसे चंगी है।
बना लेती वे ढंगी है खाय जैसे नारंगी है।
बिना सतगुरु कुरंगी है सुनाता पद फिरंगी है।४।

७०६ ।। श्री कागा शाह जी ।।

पदः- सतगुरु शरण जो कोइ जागा जी तेहि अजा क बान न लागा जी।
धुनि ध्यान नूर लय पागा जी सो रूप सामने तागा जी।
तन त्यागि अचलपुर भागा जी जिन कियो समय नहिं नागा जी।
सब चोर पकड़ि कर टांगा जी ह्वै गयो बिमल बैरागा जी।
सुर मुनि दियो आसिक बागा जी गयो टूटि द्वैत क धागा जी।
यक बिनय करत हैं कागा जी जो नाम के रंग में रांगा जी।६।

७०७ ।। श्री फुरती शाह जी ।।

चेतावनीः- घो चे पू बिन पढ़ नहि मिलता
वैसे गुरु बिन ज्ञान न खिलता।

पदः- भजु जुड़ती फुरती सुरती। धुनि ध्यान नूर लय मुरती।।
तब काहे को माया घुरती। जब शब्द में लागै सुरती।।
जो नाम के रंग में चुरती। जम काल मृत्यु को हुरती।।
जब तन की होवै पुरती। जग छूटै जैसे कुरती।८।

७०८ ।। श्री जुरती शाह जी ।।

पदः- चंल शरन श्री सतगुरु की, तब राह मिलै निज घर की।
सुर मुनि नित देवैं भुरकी हंसि पकड़ैं तेरी चुरकी।
हर जानत सब के उर की काहे माया घुरकी।
तन छूटै जैसे लुरकी यह बात मानिये फुरकी।४।

७०९ ।। श्री सुरती शाह जी ।।

पदः- सुरति को शब्द पर धरि कै वतन अपने को जाना है।
यही मारग फ़कीरी का इसी मारग से आना है।
जानि जप भेद सतगुरु से नाम क ताना ताना है।
ध्यान परकाश लय होती जियति बिधि गति मिटाना है।४।

देव मुनि आय दें दर्शन कहैं हरि यश क गाना है।
सुनौ अनहद मधुर बाजा अमी पी मुसकिराना है।
हर समय राधिका मोहन छमा छम पग फिराना है।
अन्त तन त्यागि निज पुर में हमेशा सुख उड़ाना है।८।

७१० ।। श्री फ़कीर शाह जी ।।

पदः- फ़कीरों की फ़कीरी में विघिन करना बड़ा कर्रा।
सुनी कहते नहीं देखा गये वे नर्क के ढर्रा।
रास्ते में दूत उनको पकड़ि कर फेरैं जिमि भर्रा।
मार लोहे के डन्डों से तूरि पांजड़ औ दें नर्रा।४।

कहैं पाजी अधर्मी रे जरा मुझ से तो कुछ टर्रा।
बोल मुख से नहीं फूटै गले में लागिहै थर्रा।
करैं इजलास पर हाजिर करम का दें सुना खर्रा।
हुकुम हो बांधि के टांगो चलें बन्दूक के छर्रा।८।

(२)

जो रास्ता है फ़कीरों का उसी रस्ते पे चलना है।
करो मुरशिद पता पाओ नेकहु उस में छल ना है।
ध्यान धुनि नूर लय होवै लिखा बिधि का भि मलना है।
हर समय सामने झांकी झूलते श्याम पलना है।
अन्त तन त्यागि निजपुर लो फेरि जग में न ढलना है।५।
प्रेम तन मन से जब होवै तो भक्तों इस में बल ना है।
जो हुशियारी में हैं बाझा उसी को जाने तलना है।
बिना वरजिश के हो कैसे पेड़ है फूल फल ना है।
करम भूमी में आ करके किया जिसने यह हल ना है।
अंत तन छोड़ि दोजख हो मिलत जहं नेक कल ना है।१०।

७११ ।। श्री छलबल शाह जी ।।

पदः- राम के बायें लखन के दहिने महरानी की झांकी जी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब सन्मुख में टांकी जी।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट बाजा अमी पियो नित छाकी जी।
नागिन जगै चक्र षट नाचैं खिलैं कमल की फाँकी जी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि की जारी हो चाकी जी।५।
माया असुर मौन ह्वै भागैं घूमि सकैं नहिं ताकी जी।
गर्भ करार जियति में तै हो रहै न नेकौ बाकी जी।
तन मन प्रेम लगाय जाय जुटि सो बिधि की गति आंकी जी।
पढ़ि सुनि लिखि जो ज्ञान बघारैं सो चलि नर्क में पाकी जी।
चौरासी में चक्कर काटी जम खेलैं जिमि हाकी जी।१०।
मल औ मूत्र देयं जल भोजन हाय हाय करि डाकी जी।
दया धर्म दूतन के नाहीं कौन सुनै तब काकी जी।
मानुष चोला सुरन को दुर्लभ भक्ति नहीं पितु मां की जी।

दाग लगा हा अपने कुल में छल बल लखि लखि थाकी जी।
हाथ जोड़ हम भक्तों बिनवै मति जैसी हो जाकी जी।१५।

वैसै वाको नीक लागिहै संगति भाव को ढाँकी जी।
बड़े सुकृत से सत संगति पद ओट मिलै तब राकी जी।
यहाँ वहाँ ते बिजय पत्र भा टूटी टाटी वाकी जी।१८।

७१२ ।। श्री काहिल शाह जी ।।

पदः- साधन धाम शरीर बखाना। मोक्ष क द्वार गुरु से जाना।।
भाषत वेद श्रवण श्रुति काना। चारों नाम एक ही माना।।
ध्यान प्रकाश समाधि भुलाना। यह सब होत नाम की ताना।।
ररंकार यह शब्द महाना। सब में ब्यापक और बिलगाना।४।

डेवढ़ी पर अनहद सुन आना। अमृत पान करो मन माना।
सुर मुनि हरि यश करैं बखाना। सब के चरनन शीश झुकाना।।
नागिन चक्र कमल उलटाना। खुशबू भांति भांति की पाना।।
काहिल शाह कहैं सो दाना। जो निशकपट गुरु को माना।८।

दोहाः- चारों मारग सम लखा काहिल कहैं सुनाय।
वेदन का सबसे सुलभ जानो भक्तों भाय।।

(२)

पदः- काहिल कहैं काहिल वही सतगुरु के ढिग आया नहीं।
ध्यान धुनि परकाश लय में निज को बिसराया नहीं।
अमृत को पी अनहद को सुनि सुर मुनि को उर लाया नहीं।
नागिन जगा चक्कर घुमा सब कमल फहराया नहीं।४।

राम सीता की छटा छबि सामने छाया नहीं।
सूरति शब्द का रास्ता दीनों को बतलाया नहीं।
द्वैत का परदा हटा जीवों पर की दाया नहीं।
त्यागि तन नरकै गया नर तन क फल पाया नहीं।८।

शेरः- भाव के आवेश में जिस भक्त का तन मन भरा।
जान लो वह भक्त सीता राम का प्यारा खरा।।

७१३ ।। श्री कुरबान शाह जी ।।

पदः- कुरबान किया तन मन धन को सतगुरु के ऊपर भक्त वही।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि मिली सन्मुख सिया राम क रूप रही।
सुर मुनि सब आय करैं जै जै तन भेटैं नैनन नीर बही।
नागिन जागै षट चक्र चलैं सातौं कमलन की गंध लही।४।
बाजा सुनि सुनि के श्रवण छकैं अमृत पी रसना मौन गही।
तन छोड़ि गया हरि रूप भया संसार की जार में नाही ढही।
कुरबान शाह कह भजन करो सांचे बनि प्यारे फ़र्ज यही।
नाहीं तो नर्क में गर्क हो अब फर्क पड़ा यह कौन चही।८।

७१४ ।। श्री जगन भरभूजा जी ।।

पदः- करिये मन से नाम की पूजा।
सतगुरु करि सब भेद जानि लो और न कोई दूजा।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी हो हर शय में जो गूंजा।
जियतै जानि तरो और तारौ छूटै भव की सूजा।
उमा रमा ब्रह्माणी दें नित दिब्य तुम्हैं खरबूजा।
हर दम श्याम प्रिया रहैं सन्मुख कहैं जगन भरभूजा।६।
सूरति मन को कहत हैं शब्द को कहते नाम।
जगन कहैं या के बिना सरै न कोई काम।।
आलस सम कोई पाप नहि जगन कहैं जग माहिं।
या के बिन जीते कोई राम धाम नहिं जाहिं।।
ईश्वर मृत्यु का भय जिसे हर दम रहता जान।
जगन कहै सो आलसै मारै बान से तान।।
बिन भय नर्क से बचे को सुर मुनि की यह बान।
जगन कहै जुट जाव चट नेम टेम को ठान।।
आलस्य तन मन लूट कै मृत्यु को दीन गहाय।
जगन कहै नर्कै गये रोये नहीं सेराय।५।

७१५ ।। श्री कुद्दन शाह जी ।।

पदः- अभ्यन्तर से ररंकार धुनि जो होती दिन रात नहीं।
तब ही तक भव बन्धन भक्तों बकने की यह बात नहीं।

ध्यान प्रकाश समाधि अमी रस अनहद नाद सुनात नहीं।
सुर मुनि कैसे पूजैं हंसि हंसि सन्मुख जब पितु मातु नहीं।
नागिन चक्र कमल किमि चेतैं सतगुरु के ढिग जात नहीं।
कुद्दन शाह कहैं ते पावैं जे तनको अलसात नहीं।६।

दोहाः- सन्त सहैं खल के बचन साधक सब के जान।
जे या बिधि जग में रहैं ते हों भक्त महान।।

(२)

पदः- मादर फादर का सच्चा पिसर है वही
जिसने मुरशिद के कदमों में तन मन दिया।
ध्यान धुनि नूर लय में समाया
बिहंसि साज अनहद सुना जाम कौसर पिया।
देव मुनि सब मिलैं जाग शक्ती गई
चक्र चालू भये खुशबू कमलन दिया।
पाय मुक्ति औ भक्ती अमर औ अजर
हर समय सामने लखता रघुबर सिया।४।

सोरठाः- स्वांसा समै शरीर कुद्दन कहै अनमोल है।
आलस्य है बे पीर लूटत बांधे गोल है।।

दोहाः- आलस्य के जीते बिना को होवै भव पार। कुद्दन कह
सुर मुनि कह्यो सत्य बचन सुख सार।।

(३)

पदः- आलस्य करै करम सब नासा।
जो वा के बस में हैं जग में होय नरक में बासा।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो बृथा जाय मत स्वांसा।
बड़ी भाग्य से समय मिला यह तन है बारि बतासा।
तिल तिल का वहं चारज लेहैं छूटै न तोले मासा।
सुर मुनि बेद शास्त्र में भाष्यो राखो नाम की आसा।६।

७१६ ।। श्री हलबल शाह जी ।।

पदः- जानो राम नाम का तप बल।
सतगुरु करो मिले तब मारग छूटै भव का खल बल।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि जारै सारै जल बल।
अन्त त्यागि तन निजपुर राजौ कहैं सत्य यह हल बल।४।

७१७ ।। श्री निन्दक शाह जी ।।

पदः- खुलें न जिनके आंखैं कान। उनके ग्रन्थ पढ़े से हानि।।
पढ़ि सुनि लिखि छपवाय के धरना। करि परचार द्रब्य को हरना।।
अन्त त्यागि तन नर्क में पड़ना। कल्पन हाय हाय करि सड़ना।।
मान बड़ाई के मदमाते। लोगन गाय हंसाय लुभाते।।
ऊपर ते यह ढोंग बनाये। भीतर पाप का बंश बढ़ाये।१०।

कविता में परवीन कहाते। पर दारन के गर्भ बनाते।।
दै कर दाम उन्हैं गिरवाते। जो कोई कहै तो नहिं शरमाते।।
पाप छिपाने ते नहिं जाते। यहां वहां दोनो दिशि ताते।।
पढ़ि सुनि के समझैं जे प्रानी। उनकी कभी होय नहिं हानी।।
जे नहिं मानैं ते अज्ञानी। उनहीं के संगी हम जानी।२०।

भोजन पट कंगालन दीजै। निर्भय चलि बैकुण्ठ को लीजै।।
निन्दक शाह कहैं यह बाता। है अनादि सब जग बिख्याता।२४।

७१८ ।। श्री कसीदा शाह जी ।।

पदः- करो सतगुरु मिलै मारग उठैं आनन्द की लहरैं।
दीनता शांति जब आवै वहैं तब प्रेम की नहरैं।
ध्यान धुनि नूर लै होवै मिटै भव जाल की कहरैं।
सुनो बाजा चखौ अमृत देव मुनि संग में ठहरैं।४।

जगै नागिन चलैं चक्कर कमल सातौं खिलैं फहरैं।
हर समय श्याम श्यामा की छटा छबि सामने छहरैं।
समाधी सहज यह भक्तों शम्भु बिधि शेष हरि दहरैं।
कसीदा शाह कह तन तजि अचल निज धाम में ठहरैं।८।

शेरः- लखौ सब विश्व को निज में विश्व में निज को लखि पाओ।
कसीदा कह बिना सतगुरु के यह मारग नहीं पाओ।१।
बचन सुनि के जे नहि मानैं लगैं उनके लिए जहरैं।
एक पल कल नहीं मिलिहै दिनो दिन होत है गहरैं।२।

७१९ ।। श्री नालायक शाह जी ।।

दोहाः- नालायक कह नाम धुनि जब तक नहिं खुलि जाय।
तब तक आवा गमन का फन्दा मिटै न भाय।१।
सब सिद्धिन को दाब दे नाम की धुनि रंकार।
नालायक कह मम बचन मानि होओ भव पार।२।

(२)

चौपाईः- भजन को नाश करै यह सोंग। रज तम भोजन परत्रिय भोग।।
या से तन मन लागै रोग। भ्रष्ट होय जोगिन का जोग।।
अन्धे बहिरे जग के लोग। नहि जाने धूर्तन का सोंग।३।

दोहाः- मरी बासना सबै जब सिखा कटी तब जान।
यह सिद्धान्त अपेल है जानै पुरुष महान।१।
ध्यान प्रकाश समाधि धुनी भर्म का भांड़ा फूटि।
तीनि गुणन ते परे भा त्रिगुण जनेऊ टूटि।२।

७२० ।। श्री आलस्य शाह जी ।।

सोरठाः- आलस्य दुख की खानि आलस्य कह आलस्य तजो।
लेव बचन मम मानि सतगुरु करि हरि को भजो।१।
सतगुरु करो मारग मिलै खुलि जाय तब धुनि नाम की।
अद्भुत छटा श्रृंगार छबि हर दम लखौ सिय राम की।२।

(२)

जानो राम नाम का खटका।
सतगुरु से जप भेद जानि लो फूटै भर्म का फटका।।

(३)

पदः- कोटिन में कोई शिष्य सतगुरु नाम का धनवान है।
तन मन दिया मारग गहा जियतै बना पहलवान है।

ध्यान धुनि परकाश लै में पहुँचगा बलवान है।
सन्मुख में सीता राम हर दम देखता नहि सान है।४।

(४)

सतगुरु करि के अब मार्ग गहो संसार में कोई तेर नहीं।
श्रद्धा विश्वास अटल होवै सिय राम मिलन में देर नहीं।
सर्गुन निर्गुन बनि संग खेलैं भक्तों की भक्ति में फेरि नहीं।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सुधि बुधि की जा पर टेर नहीं।४।

सुर मुनि भेटैं घट साज सुनौ अमृत चाखौ कोई हेर नहीं।
शिव शक्ती जागै चक्र चलैं सब कमल खिलैं चट बेर नहीं।
बिधि हरि हर का जप ध्यान यही माया करती मुठ भेर नहीं।
तन त्यागि चलो साकेत डटो तब गर्भ में कोई गेर नहीं।८।

शेरः- सतगुरु को तन मन देवै कटने की कोइ शमशेर नहीं।
आंखैं व कान खुलैं वाके सत्य मानो नेकौ देर नहीं।।

(५)

पदः- निज भाव से सतगुरु कृपा होती है भक्तों मानिये।
ध्यान धुनि परकाश लय में जाय सुधि बुधि सानिये।
अनहद सुनो अमृत पिओ सुर मुनि मिलैं पहचानिये।
नागिन जगै चक्कर चलैं फूलैं कमल बिन पानिये।
छटा छबि श्रृंगार सीता राम सन्मुख तानिये।
अन्त निज पुर बास लो जो अमित सुख की खानिये।६।

(६)

पदः- करिये राम नाम का पेशा।
सतगुरु करि सब भेद जानिलो देखो अद्‌भुत देशा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होती रेशा रेशा।
सन्मुख राम सिया की झाँकी निरखत रहौ हमेशा।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ सुफ़ल होय नर भेशा।
जे चूकैं तिनको जम कूटैं कठिन चलावैं केशा।६।

७२१ ।। श्री ईमान शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि जियते जगे हुये ते भक्त हमारे सगे हुये।
जो ध्यान प्रकाश में लगे हुये ते जाय समाधि में पगे हुये।
सिया राम सामने तगे हुये तिरगुन से जानो भगे हुये।
जे चोरन के संग रंगे हुये ते नर्क में मानो टंगे हुये।४।

७२२ ।। श्री रंगीले शाह जी ।।

पदः- कह शाह रंगीले रंग वही हरि रंग चढ़े फिर भंग न हो।
सतगुरु करि मन को नाम पै दे सो भक्त जक्त में तंग न हो।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधि लहै जहं रूप रेख क अंग न हो।
सुर मुनि भेटैं घट साज सुनै अमृत पीवै कोई संघ न हो।४।

सन्मुख सिय राम लखै हर दम कोई सान मान का ढंग न हो।
तन छोड़ि के गर्भ न फेरि पड़ै जहं जल भोजन हर गंग न हो।
जिस रीति से सुर मुनि ध्याय रहे वह मार्ग गहौ बे ढंग न हो।
या से भक्तौ अब चेत करो ऊंचे चढ़ि फेरि अपंग न हो।८।

७२३ ।। श्री रसीले शाह जी ।।

पदः- मुरशिद करि खोलो घट पल्ला, तन हज में हज करो मुल्ला।
अस्सी पैगम्बर संघ अल्ला जहं शान्ति महान न कुछ हल्ला।
सत्तर काबा जहं बने हुये सब ध्यान में मेरे गने हुये।
है नूर क जहं पर चमत्कार राजैं फ़कीर तहं बेशुमार।४।

सब खुदा के रंग व रूप डटे हैं एक से एक बिचित्र छटे।
कह शाह रसीले चेति करो मुरशिद करि सूरति शब्द धरो।
है सब से ऊंचा यही भजन कह शाह रसीले मानो सुखुन।
सुर मुनि सब आय करैं गिल्ला सुमिरन बिन नर्क से हो तल्ला।८।

७२४ ।। श्री समाधी शाह जी ।।

पदः- भक्तों शून्य में सभी समाना।
रूप प्रकाश ध्यान धुनि सुर मुनि चौदह लोक बखाना।
वाही से सब निकसत पैठत जानत नहिं अज्ञाना।
सतगुरु करि जो मार्ग जानि ले ताकी हो कल्याना।४।

७२५ ।। श्री स्वांसा शाह जी ।।

पदः- भक्तों स्वांसा का सब खेल।
सार असार इसी के अन्दर जानत नहिं ते फेल।
सतगुरु करि जो भेद जानि ले होय ब्रह्म से मेल।
अन्त त्यागि तन गर्भ न आवै बैठे निज पुर पेल।४।

७२६ ।। श्री दुआ शाह जी ।।

पदः- पढ़ि सुनि लिखि करता हुआ हुआ, सो बातों का ही सुआ हुआ।
मुरशिद का जिस पै दुआ हुआ, सो जियत नाम गहि मुआ हुआ।
दुनियां के रंग में धुंआ हुआ, सो नर्क में जाय के चुआ हुआ।
तन कष्ट से उसका घुआ हुआ, चौतरफ़ा छाया धुंआ हुआ।
जम पटकैं जैसे रुआ हुआ, बेलन ते बेलें पुआ हुआ।५।
जो रीति सनातन छुआ हुआ, सो शान्ति दीन बनि भुआ हुआ।
जो चतुराई का कुँआ हुआ, सो सब चोरन की फुआ हुआ।७।

७२७ ।। श्री फिरकी शाह जी ।।

पदः- सतगुरु ने यह मार्ग बतायो तब पायों यह ज्ञाना।
नाम रूप परकाश दशा लय सब ध्यानै ते जाना।
जा को जामे भाव ठीक हो वाही ते कल्याना।
फिरकी शाह कहैं फिरि वाको गर्भ न होवै आना।४।

७२८ ।। श्री चटनी शाह जी ।।

पदः- चाटौ राम नाम की चटनी।
सतगुरु से सब भेद जान लो तब होवैगी छटनी।
मन का लोढ़ा नाम की सिलवट सारें पापन बटनी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो रटनी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सब सुर मुनि संघ अटनी।
फेरि न कबहूँ अन्तर होवै छूटै गर्भ की खटनी।६।

७२९ ।। श्री सलूक दास जी ।।

पदः- मेरे मन शान्ति ह्वै बैठो मुझे गुरु पास जाने दो।
बहुत दुख सह हुआ रोगी पता हरि का लगाने दो।

करै प्रभु दीन पै दाया ज़रा नाड़ी दिखाने दो।
नाम की जाय मिलि बूटी चढ़ै रंग मुझ को खाने दो।
धुनी एक तार जारी हो रगन रोवन सुनाने दो।५।

ध्यान परकास लै होवै लिखा बिधि का मिटाने दो।
देव मुनि आय दें दर्शन बिहंसि उर में भिड़ाने दो।
बजै अनहद मधुर घट में अमी पी मुसिकराने दो।
जगै नागिन चलैं चक्कर कमल सातौं खिलाने दो।
महक क्या स्वरन ते उड़ती मस्त ह्वै सर हिलाने दो।१०।

छटा सिय राम की हर दम मेरे सन्मुख में छाने दो।
रहै जब तक जगत में तन सदा हरि जस को गाने दो।
सतोगुन का जो है भोजन शांति चित हो के खाने दो।
ज़िन्दगी इस तरह मेरी दया करके बिताने दो।
दीनता से मुझे प्यारे सीस सब को झुकाने दो।१५।

अंत तन छोड़ि निज पुर को सिंहासन चढ़ि के जाने दो।
कार्य शुभ आ पड़े कोई द्वैत परदा न आने दो।
भिखारी भीख हित आवे उसे भिच्छा लुटाने दो।
भरै झोरी गरीबों की उन्हें कर गहि उठाने दो।
तरक्की हो मेरी तेरी रजिस्टर में लिखाने दो।२०।

७३० ।। अनन्त श्री स्वामी बाबा गोपाल दास जी ।।
(स्थान सीतापुर, नदी सराइन के समीप)

दोहाः- सीतापुर स्थान मम, नदी सराइन पास।
गोपाल दास कह मानिये, बात कही हम खास।।
नब्बे वर्ष की आयु में, बैठि क तजा शरीर।
गोपाल दास कह यान चढ़ि, पहुँच गयन हरि तीर।।
मंत्र षड़ाक्षर के जपे, षट बिकार हों नास।
गोपाल दास कह भक्त सो, जावे प्रभु के पास।३।

मंत्र राज या को कहैं, गुरु से लै उपदेश।
बैठि एकान्त में जप करै, पावै अपना देश।।

बिधि हरि हर शारद जपैं, शेष गणेश दिनेश।
पवन तनय सुर मुनि जपैं, सब मंत्रन में पेश।।
शान्ति दीन बन लागिये, सफ़ल होय नर चाम।
गोपाल दास कह छाड़ि तन, जाव राम के धाम।६।

(१)

पदः- राम नाम मुद मंगल दाता।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तब भक्तों फरियाता।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने छाता।
सब अवतार देव मुनि दर्शैं अनहद नाद सुनाता।
अमृत पिओ स्वाद क्या बरनौ रोम रोम पुलकाता।५।

नागिन चक्र कमल सब जागैं अद्भुत महक उड़ाता।
वेद शास्त्र उपनिषद संहिता सब पुरान बुलवाता।
राग रागिनी द्वापर त्रेता सतयुग को बैठाता।
लोक भुवन औ द्वीप खण्ड सब देश शहर लै आता।
कसबा पुरी ग्राम गिरि सागर नदी ताल उमड़ाता।१०।

सब से नाच गान करवावै देखत ही बन आता।
माया मृत्यु काल कर जोड़े बनिगे पूरे नाता।
बीज मंत्र औ मंत्र परम लघु महा मंत्र बिख्याता।
रेफ़ बिन्दु है नाम राशि का राम पिता सिय माता।
सब से सब में परे नाम है बिधि कर लेख मिटाता।१५।

चारों मोक्षन का दरवाज़ा आपै जाय खुलाता।
है अलेख औ अकथ अगम यह कोई पार न पाता।
प्रेम कि ताली से यह हाली दौड़ि तुम्हैं लिपटाता।
दीन बने बिनु मिलै न यह पद सत्य मानिये ताता।
कहैं गोपाल दास मत चूकौ है अमोल यह गाता।२०।

(२)

पदः- जानो राम नाम सतसंग।
सतगुरु से जप की बिधि लीजै, तब लागै यह रंग।

चौदह सहस चोर तन भीतर सारे होंय अपंग।
निर्भय औ निर्बैर जियत हो कौन करै फिर तंग।
हर दम रक्षक शिव त्रिशूल लिये बांये दिशि बजरंग।
ध्यान धुनी परकाश दशा लय जहं सुधि बुधि हो भंग।६।

सियाराम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख निरखौ अंग।
अन्त राय नेकौ नहिं होवै तन मन भरौ उमंग।
अमृत पिओ सुनौ घट अनहद सुर मुनि लेंय उछंग।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं कमलन उड़ै तरंग।
सब लोकन की फेरी करि कै जीति लेओ जग जंग।
कहैं गोपाल दास तन छूटै बैठो हरि के संग।१२।

(३)

हरि सुमिरन बिनु धोखा खैहौ।
सतगुरु करि जप भेद जानि कै तन मन प्रेम में तैहौ।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनि पैहौ।
सिया राम प्रिय श्याम हरि सन्मुख में छबि छैहौ।४।

हर हनुमान संग में हर दम सुर मुनि संग बतलैहौ।
अमृत पिऔ सुनौ घट अनहद मन्द मन्द मुसकैहौ।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं सातौं कमल खिलैहौ।
कहैं गोपाल दास तन तजि के हरि पुर बैठक पैहौ।८।

(४)

पदः- खीस भया तन नाम न जाना।
सतगुरु से जप भेद जानकर तन मन प्रेम में साना।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से भन्नाना।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद अमी करौ खुब पाना।४।

षट झांकी हर दम रहै सन्मुख मन्द मन्द मुस्क्याना।
नागिन जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाना।
इड़ा पिंगला सुखमन ह्वैगा सब तीरथ असनाना।
कहैं गोपाल दास तन तजि कै चलि बैठो निज थाना।८।

(५)

पदः- स्वांसा समय अनमोल तन सतगुरु से सुमिरन जानिये।
जुट जाओ भक्तों प्रेम से जियतै में सब सुख खानिये।
ध्यान धुनि परकाश लै षट रूप सन्मुख तानिये।
सुर मुनि मिलैं आशीष दें राखा तु निज कुल कानिये।४।

अमृत पिओ अनहद सुनो क्या बिमल गति चटकानिये।
नागिन जगै चक्कर चलैं सब कमल खिलि उलटानिये।
इन्द्रिन दमन कर लो जियत मानो मेरी यह बानिये।
गोपाल दास कहें अमर हो निज तन में घूम के छानिये।८।

७३१ ।। श्री कुरबान शाह जी ।।

पदः- राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं हैं महरानी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता गोस्वामी जी की बानी।
राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं त्रिभुवन माता।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दास कही बाता।
राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं त्रिभुवन रानी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दास की यह बानी।६।

राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं हैं जनक लली।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दास की बात भली।
राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं सीता प्यारी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता गोस्वामी कहें छबि न्यारी।
राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं सीता रानी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दास का मन मानी।१२।

राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं हैं बैदेही।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दास लखैं येही।
राम के बांये लखन के दहिने है श्री सिया जी की झांकी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दास रहै ताकी।
राम के बांये लखन के दहिने झाँकी श्री त्रिभुवन मां की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता गोस्वामी उर में टाँकी।१८।

राम के बांये लखन के दहिने बैठीं जनक दुलारी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी रहै निहारी जी।
राम के बांये लखन के दहिने सोहैं जनक कुमारी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी लखैं सुखारी जी।
राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक किशोरी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दोऊ कर जोरी जी।२४।

राम के बांये लखन के दहिने राजैं मुद मंगल माई।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी दास कह्यौ गाई।
राम के बांये लखन के दहिने राज रहीं त्रिभुवन जननी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी पल में सुख भरनी।
राम के बांये लखन के दहिने राजैं शक्तिन की शक्ती।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी छिन में देंय भक्ती।३०।

राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक नन्दिनी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी विश्व बन्दिनी जी।
राम के बांये लखन के दहिने अद्भुत जनक सुता राजैं।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी छबि लखि दुख भाजैं।
राम के बांये लखन के दहिने बैठीं जनक की छोरी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी भये चकोरी जी।३६।

राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक लाडिली जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी यही आढ़ ली जी।
राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक की छौरी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी गह्यौ पिछौरी जी।
राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक भवानी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी हिये समानी जी।४२।

राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक की धनियां जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी तज मन सनियां जी।
राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक की बेटी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी देखैं लेटी जी।

राम के बांये लखन के दहिने राजत जनक की कन्यां जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी लखैं अनन्यां जी।४८।

राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक की बिटिया जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी बिधि गति मिटिया जी।
राम के बांये लखन के दहिने राजैं जनक बिटेऊ जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी छबि लखि लेऊ जी।
राम के बांये लख़न के दहिने राजत जनक की लड़की जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी लखि भव तड़की जी।५४।

राम के बांये लखन के दहिने पुत्री लखौ सुनैना जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी के उर अयना की।
राम के बांये लखन के दहिने अद्‌भुत भूमि सुता बैठीं।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी सब उर हैं पैठीं।
राम के बांये लखन के दहिने कौशिल्या की बैठि बहू।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी नित प्रति लखत रहूँ।६०।

राम के बांये लखन के दहिने बैठिं पतोहू दशरथ की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी लखि सब समरथ की।
राम के बांये लखन के दहिने बैठीं लव कुश की मैया।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी लखि लखि सुख पैया।
राम के बांये लखन के दहिने बैठीं जनक केर मिश्री।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी लखि सुधि बुधि बिसरी।६६।

राम के बांये लखन के दहिने झाँकी श्री जनक धेय की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी उघरैं लखि हिये की।
राम के बांये लखन के दहिने भरथ शत्रुहन की भाभी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी सब के हित फाभी।
राम के बांये लखन के दहिने झाँकी श्री भूमिजा की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता तुलसी चरन चूमि छाकी।७२।

राम के बांये लखन के दहिने झाँकी श्री महिजा जी की।
ध्यान सकल कल्याण क दाता तुलसी लखु सहजा जी की।७४।

७३२ ।। श्री मुहब्बत शाह जी ।।

पदः- सुरति को शब्द पर धर कर के जे जन ख्याल करते हैं।
राम सीता रहैं सन्मुख सदा झाँकी वो लखते हैं।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर मगन तन मन ते हंसते हैं।
बजै अनहद मधुर तन में श्रवण सुनि धुनि को छकते हैं।
देव मुनि दर्श दें बैठैं बिहंसि हरि यश उचरते हैं।५।

बिना मुरशिद के इस पथ पर न कोई जीव परते हैं।
शान्ति सन्तोष सत्य व्रत दीनता उर जो धरते हैं।
क्षमा औ शील की मूरति बचन ते फूल झरते हैं।
जाप अजपा जपै हर दम जीभ कर कछु न हिलते हैं।
अजब हरि की है यह लीला पास ही हैं न मिलते हैं।१०।

ओट तिल के खड़ा पर्वत शिष्य बनि पार परते हैं।
चक्र षट होंय जब बेधन जगै नागिन संभरते हैं।
चन्द्र औ सूर्य्य सुखमन हों कमल तब सात खिलते हैं।
चित्रणी बज्रणी लखि के ब्रह्म नाड़ी में चलते हैं।
शुकुल रंग धूम सम भासै शब्द रं धुनि में मिलते हैं।१५।

नाम निर्गुण ये है हरि का देव मुनि इसको चखते हैं।
हर जगह व्याप्त है प्यारा रोम प्रति रोम रटते हैं।
नाम औ रूप की महिमा अकथ कहि शेष थकते हैं।
करै हासिल वो इस पद को जो हिम्मत को न हरते हैं।
बसर तन पाय करु सुमिरन मुहब्बत शाह कहते हैं।२०।

७३३ ।। श्री न्यामत शाह जी ।।

पदः- भजन हरि का नहीं करते दोष कलियुग को देते हैं।
दया निधि नाम है हरि का वो जल ही सम पिघलते हैं।
जगत की बातों के मुन्शी बका दिन रात करते हैं।
कथा औ कीर्तन लखि करके उनके दिल धड़कते हैं।
बुरी संगति क यह फल है चोर नित तन के ठगते हैं।५।

ढूंढ़ सतगुरु को जो भाई ठीक मारग पै परते हैं।
रमा औ बिष्णु की झांकी सदा सन्मुख में लखते हैं।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर एक रस मस्त रहते हैं।
वही पण्डित वही ज्ञानी वही योगी न मरते हैं।
बड़ा इन्साफ़ वँह ठाना खरा खोंटा परखते हैं।१०।

होय जो जीव जेहि लायक उसी दरजे पै करते हैं।
प्रेम तन मन से जे करते जियत भव सिन्धु तरते हैं।
सदा निर्वैर औ निर्भय परै बैठे बिचरते हैं।
देव मुनि संग बैठक हो लखै लीला जो करते हैं।
पाठ पूजा करैं कितने बहुत चुप ध्यान धरते हैं।
कीरतन कर रहै कोई निआमत शाह कहते हैं।१६।

७३४ ।। श्री लताफत हुसेन जी ।।

पदः- जे हर दम रब को नहिं जपते न इत्थे के न उत्थे के।
सदा परपञ्च में रहते न इत्थे के न उत्थे के।
पढ़ते सुनते औ हैं भुँकते न इत्थे के न उत्थे के।
नाम धुनि रूप नहिं लखते न इत्थे के न उत्थे के।४।

नूर औ लय में नहिं परते न इत्थे के न उत्थे के।
अन्त दोजख में जा गिरते न इत्थे के न उत्थे के।
जे मुरशिद से नहीं मिलते न इत्थे के न उत्थे के।
लताफ़त कह वही गिरते न इत्थे के न उत्थे के।८।

७३५ ।। श्री हशमत खाँ जी ।।

पदः- करि लेव याद अल्ला। तन है ये आबे बुल्ला।।
यम दूत पकड़ैं झुल्ला। घुंटिहै न आवे कुल्ला।।
पण्डित बनो चाहे मुल्ला। संघ में न जाय छल्ला।।
तब रोओ करि के हल्ला। यम तूरैं तन के पल्ला।८।

पेशी पै होग गिल्ला। कहता हूँ खुल्लम खुल्ला।।
बनते यहाँ बतुल्ला। फिरि क्या वहाँ कबुल्ला।।
सोते हो क्यों भदुल्ला। अब जागिये सहुल्ला।।
हशमत कहैं जो तुल्ला। सो पाय रव रसुल्ला।१६।

७३६ ।। श्री गुलाम हुसेन जी ।।

पदः- कहता गुलाम हुसेन बिधि शारद क हम करते भजन।
चारि मुख भुज चारि पितु के गौर तन लाले बसन।
माता के मुख एक है भुज आठ हैं गोरा बदन।
श्वेत बसन अमोल भूषण जड़े नग जिनमें रतन।
काम रति लखि लाजते नित आय के परते चरन।
बीणा लिये माता मनोहर पिता हरि यश उच्चरन।६।

पिता सृष्टी को रचैं माता सबन पालन करन।
देव मुनि सब दर्श दें तन मन ते रहता मैं मगन।
निष्काम भक्ती जे करैं जग में न वे फिर पग धरन।
धुनि ध्यान लय परकाश पावैं नाम हो रोवन रगन।
बिना सतगुरु होय नहिं सब युगन की है यह चलन।
अन्त में हरि पुर जुटै सरकार के रंग हो बदन।१२।

दोहाः- कहैं गुलाम हुसेन जो, भजन करैं बसु जाम।
सब में प्रेम हो एक रस, सो जावै हरि धाम।।

सोरठाः- आवागमन नशाय जो या बिधि सुमिरन करै।
गुलाम हुसेन कह गाय, ना मानै जन्मै मरै।।

७३७ ।। श्री फकीरे शाह जी ।।

दोहाः- हम तुम कोई रहै नहि, रहै राम का नाम।
या से हरि सुमिरन करो झगड़े से क्या काम।१।
सतगुरु से बिधि जानि कै सुमिरौ आठौ याम।
जिह्वा चलै न कर हिलै, ना कछु लागै दाम।२।
सन्मुख सीता राम हों, सुन्दर शोभा धाम।
कहैं फकीरे शाह तब, हरि पुर हो बिश्राम।३।

७३८ ।। श्री छदामी शाह जी ।।

दोहाः- कामी क्रोधी लालची, कैसे पावैं राम।
देखन में मानुष बने हैं, पशु अधम निकाम।१।

बिना सतगुरु पावो नहीं, यारों ठीक मुकाम।
कहैं छदामी शाह क्यों, चुप ह्वै बने गुलाम।२।

७३९ ।। श्री शमशेर खां जी ।।

पदः- ज्ञान की तोप पर भाई सुरति बत्ती को धरि दीजै।
डारि सन्तोष का गोला मोह का गढ़ उड़ा दीजै।
रिआया होय तब बश में बैठि निर्भय मजा कीजै।
ध्यान धुनि नूर लय पासै दुई परदा हटा लीजै।
लखौ शिव शिवा की झाँकी यहाँ औ वहाँ सुख कीजै।
करौ सतगुरु पता पावो ये आयू दिन पै दिन छीजै।६।

नहीं यारों यह तन गुदरी जाय गरुआय जब भीजै।
बजै अनहद सुघर घट में देव मुनि निरखि सब लीजै।
मान अपमान को प्यारे योग अग्नी में हत कीजै।
दीनता प्रेम जिसमें हो उसे यह पथ बता दीजै।
कथा औ कीरतन सब दिन ध्यान दे कर सुना कीजै।
कहैं शमशेर खां भाई अन्त साकेत चलि दीजै।१२।

दोहाः- निष्काम भक्ति या को कहत, सब में समता मान।
कहैं सत्य शमशेर खाँ, हरि पुर चलु चढ़ि यान।।

७४० ।। श्री हुल्ला शाह जी ।।

पदः- कहता है शाह हुल्ला, खा लो यहां रसगुल्ला।
जपते नहीं बिसमिल्ला, रोवोगे जैसे पिल्ला।
झूठे जगत में भुल्ला। यम मारिहैं बसुल्ला।
मल मूत्र पीव कुल्ला। भरि भरि पिओ सहुल्ला।६।

७४१ ।। श्री रोशन शाह जी ।।

पदः- नाम धन नहिं मिला जिनको बृथा में करते हैं ठैं ठैं।
चलैं पापोश शिर ऊपर उठै आवाज़ तब ठैं ठैं।
आय यमदूत दें घुड़की फेरि निज अबलकैं ऐठैं।
तूरि दन्दां सकल देवैं सूक्ष्म तन धरि के मुख पैठैं।

बोलि तब नहिं सकौ यारौं होय मल मूत्र तन ऐठैं।
कहैं रोशन करैं सुमिरन ते हरि ढिग जाय कर बैठैं।६।

७४२ ।। श्री मोती माल खां जी ।।

पदः- मन मानि जाव मम बतियां तब होय भला।
नहिं कोई यहां तब सथिया भजु राम लला।
यह आवै न आवै संसिया सब जात चला।
मोती माल कहैं दिन रतिया भजु छोड़ि कला।४।

७४३ ।। श्री जलालुद्दीन जी ।।

पदः- हरि सुमिरन नहि करो नर्क चलि अति दुख पावोगे।
परे पिटाई हर दम यारों खुब चिल्लाओगे।
फर फर फर फर बकत वहां कैसे समझाओगे।
लेखा नाम क जब माँगेंगे क्या दिखलाओगे।
कल्पों रक्त पीव के हौजन में उतराओगे।
यहां पै पाप कर्म हौ करते सुख किमि पाओगे।६।
सतगुरु से लै राम नाम जब नेह लगाओगे।
तब सब काम ठीक बनि जावै हरि ढिग जाओगे।
सूरति शब्द क मारग प्यारे जब तुम पाओगे।
राम सिया की झांकी हर दम लखि सुख पाओगे।
धुनी ध्यान लय नूर पायकै जग बरताओगे।
कहैं जलालुद्दीन रूप हरि का बनि जाओगे।१२।

७४४ ।। श्री ईदू साईं जी ।।

पदः- नाम सिय राम क जपना। नहीं तो जगत फिरि टपना।।
बृथा बकवाद में खपना। तो होगा नर्क में थपना।।
जगत दिन चारि का सपना। यहां नहि कोई है अपना।।
अरे मन मूढ़ भजु कसना। किया इकरार जो रसना।।
भूलि सब जायगा हंसना। होय दरबार जब चलना।१०।
धरा खाता वहां देखना। जौन कीन्हे लिखा लिखना।।
नाम धन से भरो बसना। झूँठ पढ़ते हो क्या पढ़ना।।

बार ही बार जग फँसना। न बूढ़ी हो कभी तृष्णा।।
चहौ गर नर्क से बचना। ढूँढ़ि सतगुरु के परु चरना।।
बता दें जप उसे जपना। और की बात मति मनना।२०।

शब्द पर सूर्ति को धरना। खुलैगी नाम धुनि सुनना।।
ध्यान लय नूर का खिलना। राम सीता कि छबि लखना।।
दीनता पद सदा गहना। प्रेम में मस्त हो रहना।।
बुरी अच्छी सबी सहना। किसी से कुछ नहीं चहना।।
काटि अभिमान के पखना। देंय सतगुरु कि गहु शरना।।
कहैं ईदू मानु बचना। अन्त हरिपुर क हो चलना।३२।

दोहाः- जियतै में सब तय करै, सोई हरि ढिग जाय।
नाहीं तो जन्मै मरै ईदू कहैं सुनाय।।

७४५ ।। श्री नेवाजी शाह जी ।

पदः- हरि नाम रूप हर जा देखो उघार नैना।
सतगुरु करो जब प्यारे तब होगि तुम को चैना।
पढ़ि सुनि बने हो मैना। जंगाय गा है अयना।
बातों से कछु सरै ना। झूठे ये सब हैं सैना।
कहते वहां बनै ना। तन पर चलैंगे पैना।
पाखण्ड के ये धैना। हो नर्क बास लेना।१०।

जग आया सो रहै ना। यहँ चारि दिन क रहेना।
सूरति शब्द क गहेना। धुनि ध्यान नूर चहेना।
लय में तो सुधि रहै ना। आवै उतरि क्या कहेना।
तन मन से हो जब चहेना। तब राम सीता लहेना।
कटु मृदुल शब्द सहेना। औ दीनता से रहेना।
कहता नेवाजी कहेना। तब हो कभी न बहेना।२२।

सोरठाः- निर्भय औ निर्बैर, कहैं नेवाजी भक्त हों।
तिनकी समझौ खैर, जियतै में वै मुक्त हों।१।
रामानन्द क शिष्य हूँ, कहैं नेवाजी मान।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, तत्वं ज्ञान भा जान।२।

७४६ ।। श्री रसूला जी ।।

पदः- सुमिरौ सब बीज रकार रकार भाई बहिनो,

सुमिरौ भाई बहिनो।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो जियतै हो भव पार

भव पार भाई बहिनो।

रग रोवन ते नाम कि धुनि हो राति दिवस एक तार

एकतार भाई बहिनो।

ध्यान समाधि नूर को पावो सूरति शब्द सम्हार

सम्हार भाई बहिनो।४।

बहु प्रकार के अनहद सुनिये तन मन हो मतवार

मतवार भाई बहिनो।

सुर मुनि सब के दरशन होवैं बोलैं जै जै कार

जय जय कार भाई बहिनो।

कुण्डलिनी षट चक्र लखौ औ सातौं कमल बहार

बहार भाई बहिनो।

कहैं रसूला हर दम सन्मुख सिया सहित सरकार

सरकार भाई बहिनो।८।

दोहाः- सतगुरु रामानन्द की चेली मैं हूँ जान।

कहै रसूला सत्य यह मानो बचन प्रमान।।

७४७ ।। श्री नसीबा जी ।।

पदः- भाई बहिनो तुम्है कुछ फिकिर ही नहीं।

बिना हरि के भजे कहीं गुजर ही नहीं।

यम पीटै अहर्निश दरद ही नहीं।

किमि मानै हैं वह तो बशर ही नहीं।

बिना सतगुरु के पाओ डगर ही नहीं।

बिधि जानोगे तब तो कसर ही नहीं।६।

जपैं सुर मुनि जिन्हैं कुछ उजुर ही नही।

कह्यौ काहे गरभ में खबर ही नहीं।

यहां पर तुम्हारा यह घर ही नहीं।

चित चेतो वहां की खबर ही नहीं।

बिना सुमिरन के कोई सुधर ही नहीं।

कहैं सांची नसीबा सरबर ही नहीं।१२।

दोहाः- स्वामी रामानन्द जी मोहिं लीन अपनाय।

भर्म क भांड़ा फूटिगा राधा कृष्ण दिखाय।१।

नाम रूप परकाश लय धुनि पायों एकतार।

अनहद बाजा घट बजै को करि सकै शुमार।२।

सबै देव मुनि दर्श दें नाना चरित सुनाय।

कुण्डलिनी षट चक्र औ सातौं कमल देखाय।३।

बीज रकार कि जाप यह अगम अथाह अपार।

कहैं नसीबा जाइये गुरु चरनन बलिहार।४।

७४८ ।। श्री मुरव्वत शाह जी ।।

पदः- मन मोहिं काहै नाच नचावै।

नाना विधि की लिहे बासना तिन संग मोहिं भरमावै।

काम क्रोध मद मोह लोभ औ माया द्वैत लगावै।

अगणित जन्म मरत जन्मत भे तुझको कछु न बिसावै।

मम दिवान ह्वै कर फिरि अहमक नमक हराम कहावै।५।

कौन खता हम कीन्ह बता तू जो मोहिं नित पिटवावै।

बारम्बार देत मोहिं धोका क्या तुझको सुख आवै।

अधम निकाम बे शरम उल्लू तो को जगत बतावै।

अपनी मति स्थिर कर ले नहि अब तू बाँधा जावै।

बहुत सिधाई को फल पायेन अब सुनु सहा न जावै।१०।

जिस पतरी में भोजन करता उसी में छेद बनावै।

दुष्ट जनन के काम यही हैं नीक न उन्है सोहावै।

जौन बृक्ष की छाया में बैठें वाको काटि गिरावै।

शूद्र मूंज ढोलक तिय पनहीं पशु कूटे बनि जावै।

ये गँवार बिन दण्ड न सुधरैं सुर मुनि बेद बतावैं।१५।

अब सतगुरु की शरनि चलत हम तो को सज़ा देवावैं।
तब तू ठीक होयगा सारे जब उलटा टँगवावैं।
राजी नामा को करवाय के तुझ से कर जोर वावैं।
तब तू भागि कहाँ को जैहै सूरति डोरि बँधावै।
देखि के रूप सुहावन हरि का प्रेम में तू पगि जावै।२०।

फिरि तो तू गुरु भाई बनि मम करै प्यार यश गावै।
ध्यान समाधि नूर धुनि पाकर हर दम अति हरषावै।
सब देवन से होय बतकही बरनत नहीं सेरावै।
कुण्डलनी षट चक्र कमल सातौं लखि कै मुसक्यावै।
अद्भुत चरित नित्य प्रति होवैं देखत ही बनि आवै।२५।

ज्ञान गुमान सान सब भागै मुख से बोलि न जावै।
जिमि गूँगे को मीठा दीजै क्या वह स्वाद बतावै।
द्वैत भाव तब सब छुटि जैहै सब में वही देखावै।
सतगुरु बिना बनै नहिं कारज बिधि शिव शेषहु गावैं।
सुर मुनि सब हरि भजन कर रहे ध्यान समाधि लगावैं।३०।

कहैं मुरव्वत शाह जौन कोई मानि बचन मम जावै।
ते सीधे साकेत पुरी चलि हरि ढिग बैठक पावै।३२।

दोहाः- कहैं मुरव्वत शाह मोहिं, स्वामी रामानन्द।
किरपा करि उपदेश दै, दीन्ह्यों परमानन्द।।

७४९ ।। श्री शुभराती जी ।।

पदः- मुझे सतगुरु दया करि मिला दे सियावर।
सब असुरन को तन से भगा दे सिया बर।
करम शुभ औ अशुभ को जला दे सियाबर।
धुनी जारी रग रोवन करा दे सियाबर।४।

सब सुर मुनि क कीर्तन दिखादे सियाबर।
जाम कौसर क प्यारे पिला दे सियाबर।
छटा अपनी मम सन्मुख में छा दे सियाबर।
शुभराती को निजपुर पठा दे सियाबर।८।

७५० ।। श्री बकरीदी जी ।।

पदः- घनश्याम राधे जी जरा हम पर दया करो।
कुञ्जन में कर गले में छोड़ घूमते ते ज्यों।
वैसे मुझे कभी कभी दर्शन दिया करो।
करते थे रास जैसे सखा सखिन को लिये।
वैसे कभी इस दीन को दिखला दिया करो।५।
जैसे कि बाँसुरी बजा सब को लुभाते थे।
वैसे ही मुझ को भी कभी सुना दिया करो।
माखन दही व दूध लूटत थे बृज गलिन।
उस खेल को मुझे कभी दिखला दिया करो।
ग्वालों के साथ बन बन में गौवें चराते थे।१०।
वह दौड़ कूद मुझ को भी बतला दिया करो।
काँधे पै काली कामरि माखन औ रोटी लै।
कर दाहिने में लकुटि लै गोहरा लिया करो।
बकरीदि कहता भगवन तव खेल हैं अनन्त।
में आपके सहारे हूँ मेरा भला करो।१५।

७५१ ।। श्री गौहर खां जी ।।

पदः- मेरे तन मन की ताप मिटा दे मोहन।
ज़रा सीने से सीना लगा दे मोहन।
हंसि नैनों की सैन चला दे मोहन।
फिरि मुरली अधर धर बजादे मोहन।
धुनि नूपुर की छम छम सुना दे मोहन्।५।
सखा सखियों संग रास दिखा दे मोहन।
ध्यान लय और परकाश मिला दे मोहन।
धुनी हर दम रग रोंवन करा दे मोहन।
कमल चक्कर कुण्डलिनी लखा दे मोहन।
सब सुर मुनि से मेल करा दे मोहन।१०।
सब दुनियां कि बातैं भुला दे मोहन।
उन सब को पकड़ के सुला दे मोहन।

प्रेम प्याले को छक कर पिला दे मोहन।
मतवाला दया कर बना दे मोहन।
युगुल झांकी मम सन्मुख में छा दे मोहन।
कहैं गौहर मोहिं निजपुर पठा दे मोहन।१६।

७५२ ।। श्री बृन्दा दीन जी ।।

पदः- अगम अथाह अपार अकथ सिय राम तुम्हारी सब लीला।
तुम चाहो जिसे मिलि जाव उसे पर एक लगा देते हीला।
तुम चाहो जिसे कलपाओ उसे पर एक बहाना क्या ढीला।
उत्पति पालन परलय औ लय कर दो पल में गुण निधि शीला।

तुम सब में हौ सब से न्यारे क्या गौर पीत तन है नीला।
सब सुर मुनि आप को ध्याय रहे बसु याम प्रेम तन मन गीला।
सब के हौ प्राण के प्राण बने छबि निरखि के सब ने भै ढीला।
बृन्दा दीन कहैं बैकुण्ठ मुझे दै दीन कृपानिधि सुख मीला।८।

७५३ ।। श्री ललन प्रिया जी ।।

चौपाईः- भजु राम सिया के चरन कमल। सब सुर मुनि ध्यावत करत अमल।।
कोई नहिं जिनसे और सबल। कहैं ललन प्रिया जपि होहु बिमल।२।

दोहाः- दीन बास बैकुण्ठ मोहिं, ललन प्रिया कहैं राम।
देखत ही बनि परत है सुन्दर शोभा धाम।।

७५४ ।। श्री मुन्शी नवल किशोर जी ।।

शेरः- करै काम ज़ाहिर में दुनियां के यार।
मगर ख्याल बातिन से परवर दिगार।१।
रहै पाक बेबाक सब से मिला।
वही जाय कर भिश्त में फिरि खिला।२।
जैसे कि दाल में नमक को छोड़ देते हैं।
वैसे जे रोजगार में पैसे को लेते हैं।३।
होती बड़ी बरक्कत कहता नवल किशोर।
खुश हाल रहते हैं सदा भाता न उनको शोर।४।

७५५ ।। श्री शफालू जी ।।

पदः- शफ़ालू साफ़ कहते हैं बिना सुमिरन न सुख होई।
जो गाफ़िल हो के बैठेगा वह कल्पों नर्क में रोई।
करै तन मन लगा सुमिरन प्रेम करि हरि लखै सोई।
सुरति को शब्द पर धरि कै ख्याल में मस्त मन नोई।
ध्यान धुनि लय औ उजियारी उसे मानो अवश्य होई।
कर्म शुभ अशुभ जरि जावैं द्वैत तन से भगै रोई।६।

मिलौ सतगुरु से आरति हो देंय सब भर्म को खोई।
नाम साबुन तुम्हैं देंगे रगड़िये मैल सब धोई।
साफ़ आईना होय लक लक छटा सन्मुख में तब होई।
देव मुनि संग बतलैहैं कहै वह सुक्ख किमि कोई।
मिलै आनन्द यह उनको प्रथम जिन बीज को बोई।
जियत में जान कर प्यारे अन्त साकेत सुख सोई।१२।

७५६ ।। श्री संकटा दीन जी ।।

पदः- संकटा कह हटै संकट जो हरि चरनन में चित लागै।
सुरति को शब्द पर धरि कै करै जब ख्याल तब जागै।
ध्यान धुनि नूर लय पावै एक रस हो के तब पागै।
छटा सिय राम की सन्मुख द्वैत का टूटै तब धागै।४।

रहै इच्छा न कछु बाकी कहै फिरि और क्या मांगै।
देव मुनि आय दें दर्शन लगै तन में न फिरि दागै।
कमल सातौं औ षट चक्कर जगै नागिन हो अनुरागै।
वही फिरि अन्त हरि पुर को सिंहासन चढ़ि के चट भागै।८।

७५७ ।। श्री हजारी दास जी ।।

पदः- छिपि छिपि के करते पाप यार वँह चलिहौ तब सब सुनवावैं।
जो मन में उठत बिचार यहां वँह चित्रगुप्त से लिखवावैं।
वँह खाता तुम्हरे सन्मुख में इजलास के ऊपर धरवावैं।
तब काह बताओगे वँह पर यमदूतन ते खुब पिटवावैं।

फिर नर्क में जाय तुम्हैं सुनिये हर दम दुख भारी दिलवावैं।
जो रोये नहीं सेराय सकैं खग श्वान सिंह धरि धरि खावैं।६।

या से सतगुरु करि हरि सुमिरौ सिय राम सामने छबि छावैं।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो हम सांच तुम्हैं यह समझावैं।
सुर मुनि आय के दें दर्शन हरि यश सुनिये कैसा गावैं।
जियतै जे जन तय कर लेवैं ते गर्भ बास फिरि नहिं पावैं।
यह सुरति शब्द का मारग है सच दास हजारी बतलावैं।
तन मन से प्रेम लगै भाई सो या को सहजै में पावैं।१२।

७५८ ।। श्री गिरिवर दास जी ।।

दोहाः- कमल नाल में छिद्र हैं, चालिस कहूँ सुनाय।
बिन सतगुरु यहि भेद को, कौन सकै बतलाय।१।
बीच में छिद्र है बड़ा जो, ता से उठत रकार।
फिरि सब में परवेश करि, रग रोंवन झनकार।२।
सब में ब्यापक है वही, जानै सो भव पार।
गिरिवर दास कहैं यही, सत्य बचन सुखसार।३।

७५९ ।। श्री गुलज़ारी दास जी ।

पदः- सतगुरु बिन भव न तरै कोई यह सुर मुनि का पक्का मत है।
धुनि नाम की ध्यान प्रकाश व लय क्या रूप छटा सब का सत है।
निर्भय निर्बैर हो मतवाला शुभ अशुभ कर्म जियतै हत है।
कहता गुलज़ारी सुरति शब्द को जानि लेव सांचा खत है।४।

७६० ।। श्री मुनव्वर शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करि जप की बिधि जानो राम सिया दरशैं।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै धुनि सुनि जिय हर्षै।
सुर मुनि होंय प्रसन्न प्रेम करि शिर पर कर परसैं।
योग अग्नि में कर्म शुभाशुभ सब तुमरे झरसैं।
अनहद बाजा घट में सुनिये अमृत घन बरसैं।
कहैं मुनव्वर शाह भजन बिन नर्क परैं तरसैं।६।

शेरः- श्री रामानन्द जी ने किरपा करी। हुआ मैं तो यारों जहां से बरी।।
मुनव्वर कहैं साफ़ शीशा हुआ। दी मुझको सतगुरु ने ऐसी दुआ।२।

७६१ ।। श्री इनायत शाह जी ।।

पदः- उठती रग रोवन से राम नाम धुनि कैसी आला जी।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि टाला जी।
सन्मुख जनक दुलारी राजैं संग में दशरथ लाला जी।
सब सुर मुनि जिनका गुन गावैं बड़े कृपाला जी।
अनहद दरवाजे पर बाजै कैसी सुन्दर ताला जी।५।

इड़ा पिंगला सुखमन करिकै होहु निहाला जी।
तिरगुन के जब परे होय तब होय निराला जी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो तज जग जाला जी।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ भजु तजि गाला जी।
नाहीं तो यम आय धाय कर दें मुख भाला जी।१०।

पकड़ि तुम्हैं लै चलैं डाटते कहि कहि साला जी।
जाय करैं दरबार में हाजिर पूछैं हाला जी।
जरा बोलि नहिं पैहौ यारों खींचै छाला जी।
जाय के तुमको छोड़ैं गहिरे नर्क के नाला जी।
रक्त पीव मल मूत्र कृमिन ता में बहु पाला जी।१५।

काटै तन में रहा न जावै हो बेहाला जी।
नीचे से ऊपर को आओ सब तन चाला जी।
अजपा जाप जपो निशि वासर हो मतवाला जी।
सूरति शब्द क मारग पकड़ो करिके ख्याला जी।
ना कर चलै न जिह्वा डोलै मन का माला जी।२०।

मन स्थिर हो सुख तब पावो लो जय माला जी।
कर्म कि रेख पै मेख मारिये लिखा जो भाला जी।
जियतै में तै होय यहां तब मिटै बवाला जी।
कहैं इनायत शाह अन्त चलिये सुख शाला जी।२४।

दोहाः- रामानन्द क शिष्य हूँ, कहैं इनायत शाह।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, रही न नेकौ चाह।।

७६२ ।। श्री चैन शाह जी ।।

पदः- सिय राम राधेश्याम लक्ष्मी नारायण जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
शारद बिधि औ उमा शम्भु जी सरस्वति गणपति की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
अरुन्धती वशिष्ठ अनुसुइया अत्रि मुनी जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।६।

अदिती कश्यप सतरूपा मनु कौशिल्या दशरथ जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
श्री सुनयना जनक अहिल्या श्री गौतम जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
माण्डवी भरत उर्मिला लखन श्रुतिकीर्त शत्रुहन की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।१२।

श्री रेवती श्री बलराम श्री सुभद्रा अर्जुन की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
श्री देवकी श्री बसुदेव श्री यशोदा नन्द जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
कुन्ती पाण्डु शची औ सुरपति दमयन्ती नल की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।१८।

देवहुती कर्दम जी सुनीति उत्तानपाद जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
तारा बलि मन्दोदरी रावन पृथ्वी पृथु जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
मुर्बी श्रुतिनिधान श्री शची श्री जगन्नाथ जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।२४।

हुलसी जी आत्मा राम वंका औ रंका की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
पद्मावती श्री जयदेवजी सीता पीपा की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
बिष्णु प्रिया गौराङ्ग ईछरा सालवान जी की जय हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।३०।

देवै दस्य राज औ सोनवा श्री आल्हा जी की जै हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
ब्रह्मा बच्छ राज गज मोतिन श्री मलखे जी की जै हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
फुलवा ऊंदल बेला ब्रह्मा मल्हना श्री परिमाल की जै हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।३६।

गन्धारी धृतराष्ट्र औ बिजमा श्री लाखन जी की जै हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
सत्यवती जगदीश संयोगिनि पृथ्वी राज जी की जै हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।
सब शक्ती सुर मुनि तीर्थ जीव सब सरिता बन गिरि की जै हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।४२।

सब बापी कूप तड़ाग तलैया पोखर सगरन की जै हो।
जिनकी कृपा कटाक्ष से हम भव तरि जावैं नहिं कछु भय हो।४४।

शेरः- चैन शाह की बिनय सुनो सब कृपा करौ दर्शन दै दो।
जियतै मुक्ति भक्ति मैं पावों तब मम कारज सब तै हो।।

७६३ ।। श्री चीलर शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करो हर जां लखो प्रिय श्याम की झाँकी सुघर।
बाँह प्रिय लाये गले तिरछे खड़े मुरली अधर।
परकाश ध्यान समाधि हो धुनि नाम की सुनिये मधुर।
सुर मुनि मिलैं नित कहैं चीलर शाह चलिये अन्त घर।४।

७६४ ।। श्री सल्हर शाह जी ।।

पदः- सतगुरु करो झाँकी लखौ सिय राम की बसुयाम जी।
अनहद बजै घट में सुनो मन को सुरति संग थाम जी।
धुनि ध्यान लय परकाश पाकर करो फिरि बिश्राम जी।
कहते हैं सल्हर शाह तब नहि रहै जग से काम जी।४।

७६५ ।। श्री गनीमत शाह जी ।।

पदः- मिले सांचा जिसे सतगुरु उसे फिर और क्या चहना।
ध्यान परकाश लय पायो उसे फिर और क्या चहना।
नाम धुनि सुन रहा हर दम उसे फिर और क्या चहना।
देव मुनि नित्य दें दर्शन उसे फिर और क्या चहना।४।

राम सीता रहैं सन्मुख उसे फिर और क्या चहना।
जियत में सब हुआ हासिल उसे फिर और क्या चहना।
अन्त साकेत जा बैठा उसे फिर और क्या चहना।
गनीमत कह रंगा हर दम उसे फिर और क्या चहना।८।

७६६ ।। श्री फक्कड़ शाह जी ।

पदः- सुनो सब जन कहैं फक्कड़ बने बैठे हो क्यों लक्कड़।
करो सतगुरु मिटै चक्कर नाम की जानिये टक्कर।
लखौ छबि रूप की छक्कर अनूपम कन्द औ शक्कर।
ध्यान धुनि नूर लय तक्कर चलो साकेत तन तज कर।४।

देव मुनि संग यहँ हंसकर जियत में लेव सब तै कर।
सुरति को शब्द पर धर कर प्रेम सँग तन व मन बश कर।
ये तन होगा धुआँ धक्कड़ करो सुमिरन तजो अक्कर।
यहां करते हैं जे मक्कर वहां से जांय कहँ भगकर।८।

७६७ ।। श्री मिट्ठू मियां जी ।।

पदः- नाम से जौन वाकिफ़ हैं वही मुरशिद मुनासिब हैं।
ध्यान धुनि नूर लय पायो नाम से जौन मन लायो।
रूप सन्मुख छटा छायो मस्त तन मन से सुख पायो।

वही पण्डित व मुल्ला है वही योगी रसुल्ला है।
वही ब्राह्मण औ काजी है वही हाफ़िज समाजी है।५।
वही कारी कुतुब पीरा वही द्विज औलिया धीरा।
वही हिन्दू मुसलमां है वही सुमिरन व कलमा है।
वही जंगम फकीरा जी वही काया कबीरा जी।
वही भोला व भाला जी वही सब से निराला जी।
वही बेरंग रंगमा जी वही नहीं अंग अँगमा जी।१०।
वही मसजिद व मन्दिर हैं वही रव रामचन्दर हैं।
वही ज्ञानी व ध्यानी है वही दानी व मानी है।
वही परमहंस दरवेशा वही साधू गदा भेषा।
वही कहते व सुनते हैं वही करि ख्याल गुनते हैं।
वही काबा व काशी हैं वही घट घट के वासी हैं।१५।
वही रघुनाथ अल्ला हैं वही मोहन बिसमिल्ला हैं।
वही बिष्णू रमा जी हैं वही आदम नबी जी हैं।
वही मुरशिद व चेला हैं वही कौसर क पेला हैं।
वही उत्पति औ पालन हैं वही लय औ संघारन हैं।
वही मादर पिदर भी हैं वही जोरू औ शौहर हैं।२०।
वही मामू औ खाला है वही फ़रज़न्द साला है।
वही हमशीरा दुहिता हैं वही दुख सुख से रहिता हैं।
वही जपते जपाते हैं वही भव पार पाते हैं।
वही आते व जाते हैं वही चुप बैठ जाते हैं।
आप ही आप बन बैठें आप ही आप से ऐठें।२५।
आप ही आप को मारैं आप ही आप चुपकारैं।
आप को आप राजी कर मिलि रहै आप को हंस कर।
आप ही आप संग भिड़ते आप ही आप को डरते।
आप को आप जन्मावैं आप को आप दुलरावैं।
आप सब में समाये जी आप सब को बनाये जी।३०।
जान सतगुरु से जो लेवै खोजि निज तन में लखि लेवै।
कहैं मिठ्ठू मियां भाई बिना कसरत न कोइ पाई।३२।

७६८ ।। श्री मकसूमा जी ।।

पदः- करत श्री बृन्दाबन रहस गोपाल।

सखा सखी संग में सब राजत राधे कर गले डाल।

सुर मुनि को मुरली से टेरत सब चलि आवत हाल।

कितने पक्षिन को तन धरि धरि बैठे बृक्षन डाल।

कितने भँवर बने गुंजारत अस परसैं प्रिय लाल।५।

कितने मृग बनि चितवत ठाढ़े मुख से टपके राल।

शारद बीना संग बजावै ब्रह्मा दुँदुभि ताल।

लक्ष्मी जी मिरदंग लिहे कर नारायण करताल।

गणपति जी का बजै पखावज सरस्वति बीणा आल।

डमरू महादेव का बाजै निकसत बेदन ताल।१०।

किट किन किट किन बजत किनावर गिरिजा मातु दयाल।

इस्तराज षट मुख कर सोहत सातों स्वर पर ख्याल।

पवन तनय तम्बूरा लीन्हे भैरव लिहे कपाल।

बीर भद्र तहँ तबला लीन्हे उठती धुम किट ताल।

नारद जी एकतारा लीन्हे गावत चरित बिशाल।१५।

सारंगी लिहे बाल्मीक मुनि धनपति किंगरी आल।

विश्वामित्र सितार लिहे कर मौहर इन्द्र भुवाल।

जल तरंग तहां शची बजावैं धुनि सुनि सबै निहाल।

काली जी डफ़ कर में लीन्हे दुर्गा दारा आल।

ज्वाला जी तहँ झाँझ बजावैं मुख से निकरै ज्वाल।२०।

डंड ताल बलदेव बजावैं धुनि सम एकै ताल।

बिजय घंट तँह चमन बजावैं पाराशर घड़ियाल।

घंटा बामदेव कर लीन्हे गौतम शंख बिशाल।

करदम जी तँह बिगुल बजावैं तुड़ही भृगु जी आल।

लोमश जी कर जोरे निरखैं अत्रि मुनी बेहाल।२५।

लिहे चिकारा ब्यास बजावैं नाग फनी छेत्रपाल।

ब्रह्म कुण्डली कुम्भज के कर वंस गर्ग कर आल।

बजै रवाना दुर्वाशा का बिखुरे केश बिशाल।
श्री शुकदेव नवोयोगेश्वर संग सनकादिक बाल।
नरसिंहा कर नाय लिहे कर सूर्य चन्द्र मतवाल।३०।

श्री वशिष्ठ औ काग अंगिरा गरुड़ देत कर ताल।
चामुण्डा कत्यानी देवी गावैं बांधि पराल।
तीनि औ चारि ताल की धुनि क्या है प्यारी मतवाल।
सखा सखी लकड़िन पर लकड़ी दै कर देते ताल।
परी अप्सरा यक्ष औ किन्नर बहु गंधर्व बिशाल।३५।

नाना भांति के साज देव मुनि रहे बजाय निहाल।
नूपुर सब दोनों पग बांधे होती छम छम चाल।
गौर वरन बावन मन भावन शूकर श्वेत बिशाल।
परस राम जी संग में राजैं नर हरि रूप कराल।
कच्छप रूप श्वेत अति चिक्कन नख पग मुख अति लाल।४०।

मच्छ रूप औ चक्र सुदर्शन प्रेम में हरि के आल।
बीच बीच में जय जय धुनि हो कोमल बचन रशाल।
अगिनि देव तहँ चंवर डुलावें साधे पवन मसाल।
श्री जल देव हिलावत पंखा छिड़कत मेंह गुलाल।
आसमान तँह फ़रश बिछायो पहरा दें जम काल।४५।

कंकालिन औ डाइन चुड़यल वीर बजावत गाल।
भूत पिशाच प्रेत औ जोगिन फंसिगे प्रेम के जाल।
पृथ्वी जी तँह कन्द मूल फल फूल मिठाई टाल।
सरिता बन गिरि सागर तन धरि जल झारी लिहे आल।
समय दिशा ठाढ़े तन धारे साधे कर रुमाल।५०।
दिन तिथि मास मुहूर्त रास ग्रह ताम्बूलन लिहे थाल।
पीक दान लिहे मृत्यु औ माया धारे रूप बिशाल।
देश शहर पुर धाम ग्राम सब बने खड़े कुतवाल।
खंड भुवन औ द्वीप लोक सब स्वागत करते आल।
शेष छकैं छवि दुई सहस्त्र दृग मुख सहसौ पट डाल।५५।

दुइ सहस्त्र जिह्वा आनन में सटि गईं सांस न बाल।
देब बधू बहु आरति साजे प्रतिमा सम नहिं हाल।
जड़ समाधि लय ध्यान छूटिगो योगी भे मतवाल।
शब्द बांसुरी का तन साल्यो अन्तर ध्यान कि चाल।
आय के अद्‌भुत लीला निरखैं भूले जोग के ख्याल।६०।

देव गनन के बाहन सब तँह लखि छवि भूले चाल।
कृमि पतंग जल चर सब मोहैं बनि बैठे जिमि नाल।
काम क्रोध मद लोभ मोह संग बने खड़े चुप बाल।
दम्भ पाखण्ड चाह औ चिन्ता कपट औ झूठ मलाल।
प्रेम में गद गद निरखैं एक टक सब के तन मन ढाल।६५।

छबि श्रृंगार छटा शुभ सुख तँह लखि लखि करत उछाल।
शान्ति शील सन्तोष दीनता श्रद्धा भई निहाल।
सत्य धर्म दाया गुण जप तप ध्यान ज्ञान बेहाल।
जोग बिराग विवेक अनुरागौ मुक्ति भक्ति मन साल।
राग रागिनी ताल ग्राम स्वर तान के संग सम आल।७०।

बेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुराण मतवाल।
राम भरत औ लखन शत्रुहन जनक सुता किरपाल।
सब बैठे तँह लीला निरखैं आप में आप निहाल।
दिब्य कोट तँह गोल चमक अति लागे हीरा लाल।
फाटक चारि चहूँ दिशि लागे अहि मनि गज मनि आल।७५।

कृष्ण तहाँ यह कौतुक कीन्हा प्रगटे अगनित माल।
राधे जी तहँ अमित रूप धरि सब के गलेन में डाल।
अन्तर ध्यान भये सब देखा कहँ लगि कहूँ हवाल।
सुमिरन करै लखै सो प्राणी तजि के सकल बवाल।
दिब्य खेल निशि बासर होते नाना भाँति बिशाल।८०।

देखैं हरि के भक्त नित्य प्रति तन मन प्रेम में आल।
शब्द पै सूरति जौन लगावै सो कछु जाने हाल।
बिन सतगुरु के मिलै न मारग कितनो कीजै ख्याल।
मकसूमा कहैं हरि को सुमिरो तब कटिहैं भव जाल।८४।

दोहाः- स्वामी रामानन्द जी दीन्ह्यों भेद बताय।
धुनी उठत है नाम की रोम रोम ते भाय।१।
नयनन सन्मुख रहत नित षट झाँकी सुखदाय।
राम सिया मोहन प्रिया रमा बिष्णु छवि छाय।२।
ध्यान समाधि प्रकाश हो सुर मुनि खेलैं संग।
सतगुरु से जो जानि ले तब लागै यह रंग।३।

सोरठाः- मकसूमा कहैं गाय, जियतै मे तै कीजिये।
सुनिये बहिनों भाय, तन तजि हरि पुर लीजिये।।

७६९ ।। श्री महफ़िल शाह जी ।।

पदः- संसार में घुसना बड़ा सहल पर निकसब भक्तौं है मुश्किल।
अब ही तो चेत नहीं करते वहां लिखा हिसाब जात तिल तिल।
जमदूत अन्त जब घेरैंगे देखत ही पोंकैंगे पिल पिल।
जो जवां यहां मखराज बनी वो कैसे बोलोगे हिल मिल।४।

है घोर अंधरिया कष्ट महा रोवो औ तड़पो करि किल किल।
बदबू की लहरैं आती हैं बदहोश करैं पल पल में दिल।
है अजर अमर यह सूक्षम तन पर दुख सुख का तो पास है बिल।
या से सतगुरु करि हरि सुमिरौ मिटि जावै तब सारी किल किल।८।

शेरः- रा के कहै पाप सब नाशै म घर बैठन देवै।
चौरासी का चक्कर छूटै राम नाम जो लेवै।।

पदः- जब तक मगरूरी है भक्तौं। तब तक सुख दूरी है भक्तौं।।
जा के हिये सबूरी भक्तौं। ता को मिलत मजूरी भक्तौं।।
सतगुर ढिग मंजूरी भक्तौं। नाम सजीवन मूरी भक्तौं।।
यह संसार है धूरी भक्तौं। या से मन लो तूरी भक्तौं।८।
ध्यान धुनी लय नूरी भक्तौं। रूप सामने पूरी भक्तौं।।
सुर मुनि रहैं हजूरी भक्तौं। गर्भ बास भा धूरी भक्तौं।।
सुनिये अनहद तूरी भक्तौं। अमृत पियो अंजूरी भक्तौं।।
अब किमि बिल्ली घूरी भक्तौं। जियतै में भइ सूरी भक्तौं।१६।

७७० ।। श्री दरबार शाह जी ।।

पदः- संसारी फिकिर से फरक रहै सो है फकीर फक फक बरिहै।
सतगुरु से नाम की बिधि जानै सो तो भक्तौं जियतै तरिहै।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सिया राम सामने में करि है।
सुर मुनि भेटैं घट साज सुनै अमृत चाखै घट से गिरि है।
सब कमल खिलैं सब चक्र चलैं नागिन जागै लोकन फिरि है।
तन छोड़ि चलै निज धाम रहै फिर गर्भबास में नहि परि है।६।

शेरः- सुख जो है फकीरी में वही सच्ची अमीरी है।
करै सतगुरु भजन जानै प्रभू पासै न दूरी है।।

७७१ ।। श्री खट पट शाह जी ।।

पदः- पतोहू जसुमति की प्रिय प्यारी।
संग दमाद बृषभान का राजत जो सब सृष्टि संवारी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो हर दम सकौ निहारी।
ध्यान धुनी परकाश दशालय सुधि बुधि जहां बिसारी।
नागिन जगै चक्र सब बेधैं सातों कमल सुखारी।
अन्त त्याग तन निजपुर राजो जियति जीत जग पारी।६।

(२)

बहू कौशिल्या की बड़ी सुन्दर।
संग दमाद जनक को राजत लज्जित निरखि पुरन्दर।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो देखो बाहर अन्दर।
इस तन में हैं चार पदारथ ढूंढ़त बन गिरि कन्दर।
जब तक मन काबू नहि होवै तब तक समझो बन्दर।
भीतर गोता जब यह मारी पावै नाम का मुन्दर।६।

७७२ ।। श्री शिकारी शाह जी ।।

पदः- हम तुम सब आवैं फिर जावैं यह सृष्टि का काम रहै जारी।
है कर्म प्रधान सुनो भक्तों या में चलती नहिं हुशियारी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो बिधि का लेख सकत टारी।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो जहं पर सुधि बुधि होवै छारी।४।

अमृत पीवै घट साज सुनै सुर मुनि बोलैं जै जै कारी।
नागिन जागै सब चक्र चलैं सब कमलन फूलै फुलवारी।
कहें शाह शिकारी तन छूटै बैठौ निज धाम में सुख भारी।
यह ख्याल करै औ धीर धरै सो आखिर होवै दरवारी।८।

७७३ ।। श्री दुर दुरे शाह जी ।।

पदः- पतोहू दशरथ की बड़ी बांकी।
संग दमाद जनक के राजत को बरनै छबि वाकी।
सतगुरु करि सुमिरन विधि जानै सो निसि बासर ताकी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर दम चलती चाकी।४।

सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमृत पीवैं छाकी।
नागिन जगै चक्र सब नाचैं कमलन की खिलै फांकी।
कहैं दुर दुरे शाह गर्भ की अदा होय तब बाकी।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजै जै जै हो पितु मा की।८।

(२)

पतोहू नन्द की राधे प्यारी।
संग दमाद वृषभान क सोहत छबि ताकी है न्यारी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो हर वक्त निहारी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म शुभा शुभ जारी।४।

अमृत पिये सुने घट अनहद सुर मुनि मिलैं पुकारी।
नागिन जगै चक्र सब घूमैं कमल खिलैं एक तारी।
अन्त त्यागि तन निज पुर बैठै जग में लात को मारी।
कहैं दुर दुरे शाह होय तब दोनो दिसि बलिहारी।८।

७७४ ।। श्री बन्दे अली जी ।।

पदः- बिहारी कि मुरली सुनो चित जोर।
मधुर मधुर क्या बाजत प्यारी छाई घटा घन घोर।
चपला चमक चमक चमकावै सखा सखि संग मोर।
बाम भाग बृषभानु नन्दनी देखें दृगन कि कोर।
झांकी जुगल लखत बनि आवत कहत लेत सुधि छोर।५।

सुर मुनि नभ ते फूल गिरावें जय जय करि सब सोर।
करत निहाल दयाल मनोहर यशुमति नन्द किशोर।
गावत राग रागिनी सब मिल नाचत करि झक झोर।
पवन देव तहँ अमित रूप धरि सब पर मुरछल ढोर।
दिब्य गुलाल मेंह लै छिड़कत बन के बयस किशोर।१०।

श्री जल देव लिहे पंखा कर हांकत सब ही ठौर।
शेष सहस फन छाता ताने आनन्द हिये हिलोर।
अगिन देव तहं बहुत रूप धरि लै मसाल सब ठौर।
आसमान शाम्याना ताने ठाढ़ो तहं कर जोर।
अवनि रूप धरि फ़रश बिछायो प्रेम में ह्वै सर बोर।१५।

नाना साज बजैं तहं सुन्दर सकै कौन करि गौर।
दौड़ धूप में भूषण बाजत नूपुर धुनि संग जोर।
फहर फहर हों बसन सुहावन अति सुगन्ध चहुँ ओर।
जमुना जी लखि जल में नाचैं उठत तहां क्या भौंर।
श्री मधुपुरी आरती साजे लागी चरनन डोर।२०।

गद गद कंठ प्रेम तन पुलकित चलत नैन झरि लोर।
सतगुरु बिन यह लीला दुर्लभ सत्य बचन शिर मौर।
सूरति शब्द का मारग पकड़ो छूटै मोर व तोर।
धुनि परकाश ध्यान लय पावो बनि जाओ बर जोर।
तन मन प्रेम की होय एकता चढ़ि जावो रंग बोर।
बन्दे अली कहैं हरि को सुमिरो क्यों बनि बैठे चोर।२६।

दोहाः- कबहूँ जमुना के निकट, कबहूँ बिपिन मंझार।
कबहूँ बृज में करत हैं, लीला नन्द कुमार।१।
सतगुरु रामानन्द का, चेला हूँ मैं जान
बन्दे अली है नाम मम, मानो बचन प्रमान।२।

७७५ ।। श्री काज़िम अली जी ।।

पदः- श्याम मुख निरखैं यक टक श्यामा द्रगन द्रग जोर।
जैसे चकई शरद चन्द्र को चितवत सुधि बुधि छोर।

जैसे मीन के पीन प्राण हैं वैसे प्रिया के नन्द किशोर।
जैसे मोर के घन घन जीवन नाचत करि करि शोर।
जैसे चातक नेह स्वाति जल लागी तन मन डोर।५।

जैसे नट की सूरति बांस पर पनिहारिन घट ओर।
जैसे कामी के मन अबला सूझत नहिं निशि भोर।
जैसे लोभी धन पर तन मन सहत सबन की खोर।
जैसे रजक बसन नहिं भूलत सब के धरत बटोर।
जैसे चींटी खाक से चीनी काढ़ करत इक ठौर।१०।

जैसे गादुर शाख को थामे झूलत पवन झकोर।
जैसे होरिल अवनि पै उतरत पकड़ि काठ बर जोर।
जैसे सफरी नीचे से ऊपर करि सूरति गइ दौर।
जैसे खग मृग चरत औ चूंगत भूलैं नहिं निज ठौर।
जैसे वक्ता कहि समुझावत मन कसि बाँधत डोर।१५।

जैसे श्रोता सुनत चित्त धरि सूरति वक्ता ओर।
जैसे भ्रंगा कीट लाय घर बन्द करत एक ठौर।
तन मन प्रेम लगाय सब्द कहि देवै निज तन बोर।
पतिब्रता पति संग जिमि जरती नयनन आवत लोर।
जिमि सय्याद शिकार पै आशिक दोउ कर अस्त्र औ वोर।२०।

सूर समर सुनि होत खुशी जिमि करत अगारी दौर।
नेग हेत दूल्हा मंडप जिमि नहीं उठावत कौर।
जिमि अहि असिल न डुबकी मारत कितनो बारि हिलोर।
सिंह बिपिन में जिमि निर्भय होय करत शब्द घन घोर।
पुत्रवती जिमि पुत्र को चूमत प्रेम में तन मन बोर।२५।

कामिनि जिमि निज पति के सन्मुख शरम धरत सब छोर।
जिमि पतंग दीपक पर धावत नेक न मानत लौर।
प्राण त्याग दे प्रेम न त्यागे है यह कार्य कठोर।
जिमि भुजङ्ग मणि के बिन ब्याकुल प्राण तजत फन फोर।
अलल पखेरू जिमि सूरति से रहत अकाश की ओर।३०।

जैसे शाह को शुक्ल पक्ष प्रिय निशि अँधियारी चोर।
जिमि भौंरा नीरज पर आशिक पियत पराग निचोर।
लोभ में गृह की सुधि बुधि भूली बझि गयो फूल में भौर।
सन्ध्या भई कमल सम्पुट भा भौंर करत नहिं शोर।
प्रेम समाधि निशा भरि लागी छूटी होते भोर।३५।

नासा ज्ञान एक योजन तक भँवर लगावत दौर।
प्रेम सुगन्ध में तन मन अरपै तब पावै वह ठौर।
जैसे मकरी ताना ताने घूमि घूमि चहुँ ओर।
सूरति से क्या कार्य्य सँवारत नेक न भूलै ठौर।
जिमि अहि कच्छप अण्डा सेवत सूरति की करि डोर।४०।

जिमि तन मन ते प्रेम लगाय के गिरगित खात शिहोर।
जैसे सूरति शब्द पै धरिये सुनिये धुनि टंकोर।
जैसे सुर मुनि ध्यान में दरशैं आनन्द हिये हिलोर।
जैसे महा प्रकाश दशा लय जहां मोर नहिं तोर।
जिमि हरि भजन बिना धिक जीवन हृदय भया कठोर।४५।

जिमि यह तन निज करिके मानत सो चलि बसिहै गोर।
सतगुरु बिन कोइ पार न होवै करि हम देखा गौर।
काज़िम अली कहै प्रिय प्रीतम पर मन अटका मोर।४८।

शेरः- काज़िम अली है नाम मेरा शिष्य रामानन्द का।
हर दम मुझे दीदार होवै नन्द के फ़रज़न्द का।।

७७६ ।। श्री सहूला जी ।।

पदः- भजन हरि का जे नहिं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
नाम की धुनि नहीं सुनते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
ध्यान सतगुरु का नहिं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
नूर लय में नहीं परते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
रूप हर दम नहीं लखते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।५।

जियत में तै नहीं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
सदा निर्वैर नहीं रहते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।

बचन कटु जे नहीं सहते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
बड़ों से अदब नहीं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
देव जो सब नहीं मनते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।१०।

तीर्थ की निन्दा जे करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
मूरति में प्रेम नहिं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
संग भक्तों के नहीं बसते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
गाड़ के धन को जे रखते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
पाय धन धर्म नहिं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।१५।

बचन कह कर जे छल करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
दुःख आने में जे डरते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
दग़ा कर धन को जे हरते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
बचन बीचे में जे कटते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
जे पर दारा से रति करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।२०।

सत्य को ग्रहण नहीं करते हैं उनकी जिन्दगी में थू।
दीनता शान्ति नहिं गहते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
दया श्रद्धा नहीं रखते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
छमा सन्तोष नहिं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
शील को तन से जे तजते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।२५।

प्रेम में मस्त नहीं रहते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
नींद आलस में जे रहते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
उचित अनुचित नहीं गुनते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
दोफ़सली बात जे करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
बिना अरपे उदर भरते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।३०।

साफ़ इन्साफ़ नहिं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
चकर औ मकर जे तकते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
दमन इन्द्रिन नहीं करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
दुखी को देख जे हंसते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
अतिथि को देख जे भुँकते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।३५।

बिना समझे जे जल पीते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
कथा कीरतन जे नहिं सुनते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
सरन संतन कि नहिं चलते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
बिना पूछे जे कछु कहते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
बिना जाने बका करते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।
सहूला कह वही गिरते हैं उनकी ज़िन्दगी में थू।४१।

शेरः- चेली हुई मैं तो श्री महराज रामानन्द की।
छटा छवि श्रृंगार हर दम लखौ आनन्द कन्द की।१।
निर्मल हुआ तन मन मेरा श्री प्रेम निधि प्रसन्न की।
अनुपम अमी प्याला पिया अब क्या है शीरीं कन्द की।२।
अजपा कि जाप सुफ़ल उसे जिसने ये बकना बन्द की।
कैसे मिलैं उनको प्रभु जिन द्वैत पल्ला बन्द की।३।
कपट की टाटी हटै शीशे को जिसने मन्द की।
कहती सहूला त्रिगुन के ऊपर है चाल विहंग की।४।

७७७ ।। श्री भकोसे दास जी ।।

पदः- सखी गर हठ करैं नैकौं करैं घनश्याम तब नखरा।
बसन निज तन के सब फाड़ें भये जीरण मनो चिथरा।
मलैं आँखें हथेलिन से मलैं मुख भर में चट कजरा।
बाल जसुमति ने जो गूथे उन्हें तहँ छोर दें बिखुरा।
चलैं रोते भवन अपने कहैं हम लेंय सब मुजरा।५।

बड़ी चालाक हो बनतीं भूल सब जायगा टसरा।
कहेंगे मातु से जाकर गवाती हम से हैं बनरा।
नचाती नाचती संग में कहैं हंसि हंसि सबै भतरा।
पकड़ि कर मुख मेरा चूमैं लगा गालों पै दें थपरा।
अगर हम कछु वहां बोलैं कहैं हम तो रहीं दुलरा।१०।

भूख लगने पर हम बोलैं कहैं तुम हो बड़े लबरा।
न आने दें हमें सारी करैं हर बार ये रगरा।
धरैं आगे मेरे लाकर बड़ा मिट्टी क एक खपरा।

कोई थोड़ा सा ले आवै भुना कर घर धरा मटरा।
कोई लाकर के दें मलिया में कछु खट्टा मही पतरा।१५।

कोई लाकर के दें रोटी सिकी कच्ची मिले कंकरा।
कोई मकरा के दें चावल कोई दें दाल जो अकरा।
कोई भाजी कटेली की कोई नारी क दें झलरा।
कोई बैठन के हित लाकर धरें टूटा तहां पटरा।
कोई कहती हम मुख पोछैं लिये ठाढ़ी बुरा कपरा।२०।

कोई कहती नहीं जल है कोई कहती कहां गगरा।
कोई कहती और कुछ दो कोई कहती धरा पथरा।
कहैं हम से न खाओगे तो दें तन पर सबै झकरा।
चहूँ दिशि ते सबै घेरे सहारा लेंय हम केकरा।
कोई कहती हम देंय बूरा ले आकर के धरें चोकरा।२५।

कोई कहती खटाई लो सरा दें आम का कतरा।
बिवस हो कर के हम खाने लगें देवैं सबै छितरा।
पकड़ के कर लगा धक्का देंय फिर रास्ता पकरा।
कहां अब भाग जावें हम मिटे इन सब से जो झगरा।
बचन जब यह सुनैं सखियां जांय एक दम से सब चकरा।३०।

जोड़ कर सब करैं बिनती चहे जो हम से लो सखरा।
प्राण के प्राण हो प्यारे इसी से हम रहीं मल्हरा।
आप हम सब को मत त्यागो बना लो पगन की लतरा।
हँसै घनश्याम यह सुनकर अभी कछु है नहीं बिगरा।
करो सुमिरन लगा तन मन ना होवे एक दिन अतरा।३५।

नहीं तो अन्त में यम दूत बांधे खूब गहि रसरा।
भूल सब जांय बदमाशी मारि तन दूर दें बिथरा।
पकड़ कर जांय लै इजलास पर सुनवायें वहं खसरा।
नहीं बोलत बने यारों मिलैं तहं नरक में बखरा।
भकोसे दास कह चेतो नहीं तो खाओगे खतरा।४०।

७७८ ।। श्री राम जनी जी ।।

पदः- नाना भांति के खेल करैं प्रिय प्रीतम बृज के धाम।
सीता सीता सखी कहैं सब सखा कहैं जै राम।
रमा रमा सब सखी कहैं सब सखा कहैं हरि नाम।
उमा उमा सब सखी कहैं सब सखा कहैं शिव नाम।
शारद शारद सखी कहैं सब सखा कहैं बिधि नाम।५।

सरस्वति सरस्वति सखी कहैं सब सखा गजानन नाम।
शची शची सब सखी कहैं सब सखा इन्द्र को नाम।
राधे राधे सखी कहैं सब सखा कहैं हे श्याम।
जनक पुरी सब सखी कहैं सब सखा अवध को नाम।
बरसाना सब सखी कहैं सब सखा श्री गोकुल नाम।१०।

जनक लली सब सखी कहैं सब सखा दशरथ सुत नाम।
प्रिया प्रिया सब सखी कहैं औ सखा प्रीतम को नाम।
सिया सिया सब सखी कहैं सब सखा श्री रघुबर नाम।
लली लली सब सखी कहैं सब सखा लला कहैं नाम।
कहैं लाड़िली सबै सखी सब सखा लाड़िले नाम।१५।

कहैं प्राण प्रिया सखी सबै मिलि सखा प्राण पति नाम।
श्यामा श्यामा सखी कहैं सब सखा श्याम को नाम।
जनक नन्दनी सखी कहैं सब सखा रघुनन्दन नाम।
कहैं स्वामिनी सखी सबै मिलि सखा श्री स्वामी नाम।
श्री श्री सब सखी कहैं सब सखा बिष्णु को नाम।२०।

बृषभानु लली सब सखी कहैं सब सखा नन्द सुत नाम।
भूम सुता सब सखी कहैं सब सखा विश्वम्भर नाम।
जनक सुता सब सखी कहैं सब सखा रघुनन्दन नाम।
बृषभान नन्दनी सखी कहैं सब सखा यदुनन्दन नाम।
शक्ति शक्ति सब सखी कहैं सब सखा देव मुनि नाम।२५।

सखी सखी तहँ कहैं छबीली मोहन सखन को नाम।
बृज चौरासी कोस धन्य है धनि सब वासी ग्राम।
राम जनी कहैं जहँ पर प्रगटे श्री राधे घनश्याम।२८।

दोहाः- *उलट पुलट जो शब्द हों सो न सुधारे कोय।*
कहै लाड़िली नहीं तो, प्रेम जायगा धोय।।

(**नोटः-** सन्त श्री राम जनी जी इस पद में इन दिव्य ग्रन्थों के संबंध में कह रही हैं कि जगत् जननी श्री राधा महारानी (लाड़ली) जी की यह आज्ञा है कि इन दिव्यग्रन्थों के प्रेम भरे उलट पुलट शब्द जो सिद्ध सन्तों ने लिखवाये हैं वे न सुधारे जायें।)

७७९ ।। श्री पीरू शाह जी ।।

पदः- अदा मस्तानी क्या घनश्याम की तन मन लुभा लेती।
जहां मुरली बजा देते कि जब सुधि बुधि भुला देती।
जरा अबरू फिरा देवैं तो ठग तन के भगा देती।
मधुर मुसक्यान से दंदां चमक चहुं ओर छा लेती।
पगन के नूपरों की धुनि अजब बसुधा हंसा देती।५।
निरखतै बन परै यारों ज़बां बातैं चुरा लेती।
करो मुरशिद पता पावो नहीं माया गिरा लेती।
हुकुम मनसिज को दे कर के तुम्हैं रति संग फंसा देती।
अन्त जमदूतों से पकड़ा तुरत दोज़ख पठा देती।
कहा मानौ अगर मेरा करो हरि नाम की खेती।१०।
ध्यान धुनि नूर लय पावो देव मुनि संग खेला देती।
कमल सातौं औ षट चक्कर नागिनी को जगा लेती।
सुरति औ शब्द का मारग सहज ही में मिला देती।
सदा निर्बैर औ निर्भय तुम्हैं प्यारे बना लेती।
कहै पीरू छटा प्रिय श्याम की सन्मुख में छा देती।
जियत में मुक्ति औ भक्ती कर्म सारे मिटा देती।१६।

७८० ।। श्री बक्स जी ।।

पदः- नखरे नाजों अदा पै फिदा तेरे घनश्याम।
बक्स कहैं हर दम लखौं सुन्दर शोभा धाम।१।

७८१ ।। श्री फ़कीरा जी ।।

पदः- भ्रात बहिनों सुनो चित दै जो मैं सब को सुनाती हूँ।
करो हरि का भजन निशि दिन यह सांचा पद बताती हूँ।
इसी से काम सब सरिहै तुम्हैं सोते जगाती हूँ।
जाय सतगुरु शरण लीजै सखुन जो मैं सिखाती हूं।
ध्यान धुनि नूर लय पावो द्वैत परदा हटाती हूँ।५।

चोर तन के भगैं सारे लिखा बिधि का मिटाती हूँ।
होय मन की मती स्थिर अमी अनुपम चखाती हूँ।
दीनता मातु मिलवा के प्रेम पथ पर चलाती हूँ।
जियत में देव मुनि दरसें उन्हीं की मैं संघाती हूँ।
मस्त हर दम रहो जिस में ब्रह्म अगिनी लखाती हूँ।१०।

लखो हरि को सबी जां तब मुक्ति भक्ती दिलाती हूँ।
अगर जो यह कहा मानो ठगों से मैं बचाती हूँ।
नहीं तो अन्त हो दोज़ख झूठ कह नहिं बकाती हूँ।
जो सत मारग पै हैं आये उन्हें सीने लगाती हूँ।
ज़रा धमकी में जे गिरते उन्हें कर गहि उठाती हूँ।
श्री सतगुरु की जय जय जय फ़कीरा कह मनाती हूँ।१६।

पदः- सतगुरु मिले हमें जब श्री स्वामी रामानन्द।
कहती फ़कीरा तब से हर वक्त परमानन्द।।

७८२ ।। श्री ललिता जी ।।

पदः- होली खेलत अवध बिहारी मगन।
भरथ लखन रिपु दमन सखा संग उठत कोलाहल भारी मगन। होली०।।
आपस में सब के सब मारत हंसि हंसि के पिचकारी मगन। होली०।।
माता पिता गुरु निरखत बैठे प्रेम में तन मन वारी मगन। होली०।।
काँधा सोती अवीर औ कुम कुम भरि झोरी लियो डारी मगन। होली०।५।

सब के सब मुठ्ठिन भरि झोंकत तन छबि सोहत न्यारी मगन। होली०।।
संग में साज बजत बहु बिधि के राग ताल धुनि न्यारी मगन। होली०।।
अर्क सुगन्धित केवरा गुलाब क केसरि मृग मद डारी मगन। होली०।।

इतर फुलेल अनेक किसम के मलयागिरि रगरारी मगन। होली०।।
नर नारिन गृह निज निज साजे निरखत ठाढ़े अटारी मगन। होली० ।१०।

संग समाज कृपा निधि आगे चलि भये सब सुख कारी मगन। होली०।।
हाट बाट द्वारेन और सब गृह राजत मुनि मन हारी मगन। होली०।।
भाभी निरखि प्रभु पर रंग छिरकैं फेरि अबीर को डारी मगन। होली०।।
कुम कुम ऊपर ते भुरकावैं शान्ति खड़े धनुधारी मगन। होली०।।
आरति साजि के फेरि उतारैं चरन कमल सिर धारी मगन। होली० ।१५।

सुर मुनि नभ ते फूल गिरावैं बोलत जै जै कारी मगन। होली०।।
पगन कि आहट खल भल खल भल रंग बहत जैसे वारी मगन। होली०।।
श्री सरजू जी की छवि सुन्दर सोहत मंगलकारी मगन। होली०।।
मानहुँ ब्याहि के आजहिं आई ओढ़े सुरुख रंग सारी मगन। होली०।।
सतगुरु करि निरखै यह लीला तब हो जीव सुखारी मगन। होली० ।२०।

ध्यान समाधि नाम धुनि पावै छाय जाय उजियारी मगन। होली०।।
सन्मुख राम सिया की झाँकी हर दम होय न न्यारी मगन। होली०।।
सुर मुनि नित सब दर्शन देबैं कोमल बचन उचारी मगन। होली०।।
ललिता कहै तन मन प्रेम लगै तब होय जियति भवपारी मगन। होली० ।२४।

दोहाः- राम कृष्ण औ बिष्णु को एक भाव जो मान।
ललिता कह जियतै मुकुत सो है भक्त महान।१।
आदि मध्य औ अन्त नहिं धन्य धन्य भगवंत।
निर्गुण से सर्गुण बनत सुर मुनि वेद भनंत।२।
सब में सब से अलग है जानै जानन हार।
ललिता कहत व चरन को बार बार बलिहार।३।
भक्तन हित अवतार लै हरति धरनि को भार।
ललिता कह प्रभु चरित तब गावै ते भवपार।४।

७८३ ।। श्री धम धूसर दास जी ।।

पदः- देखो प्यारे कन्हैया का ठन गन।
दूध दही माखन नित लूटत जीते को अति टन मन।
निज घर पर घर करत उपद्रव ता पर प्रेम करें सब बृज जन।
धम धूसर कह जे न भजैं हरि ते बसुयाम रहैं फिर अनमन।४।

७८४ ।। श्री खुशाली शाह जी ।।

पदः- अरे मन शान्ति ह्वै बैठो मुझे गुरु पास जाने दो।
बहुत दुख सह हुआ रोगी पता हरि का लगाने दो।
करें प्रभु दीन पर दाया जरा नाड़ी दिखाने दो।
नाम की जाय मिलि बूटी चढ़े रंग मुझ को खाने दो।
धुनी एक तार जारी हो रगन रोवन सुनाने दो।५।

ध्यान परकाश लय में जाय कर सुधि बुधि भुलाने दो।
मिले संसार से फुरसत करम की गति मिटाने दो।
छटा सिय राम की हर दम मेरे सन्मुख में छाने दो।
रहे जब तक जगत में तन सदा हरि जस को गाने दो।
खुशाली शाह की बिनती कृपा हो अब न ताने दो।१०।

७८५ ।। श्री नादिर खाँ जी ।।

पदः- शान्ति ह्वै बैठो मुझे गुरु पास मन जाने तो दो।
जो मर्ज है उसकी ज़रा दारू को करवाने तो दो।
नाम रस अनुपम दया करि प्रेम से पाने तो दो।
ध्यान धुनि परकाश लय मिलि जाय मिलि जाने तो दो।४।

रेख पर करमों कि प्यारे मेख मरवाने तो दो।
राम सीता की छटा मम सामने छाने तो दो।
सत्संग भक्तों का सदा हरि के चरित गाने तो दो।
नादिर कहैं इस मार्ग पै मुझ दीन को आने दो।८।

७८६ ।। श्री रम्भा जी ।।

पदः- लगा तन मन करो सुमिरन लखो कैसा अचम्भा है।
जहां से धाम तक हरि के लगा क्या श्वेत खम्भा है।
सत्य है नाम खम्भे का इसी से जक्त थम्भा है।
चढ़ै सोई जो हो निर्मल कहत यह बैन रम्भा है।४।

दोहाः- नीचे ऊपर तलक है चौदह सीढ़ी जान।
रम्भा कह सोई चढ़ै जिन्हें दियो गुरु ज्ञान।।

७८७ ।। श्री लक्ष्मी बाई जी ।।

पदः- भारत कि जनता अब तो फूलै फलैगि भाई।
थोड़े हि दिन हैं बाकी घर घर बजै बधाई।
हरि जन अनेक हरि ने करि के दया पठाई।
सुमिरन औ पाठ पूजा कीर्तन कि धूम छाई।४।

आते समय हैं सब के मन मति पै हो सधाई।
कहना औ सुनना क्या है दिल तार लागि जाई।
हरि नाम कि कृपा से छूटैगि सारी काई।
तब तो बहार हर दम आतम कि एकताई।८।

७८८ ।। श्री फ़िदा हुसेन जी ।।

पदः- बिना हरि के भजे सुन तू तेरी किसमत में क्या लिक्खा।
गले पापों क क्या गजरा कपट फुलरा लगा लिक्खा।
जियति भर चोरों की संगति अन्त दोजख अदा लिक्खा।
मार हर दम परै ऊपर खाना पीना गंदा लिक्खा।
कौल करके चला वहँ से नहीं सुमिरा जुदा लिक्खा।
फ़िदा कहता गरीबी प्रेम हो तब फिर अदा लिक्खा।६।

७८९ ।। श्री मुस्तरी जी ।।

पदः- गऊ बच्छ से प्रेम करत जिमि तिमि श्री हरि से कीजै।
तब मानुष का जन्म सुफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।।
जैसे दादुर बारिक प्रेमी वैसे हरि से कीजै।
तब मानुष का जन्म सुफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।।
जैसे कुमुद निशा का प्रेमी वैसे हरि से कीजै।
तब मानुष का जन्म सुफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।।
जैसे कमल सूर्य का प्रेमी वैसे हरि से कीजै।
तब मानुष का जन्म सुफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।४।
शान्ति दीनता मातु मिलै तब बैठि गोद पय पीजै।
तब मानुष का जन्म सुफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।।
भाई बहिनो तन मन लाय के राम नाम रट लीजै।

तब मानुष का जन्म सुफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो बिरथा आयू छीजै।
तब मानुष का जन्म सुफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।।
कहै मुस्तरी अन्त छोड़ि तन हरि पुर बासा लीजै।
तब मानुष का जन्म सफ़ल हो जियतै सब लखि लीजै।८।

७९० ।। श्री महमूदा जी ।।

पदः- भजन बिन नर तन बिरथा जात।
वाह वाह में निज घर भूले जोड़यो जग से नात।
काम क्रोध मद लोभ मोह के बनिगे सच्चे तात।
अन्त समय जम आनि के घेरें मारें जूता लात।
प्राण निकारि चलैं लै नरके तब रोवत चिल्लात।५।

मातु पिता भ्राता नारी सुत कोई संग न जात।
जिस तन को निज करिके मान्यो कबर में कीड़ा खात।
घोर अँधरिया जम पुर में है नेको नहीं सुझात।
दूतन को तहँ सूझि परत है सुनो कहें जो बात।
ब्याकुल जीव ऊब अति लागै कर मींजत पछितात।१०।

नाना भांति के कष्ट वहां पर वरनि सकै को भ्रात।
ध्यान में लीला यह हम देखा कहत जिया अकुलात।
उन जीवन को पत्थर जानो जे सुनि नहिं घबरात।
सतगुरु का जिन्ह लीन्ह सहारा उनकी लागी घात।
ध्यान धुनी लय नूर पायगे तन मन माहिं सिहात।
महमूदा कह राम सिया छवि लखि हरदम मुसिक्यात।१६।

पदः- चेली रामानन्द की महमूदा मम नाम।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते पूरण भा सब काम।।

७९१ ।। श्री दिल जान जी ।।

पदः- घर घर बसन व भूषण घनश्याम जी के खातिर।
तन मन से चाहैं सब जन अस प्रेम में हैं शातिर।
दिल जान कह कहूँ क्या रसना में बल नहीं है।

ऐसी जगह न देखा जहँ पर कि हरि नहीं है।
दिल जान को दिल जान कह दिल जान से दिल जान जी।
जब जहां से हो बरी गर सखुन मेरा मान जी।६।

हर दम लखौ अद्भुत छटा प्रिय श्याम सब के प्राण जी।
नाम की धुनि ध्यान लय औ नूर का चमकान जी।
चोर सब होवैं फ़ना मन की मती ठहरान जी।
देव मुनि सब दर्श दें है उनमुनी यह ध्यान जी।
सूरति शब्द का रास्ता तै कीजिये सुख खान जी।
कल्पना से हो नहीं बस प्रेम ख्याल समान जी।१२।

७९२ ।। श्री जहूरा जी ।।

पदः- सतगुरु जिसे भेंटाया वह जप कि बिधि को पाया।
फिर तो मज़ा उड़ाया धुनि ध्यान नूर पाया।
लय में जहां समाया सुधि बुधि सबै भुलाया।
सन्मुख में रूप छाया नर तन क लाभ पाया।४।

कोटिन जनम कमाया उस पर हुई यह दाया।
नाहीं तो हरि की माया मनसिज से कह पिटाया।
सुमिरन से प्रेम लाया सो गर्भ में न आया।
कहती जहूरा भाया जो हमने पद सुनाया।८।

पदः- घनश्याम राधे की छटा को मैं निरखती राति दिन।
जोड़ी मनोहर बाकुड़ी बारह बरस लगभग है सिन।
श्री स्वामी रामानन्द जी किरपा करी मुझ दीन पर।
सुफ़ल जीवन चट हुआ जिमि पड़े पानी मीन पर।
कहती जहूरा जहां में हरि का हि सुमिरन सार है।
सतगुरु बिना खिलता नहीं दिल आयना अतिकार है।६।

७९३ ।। श्री शिताबा जी ।।

पदः- लखे सिय राम को हर दम वही अबला पुरुष धनि हैं।
मिटी सब तन व मन की गम वही अबला पुरुष धनि हैं।
ध्यान धुनि लय मिली एक दम वही अबला पुरुष धनि हैं।

नूर क्या हो रहा चम चम वही अबला पुरुष धनि हैं।
लखे जिस को उन्हें सब सम वही अबला पुरुष धनि हैं।
सकें जग में नहीं वे थम वही अबला पुरुष धनि हैं।६।
शान्ति अरु हो गये वे नम वही अबला पुरुष धनि हैं।
जीव ऐसे जगत में कम वही अबला पुरुष धनि हैं।
चलें बसुधा पै नहीं धम धम वही अबला पुरुष धनि हैं।
गये हरि नाम में जे रम वही अबला पुरुष धनि हैं।
छुटा देते वही तुम हम वही अबला पुरुष धनि हैं।
शिताबा कह करें क्या जम वही अबला पुरुष धनि हैं।१२।

दोहाः- स्वामी रामानन्द की चेली मैं अति दीन।
नाम रूप परकाश लय छिन में मोको दीन।१।
कहैं शिताबा आय जग सतगुरु खोजे भाय।
नाहीं तो जन्मै मरै कोटिन चक्कर खाय।२।

७९४ ।। श्री कृष्णा बाई जी ।।

पदः- भारत कि अब तरक्की होने में देर नाहीं।
अब धर्म के किवाड़े खुलने में फेर नाहीं।
हरि जन जगह जगह पर करना अब टेर नाहीं।
सब जन स्वतन्त्र होंगे बनना अब चेर नाहीं।४।
फ़ौरेव करि कमाना अब वह अहेर नाहीं।
नर नारी द्रोह त्यागैं करना गरेर नाहीं।
भोजन बसन से मतलब सो खुब करेर नाहीं।
हरि नाम उर में धारो तब पाप नेर नाहीं।८।

७९५ ।। श्री अब्बास हुसेन जी ।।

पदः- बिना सुमिरन के सुन ले तू तेरी किसमत में क्या होगा।
अजा बेशर्म का सेहरा तेरे मुख पर पड़ा होगा।
गले में तौक़ लानत की तू दोज़क में टंगा होगा।
पीव मल से बदन सारा तेरा अहमक रंगा होगा।
कयामत के समय तुझ पर चढ़ा शैतां कड़ा होगा।
कहैं अब्बास फिर कबहूँ जहां में आ गधा होगा।६।

७९६ ।। श्री मूषे शाह जी ।।

पदः- लिखा पट्टा गरभ में क्यों पोत देते फटै छाती।
करो सतगुरु पता पावो पास ही तो धरी थाती।
शब्द पर जब तलक सूरति एक रस लग नहीं जाती।
तभी तक तो कठिनता है पहुँच सकती नहीं पाती।
दीनता प्रेम धारन कर करो सुमिरन लगै लाती।
कहैं मूषे अभी चेतो शरम तुम को नहीं आती।६।

७९७ ।। श्री पेमन शाह जी ।।

पदः- पिता माता जगत के जो उन्हें क्यों भूल कर बैठा।
बना बाबू यहां कपटी फिरत चारों तरफ़ ऐंठा।
अन्त यमदूत मुख तेरे करैं जलता हुआ ग्वैठा।
कहैं पेमन भजै हरि को छुटै भव जाल का ठैंठा।४।

७९८ ।। श्री खोजी जी ।।

पदः- बिना सुमिरन के नहिं छुट्टी बड़ा फन्दा पड़ा देखो।
करो सतगुरु गहो मुट्ठी रूप सन्मुख खड़ा देखो।
ध्यान धुनि नूर लय पावौ प्रेम तन मन भिड़ा देखो।
कहैं खोजी जियति जानै वही हरि पुर अड़ा देखो।४।

७९९ ।। श्री चुरई शाह जी ।।

पदः- मिला नर तन यह अति दुर्लभ भजन करने का मौका है।
ध्यान धुनि नूर लय पावै वही सिय राम भौंका है।
नहीं तो अन्त कसि यमदूत दोज़क जाय छौंका है।
कहैं रो रो के घर वारी डुबी मंझधार नौका है।
नाम को साधि जो लेवै तरे सो जैसे लौका है।
न हो गाफ़िल कहैं चुरई यह तन एक दिन तो शौका है।६।

८०० ।। श्री झींगुर शाह जी ।।

पदः- नाम बल्ली के बिना किस्ती ये तन चलती नहीं।
ध्यान धुनि परकाश लय पा कर के फिर डुबती नहीं।

रूप सीता राम का लखि करिके फिर हिलती नहीं।
कहैं झींगुर शाह फिर वह गर्भ में पड़ती नहीं।४।

८०१ ।। श्री बुन्नी शाह जी ।।

पदः- हरि चरणों कि शरण से पार हो। जब तन मन से ताबेदार हो।।
यह तन बिन भजन बेकार हो। जहां छूटै गरद गुब्बार हो।।
यहां मन के बने सरदार हो। कहैं बुन्नी वहां मुखकार हो।६।

शेरः- छार ह्वै जावेगा तन माया औ मन संग में रहै।
आशा औ तृष्णा को लिये फिर पकड़ि के तुम को डहै।१।
कर्म के अनुसार दुःख सुख यहां अरु वहँ पर सहै।
जब तक भजै हरि को नहीं किमि पार हो बुन्नी कहै।२।

८०२ ।। श्री चुन्नी शाह जी ।।

शेरः- चुन्नी कहैं चुन लो जहां में एक है हरि नाम बस।
सतगुरु बिना मिलता नहीं काहे कि वह सब की है नस।१।
देख लो फिर सामने हर दम रहा प्यारा है हंस।
छूटै कपट एक ओर हो धुनि ध्यान लय में जाव फंस।२।
नूर चम चम हो रहा चख लो टपकता अमी रस।
जब तक जियति देखो नहीं छूटैगि कैसे मन की गस।३।
तन मन से प्रेम लगाय के अजपा कि जाप में जाव लस।
सूरति शबद की जाप अजपा पकड़ ले फिर उस को कस।४।

८०३ ।। श्री पुरई शाह जी ।।

पदः- बलायें राम सीता की जियत जो पायगा यारों।
वही भव सिन्धु से छुट कर के हरि पुर जायगा यारों।
जो सतगुरु करिके मारग गहि दीन बन जायगा यारों।
वही अनुपम अमी पीकर मगन ह्वै जायगा यारों।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर ज़गत बरतायगा यारों।
कहैं पुरई वही साधू जो यह धन पायगा यारों।६।

८०४ ।। श्री खुन खुन शाह जी ।।

पदः- गरभ की कौल का कछु याद कर ले क्या कहा हरि से।
यहां आकर अरे पाजी खिलाफ़त कर रहा हरि से।
अन्त में तू बता मुझ को भाग कहँ जायगा हरि से।
ध्यान धुनि नूर लय पावे वही सुख पायगा हरि से।
रूप हरदम जिसे दरसै वही बतलायगा हरि से।
अन्त तन छोड़ कह खुन खुन वही मिलि जायगा हरि से।६।

८०५ ।। श्री जौहर खाँ जी ।।

पदः- अदा हो गरभ के एकरार से तब तो रिहाई हो।
नहीं होगी बड़ी मुस्किल कज़ा लेने जब आई हो।
कचेहरी में तेरे कर्मों क सब खाता सुनाई हो।
सखुन मुख से न कछु निकलें परै तहं पर पिटाई हो।४।

जाय दोज़क में फिर पटकैं परै तन पर नोचाई हो।
सिंह औ श्वान अहि कागा रहें चहुँ ओर खाई हो।
कहैं जौहर सहो कल्पों बृथा स्वांसा गंवाई हो।७।

८०६ ।। श्री मधई जी ।।

पदः- जिसे सतगुरु ने सुमिरन की दी बूटी।
वही नर तन क भाई मज़ा लूटी।
श्याम श्यामा कि सन्मुख मे छबि जूटी।
छटा लखि लखि के हर दम अमी घूटी।४।

प्रेम तन मन से लागी भरम छूटी।
तब पापों के तापों से संग टूटी।
कहै मधई कठिन है यह भव खूंटी।
हरि पायो न तिनको करम फूटी।८।

८०७ ।। श्री सुभान शाह जी ।।

पदः- कैसे बने हैं रसीले श्याम श्यामा के नैनां।
मन्द हंसि निखुम चितवनि प्यारी रहि रहि मारत सैना।

चाल चलत कर से कर पकड़े बोलत मधुरे बैना।
हर दम झांकी सन्मुख निरखौं साफ़ करो दिल ऐना।४।

जियतै मानुष तन फल पावो दुबिधा नेक रहै ना।
सतगुरु करि सुमिरो निशि बासर तब जमदूत गहे ना।
साधन सिद्धि होय जब भाई तब छूटै मन धैना।
कहैं सुभान अन्त हरि पुर चलु नाम का संग लै पैना।८।

८०८ ।। श्री बलदेव प्रसाद जी ।।

छन्दः- मिल्यो धाम बैकुण्ठ मोहिं पाप भये सब माफ।
हरि की लीला अति अगम बात मानिये साफ़।१।
मन ही मन सुमिरन किहेन राम नाम मैं जान।
पर स्वार्थ अरु दान कछु यथा शक्ति किहों मान।२।

सोरठाः- कह बलदेव प्रसाद मानुष का तन पायके।
छोड़ि कपट बकवाद भजै नाम मन लायके।।

८०९ ।। श्री जगई जी ।।

पदः- राधे जी का अनूप बनरा।
मोर मुकुट कानन में कुण्डल केशरि तिलक भाल दृग कजरा।
भूषण बसन जड़ाऊ पहिने कर मुरली फूलन गले गजरा।
नूपुर छम छम छम छम बाजैं नाचत झुकत झूमि हंसि कहरा।४।

चितवनि अजब गज़ब करि डारै तन मन में टिकै प्रेम क पहरा।
सखा सखी राधे संग नाचत अम्बर फहर फहर रहे फहरा।
नाना साज़ बजैं को बरनै त्रिबिधि समीर के आवत लहरा।
जगई कहैं करो जब सतगुरु तब अज्ञान क उलटे सेहरा।८।

८१० ।। श्री राम रघुबीर जी ।।

दोहाः- हरि सुमिरन कछु नहिं बन्यो, कहैं राम रघुबीर।
हरिपुर मो को दीन दै कृपा सिन्धु रघुबीर।
अन्त समय हरि दरश दै कीन्हयों मोहिं निहाल।
चढ़ि बिमान हरि पुर गयों छूटा जग जंजाल।

हरि सुमिरन बिन तन बृथा जे जन देहिं गँवाय।
तिन सम अधम निकाम को मानो मम बचनाय।६।

८११ ।। श्री बीरबल जी ।।

दोहाः- श्री सरस्वती मातु का, कछु सुमिरन हम कीन।
या से अन्त समय हमें, भेज बिष्णु पुर दीन।१।
कहैं बीरबल आय, सब बिधि तहँ पर सुक्ख है।
सुमिरन मातु क भाय, काटि दीन मम दुःख है।२।

८१२ ।। श्री भोज जी ।।

दोहाः- विद्वानन की कदर हम, जग मे कछु कर लीन।
यथा शक्ति जो कुछ बन्यो, सो धन उनको दीन।१।
परजा को पालन किहेन, राजनीति से जान।
जिनके पुन्य प्रताप से, मोको सुःख महान।२।
अन्त समय हरि पुर गयन, चढ़ि के सुन्दर यान।
कहैं भोज बैठक मिली, बदल्यो दूसर यान।३।

८१३ ।। श्री धुंधकारी जी ।।

दोहाः- श्री गोकरण कृपा करि दीन मोहिं निवकाय।
श्री भागवत सात दिन प्रेम से दीन सुनाय।
प्रेत योनि से छूट के हरि पुर चलेन सिधाय।
कहैं धुंधकारी सुनो सब प्रकार सुख भाय।४।

८१४ ।। श्री गोकरण जी ।।

दोहाः- राम नाम सुमिरन किहेन, पाठ भागवत कीन।
अन्त समय हरि पुर गयन, सुन्दर बैठक लीन।१।
कहैं गोकरण जौन कई, हरि से करिहै नेह।
ताकी जग में आय के, सुफल भई नर देह।२।

८१५ ।। श्री परिक्षित जी ।।

दोहाः- श्री शुकदेव कृपा करी दीन भागवत ज्ञान।
सातै दिन में होय गयो सुनिये मम कल्यान।१।

परनारायण पास मैं पहुँचि गयो हर्षाय।
आनन्द की तहँ हद्द नहिं कहैं परिक्षित गाय।२।

८१६ ।। श्री अशोक जी ।।

दोहा:- विद्यादान औ धर्म बहु जासे जो बनि जाय।
या संसार में आय के सो करि लेवे भाय।१।
कह अशोक नर तन सुफल ता को लीजै जान।
नाहीं तो भव सिन्धु से छूटव कठिन महान।२।

८१७ ।। श्री शिवाजी (मरहटा) ।।

शेर:- मै शिष्य स्वामी राम दास जी समर्थ का।
उपदेश मिल गया था मुझे परम अर्थ का।१।
कहता शिवा जी हरि भजन बिन तन यह ब्यर्थ का।
वादा किया गरभ में सुमिरन की शर्त का।२।

८१८ ।। श्री खेलावन दास जी ।।

पद:- झूँठ फुर कह के धन ठगते बनत ओझा कोई सोषा।
अन्त जमदूत जब घेरैं करैं भाला दृगन चोखा।
पकड़ि कर लै चलैं जम पुर धरा धन कहौ अब कोषा।
खेलावन दास कह भाई भजन बिन खावगे धोषा।४।

८१९ ।। श्री जियावन दास जी ।।

पद:- जियावन दास कह भाई लेव सतगुरु से चलि दिच्छा।
श्रवण औ नैन खुलि जावैं मिलै परमार्थ की भिच्छा।
दमन इन्द्रिन क खुब करिकै करो नित वीर्य्य की रच्छा।
ध्यान धुनि नूर लै पावो पास हो सातहू कच्छा।
राम सीता कि छबि सन्मुख रहै हरदम न कोइ इच्छा।
जियति में तै बिना कीन्हे देव मति और को सिच्छा।६।

दोहा:- नाम रूप जान्यो नहीं शिष्य करने में सूर।
झूँठे धन हित गुरू बने हैं वे पूरे कूर।१।
अन्त समै जमराज लै झोंकैं मुख धूरि।
कहैं जियावन दास फिर देंय नर्क में पूरि।२।

८२० ।। श्री मूला बाई जी ।।

पदः- बहिनों कहां लिखा बतलावो अपने कर्म धर्म को खोना।
भूषण बसन औ तन चिकनाउब शीरीं भरि भरि दोना।
कम कीमति के ज़ेवर कपड़े भावत नहीं अलोना।
अन्त समय जम भालन मारैं मुख इन्द्री तब टोना।
होस हवास जांय उड़ि सारे निकसै नेक न रोना।५।

छिन सुख लागि कल्प सत भोगेव आँसुन ते मुख धोना।
पल भरि कल वहँ पर नहि मिलती डारैं नर्क के कोना।
या से चेतो कहा मानि लो पाप बीज मति बोना।
हरि सुमिरन में तन मन अर्पौ छूटै भर्म क ढोना।
कर्म शुभा शुभ जरैं अगिनि में मिलै नाम क गोना।१०।

ध्यान प्रकाश समाधी होवै धुनि औ रूप सलोना।
होनहार बलवान टरै जब निज को लखौ किलोना।
सतगुरु करो जियति सब जानो पांच कि आंच नचोना।
सूरति शब्द क भेद जान लो कर से माल गहोना।
मूला कहैं अन्त हरि पुर हो गर्भ में फेरि पड़ोना।१५।

८२१ ।। श्री खलीला जी ।।

पदः- हर जगह हर दम रहैं सिय राम सब जन जानि लो।
मुरशिद करो फ़ौरेव का परदा हटै पहिचान लो।
परकाश ध्यान समाधि हो हरि नाम धुनि की तान लो।
संसार से होकर रिहा हरि पुर चलो बैठान लो।
संग की मूरति के सम हो फिर न कुछ जल पान लो।५।

राज मारग को गहौ मानो कहा यह ज्ञान लो।
हर समय देखो छटा तन मन से ताना तान लो।
देव मुनि खेलैं हंसै बोलैं जियत सुख खान लो।
कहती खलीला प्रेम में अब जान अपनी सान लो।९।

८२२ ।। श्री गफूरा जी ।।

पदः- यादगारी हर समय सरकार की करते रहो।
मुरशिद करो पावो पता सूरति शब्द मारग गहौ।
देखो छटा सिय राम की रसना से क्या फिर तुम कहौ।
ध्यान लय परकाश धुनि सुनि सुःख अनुपम नित लहौ।
दीनता औ प्रेम तब हो कटु बचन सब के सहौ।
कहती गफूरा मम बचन मानो अगर मुक्ती चहौ।६।

८२३ ।। श्री करीमा जी ।।

पदः- राम सीता कि छबि देखो क्या प्यारी है।
देखते हैं वही जिन तन मन वारी है।
ध्यान परकाश लय धुनि सुनै जारी है।
सांचे मुरशिद मिले उनकी बलिहारी है।४।

उन करम रेख पर मेख़ को मारी है।
दीनता प्रेम पाकर कपट टारी है।
जाल भव सिन्धु का यह बड़ा भारी है।
बिना सुमिरन करीमा कहैं ख्वारी है।८।

८२४ ।। श्री रहीमा जी ।।

पदः- राधिका श्याम की जोड़ी क्या वांकी है।
हर दम सन्मुख रहै जिन तन मन टांकी है।
ध्यान परकाश लय धुनि सुनै जाकी है।
सच्चे सतगुरु बिना भाग्य असकाकी है।४।

हल जियति में किया उनको क्या बाकी है।
काल मृत्यु उन्हें देखि कै थाकी है।
गर वह चाहैं उन्हें खेलैं जिमि हाकी है।
रहीमा कहैं उन करम ढांकी है।८।

८२५ ।। श्री दीन जी ।।

पदः- हरि नाम पर तन मन को जिसने कर दिया कुरबान है।
जग जाल से फुरसत मिली सोई बड़ा इन्सान है।

मुरशिद किया जिसने नहीं वह घूमता हैरान है।
शैतान तन में पांच जो मन को किये खपकान है।४।

जब तक दवा मिलती नहीं तब तक नहीं कछु ज्ञान हैं।
पहिचान जिसको हो गई फिर जान में भा जान है।
ध्यान लय परकाश पाकर सुन रहा धुनि तान है।
लखै हर दम राम सीता दीन कह नहिं शान है।८।

८२६ ।। श्री बुद्ध प्रकाश जी ।।

पदः- मसखरापन छोड़ि के तन मन कि की जिन एकता।
हर समय घनश्याम राधे की छटा सो देखता।
ध्यान धुनि लय नूर पाकर हो गया वह बेखता।
अनहद बजै बाजा मधुर संग राग होते रेख़ता।
हर जगह सब में रमें मुरशिद बिना है बे पता।
कहता है बुद्ध प्रकाश सुमिरन बिन बशर दुख झेलता।६।

८२७ ।। श्री हीरा दास जी ।।

पदः- चाल चितवन कन्हैया कि जग मोहैं।
मोर मुकुट कुण्डल मकरा कृत केशरि तिलक भाल सोहैं।
भूषन बसन पगन नूपुर धुनि बरनि सकै अस कवि को हैं।
मन्द हंसनि बोलन मृदु कोमल तन मन में सुनते पो हैं।४।

बाम भाग में राधे शोभित गले बांह मुख छबि जोहैं।
टेढ़े खड़े तीनि बल खाये मुरली अधर धरे तो हैं।
सतगुरु करो लखो नित झांकी परि पूरन सब में जो हैं।
हीरा दास कहैं हरि सुमिरौ अन्त में सो हरि पुर सोहै।८।

८२८ ।। श्री असगरी जान जी ।।

पदः- शुक्र हर दम करो यारों अबादा कर रहे कब का।
फ़ना फ़िल्ला जियत में हो वही सच्चा गदा रब का।
बड़े फौरेब का चक्कर जीव ता में पड़ा चभका।
बिना मुरशिद उठै कैसे दिनो दिन जात है दबका।४।

खुदी मेटै दुई छूटै आप में आप लखि चभका।
चोर तन के सभी वश हों रहे जो राति दिन धमका।
बशर तन पा करो सुमिरन नहीं हो सामना जम का।
असगरी कह सखुन मानो न हो ग़ाफिल अभी तड़का।८।

दोहाः- मुरशिद हमारे आला श्री रामानन्द स्वामी।
चेली बना संभाला कह असगरी नमामी।।

८२९ ।। श्री नीरू जी ।।

पदः- छटा सिय राम की हर दम मेरे सन्मुख रहे छाई।
दाहिने कर में सर सोहै बाम कर धनुष सुख दाई।
मन्द मुसक्यान मन मोहै मरी सब बासना भाई।
नाम की धुनि सदा होती रगन रोवन ते भन्नाई।४।

ध्यान परकाश लय होती जहां सुधि बुधि न कछु आई।
देव मुनि देत नित दर्शन कहैं हरि जस मधुर गाई।
बजै अनहद सुघर घट में बिना सतगुरु न लखि पाई।
कहैं नीरू निबृत्ति का मार्ग यह हमने बतलाई।८।

८३० ।। श्री नीमा जी ।।

पदः- रहैं हर दम मेरे सन्मुख में जोड़ी लाल मुनियां की।
छटा श्रृंगार छबि अनुपम मन्द मुसक्यान गुनियां की।
अधर पर हैं धरे मुरली सुरन तन मन हरनियां की।
गले में बांह दे राधे लखैं हरि मुख दृगनियां की।४।

करो सतगुरु भजो हरि को जगत जिन ताना तनियां की।
सुरति को शब्द पर धर कर सुनो धुनि नाम धुनियां की।
ध्यान परकाश लय पाओ जहां सुधि बुधि भुलनियां की।
कहैं नीमा तभी भाई छुटैगी सीत दुनियां की।८।

८३१ ।। श्री बेगा जी ।।

पदः- बिना सतगुरु के निज घर की मिलत यारों न गल्ली है।
डूबि मंझधार में जावो जहां किश्ती न बल्ली है।

मिला हरि नाम धन जिनको उन्हीं को तो तसल्ली है।
करै दीदार वह हरदम कहै बेगा न पल्ली है।४।

८३२ ।। श्री झाऊ जी ।।

पदः- श्री सरजू के तट जावो लखो कैसा नज़ारा है।
बहै निर्मल परम पावन पाप मोचन कि धारा है।
प्रेम तन मन लगा मञ्जन करै एक बार तारा है।
होय निर्मल कहैं जाऊ वही हरि का दुलारा है।४।

८३३ ।। श्री झीटा जी ।।

पदः- श्री सरजू श्री सरजू श्री सरजू के तट जावो।
वहां बैठो वहां बैठो वहां बैठो तो सुख पावो।
दृगन मूंदौ दृगन मूंदौ दृगन मूंदो पता पावो।
मिलैं सुर मुनि मिलैं सुर मुनि मिलैं सुर मुनि तो हर्षावो।
नहा करके नहा करके नहा करके चले आवो।
बतावो क्या बतावो क्या बतावो क्या औ मुसक्यावो।६।

कपट त्यागो कपट त्यागो कपट त्यागो तो बनि जावो।
बहै धारा बहै धारा बहै धारा पय लखि पावो।
पुरी दर्शै पुरी दर्शै पुरी दर्शै तो गुन गावो।
सदा सन्मुख सदा सन्मुख सदा सन्मुख दरश पावो।
करो सतगुरु करो सतगुरु करो सतगुरु न पछितावो।
कहैं झीटा कहैं झीटा कहैं झीटा तन मन लावो।१२।

८३४ ।। श्री चमेली जान जी ।।

पदः- लखौ सिय राम राधे श्याम लछिमी बिष्णु छबि छाई।
नहीं तिल भर जगह खाली कहीं हमने सुनो पाई।
नाम जपने की बिधि सतगुरु कृपा कर दीन बतलाई।
धुनी औ ध्यान लय रोशन मिला अभ्यास की भाई।४।

धुनी अनहद कि क्या प्यारी बजै आनन्द सुख दाई।
मस्त सुनि सुनि के तन मन है वरनने में नहीं आई।

कृपा सुर मुनि करैं ऐसी मिलैं प्रति दिन लिपटि धाई।
चमेली जान की अरज़ी करैं सुमिरन सो बनि जाई।८।

दोहाः- चेली रामानन्द जी, कीन्हीं जब से मोहिं।
कहैं चमेली जान मोहिं हर दम आनन्द होहिं।।

८३५ ।। श्री इमामन जी ।।

पदः- दीदार हरि क कीजे कैसी करैं निगाहैं।
जो भक्त हरि के प्यारे उनके बचन निबाहैं।
हर वक्त देते दर्शन तन मन से उनको चाहैं।
हैं प्रेम से वह मिलते वैसे तो हर जगह हैं।
तब खेल आप करते वे समुझ को अथाह हैं।
मुरशिद बिना इमामन कहती न मिलती राह है।६।

८३६ ।। श्री सकूना जी ।।

पदः- भजन बिन बिरथा मानुष देह।
मातु पिता भ्राता सुत बनिता और पुर धन निज गेह।
मैथुन निद्रा जल भोजन करि भूले हरि से नेह।
जिस तन में तू हम हम बोलत सो जरि ह्वै है खेह।४।

यह सुख छिन में उपजत बिनसत जिमि अकाश में मेह।
बिरथा उमर गपाष्टक में गई तुझ से नीकी रेह।
ध्यान प्रकाश धुनी लय कर तू तै कर अपना गेह।
कहैं सकूना श्री सतगुरु करि करु सांचा असनेह।८।

दोहाः- सतगुरु रामानन्द मोहिं जप बिधि दीन बताय।
रोम रोम ते नाम धुनि राम सिया दरशाय।१।
सुर मुनि सब के दरश हों को करि सकै शुमार।
कहैं सकूना गुरु चरन बार बार बलिहार।२।

८३७ ।। श्री सहूरन जी ।।

पदः- मुझे मादर पिदर सौहर पिसर से कुछ न मतलब है।
शरन मुरशिद की चलि सुमिरन कि बिधि सिखने से मतलब है।

ध्यान परकाश लय औ धुनि मिलै सुनने से मतलब है।
बशर तन पाके मति चूकै भजन करने से मतलब है।४।

दीनता सत्य के मारग पै पग धरने से मतलब है।
सदा घनश्याम राधे की छटा लखने से मतलब है।
सहूरन कह जगत जंजाल को तजने से मतलब है।
छोड़ि तन चढ़ि सिंहासन हरि के पुर चलने से मतलब है।८।

८३८ ।। श्री हरि वंश जी ।।

पदः- पर नारिन को ताकैं अधम कपटी।
काम भुजंग कहा नहि मानत तन मन कर दीन्ह्यो खपटी।
बिना दबाव असिल नहिं काटत कमसिल जात तुरत लपटी।
बिना अस्त्र के बस न चलत कछु कौन भांति वाको डपटी।४।

या के काटे मरि मरि जावै सब के तन बैठा छपटी।
चंचल नारि बड़ी है या की मानत नहिं नेकौ नकटी।
निज बहिनिन के तन मन फेरै पल लागत लेवै झपटी।
राति दिवस एकौ नहिं मानत लखते चट जावै चपटी।८।

८३९ ।। श्री बाले मियां जी ।।

पदः- श्री अवध में अवधेश ग्रह अवधेश अवधि पै आ गये।
श्री भरथ लखन औ शत्रुहन संग सुजस जग बरसा गये।
धरनी का भार उतारि के सुर मुनि को सुख उपजा गये।
असुरन को मारि के बिष्णु पर दाया के निधि बैठा गये।४।

गाते हैं हम सब चरित उनका और होकर गा गये।
ऐसै यह खेल लगा रहै पढ़ि सुनि के बहु लिखवा गये।
प्रेम तन मन से लगै पल भर में सन्मुख छा गये।
बाले कहैं सुमिरन किया ते मुक्ति भक्ती पा गये।८।

८४० ।। श्री पुन्नू जी ।।

पदः- करो सतगुरु तजो खट पट भजो हरि को सुनो मेरी।
रमे सब में मिलैं चट पट प्रेम करने कि है देरी।

मोह माया के चक्कर में पड़े सुधि छोड़ घर केरी।
अन्त में होयगा दोज़ख पड़ै पग अहिनी बेरी।४।

घोर अन्ध्यार नहिं सूझै दूत चारों तरफ़ घेरी।
जान पर हर समय आफ़त मरम्मत होय खुब तेरी।
सुरति को शब्द पर धरि कै सुनो जब नाम की भेरी।
कहैं पुन्नू कहा मानो तो फिर जग में न हो फेरी।८।

८४१ ।। श्री सती जी ।।

पदः- सती कहती मती मन की बिना सतगुरु के नहिं सुधरै।
इसी कारण से नर नारी जन्म चक्कर से नहिं उबरै।
झमेला बासनाओं का संग मन के सदा घुमरै।
लगै जब शब्द पर सूरति तो सब असुरन खिमा उखरै।
ध्यान धुनि नूर लय पाकर के फिर जग में नहिं हुँकरै।
रूप अनुपम रहै सन्मुख छकैं छबि दृग लखैं मुखरै।६।

८४२ ।। श्री शायर जी ।।

पदः- बिना सुमिरन के दोज़ख में पड़ैगा बे हया सुन ले।
वहां दुख नित नये कलपौं सड़ैगा नहि दया सुन ले।
जवानी के नशे का रंग चढ़ा तुझ को नया सुनले।
इसी से पाप करने में नहीं तुझको हया सुनले।४।

अन्त जमदूत घेरेंगे करैगा क्या बयां सुन ले।
निकालैंगे तेरा जब दम कौन किसका भया सुनले।
संग नेकी बदी जावै न तीसर कोउ गया सुनले।
करो मुरशिद लगै तन मन कहैं शायर दया सुनले।८।

८४३ ।। श्री पीरी जी ।।

पदः- घरवार ऐशो निशात छोड़ा सिय राम हित जिन लेली फ़कीरी।
मिलैंगे उनको दिलों से दिल भर चखै वह अनुपम अमीं कि शीरीं।
हुइ रिहाई जहां से उनको लगैगी अब फिर कभी न फेरी।
बगैर मुरशिद न दस्त आते सखुन यह सच्चे सुनाती पीरी।४।

शेरः- छानो न खाक बन बन पासै में हैं तुम्हारे।
कहती है पीरी सिय हरि प्राणों के प्राण प्यारे।।

८४४ ।। श्री निकम्मा जी ।।

पदः- आबे रवां के सम हो धुलि जाय तन मन भाई।
मुरशिद करै औ नम हो सो हरि हिये में पाई।
धुनि रोम रोम होगी हर शय से भनभनाई।
लय ध्यान नूर पाकर मस्ती में बड़ बड़ाई।
सिय राम हर दम सन्मुख लखि लखि के मुस्किराई।
कहती निकम्मा तब वह फिर निज वतन को जाई।६।

शेरः- बरखुरदार नूर चशम राहत जान हरि के हो।
तन मन व प्रेम से अगर कुरबान हरि पै हो।१।
मुरशिद कि खिदमत कर लो दिल जान भर के हो।
कहति निकम्मा चेतो महिमान जग के हो।२।

८४५ ।। श्री सुरजू दास जी ।।

पदः- अरज़ी सतगुरु हेरि के दीजै यारों चोरन सब धन लूटा।
तप धन बिना बसर कहुँ नाहीं मुख ठोकैं जम खूँटा।
सुमिरन कि बिधि जानि जाओगे परै न कबहूँ टूटा।
ध्यान धुनि नूर लय को पावो रूप सामने जूटा।४।
सुर मुनि सब नित दर्शन देवैं भरम क भाण्डा फूटा।
तिनकी समझौ मंगल कारी करम रेख का घूँटा।
सूरजदास कहैं या बिधि ते जिन चोरन कसि कूटा।
आवागमन क काम रहै नहि जगत से नाता छूटा।८।

८४६ ।। श्री भवानी दीन जी ।।

पदः- अबहीं सवेरा भजो मन हरि को।
कर मींजौ पछिताव अन्त में जब जमदूत करैं भठभेरा
भजो मन हरि को।
प्राण लिहे बिन छोड़ै नाहीं रहि रहि देवैं दुःख घनेरा
भजो मन हरि को।

केश पकरि कढ़िलावत लै चलैं सांटिन के तन परिहै बरेरा
भजो मन हरि को।४।

लै इजलास पै हाजिर करिहैं क्या बतलैहौ देंय दरेरा
भजो मन हरि को।
चारों तरफ़ से घेरि के पीटैं आंखें लाली भौंह तरेरा
भजो मन हरि को।
हाथ पांव गहि नर्क में छोड़ैं सूझत नहिं तहं घोर अंधेरा
भजो मन हरि को।
कहत भवानी दीन दोउ कर जोरे करु सतगुरु हरि पुर मिलै डेरा
भजो मन हरि को।८।

शेरः- जिस फूल में खुशबू नहीं उस पर न मधुकर जायगा।
कहता भवानी दीन जहं पर महक वह सुख पायगा।।

८४७ ।। श्री भूषन शाह जी ।।

पदः- जब सूरति शब्द में लागि जाय तब तार न टूटै हो बाबा।
जब ध्यान प्रकाश समाधी हो तब द्वैत न लूटै हो बाबा।
जब सन्मुख राम सिया दर्शै तब प्रेम न छूटै हो बाबा।
जब सतगुरु से उपदेश मिला तब हरि पुर जूटै हो बाबा।४।

८४८ ।। श्री रामा बाई जी ।।

पदः- करो सतगुरु खुलै खिड़की, होय झांकी सिया हरि की।
बनै बैठे हो क्यों नरकी याद कीजै तो निज घर की।
ध्यान धुनि नूर लय सरकी, वही भव सिन्धु से टरकी।
जौन इस रंग में परकी, वही उपदेश दै तरकी।४।

चलैं जहँ नाम की फिरकी, जाय मन फिर कहां फरकी।
जहां में आय सो मरकी, फ़िक्र जिस को न इस जर की।
याद हर दम करो हरि की, मिटै भय नर्क के दर की।
प्रेम तन मन में जेहि छरकी, सो हो पितु मातु की लड़की।८।

८४९ ।। श्री उजीरा जी ।।

पदः- मुशकिल परै भजन बिन बहिनों अन्त में दूत करैं हैरान।
सब तन लोह कि सांटिन पीटैं लेवैं काढ़ि परान।
लै कर चलैं करैं तहं हाजिर जहँ इजलास क थान।
पेशी होय बताय सकौ क्या लखते सूखै जान।
हुकुम देंय जम करैं मरम्मत मुरछा होय महान।५।

फेरि बांधि कै नर्क में डारैं जहँ पर दुख की खान।
हर दम मारैं औ गरिआवैं नेकौ सुनै न कान।
आंखैं नाक कान मुख भरदें शीश औट के जान।
मजा कि सजा वहां पर यह है मन मति यह बौरान।
भोग करत में मन एकाग्र ह्वै जात वही सुख मान।१०।

पर पति संग क पाप लगै असि जिमि पकड़ैं शैतान।
बुद्धि भृष्ट ह्वै जाय वीर्य्य बल रहै न शर्म ठेकान।
ऊंच नीच कछु सूझि परै नहिं काम क साल्यो बान।
सतगुरु करो भजो निशि बासर पावो कृपा निधान।
जियतै मरै मुक्त सो होवै तब भक्ती ठहरान।
कहैं उजीरा अन्त में हरि पुर जावै बैठि बिमान।१६।

८५० ।। श्री कारी जी ।।

शेरः- कारी कहैं सुमिरन बिना पढ़ना व लिखना झूठ है।
इस से रिहाई हो नहीं यह तो जहां की मूठ है।।

८५१ ।। श्री काजी जी ।।

शेरः- काजी कहैं माजी सोई जिसने न रब की याद की।
दुनिया कि ऐश अराम में सब ज़िन्दगी बरबाद की।।

८५२ ।। श्री कुतुब जी ।।

शेरः- कहते कुतुब कुत्ते बने चारौं तरफ़ भूकत फिरैं।
चुप मारि कर हर वक्त रब की याद गारी नहिं करैं।।

८५३ ।। श्री पीर जी ।।

शेरः- पीर कह पर पीर को हरि लेंय सोई पीर हैं।
उनकी शरीकत को करै हर दम खुदा के तीर हैं।।

८५४ ।। श्री बुद्धनि जी ।।

पदः- बचन कहौं तस काटि देंय कुलटा कलि में बहु मेहरिया।
सास ससुर पति जेठ न मानै ननंद बनावैं चेअरिया।
देवर को लातन से मारैं यारन संग सोवैं सेजरिया।
करि सिंगार बैठि देहरी पर खोल देत दोउ केंवरिया।
उठि कै गलिन गलिन फिरि आवैं निर्भय मानो केहरिया।।
बिषय की शौक शर्म नहि नेकौं पाप कि नाक में बे सरिया।६।

बड़ी मुलायम खांय मिठाई मुख जिमि लागै लेवरिया।
अन्त समय जम भालन मारैं बांधि के लोह कि जेवरिया।
पकड़ि केश कढ़िलावत चलि दें छूटि जाय सब टेंवरिया।
नाना कष्ट देंय मारग में पटकैं जैसे नेवरिया।
सतगुरु बिना नर्क दुख भोगैं ज्ञान पै लागी सेहरिया।
बुद्धनि कहैं भजै जे हरि को पार होहि लै खेवरिया।१२।

८५५ ।। श्री घाघ जी ।।

पदः- पुरुष संग पुरुष जे भकुवा घाघ कह भोग करते हैं।
वही फिर तीस कल्पों तक नर्क में जाय सड़ते हैं।
लोह की सींक लाली करके जम इन्द्रिन में भरते हैं।
हाय रे हाय चिल्लावैं दृगन से आँसू चलते हैं।
उठैं बैठैं गिरैं लोटैं सहैं दुख पर न मरते हैं।५।

भोग हित क्या बने तन हैं कटैं औ फेरि जुरते हैं।
कहीं लिक्खा नहीं ऐसा शास्त्र पढ़ते औ सुनते हैं।
बने पापिष्ट भीतर से ऊपरी ज्ञान कथते हैं।
बसन मीठा बहुत बढ़िया शिशुन दै बस में करते हैं।
सयाने होंय जब बालक उसी मारग में रमते हैं।१०।

बुरी संगत क फल यह है दिनो दिन नीचे गिरते हैं।
अगर कोई जो समुझावै तो फिर उस से अकड़ते हैं।
पांच चोरों के संगी बन रात दिन जूते सहते हैं।
कहां से सुख मिलै उनको जे सतगुरु पग न गहते हैं।
चेत करके करैं सुमिरन तो फिर जलदी संभरते हैं।
जियति में प्राप्ति सब होवै अन्त हरि पुर ठहरते हैं।१६।

८५६ ।। श्री कामिल शाह जी ।।

शेरः- आहिनी न खुद बन जावो करो मुरशिद चलो नमके।
मिलै संसार से फुरसत डरैं सब दूत गण जम के।
ध्यान धुनि नूर लय पावो रूप सन्मुख सदा चमके।
बजै अनहद सुघर घट में सुनो क्या ताल स्वर चमके।
कहैं कामिल नाम की याद में हर दम रहौ रमके।
नहीं तो छूटना मुश्किल मोह माया पकड़ि धमके।६।

पदः- हरि सुमिरन बिन सुख नहीं ग़म का पहरा लाग।
कामिल कहैं सुनाय अब कहाँ जाओगे भाग।।

पदः- तन मन प्रेम ते ह्वै कर गरजी। सतगुरु ढूंढ़ि लगाओ अरजी।।
चोर रहे जो तुम संग तरजी। सुनि हरि नाम भगैं भर भर जी।।
गर्भ बास की कौल के करज़ी। सुमिरन करो नहीं हो फ़रजी।।
या से तुम्हैं रहेन हम बरजी। कामिल कहैं करो जस मरजी।८।

हिमा सोखतन सब बनो हर दम हो दीदार।
सुर मुनि करैं तवाफ़ नित कामिल कहैं पुकार।।

८५७ ।। श्री अवधेश जी ।।

पदः- भजन हित क्या मिला नर तन इसे बिरथा न खोना जी।
नहीं तो दुःख ही दुःख हो पड़ै दोज़क में रोना जी।
हवस दुनियावी जब तक है तभी तक तो है सोना जी।
मिलै जब नाम का तोषा तो क्या लोना अलोना जी।
ध्यान लै नूर में मातै रूप सन्मुख सलोना जी।
कहैं अवधेश फिर उसको कभी लागै न टोना जी।६।

८५८ ।। श्री लाल बिहारी जी ।।

पदः- किसने सिखाया कृष्ण को यह जक्त बनाना।
चौरासी लक्ष योनि बना सब में समाना।
सब की फिकिर हमेशा देते आब औ दाना।
सब से बिलग भी रहते हैं गाते भि हैं गाना।४।

नचते हैं आप भी सखा सखियों को नचाना।
सुर मुनि हमेशा जपते करैं अस्तुती ध्याना।
नहिं आदि मध्य अन्त किसी ने कभी जाना।
तन मन से प्रेम दो लगा सन्मुख में दिखाना।८।

८५९ ।। श्री बांके लाल जी ।।

शेरः- किसने बताया कृष्ण तुम्हें बंशी बजाना।
क्या मधुर मधुर तान सुना सब को लुभाना।
फिर मन्द मन्द मुस्करा के अबरू फिराना।
झुकि झूमि झूमि नाचि नाचि नूपुर सुनाना।
माखन दही औ दूध लूटि सब को हराना।
संग ग्वाल बाल पाय आप फेरि मिलाना।६।

तुम से किसी क प्यारे चलता न बहाना।
जसुदा के पास जांय देन सखी ओरहना।
सब के बचन को काटि देत ग्यान निधाना।
सुर मुनि भजैं तुम्हैं सदा हौ सब में महाना।
सब आप ही क खेल है बे जाने भुलाना।
सतगुरु बिना मिलै नहीं निज घर क ठेकाना।१२।

८६० ।। श्री औलिया जी ।।

पदः- सुखी बनना अगर चाहो करो हरि नाम का सुमिरन।
मिलो मुरशिद से जा कर के बतावैं बिधि लगै तन मन।
होहु गड़काप मस्ती में लखौ गुंचा अजब गुलसन।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर चखो अमृत रहा जो छन।४।

सुनो अनहद बजै घट में मधुर धुनि संग जावो सन।
राग स्वर ताल सम होते करो कैसे उन्हें बरनन।
रहै सन्मुख सदा झाँकी राधिका श्याम आनन्द घन।
दीनता प्रेम जब आवै औलिया कहे मिलै यह धन।८।

८६१ ।। श्री हाफ़िज जी ।।

पदः- हंसि हंसि के कन्हैया झमकि नाचत।
सखा सखिनि के मध्य प्रिया संग मुरली अधर धरे राजत।
कछनी में मुरली को खोंसत भाव बताय प्रेम पागत।
सखी सखन के मुख चट चूमत कूदत गिरत उठत भाजत।४।

कर से कर पकरत बहु तन धरि लखि रति काम छिपत लाजत।
सुर मुनि चढ़े बिमानन निरखैं जै जै कार कि धुनि गाजत।
यह गति नाचत गावत कोई साज साथ में सब बाजत।
हाफ़िज कहैं करै जब मुरशिद तब लखि तन मन जिय जागत।८।

८६२ ।। श्री मुल्ला जी ।।

पदः- एक दिन करिहैं प्राण पयान यहां नहि कोई अंड़े।
तब तो चलिहै तन असमसान रहैं सब ठाठ पड़े।
पिता माता भ्रात सुत नारि मित्र नातेदार खड़े।
सब स्वार्थ हेतु रहे रोय नीर नैनन से झड़े।
चित चेतत हौ क्यों नाहिं बनत जग आनि बड़े।५।

अब तुमरी बदि कहौ कौन जंग दूतन से लड़े।
लै गहि इजलास पै जाय मिलै तहं दुःख कड़े।
फिर नर्क में छोड़ैं धाय भरे बहु हौज सड़े।
जहँ ऊपर को हैं पैर शीश नीचे हैं गड़े।
मुल्ला सब से कहत सुनाय भजन बिन जैहौ जड़े।१०।

८६३ ।। श्री मौलवी जी ।।

पदः- मौलवी कह सबक पढ़ लो लखौ चौदह तबक जलदी।
ज़िन्दगी का भरोसा क्या न मालुम किस समय चलदी।

मारि जमदूत तन तूरैं लगावै कौन तब हल्दी।
बोल मुख से नहीं फूटै जाय नहि संग कोइ वल्दी।४।

८६४ ।। श्री बिटाना माई जी ।।

पदः- बहुत तुम सताते सखिन को हौ लाला।
दही दूध माखन को खाते हो आला।
लिये ग्वाल संग में करैं क्या ववाला।
इसी के लिये हमने तुम को है पाला।
दिवस के हौ डाकू निशा चोर चाला।५।
शिकायत से मेरा मगज सूखा छाला।
सबी वस्तु निज घर तेरा देखा भाला।
शरारत लिखा बिधि ने क्या तेरे भाला।
बिटाना कहैं मातु कहती हैं लाला।
कहा मानो बृज की दुखी सब हैं बाला।१०।

८६५ ।। श्री भगाना बाई जी ।।

पदः- मिला दो श्याम से उधो अगर तुम उनके संघाती।
सिखाने योग क्या आये यहां सब हरि के रंग माती।
अन्न जल सब ने है छोड़ा नींद नेकौ नहीं आती।
बियोगा अग्नि से हम सब जलैं कोइ बात नहिं भाती।४।
दृगन से हर समय आँसू चलैं फटती नहीं छाती।
गये जब से हैं जीवन धन नहीं भेजी कोई पाती।
चलैं सब द्वारिका जी को साथ तुमरे गहै लाती।
भगाना कह न दें दर्शन तो सब तन त्यागने जातीं।८।

८६६ ।। श्री मैनका जी ।।

पदः- बांकी चितवन तेरी दिलदार क्यों फिरता गलियों में।
सिर पर क्रीट श्रवन दोउ कुँडल भूषन बसन संवार।
क्यों फिरता गलियों में०।।
श्यामल गात तिलक केशरि को मुरली कर में धार।
क्यों फिरता गलियों में०।।

पगन में नूपुर छम छम बाजत चाल जगत से न्यार।
क्यों फिरता गलियों में०।४।

शीतल मन्द सुगन्ध पवन क्या तन मन लखि मतवार।
क्यों फिरता गलियों में०।।

अब नहिं जान देहुँ कहुँ अंतै प्राण के प्राण हमार।
क्यों फिरता गलियों में०।।

कहैं मैनका प्यार करूँगी दोनो कर गले डार।
क्यों फिरता गलियों में०।।

सब जग पालन नन्द के लालन चरन कमल बलिहार।
क्यों फिरता गलियों में०।८।

८६७ ।। श्री उर्वशी जी ।।

पदः- कफ़े दस्तौं से क्या रुकसार हरि के छूने काबिल हैं।
नहीं कोइ देव मुनि ऐसे मेरे लखने में काबिल हैं।
बलायें जिनको मिल जायें वही दुनियां में काबिल हैं।
मादर फादर पिसर सौहर फंसा लेने में काबिल हैं।
अन्त हरि नाम ही भव से छुटा देने में काबिल हैं।
ऊर्वशी कह बसे सब में औ सब से बिलग काबिल हैं।६।

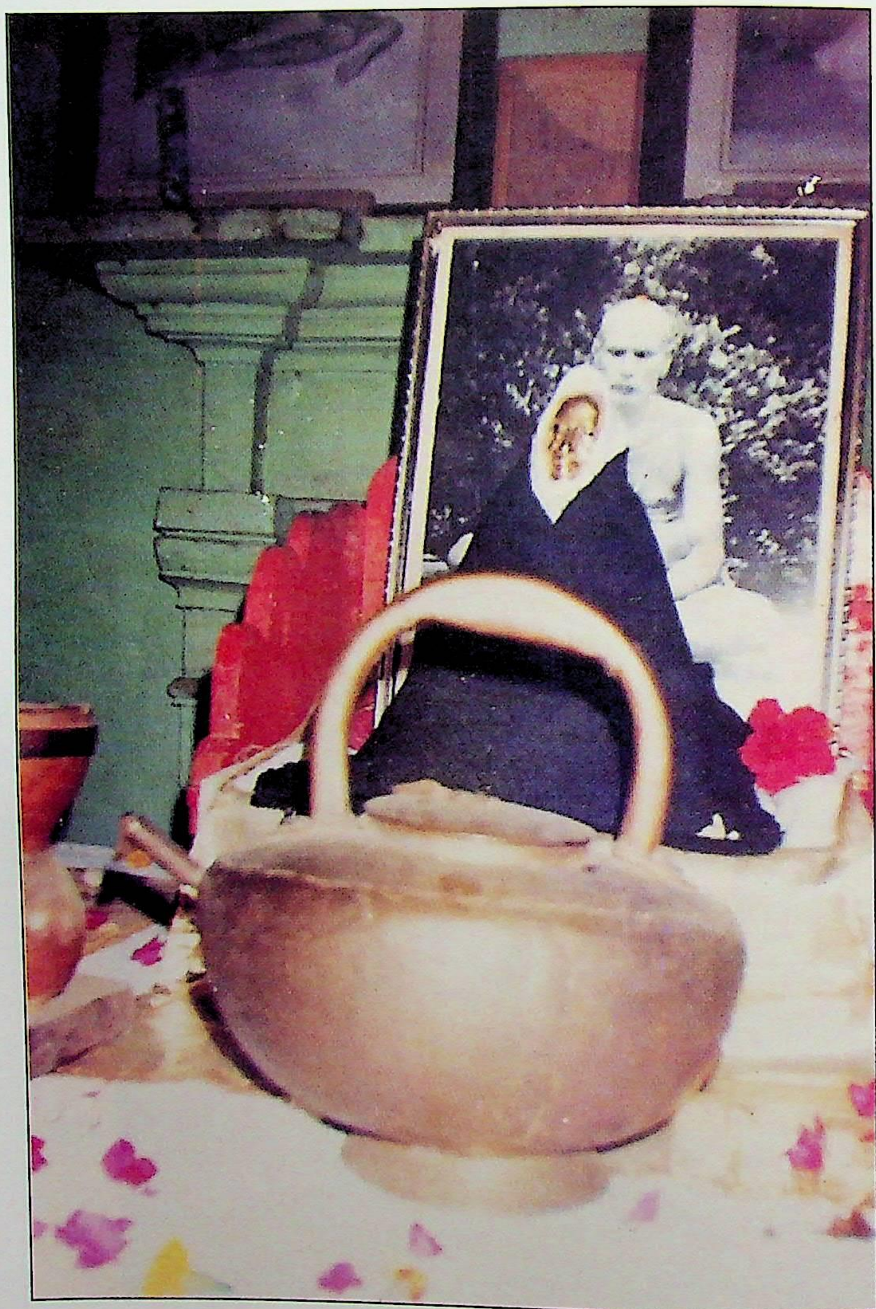
८६८ ।। श्री ललिया बाई जी ।।

पदः- न शब को कल न दिन को कल जे हरि से बिमुख हैं छलिया।
अन्त दोज़क पकड़ जावैं दूत तहँ खाल लें खलिया।
वहाँ कछु बोलि नहिं पैहैं यहाँ बनते बड़े बलिया।
बदन सारा है तर खूँ से टँगे उलटे नहीं थलिया।४।

काट फिर मास को सब खायें जम जैसे बनी कलिया।
पूरि तन फेरि चट जावैं महा दुख हर समय सलिया।
करै मुरशिद पता पावै तो धुनि परकाश लै चलिया।
सामने राम सीता की छटा हर दम कहैं ललिया।८।



बजरंग भवन, अयोध्या, में श्री गुरुदेव का महानिर्वाण स्थल।



बजरंग भवन, अयोध्या, में श्री गुरुदेव के
महानिर्वाण स्थल पर उनकी
लघु-मूर्ति व चित्र।

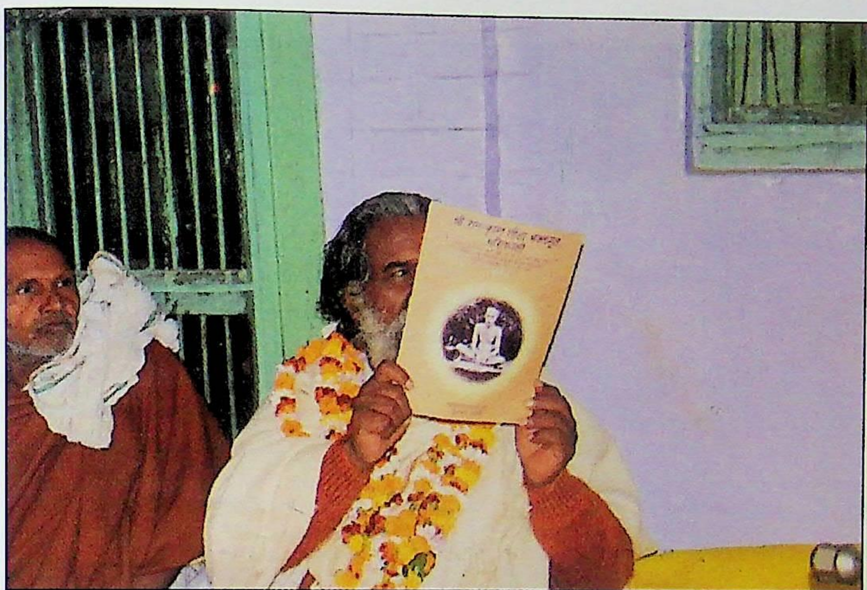


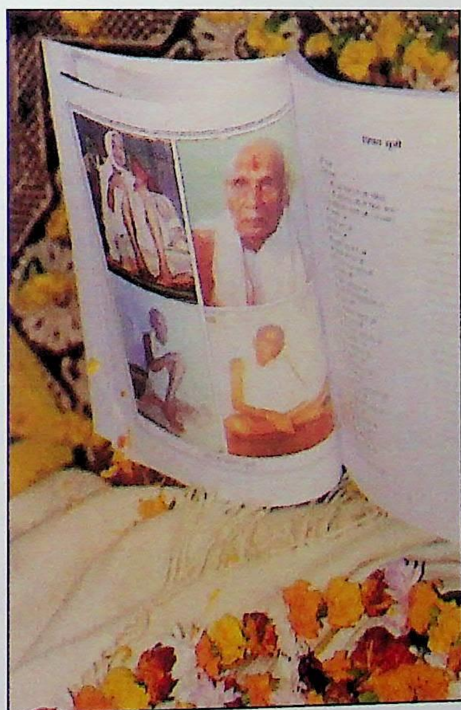


गोकुल भवन आश्रम में गुरुदेव की
मूर्ति व स्मृति प्रतीक।



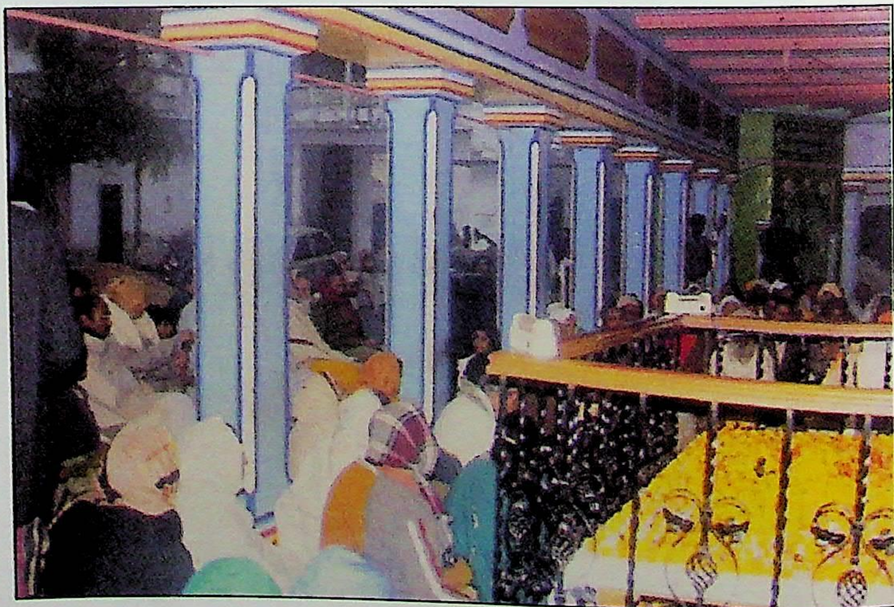
श्री गुरु-चरण कमल।



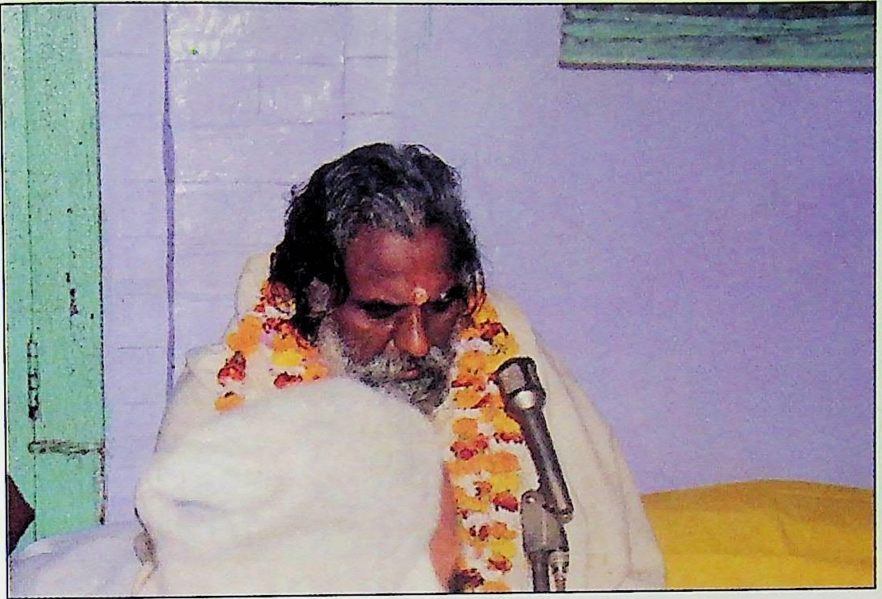


श्री परमहंस राममंगलदास जी द्वारा रचित प्रथम दिव्य ग्रन्थ
''श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली'' के प्रथम भाग
का विमोचन करते हुये श्रद्धेय संत श्री नृत्यगोपाल दास जी।
(31 दिसम्बर, 1999)





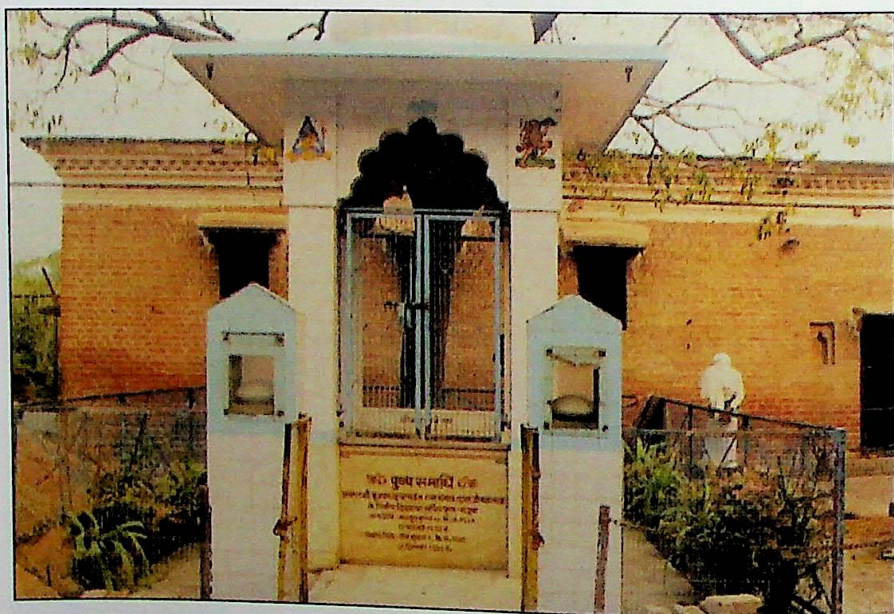
प्रथम दिव्य ग्रन्थ के विमोचन के समय पर
श्री गुरुदेव के तखत की सजावट।





गोकुल भवन में प्रथम दिव्य ग्रन्थ के विमोचन के अवसर पर प्रवचन करते श्रद्धेय श्री नृत्यगोपालदास जी (ऊपर) तथा श्रद्धेय श्री रामसेवकदास जी (नीचे)।





श्री गुरुदेव की पुष्प समाधि गोकुल भवन आश्रम के प्रांगण में।
कुछ वर्ष पूर्व रात्रि का दृश्य (ऊपर) तथा वर्तमान में
दिन का दृश्य (नीचे)।

८६९ ।। श्री भागू जी ।।

पदः- लगावो भजन में तबियत पढ़ि व सुनि यार थोड़ी सी।
रहौ करते जमा पूँजी यों ही हर बार थोड़ी सी।
समय जाने न दो नेकौ मुफ्त बेकार थोड़ी सी।
करौ मुरशिद कहैं भागू ज़िन्दगी यार थोड़ी सी।४।

८७० ।। श्री बादशाह हुसेन जी ।।

पदः- जो तन मन प्रेम से आशिक उसे माशूक मिलता है।
बिना आबे रवाँ गुलशन कभी कुम्हला न खिलता है।
जुदा रहता है जो रब से उसे सय्याद छलता है।
अन्त में जाय कर दोज़ख में मुस्कें बांधि ढिलता है।
जो मुरशिद करके इस कूचे में होकर दीन पिलता है।
कहैं बादशाह हुसेन यारों न वह फिर नेक हिलता है।६।

८७१ ।। श्री रमेश जी ।।

पदः- तन मन से लौ जिसकी लगै उसको मिलैं हरि राति दिन।
धुनि ध्यान लै परकाश पावै एक रस वह राति दिन।
सन्मुख रहैं वाँकी छटा दिल में सटी वह राति दिन।
सुर मुनि करैं बातैं न छोड़ैं साथ उसका राति दिन।
सतगुरु करो पावो गली काहे भटकते राति दिन।
अन्त में साकेत लो जहँ कह रमेश न राति दिन।६।

दोहाः- महा प्रकाश अखण्ड है सतगुरु दीन लखाय।
कह रमेश सो जानियै जाकी द्वैत बिलाय।।

८७२ ।। श्री नियाज़ अली जी ।।

दोहाः- कहन के पण्डित और हैं, करन के पण्डित और।
करन के पण्डित मौर हैं, कहन के पण्डित कौर।१।
सतगुरु बिन हरि नहिं मिलैं चलै न एको गौर।
भटकि भटकि जन्मो मरो लगी रहै यह दौर।२।
तन मन प्रेम कि एकता करिके ढोरों चौंर।
नियाज़ अली कह भाइयों तब छूटे भव लौर।३।

८७३ ।। श्री काज़िम हुसेन जी ।।

पदः- मार्ग मुरशिद से जान लो तो खुदा खैर करै।
करिके परतीति मान लो तो खुदा खैर करै।
नाम का ताना तान लो तो खुदा खैर करै।
नूर लै धुनि औ ध्यान लो तो खुदा खैर करै।४।

रूप सब सुख कि खान लो तो खुदा खैर करै।
प्रेम में तन मन सान लो तो खुदा खैर करै।
अन्त हरि पुर में थान लो तो खुदा खैर करै।
जियति यह छानि ज्ञान लो तो खुदा खैर करै।८।

८७४ ।। श्री नियाज़ हुसेन जी ।।

पदः- ज़िन्दगी का भरोसा क्या भजन हरि का करो दादा।
न मानो अन्त हो दोज़क पड़े कल्पों सड़ौ दादा।
करो मुरशिद मिलै कूचा जियति ही भव तरौ दादा।
ध्यान धुनि नूर लै पावो रूप सन्मुख खड़ो दादा।४।

देव मुनि आय दें दर्शन प्रेम सब से करो दादा।
एकता होय तन मन की तो फिर क्यों कर गिरो दादा।
जहां में जब तलक रहिये दीन लखि दुख हरौ दादा।
सदा निर्बैर औ निर्भय नाम रस्सी बरौ दादा।८।

शेरः- अरमान बांधने से नहीं काम सरैगा।
मानो कहा नहीं तो इलज़ाम लगैगा।१।
मुरशिद के कदम चूमौ दिलदार मिलैगा।
तन मन औ प्रेम एक हो सो जियति मरैगा।२।

८७५ ।। श्री शिव रानी जी ।।

पदः- परजा को जो सतावै राजा नहीं वह मनियां।
जो बचन कहके पलटै वह नर नहीं है धनियां।
जो जियति नहीं लखावै वह गुरु नहीं है बनियां।
हरि नाम जो न जानै सो नर्क जाय सनियां।४।

हरि नाम में हमेशा जिसकी लगी लगनियां।
उसका हो पार बेड़ा जग में वही है गुनियां।
धुनि ध्यान नूर लै हो श्री राम सीता रनियां।
साकेत अन्त जावै कहती बचन शिव रनियां।८।

८७६ ।। श्री सुरेश जी ।।

दोहाः- अच्छे बुरे जो शब्द हैं, दुख सुख सब को होय।
या से सोचि बिचारि कै बचन कहौ नर लोय।१।
शंका निःशंका भई सतगुरु दीन्ह्यो ज्ञान।
ध्यान धुनी परकाश लै, सन्मुख कृपा निधान।२।
कह सुरेश हरि को भजौ तन पायो यहि हेतु।
भव सागर के तरन हित है यह सच्चा सेतु।३।

पदः- बटोही बाट तै कर लो नहीं तो दुःख हो भाई।
जहां से तुम यहां आये वहीं को फिर चलो भाई।
मार्ग सतगुरु से बिन जाने खाव चक्कर यहीं भाई।
अन्त में नर्क को लै जांय जम के दूत कसि भाई।
मार तहँ हर समै परती एक पल कल न दें भाई।
कहैं तुम नाम नहि जाना सड़ौ कल्पों यहां भाई।६।

अभी चेतो कहा मानो गहौ सतगुरु चरन भाई।
मिलै धुनि ध्यान लै रोशन रूप सन्मुख में हो भाई।
देव मुनि हित करैं तुम से मिलैं हंस कर लिपटि भाई।
सुनावैं हरि चरित अनुपम मगन तन मन से ह्वै भाई।
रहौ आनन्द में हर दम बयां क्या तब करौ भाई।
सुरेश यह सत्य कहता है अन्त हरि पुर चलौ भाई।१२।

८७७ ।। श्री दिनेश जी ।।

पदः- मुरशिद करो धुनि ध्यान लो लै नूर ख्वदा का।
हर वक्त रूप सन्मुख मस्तानी अदा का।
कटि जाय जियति ही में दुःख भव के फंदा का।
कहता दिनेश अंत पास बास जुदा का।४।

८७८ ।। श्री भूरे शाह जी ।।

पदः- मुरशिद से सीख लो सबक सुख पाना समझ कर।
धुनि ध्यान नूर लै मिलै मन माना समझ कर।
सन्मुख हों श्याम श्यामा शुकराना समझ कर।
जियतै में यहां तै करो नज़राना समझकर।
बेफिक्र तब तो होगे तर जाना समझ कर।
फिर अन्त पास ही में लें मस्ताना समझकर।६।

शेरः- बीरान में बिया बान में हर शै में साहेबान।
मुरशिद बिना न जानो हैं बंद चशम कान।।

८७९ ।। श्री बीरयार सिंह जी ।।

पदः- जिन राम नाम की कसरत करि डण्ड बैठक मुगदर भाँज्यो है।
तिनकी समझौ मंगलकारी जियतै सब साज को साज्यो है।
धुनि ध्यान प्रकाश औ ले पायो तन मन कसि प्रेम में माज्यो है।
निर्भय निर्बैर सदा जानो पितु मातु क बालक बाज्यो है।
सुरमुनि करते कीरतन संग में लखि हर्षित ह्वै कै गाज्यो है।
बीरयार सिंह कहैं अन्त में चलि साकेत में हरि ढिग राज्यो है।६।

८८० ।। श्री मारते खां जी ।।

पदः- काम क्रोध मद लोभ मोह जब शांति होंय दुख दाई जी।
तब तो पंच धुनी का तापब सुफ़ल होय मम भाई जी।
चौरासी धूनिन का तपना तब जानौ सुख दाई जी।
जब चौरासी के चक्कर से जीव बिलग ह्वै जाई जी।४।

चौरासी आसन सुख दायक जब हरि दर्श दिखाई जी।
पांचौं मुद्रा सिद्ध होंय जब पांच तत्व सुधि जाई जी।
चारों तन जब बेधन होवैं दृष्टि अदृष्टि समाई जी।
लै परकाश ध्यान धुनि पावै हर दम मंगल गाई जी।८।

चौपाईः- नेती टीक तासु की जानो। जा की नेति एक रस मानो।।
धोती शुद्ध तासु की होवै। अंदर का जब कारिख धोवै।।

जल बस्ती ताकी सुख दाई। मृदुल बचन कहि दे समुझाई।।
कुंजल करि सब चोर भगावै। ताको कुँजल सिद्ध कहावै।।
नौ स्वर मूंद दसम को जावै। ताकी नेवली ठीक कहावै।५।

वीर्य उर्ध जाको ह्वै जावै। सीत उष्ण कछु नाहि सतावै।।
ताकी बजरौली सिद्धि सुनिये। जे जानहिं तिन से सिख गुनिये।।
कमल चक्र कुँडलिनी ज्ञाना। ब्रह्म दतून संत सोई जाना।।
अजपा जाप कहावै सोई। जिह्वा चलै न सुमिरन होई।।
अनहद बाजा तौन है भाई। जो घट भीतर बजत सदाई।१०।

ध्यान तासु को कहत लेव गुनि। नाना बिधि लीला हों पुनि पुनि।
कहत प्रकाश तासु को भाई। अमित सूर्य के सम द्युति छाई।
शून्य समाधि तौन कहवाई। जहँ सब सुधि बुधि जात हेराई।
जड़ समाधि महा शून्य कहावै। तन काटौ कछु होस न आवै।
सिर में प्राण बन्द सब नाड़ी। दसौं द्वार में लगी किवारी।१५।

जब संकल्प पूर ह्वै जावै। तब फिर प्राण उतरि तन आवै।
सहज समाधि तौन कहवावै। सन्मुख रूप सदा दरसावै।
शब्द नाम को कहत हैं जानो। सूरति ख्याल बचन मम मानो।
धुनी नाम की उठत करारी। हर दम एक तार रहै जारी।१९।

दोहाः- रेफ़ बिन्दु जो बीज है, सब में सब से न्यार।
सतगुरु करि जो जानि ले, भव से होवै पार।१।
कहैं मारते खां सुनो, यहं जो जैस कमाय।
वैसे वाको वहं मिलै, दीन्ह्यो सत्य बताय।२।

८८१ ।। श्री समुझावन खां जी ।।

चौपाईः- मानस पूजा तीन प्रकारा। सो सुनि लीजै नर औ दारा।।
प्रथम तो मन से पूजन करना। भोजन जल मन ही से धरना।।
दूसर मन्दिर एक बनाना। ता में मूर्ति नहीं पधराना।।
हरि के हेतु पलंग बनवाना। ता पर बिस्तर सुघर बिछाना।।
ओढ़न हेतु वस्त्र सिलवाना। पहिरन हेतु बिचित्र बनाना।५।

भोजन भांति भांति बनवाना। सो सब तहँ पर लै धरि आना।।
जल झारी लै कर धरि देना। इतर फुलेल पान औ बैना।।
पीक दान दुइ एक चँवर तहँ। तकिया तीन पलंग पर हों तहँ।।
सब सामान साजि नित नेमा। मन्दिर बन्द करो करि प्रेमा।।
वहँ पर और न कोई जावै। यह सेवा दूसरि कहवावै।१०।
तीसरि पूजन सुनिये भाई। सुनतै तन मन अति हर्षाई।।
भोजन थार में जल धरि झारी। नैन मूंदि मन लेहु संवारी।।
देखो पाय रहे अविनाशी। श्याम गात पूरन सुख रासी।१३।

चौपाईः- जैस कल्पना हो मन माहीं। वैसे निरखौ संशय नाहीं।।
प्रथम से प्रथम धाम में जानो। दूसर ते दूसर में मानो।।
तीसरि ते तीसरि में जाई। समुझावन खां कहत सुनाई।।
निर्विकल्प जब तक नहिं ध्याना। तब तक मिलै न पद निर्बाना।।
अगणित जन्म की होय कमाई। तब प्राणी या पद को पाई।५।

दोहाः- समुझावन खां की बिनय, भजौ नाम बसुजाम।
धुनी ध्यान परकाश लै सन्मुख सीता राम।१।
अन्त समय हरिपुर बसै जो है अचल मुकाम।
समुझावन खां के बचन समुझि लेहु नर बाम।२।

८८२ ।। श्री पच्चा शाह जी ।।

पदः- भजो सिय राम को हर दम बिनै सब से करैं पच्चा।
नहीं तो अन्त में जमदूत कसि लै जांयगे बच्चा।
करो सतगुरु मिलै फुरसत बहुत तो खा चुके गच्चा।
प्रेम तन मन से जिसका हो वही होगा गदा सच्चा।
फेल होगा वही जानो जो होगा भजन में कच्चा।
वही पापी वही कपटी वही उल्लू वही लुच्चा।६।

८८३ ।। श्री लल्ला शाह जी ।।

पदः- भजन घनश्याम राधे का करो सब से कहै लल्ला।
नहीं तो अन्त में जमदूत कसि बांधे करे हल्ला।
कहैं सारे दुष्ट अहमक भरे तन पाप का गल्ला।
जाय फिर नर्क में गेरैं चलैं सिर लोह के बल्ला।४।

धाम धन मित्र सुत नारी न जावै संग में छल्ला।
करो सतगुरु छुटै काई खुलैं जो बन्द हिये पल्ला।
ध्यान धुनि नूर लै जानो छुटै संसार से तल्ला।
छोड़ि तन बास हरि पुर लो जहां भोजन न जल हल्ला।८।

८८४ ।। श्री लूले शाह जी ।।

पदः- पाय नर तन न हरि सुमिरै बृथा बक बक करैं टुच्चा।
अन्त जमदूत जब पकड़ै लगावैं खूब तन घुच्चा।
होंय तब प्राण अति ब्याकुल बिदा हों एक ही हुच्चा।
चलैं लै नर्क कह लूले बनावैंगे तुम्हे कुच्चा।४।

८८५ ।। श्री भड्डरी जी ।।

वार्तिकः- जिन स्त्रियों का पाणि ग्रहण नहीं हुआ और युवा अवस्था को प्राप्त हो गईं और कामातुर हो कर पर पति से भोग किया सिर्फ एक ही बार वह फिर अगले सात जन्मों तक तरुणाई में बैधब्य को प्राप्त होती हैं। इस पाप का उद्धार हरि नाम ही से हो सकता है। जब कोई सतपुरुष मारग सुझा देवै। जिन अबलाओं के कोई औलाद नहीं होती है उन्होंने प्रथम जन्म में पर पुरुषों से धन लेकर बहुती स्त्री अबलाओं का धर्म भृष्ट कराया है। उनकी गती हरि नाम से ही होगी। दूसरा कोई उपाय नहीं है। नहीं तो उनको सौ जन्म तक कोई सन्तान न होगी।

जिन अबलाओं की सन्तान पैदा होकर कुछ दिन जीने के उपरान्त मर जाती हैं या तुरत मर जाती हैं या पेट में मर गईं या गर्भ ही पात हो गया, वह उस जन्म का पर सन्ताप है जो कि दूसरे के बच्चों को देख देख कर जलतीं थीं। इनका दुख भगवान के भजन करने ही से मिटेगा कोई सामान्य बात नहीं है। यह मसल मशहूर है कि पर सनतापी सदा दुखी। तब सुखी कैसे हो। यह पाप दस जन्म तक रहता है।

जो स्त्रियां पर पुरुषों से गर्भ धारण करके गिरा देती हैं या दूसरों के गर्भ गिराती हैं, वह दो सौ जन्म तक युवा अवस्था के समय अन्धी हो जाया करती हैं। यह पाप ईश्वर आराधन ही से छूटता है। और जो पुरुष गर्भ पात कराने में मदद करते हैं उनको भी यही सज़ा मिलती

है। जो पुरुष पर स्त्री के गर्भ कर देते हैं उनको १०० (सौ) जन्म तक तरुण अवस्था में जलोधर रोग हो जाया करता है। उसी के द्वारा शरीर गत हुआ करते हैं इनका पाप राम नाम से नाश होता है।

जिन अबलाओं ने निज पति का शीश काटि के पर पति ग्रहण किया है वह आगे सौ जन्म तक नपुंसक होंगी। उनका पाप राम नाम से ही कटैगा।

इन सब पापों की सज़ा पहले नर्क में कल्पों भोगनी पड़ती है, फिर यह सजा मृत्यु लोक में भोगनी पड़ती है। और सन्तों की सेवा से अगर तन मन प्रेम लगाकर सन्त सेवा की जाय तो सारे पाप नष्ट हो जांय। संत और भगवान में कोई भेद नहीं है। परन्तु संत बड़े भाग्य से मिलते हैं।

दोहाः- कहै भड्डरी सुनो सुत, हमहू कछु कह दीन।
राम नाम सुमिरन करै, सोई पासा लीन।।

८८६ ।। श्री पगली माई जी ।।

पदः- निरगुन सगुन सरकार एकै दुइ कहैं ते मूढ़ है।
सतगुरु बिना पैड़ा मिलै नहि ज्ञान यह अति गूढ़ है।
तन मन से प्रेम लगाय कै जे नाम में आरूढ़ हैं।
कहती बचन पगली वही दोनो जहां में बूढ़ हैं।४।

८८७ ।। श्री गूँगी बाई जी ।।

पदः- करो सतगुरु मिलै दर्शन पास ही राम सीता जी।
प्रेम तन मन से जहँ लागै सत्य के हैं वो मीता जी।
देव मुनि पाठ करते नित सुनो मानस औ गीता जी।
कहैं गूँगी नाम रस पी वही जग आय जीता जी।४।

८८८ ।। श्री चम्पा शाह जी ।।

पदः- करो सतगुरु भजो हरि को खुलैं तब दृगन के टप्पा।
नहीं तो अन्त में जमदूत कसि लै जांयगे झप्पा।
बृथा तन नाम बिन जाने लगै दोनो जहां ठप्पा।
ध्यान धुनि नूर लय पावो रूप सन्मुख कहैं चम्पा।४।

८८९ ।। श्री पापर शाह जी ।।

पदः- करो सतगुरु भजो हरि को बने बैठे हो क्यों लापर।
अन्त जमदूत जब घेरें तड़ा तड़ देंय मुख थापर।
ध्यान लै रूप रोशन धुनि बिना होगे सुनो चापर।
ज़िन्दगी ओस मोती सम न हो गाफ़िल कहैं पापर।४।

८९० ।। श्री लौवा शाह जी ।।

पदः- करो सतगुरु भजो हरि को बृथा क्यों हो रहे बौबा।
मिला दुर्लभ ये क्या नर तन बिना सत संग जिमि कौवा।
अन्त में को सहायक हो आय घेरेंगे जब हौवा।
पीटते लै चलैं तुमको छुटै धन धाम सब खौवा।
ध्यान धुनि रूप लै रोशन पाय जियतै में जो जौवा।
वही फिर अन्त हरि के ढिग जाय बैठैं कहैं लौवा।६।

८९१ ।। श्री बच्चा शाह जी ।।

पदः- करैं घनश्याम आलिङ्गन जो उनका भक्त सच्चा है।
नहीं मिलते उसे दर्शन जो सुमिरन बिधि में कच्चा है।
पड़ा वह मन के फन्दे में खात हर वक्त गच्चा है।
बासना चूमती मुख को कहत यह बैन बच्चा है।४।

शेरः- बच्चा कहैं तन मन से जब तक प्रेम हरि में हो नहीं।
तब तलक दीदार क्या झलकार यारों हो नहीं।१।
द्वैत का परदा हटा दिल आयना को साफ़ कर।
देख लो हरि पास ही में दें खता सब माफ़ कर।२।
चश्म चारों जांय खुल हर दम लखो घनश्याम को।
धुनि ध्यान लै परकाश पावो हो सुफ़ल नर चाम को।३।
जियत में सब तै करो फिर अन्त में हरि धाम लो।
मुरशिद करो तन मन लगा सूरति शबद पथ थाम लो।४।

८९२ ।। श्री गणेश दत्त जी ।।

पदः- नौबत गगन में बाजत हर दम सुनिये सन्तों तन मन लाय।
सतगुरु बिना भेद नहि पैहो यह बिचित्र पंडिताय।

या से पाठ लेव दुख छूटै हर दम हिय हर्षाय।
सुनो नाम धुनि ध्यान में जावो सुर मुनि दर्शै भाय।४।

जोति प्रकाश समाधी होवै सुधि बुधि सबै भुलाय।
हर दम झांकी सन्मुख निरखौ राम सिया सुख दाय।
कुण्डलिनी षट चक्र कमल तब सातों परैं दिखाय।
अन्त समय हरि धाम को चलिये कहैं गनेश सुनाय।८।

८९३ ।। श्री गौहर जान जी ।।

पदः- पिरोती हूँ तेरे ग़म में मैं आँसू नन्द के लाला।
अहिर निसि चैन नहीं पड़ती जिगर में कसि लगा भाला।
वह तिरछी चाल औ चितवन जरा दिखला दे मतवाला।
सुना तुम तो दया सागर कहाते फिर दया टाला।४।

प्राण अब रुक नहीं सकते बिरह अगिनी जला डाला।
दिखा सूरत हरा तन मन कहां बैठे लगा ताला।
मिलो प्यारे चिपट करके नहीं तो भेजो सुख साला।
कहैं गौहर बिना मोहन बृथा मानुष कहै छाला।८।

८९४ ।। श्री चिम्मन शाह जी ।।

पदः- करो सतगुरु कटै बन्धन बड़ा भव सिन्धु भारी है।
नहीं तो जान के लाले पड़ैं आखिर में ख्वारी है।
यहां कोई नहीं तेरा यह सब जाली पसारी है।
प्राण तन से जहां निकले देत मरघट में डारी है।
स्वार्थ हित रोवते कछु दिन फेरि सुधि बुधि बिसारी है।
संग नेकी बदी जावै लिखा जो वह सँभारी है।६।
तुम्है जमदूत लै जावैं जहां दरबार जारी है।
तहां पर देखिहौ चलि के जमा कितने नर नारी हैं।
कर्म अनुसार दुख सुख दें बड़े इन्साफ़ कारी हैं।
कपट त्यागो बनो निर्मल लखो सन्मुख बिहारी हैं।
ध्यान लै नूर जप अजपा बजै अनहद सुख भारी है।
कहै चिम्मन जियत जानो जगत से तब न्यारी है।१२।

८९५ ।। श्री हस्सू शाह जी ।।

पदः- सतगुरु अजपा की जाप सिखा दो मुझे।
लै ध्यान प्रकाश लखा दो मुझे।
श्यामा श्याम के दर्शन करा दो मुझे।
कहैं हस्सू अमरपुर पठा दो मुझे।४।

८९६ ।। श्री पितम्बर जी ।।

पदः- सुनौ श्याम मेरी ज़रा छबि दिखा दो।
मनोहर वो मुरली अधर धर बजा दो।
पगों के जो नूपुर छमा छम सुना दो।
धुनी ध्यान लै नूर प्यारे मिला दो।
छुटै भव क बन्धन जो मुरशिद बता दो।
पितम्बर कहैं मुझ को निजपुर पठा दो।६।

८९७ ।। श्री सलारी जी ।।

पदः- तुम्हैं श्याम हम अब मिलैंगे मिलैंगे।
कहां छिपके बैठे लखैंगे लखैंगे।
वो अनुपम छबी रस चखैंगे चखैंगे।
ये सतगुरु से मारग सिखैंगे सिखैंगे।
तो धुनि ध्यान लै में पगैंगे पगैंगे।
सलारी कहैं जग तजैंगे तजैंगे।६।

८९८ ।। श्री धौंकल दास जी ।।

पदः- सतौगुण का जो है प्राणी उसे कलयुग में सतयुग है।
नाम धुनि रूप पहिचानी उसे कलयुग में सतयुग है।
धारना ध्यान लै जानी उसे कलयुग में सतयुग है।
कर्म शुभ अशुभ में फानी उसे कलयुग में सतयुग है।४।
लखै परकाश सो ज्ञानी उसे कलयुग में सतयुग है।
जियति सब जानि मन मानी उसे कलयुग में सतयुग है।
श्री सतगुरु बचन मानी उसे कलयुग में सतयुग है।
मुक्ति औ भक्ति का दानी उसे कलयुग में सतयुग है।८।

दोहाः- धौंकल दास कि बिनै यह जब तक द्वैत है लागि।
तब तक राम के नाम में जीव सकै किमि पागि।।

८९९ ।। श्री बौषल दास जी ।।

पदः- सतौ गुण एक रस जिस में उसे सतयुग सदा भासै।
वही सतगुरु बचन मानै अन्त हरि के चलै पासै।
ध्यान धुनि नूर लै पाकर कर्म शुभ अशुभ को नाशै।
राम सीता रहैं सन्मुख मरे तन मन के सब डांसे।४।

दोहाः- राम नाम जो कोइ भजै, तन मन प्रेम लगाय।
सो भव सागर पार हो, बौखल कहैं सुनाय।।

९०० ।। श्री जदु नाथ जी ।।

पदः- जिसने सतगुरु से नाम जपन बिधी जान लिया।
उसने निज परदा हटा राम सिया देख लिया।
ध्यान धुनि नूर समाधी में सुधि को खोंय दिया।
कहते यदुनाथ अन्त हरिपुर जाय बास लिया।४।

९०१ ।। श्री हरि नाथ जी ।।

पदः- जियति में तै किया जिसने वही दोनो जहां अच्छा।
ध्यान धुनि नूर लै पायो रूप सन्मुख सदा अच्छा।
देव मुनि दर्श सब देते सुना कर प्रभु क जस अच्छा।
कहैं हरि नाथ आखिर में मिलै हरि धाम क्या अच्छा।४।

९०२ ।। श्री चीथर शाह जी ।।

पदः- भजो श्री जानकी पति को जान की जान जो सब के।
नहीं तो अन्त में जमदूत लै दोज़ख में कसि दबकें।
करौ मुरशिद लखौ यारों इस तन में चौदहों तबके।
ध्यान धुनि नूर लै जानो रूप सन्मुख सदा चमके।
बसर तन का मिलै फल यह काल फिर नहिं तुम्हैं धमके।
कहैं चीथर मज़ा लूटौ कहा मानो चलो नमके।६।

९०३ ।। श्री जानू शाह जी ।।

शेरः- प्रैकटिस से गाड मिलता बसर तन का फर्ज है।
सतगुरु करो पावो पता जानू कि सब से अर्ज़ है।
आने जाने की लगी क्या जीव के संग मर्ज है।
सुमिरन बिना नहिं छूटती या से बड़ा ही हर्ज है।४।

इकरार गर्भ में जो किया उसका चुका नहि कर्ज़ है।
होगा रिहा जग से वही तन मन से जिसको गर्ज़ है।
शुभ अशुभ जो करत करिहौ होत सब वहं दर्ज है।
इजलास पर सुन लीजिये कैसे लिखे वह तर्ज है।८।

९०४ ।। श्री हुलासी शाह जी ।।

पदः- रसना क्यों करती बदमाशी।
मन दिवान तो को भटकावत कटै न दुख चौरासी।
सुमिरन पाठ कीर्तन में तू रहती सदा उदासी।
झूठ प्रपंच में नेक न थकती करती रहि रहि हासी।
आखिर में जमदूत आयके लेवेंगे जब गांसी।५।

तब कछु बोल न पावेगी तू गले में डालैं फांसी।
प्राण निकारि चलैं लै जमपुर तन कर सत्या नासी।
या से मान ले कहा चेत कर बात कहैं हम खासी।
राम नाम को जान ले प्यारी सब में जो अविनाशी।
दर्शै तब फिर चरित मनोहर मिलि जाय सुख की रासी।१०।

घट ही में सुर मुनि सब राजें अवध मधुपुरी काशी।
ध्यान समाधि धुनी क्या होवै सुन्दर जोति प्रकाशी।
अनहद बाजा हर दम सुनिये कबहूँ होय न बासी।
सिया राम की झाँकी सन्मुख चमकै क्या चपलासी।
अमृत टपकै गगन से पीजै अनुपम बारह मासी।
सतगुरु करि जियतै भव तरिये कहते शाह हुलासी।१६।

शेरः- सांचा मिलै सतगुरु जिसे वह जायगा हरि धाम में।
कहते हुलासी शाह नहि फिर फँसेगा जग काम में।।

९०५ ।। श्री दुर्गा दीन जी ।।

पदः- मन तुम बड़े बेशरम भाई।
शुभ कामन के निकट न जाते अधरम में पतियाई।
ऐसी मति मलीन करि लीन्हीं जीव पार किमि पाई।
बड़ी डोरि पोढ़ी कर लीन्हे हर दम रह्यो घुमाई।
छल परपंच करत जल भोजन लागत नहीं थकाई।५।
बेद शास्त्र उपनिषद संहिता औ पुराण बतलाई।
सुर मुनि ऋषि जाको सब त्यागत तेहि तुम मेल मिलाई।
नाना नारिन को लै नाचत संग अविद्या माई।
किस चटशाला में यह विद्या पढ़ेव जाय दुख दाई।
अच्छा अब हम सतगुरु ढूड़ि के राम मन्त्र लै आई।१०।
तब फिर भागि के जायो देखब कौन तुम्है लुकवाई।
सूरति के संग जोरि के तुमको शब्द में देंव लगाई।
ररंकार लैकर फिर तुमको ध्यान में दें पहुँचाई।
ध्यान से फेरि बढ़ावैं आगे शून्य में जाय बिठाई।
सुधि बुधि रहै न नेकौं वहं पर आप में आप समाई।१५।
वहां से फिर आगे हरि इच्छा महा शून्य दर्शाई।
महा शून्य से गऊ लोक चलि देखत हिय हर्षाई।
श्याम के अन्तर श्यामा सोहैं झूला पर छबि छाई।
बे आधार आपै तहं चलता पवन त्रिबिध लहराई।
कृष्ण लोक से आगे चलि साकेत पुरी में जाई।२०।
महा प्रकाश एक रस जानो निरखत ही बनि याई।
ता के मध्य ऊँच सिंहासन ता पर प्रभु सुखदाई।
आदि शक्ति अन्तरगत बैठीं शोभा वरनि न जाई।
अमित सन्त तहं यानन बैठे हरि के रंग चुप भाई।
हम तुम की जब होय एकता जावै द्वैत पराई।२५।
जियत में हर दम सन्मुख चितवो जनक लली रघुराई।
दुर्गा दीन कहैं सुनु मन अब छूट गई सब काई।
अन्त समय साकेत को चलिये चढ़ि बिमान पर धाई।२८।

९०६ ।। श्री बृज नाथ जी ।।

पदः- बिना सिय राम को देखे हमे नहि चैन आता है।
लगन जिसकी लगी जासे वही सको स्वहाता है।
करै तन मन लगा सुमिरन वही आनन्द पाता है।
युगल छबि सामने हरदम निरखता मुस्कराता है।
ध्यान धुनि नूर लै होती जहां सुधि बुधि भुलाता है।
धन्य उस जीव को कहिये जियति भव पार पाता है।६।

बिना मुरशिद किये मारग नहीं यह जाना जाता है।
भेद जो पा गया यारों वही गोता लगाता है।
जहां चाहै वहां जावै सबी तीरथ नहाता है।
देव मुनि रोज दें दर्शन सबों से जोड़े नाता है।
राम सीता की जै जै जै जौन जन नित मनाता है।
कहैं बृजनाथ तन तजि के अचलपुर बास पाता है।१२।

९०७ ।। श्री छबि नाथ जी ।।

पदः- बिना प्रिय श्याम के देखे हमें कछु नहिं सुहाता है।
बिरह की लौ लगै जिसके जला निशि बार जाता है।
पिता माता भ्रात पुर जन नारि सुत झूँठ नाता है।
कहा मानो मेरे भाई ये तन आनन्द दाता है।
करो मुरशिद चखो अमृत इसी में सब दिखाता है।५।

अन्त हरि धाम में चल कर रूप रंग हरि सा पाता है।
मिलै आसन सिंहासन पर लगा अनमोल छाता है।
दिब्य तन में बसन भूषण मौन नहिं बोलि पाता है।
बयस बारह बर्ष की क्या निरखि तन मन लुभाता है।
कृष्ण राधे की जै जै जै सदा छबि नाथ गाता है।
करै सुमिरन वही जाने प्रेम में जौन माता है।११।

९०८ ।। श्री बृज राज जी ।।

पदः- बिना श्री बिष्णु के देखे हमें तो कुछ न भाता है।
करैं सब जक्त का पालन बड़े आनन्द दाता हैं।

पाय नर तन जो नहिं सुमिरै वही फिर नर्क जाता है।
करो मुरशिद तरो भव निधि नही तो रद्दी खाता है।
ध्यान धुनि नूर लै पावो रूप सन्मुख दिखाता है।
देव मुनि तीर्थ सब घट में निरखि कोइ कहि न पाता है।६।

बजै अनहद मधुर ऐसा सुनत तन मन लुभाता है।
बेधि षट चक्र हू जावैं कमल सातों फुलाता है।
नागिनी जाय जगि प्यारी घूमि सब लोक आता है।
सदा निर्बैर औ निर्भय करम दोनो जलाता है।
कहैं बृज राज तन छूटै चला हरि धाम जाता है।
जियति में तै किया जिसने रहा जग से न नाता है।१२।

९०९ ।। श्री छबि राज जी ।।

पदः- बिना शिव शिवा के देखे हमें सब सून लगता है।
लखै हर दम वही प्राणी जो सतगुरु ढूढ़ि करता है।
ध्यान धुनि नूर लै पावै एक रस होके पगता है।
आप जियतै में तरि जावै दूसरों को भी तरता है।
मार्ग यह तै हुआ जिसका नहीं कबहुँ वो गिरता है।
देव मुनि संग बैठक हो सुनै हरि जस न टरता है।६।

प्रेम तन मन से जेहि लागै वही श्रोता व वक्ता है।
बजै अनहद सुघर घट में सुनै अमृत को छकता है।
खड़े बैठे चले लेटे उसे सब सूझि पड़ता है।
द्वैत परदा हटै उसका जिसे यह रंग चढ़ता है।
भजन निष्काम जो करता अन्त हरि धाम चलता है।
कहैं छबि राज सच मानो न वह जग में बिचरता है।१२।

९१० ।। श्री खेलाड़ी शाह जी ।।

पदः- मन तू क्यों दुख देता मोको।
अतीसार संग्रहणी कीन्हे छिन छिन में मैं पोकों।
शुभ कामन में नेक न ठहरत क्या मिलता सुख तो को।
पांचों ठगन से नाता जोड़े करत रहत नित कों कों।

जनमत मरत साथ नहिं छोड़त रुधिर पियत जिमि जोंकों।
अपनी मति स्थिर कर ले तू बार बार मैं टोकों।६।

श्री सतगुरु से दीक्षा लेकर अब बच्चां तोहिं रोकों।
सूरति के संघ तोहि लगाय के शब्द में जाय के चोंकों।
धुनी ध्यान परकाश मिलाय के शून्य में लै फिर ठोकों।
सुर मुनि शक्तिन दर्श करावों दिखलावों सब लोकों।
राम सिया को हर दम देखिहै उघरैं हिय के ढोंकों।
कहैं खेलाड़ी बन्धन छूटै तब सुख मोको तोको।१२।

९११ ।। श्री बचोली माई चमारिन जी ।।

पदः- हरि सुमिरन बिन तन जाय अन्त में गपोली निकली।
यम पकड़ैं जब रिसियाय न मुख से बोली निकली।
मारत लै चलिहैं धाय बदन की खोली निकली।
इजलास पै दें ठड़ियाय बात सब पोली निकली।
खाता सब देंय सुनाय अधर्म ठठोली निकली।५।

तहं पर खुब परे पिटाय हाय की बोली निकली।
कसि नर्क में छोड़ैं जाय कौन बिधि डोली निकली।
तहं पवन न आवै जाय गन्ध को खोली निकली।
अति घोर अंधरिया भाय दृगन दोउ गोली निकली।
कलपन तहं भोगो जाय मास तन छोली निकली।१०।

रोवैं मातु पिता सुत भाय नारि शिर खोली निकली।
तब तन लखि लखि बिलखाय जिगर में फफोली निकली।
फिर लै कफ़नाय उठाय भवन से खटोली निकली।
कांधे चारि के चढ़ि तन जाय संघ बहु टोली निकली।
धरि दें फिर मरघट लाय चिता हित बोली निकली।१५।

कंडा काठ क चिता बनाय धरै अनमोली निकली।
फिर फूस में अग्नि लगाय धरैं मुख होली निकली।
सब तन जरि जावै भाय भसम भरि झोली निकली।
करो सतगुरु दुख मिटि जाय एक दिन चोली निकली।
श्री राम पिता सिय माय सुमिरि के बचोली निकली।१९।

शेरः- पान ढोलिन चबाते थे नरक में कीड़े तन काटें।
भजन में मन न लाते थे वहां जमदूत नित डाटें।१।
झूठ कहि यहं हंसाते थे वहां पल भर न कल पावैं।
बचोली कह बिना सुमिरन हाय रे हाय चिल्लावैं।२।

९१२ ।। श्री दाता दीन जी ।।

पदः- मन तुम कहा हमारा मानो।
ठगन कि संगति छोड़ि देव अब बांधो मर्द को बानो।
सतगुरु करि हम राम मन्त्र ले संघ मिलि ताना तानो।
नाम कि धुनी खुलै सुख होवै पहुँचि जाव फिर ध्यानो।
देखो लीला बरणि सको क्या अनहद सुनो वागानो।
सुर मुनि लोक तीर्थ सब घट में नूर अजब चमकानो।६।

सुधि बुधि रहै न कहौ कौन बिधि जब लय होय समानो।
राम सिया की झाँकी हर दम निरखों प्रेम में सानो।
तीनो गुण के परे भये बिन कैसे होय यह ज्ञानो।
जग से बन्धन टूटै तब यह जब मम बचन को छानो।
अन्त समय हरि पुर को चलिये बैठि के सुभग बिमानो।
दाता दीन कहैं कर जोरे नेक न और बखानो।१२।

।। श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुख विलास सम्पूर्णम ।।

१७-७-५०



।। विनती ।।

बिसरायो न सतगुरु हमारि सुधिया।
काम क्रोध मद लोभ मोह मन शांत करौ टूटै टटिया।
द्वैत छुटावो कपट मिटावो ठीक होय चित की बृतिया।
सूरति शब्द में लागि रहै हरि दर्शन होवैं दिन रतिया।४।

जोति प्रकाश दशा लय पावों निर्गुन निराधार गतिया।
मुक्ति भक्ति मैं जियतै पावौं आवन छूटि जाय हटिया।
बिन सतगुरु के पार होय को हरि माया संग में खटिया।
राम सहाय की अर्ज यही तब चरन कमल रहे मन सटिया।८।

- श्री लाला राम सहाय जी



श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुखविलास

श्री परमहंस राममंगल दास जी सभी धर्मों को मानते थे। उनके भक्त हर धर्म व जाति के थे। कोई भेद भाव नहीं था। हिन्दुओं को देवी-देवताओं के मंत्र, मुसलमानों को कलमा व नमाज पढ़ना, सिख्खों को उनकी गुरु-परम्परा के अनुसार उपदेश व ईसाइयों को उनके धर्म के अनुरूप मार्ग बताते थे। वे कहते थे कि भगवान भाव व प्रेम के भूखे हैं, आडम्बर के नहीं।

उनका मुख्य उपदेश था : ''सादा भोजन, सादा कपड़ा, अपनी सच्ची कमाई का अन्न तथा अपने को सबसे नीचा मान लेना। कोई बेखता बेकसूर गाली दे, धक्का दे उसके हाथ जोड़ देना।'' वे कहते थे ''मान अपमान फूंक दो तब भगवान की गोद में जाकर बैठ जाओगे। जो भगवान को सब कुछ सौंप देता है, भगवान उससे बड़े खुश रहते हैं। जिसको भगवान का सच्चा भरोसा है उसे तकलीफ कैसे हो सकती है।''

''सेवा धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं है। बिना बुलाये जाकर सेवा कर आओ, जितनी शक्ति हो; बस भजन हो गया। बुलाकर जाने से सब कट जाता है।''



संत शिरोमणि

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(12.2.1893 - 31.12.1984)

श्री परमहंस राममंगलदास जी ने सन् 1933 ई० से सब देवी-देवताओं तथा हर धर्म के सिद्ध सन्तों द्वारा ध्यान में तथा प्रत्यक्ष प्रकट होकर लिखवाए आध्यात्मिक पदों को चार दिव्य ग्रन्थों में संग्रहीत किया। लगभग 50 वर्षों से ये दिव्य ग्रन्थ उनके गोकुल भवन आश्रम में परम पूज्य रूप से सुरक्षित रखे हुये हैं। इनके कुछ अंश ही छपे परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन भगवत्कृपा से अब हो रहा है। प्रथम ग्रन्थ जिसका नामकरण दिव्य रूप से श्री गुरु वशिष्ठ जी ने किया : ''श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली'', उसके प्रथम भाग का प्रकाशन श्री वशिष्ठ जी की आज्ञा व कृपा से सन् 1999 में हुआ। इसी प्रथम दिव्य ग्रन्थ का दूसरा भाग 2001 में प्रकाशित किया गया। इसी श्रृँखला का दिव्य ग्रन्थ-2 सर्व जगत कल्याण के लिये अब प्रकाशित किया जा रहा है।

संसार के इन अलौकिक ग्रन्थों में भगवान के नाम की महिमा, सद्गुरु महिमा, सुरति शब्द योग, भगवान को पाने के अनेक मार्ग, उनमें आने वाली स्थितियां व अनुभव, ध्यान की विधियां, विभिन्न अनहद नाद, पूजन की विधियां, सब कमलों, चक्रों व नाड़ियों का वर्णन है। भगवान, देवी-देवताओं के स्वरूप तथा सब लोकों का वर्णन किया गया है। हर जाति व पेशे (व्यवसाय) के संत पुरुष व संत स्त्रियों ने लिखवाया है कि जीवन में कैसा आचार-विचार होना चाहिये, तथा उन्होंने किस प्रकार के कर्म किये जिनसे उन्हें भगवान का धाम प्राप्त हुआ ।

प्रस्तुत द्वितीय ग्रन्थ में श्री परमहंस राममंगलदास जी को दर्शन देकर जिन्होंने दिव्य आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे इस प्रकार है :-

- श्री परीक्षित जी, कृपाचार्य जी, मेनका जी, उर्वशी जी, रम्भा जी, विद्याधर गंधर्व जी।
- ऋषि भड्डरी जी, श्री शबरी जी, गणिका जी, कर्मा माई।
- संत एकनाथ जी, तुकाराम जी, मीरा जी, नरसी जी, निमाई-निताई जी।
- सम्राट अशोक जी, राजा भोज जी, बीरबल जी, शिवाजी, लक्ष्मीबाई जी।
- परमहंस रामकृष्ण जी की पत्नी शारदा जी, महर्षि अरविन्द जी, गुरु गोविन्द सिंह जी, श्री अद्वैतानन्द जी।
- श्री हजरत जी, इब्राहीम जी, औलिया जी, बुल्लेशाह जी।
- श्री विद्यासागर जी, कमला नेहरू जी, मौलाना मुहम्मद अली जी।

इस ग्रन्थ की रचना सन् 1936 ई० के लगभग से प्रारंभ हुई। इसमें कई संतों ने प्रकट होकर भविष्यवाणी की है कि महात्मा गांधी, जो कबीरदास जी के अंश थे, उनके द्वारा भारत का उद्धार होगा, तथा वि० संवत् 2000 (सन् 1943 ई०) के बाद भारत के लिये 100 वर्ष का समय अत्यन्त सुख का होगा ।

श्री गुरुदेव परमहंस राममंगलदास जी के अनुसार, ''इन ग्रन्थों को जो पढ़ेगा, प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा, तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा ।''